विश्व की प्राचीन सभ्यताओं का इतिहास

लेखक :
डा० शान्तिलाल नागोरी

प्राक्कथन लेखक :
डा० बी० एस० माथुर
प्रोफेसर इतिहास एवं अधिष्ठाता, मानवीय संकाय, उदयपुर विश्वविद्यालय
उदयपुर (राज०)

प्रकाशक :
बाफना बुक डिपो
चौड़ा रास्ता, जयपुर-3

प्रकाशक :
बाफना बुक डिपो
चौड़ा रास्ता, जयपुर-3

प्रथम संस्करण— 1982
मूल्य : चालीस रुपये मात्र
मुद्रक : चन्द्रकला प्रिन्टर्स
आदर्शनगर, जयपुर-4

प्राक्कथन

मुझे यह लिखते हुए अत्यन्त प्रसन्नता है कि डॉ० एस० एल० नागोरी ने 'विश्व की प्राचीन सभ्यताओं का इतिहास'' नामक पुस्तक प्रस्तुत की है। लेखक ने विषय का प्रतिपादन विद्वतापूर्ण ढंग से प्रामाणिक ग्रन्थों के आधार पर किया है। इसके साथ ही तथ्यों को नवीन शोध के प्रकाश में नये दृष्टिकोण के अनुसार प्रस्तुत किया है। पुस्तक सरल हिन्दी भाषा में आलोचनात्मक दृष्टिकोण से लिखी गई है। ताकि पहली बार पढ़ने वाले विद्यार्थी और पाठक गणों के आसानी से समझ में आ सकें। मेरी यह मान्यता है कि यह पुस्तक इतिहास के विद्यार्थियों के अतिरिक्त उन जिज्ञासु पाठकों के लिए भी लाभदायक सिद्ध होगी, जिनकी इतिहास के प्रति रुची हैं।

डॉ० एस० एल० नागोरी ने इस विषय पर पुस्तक लिखने का जो सराहनीय प्रयास किया है, उसके लिए वे बधाई के पात्र हैं। आशा है इस पुस्तक का पाठकों एवं विद्यार्थियों द्वारा समुचित स्वागत होगा।

(डॉ० बी० एस० माथुर)
प्रोफेसर इतिहास एवं
अधिष्ठाता, मानवीय संकाय
उदयपुर विश्वविद्यालय,
उदयपुर (राज०)

भूमिका

विश्व की प्राचीन सभ्यताओं के इतिहास पर पुस्तकों की कमी को देखते हुए मैंने यह पुस्तक सरल हिन्दी भाषा में आलोचनात्मक दृष्टिकोण से लिखी है ताकि पहली बार पढ़ने वाले विद्यार्थी और पाठकगण के आसानी से समझ में आ सकें। इस पुस्तक में प्राचीन तथ्यों को एक नये शोध के प्रकाश से एवं नये दृष्टिकोण के अनुसार प्रस्तुत किया गया है। मैंने इस पुस्तक को लिखने में बहुत से विद्वानों के प्रामाणिक ग्रन्थों की सहायता ली है। उनका मैं हृदय से आभारी हूं।

यह पुस्तक भारत के सभी विश्वविद्यालयों की स्नातक एवं स्नातकोत्तर कक्षाओं के लिए लिखी गई है।

मेरा यह विश्वास है कि इस पुस्तक के द्वारा छात्र एवं पाठकगण विश्व की प्राचीन सभ्यताओं के बारे में जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।

यदि पाठकगण पुस्तक की विषय वस्तु के बारे में अपने सुझाव देना चाहें तो अवश्य भेजें, मैं उन्हें सहर्ष स्वीकार करूंगा।

मैं प्राक्कथन लेखक श्रद्धेय डॉ० बी० एस० माथुर सा० प्रोफेसर इतिहास एवं अधिष्ठाता मानवीय संकाय, उदयपुर विश्वविद्यालय, उदयपुर के प्रति आभारी हूं, जिनकी, प्रेरणा एवं कृपा दृष्टि से ही यह कार्य सम्भव हो पाया है।

इस कार्य को पूर्ण करने में मेरे घनिष्ठ मित्र श्री बेणु गोपाल शर्मा, पुस्तकालयाध्यक्ष, राजकीय महाविद्यालय, रामगढ़ शेखावटी (राज) का सहयोग मिला, एतदर्थ मैं उन्हें भी धन्यवाद दिए बिना नहीं रह सकता जिन्होंने अपने अमूल्य समय एवं सुझावों से इसको पूर्ण करने में योगदान दिया।

अन्त में उन सभी सहयोगियों का आभारी हूं जिनका सहयोग प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से मुझे समय-समय मिलता रहा है।

मैं श्री शान्तिलालजी सा० बाफना, बाफना बुक डिपो, जयपुर के प्रति भी आभारी हूं, जिन्होंने अत्यन्त उत्साहपूर्वक इस पुस्तक का प्रकाशन अपने हाथ में लिया है।

(डॉ० एम० एल० नागोरी)

-: विषय सूची :-

(iii) धार्मिक विश्वास—

इस काल मे मनुष्य प्राकृतिक शक्तियो और पशुओकी उपासना करता था। इस काल का मनुष्य यह जानता था कि मृत्यु के पश्चात् मनुष्य परलोक म जाता है। इसलिये मृतक व्यक्ति के शव को लाल रग से रग देते थे, ताकि उसके शरीर म खून का सचार फिर से शुरु हो जायेगा और उसके साथ भोजन हथियार भी गाड देते थे ताकि परलोक मे उसके काम आयेगा। प्रोफेसर ल्यूक्स का मानना है कि इसी काल मे धार्मिक विश्वासो की नीव रखी गई।

(iv) खानपान एव वेश भूषा—इस काल का मनुष्य पशुओं और मछली का मास भूनकर खाता था। इसके अलावा वह पड पौधो की जडे और बीज भी खाता था। इस काल म स्त्रिया छाल से अपना शरीर ढक लिया करती थी और पुरुष खाल को सूई से सीकर उसके वस्त्र तैयार करने लग गये थे।

(v) कला—

1 सगीत कला—इस युग मे सगीतकला के क्षेत्र म बहुत अधिक विकास हुआ। इसकाल का मनुष्य सगीत कक्षा मे बहुत रुचि रखता था। उस समय वादय यन्त्र हड्डी के बनाये जाते थे। स्पष्ट है कि इस युग के मनुष्यो की सगीत के क्षेत्र मे बहुत रुचि थी।

2 मूर्ति कला—इस युग मे मूर्ति कला के क्षेत्र मे भी बहुत विकास हुआ। इस काल के लोग पत्थर हाथी दात और मिट्टी की मूर्तिया बनाते थे। इस समय स्त्रियों की मूर्तियां बहुत अधिक बनाई गई थी जिसमें उनके स्तन और पेट को बडा दिखाया गया था।

3. चित्र कला—इस काल का मनुष्य चित्रकला मे भी बहुत रुचि रखता था। उस समय गुफाओ के भीतर, औजारो और हथियारो पर पशुओ के जो चित्र बनाये गये हैं वे बहुत ही सुन्दर हैं। स्पेन की गुफा म से भैसे का जो रगीन चित्र मिला है वह उस काल का सबसे सुन्दर चित्र माना जा सकता है। विल डूरा ने इन चित्रो की प्रशसा मे लिखा है कि बारह सिगा भालू, अश्व आदि पशुओं के ये 'चित्र कोमलता, शक्ति और निपुणता से इतने परिपूर्ण है कि उनको यह दु खद विचार उत्पन्न होता है कि मनुष्य ने कम से कम इस क्षेत्र म मानव इतिहास के सुदीर्घ काल म अधिक उन्नति नही की थी।'

इस काल के अन्त तक मनुष्यो के नग्न चित्र बनने शुरू हो गये थे। उन चित्रों मे भूरे, लाल व पीले रगो का प्रयोग भी किया जाता था। स्पेन व फ्रास की गुफाओं से उस काल के जो चित्र प्राप्त हुए हैं उनका रग अभी तक वैसा ही है।

प्रो० त्रिपाठी व मालवीय का मानना है कि 'मनुष्य ने इस युग मे कुछ उन आवश्यक गुणो को प्राप्त कर उन अनुकूल परिस्थितियो का निर्माण किया, जिसके बिना किसी भी प्रकार की उन्नति सभव नही थी।''

—: विषय सूची :—

अध्याय 1

प्रागेतिहासिक काल का मानव

मनुष्य ने पृथ्वी पर अपनी उत्पत्ति के समय से ही निरन्तर विकास किया है, यद्यपि उसके मार्ग में अनेक कठिनाईया भी आई लेकिन उसने उनका बडी बुद्धिमता से समाधान किया और आज भी निरन्तर विकास की ओर बढता जा रहा है। प्रश्न यह उठता है कि मनुष्य ने किस प्रकार विकास किया, किस प्रकार जगली अवस्था से वह सामाजिक बना। मानव जाति के विकास की इस कहानी को ही प्रागेतिहासिक काल के नाम से इतिहास मे जाना जाता हैं।

मनुष्य का उत्कर्ष—

पृथ्वी पर मनुष्य के जन्म के बारे में अलग-अलग विद्वानों ने अलग अलग मत दिये है, परन्तु डारविन के विकासवादी सिद्धान्त को ही ज्यादा सही माना जाता है। विद्वानों का यह मानना है कि प्रारम्भ मे पृथ्वी की जलवायु जीव की उत्पत्ति के अनुकूल नहीं थी क्योंकि तापमान बहुत अधिक था। इसलिये यह युग जीव विहीन युग के नाम से जाना जाता है।

- डारविन के अनुसार सर्व प्रथम पानी मे जीव का जन्म हुआ। इसके पश्चात् अंडों के द्वारा बड़े बड़े जीवो की उत्पत्ति हुई। ये जीव पेट के बल पर रेंगा करते थे। इन रेंगने वाले जीवो के काल को "डाइनोसोर का काल" कहा जाता है। धीरे-धीरे जीव का विकास होता चला गया। इस अवधि म वह विभिन्न अवस्थाओं मे गुजरा। ऐसा माना जाता है कि वनमानुषों से मनुष्य की उत्पत्ति हुई। इस युग को प्रागेतिहासिक के नाम से जाना जाता है।

प्रागेतिहासिक काल का विभाजन

विद्वानों का यह मानना है कि पांच लाख वर्ष पूर्व से लेकर दस हजार वर्ष पूर्व तक का जो काल है वह इतिहास में "प्रागेतिहासिक काल" के रूप मे प्रसिद्ध है। 19वीं और 20वीं शताब्दी में विश्व के भिन्न भागों से खुदाई मे जो पाषाण के औजार प्राप्त हुए हैं उसके आधार पर इस काल का निम्न प्रकार से विभाजन किया जा सकता है:—

1. प्राचीन पाषाण काल
2. पूर्व पाषाण काल
3. उत्तर पाषाण काल

1. प्राचीन पाषाण काल

(i) **औजार और शस्त्र**—इस युग के औजार और शस्त्र देखने से पता चलता है कि मनुष्य इनको बनाने मे दक्ष नही था। वह पशुओ का शिकार करने के लिये तथा उनसे अपनी रक्षा करने के लिये पत्थर को नुकीला बना लेता था। ताकि वह हथियार का काम कर सके। प्रोफेसर ल्यूकस ने इस काल का समय पाच लाख वर्ष पूर्व से लेकर एक लाख वर्ष पूर्व तक का माना है।

(ii) **निवास स्थान**—इस युग मे मनुष्य इधर-उधर घूमता फिरता था। उसकी कोई स्थायी मकान नही था। वह शिकार की तलाश मे एक स्थान से दूसरे स्थान तक भ्रमण किया करता था।

(iii) **अग्नि का आविष्कार**—इस काल मे मनुष्य ने अग्नि का आविष्कार कर लिया था। प्रोफेसर ल्यूकस ने मानव जाति के विकास के इतिहास म अग्नि का *आविष्कार करना एक महत्वपूर्ण घटना माना है।* इस *आविष्कार के बाद मनुष्य* ने पशुओ के मास को भून कर खाना शुरू कर दिया।

2. पूर्व पाषाण काल

विद्वानो ने पूर्व पाषाण काल का प्रारम्भ तीस हजार वर्ष पूर्व माना है। इस काल के मानव की कमर भुकी हुई थी, इसलिये वह जल्दी चलने मे असमर्थ था—

(i) **औजारो के क्षेत्र में प्रगति**—इस काल के फ्रांस और जर्मनी से प्राप्त औजारो को देखने से पता चलता है कि मनुष्य ने औजारो के क्षेत्र मे काफी प्रगति कर ली थी। इस काल के प्रमुख औजार मुठ्ठी वाली कुल्हाडी, चाकू, बर्छी आदि थे। इतना ही नही वह हड्डियो से भी बहुत अच्छी अच्छी सूइया बनाता था।

(ii) **परिवार का स्वरूप**—इस काल मे मनुष्य समूह बनाकर इधर उधर भ्रमण किया करते थे। प्रत्येक समूह का एक मुखिया हुआ करता था उसकी आज्ञा का पालन करना प्रत्येक व्यक्ति का कर्तव्य था। मुखिया समूह के सभी व्यक्तियो के *लिये भोजन की व्यवस्था करता था और उनकी रक्षा करता था। यदि समूह* का कोई भी व्यक्ति मुखिया बनना चाहता तो उसे मुखिया के साथ लडना पडता था और उन दोनो मे से जो जीतता था वही मुखिया कहलाता था। समूह की व्यवस्था ने आगे चलकर पारिवारिक जीवन की नीव रखी।

जर्मनी के नियण्डर्थल *जाति मे किसी व्यक्ति की मृत्यु होने पर* उसके शव को जमीन मे गाड देते थे और उसके साथ भोजन और हथियार भी रख देते थे ताकि उसे अगले जन्म मे किसी प्रकार की कठिनाई का सामना नही करना पड़े। इससे यह पता चलता है कि वे मनुष्य के पुनर्जन्म मे विश्वास करते थे।

(iii) धार्मिक विश्वास—

इस काल मे मनुष्य प्राकृतिक शक्तियो और पशुओकी उपासना करता था। इस काल का मनुष्य यह जानता था कि मृत्यु के पश्चात् मनुष्य परलोक मे जाता है। इसलिये मृतक व्यक्ति के शव को लाल रग मे रग देते थे, ताकि उसके शरीर मे खून का सचार फिर से शुरू हो जायेगा और उसके साथ भोजन हथियार भी गाड देते थे ताकि परलोक मे उसके काम आयेगा। प्रोफेसर ल्यूकस का मानना है कि इसी काल म धार्मिक विश्वासो की नीव रखी गई।

(iv) खानपान एव वेश भूषा—इस काल का मनुष्य पशुओ और मछली का मास भूनकर खाता था। इसके अलावा वह पेड पौधो की जडे और बीज भी खाता था। इस काल म स्त्रिया छाल से अपना शरीर ढक लिया करती थी और पुरुष खाल को सूई से सीकर उसके वस्त्र तैयार करने लग गये थे।

(v) कला—

1 सगीत कला—इस युग मे सगीतकला के क्षेत्र मे बहुत अधिक विकास हुआ। इसकाल का मनुष्य सगीत कक्षा मे बहुत रुचि रखता था। उस समय वादय यन्त्र हडडी के बनाये जाते थे। स्पष्ट हैं कि इस युग के मनुष्यो की सगीत के क्षेत्र मे बहुत रुचि थी।

2 मूर्ति कला—इस युग मे मूर्ति कला के क्षेत्र मे भी बहुत विकास हुआ। इस काल के लोग पत्थर हाथी दाँत और मिट्टी की मूर्तिया बनाते थे। इस समय स्त्रियो की मूर्तियाँ बहुत अधिक बनाई गई थी जिसमें उनके स्तन और पेट को बडा दिखाया गया था।

3. चित्र कला—इस काल का मनुष्य चित्रकला मे भी बहुत रुचि रखता था। उस समय गुफाओ के भीतर, औजारो और हथियारो पर पशुओ के जो चित्र बनाये गये हैं वे बहुत ही सुन्दर हैं। स्पेन की गुफा मे से भैसे का जो रगीन चित्र मिला है वह उस काल का सबसे सुन्दर चित्र माना जा सकता है। विल डू रा ने इन चित्रो की प्रशसा मे लिखा है कि बारह सिगा भालू, अश्व आदि पशुओ के ये 'चित्र कोमलता, शक्ति और निपुणता से इतने परिपूर्ण हैं कि उनको यह दु खद विचार उत्पन्न होता है कि मनुष्य ने कम से कम इस क्षेत्र मे मानव इतिहास के सुदीर्घ काल म अधिक उन्नति नही की थी।'

इस काल के अन्त तक मनुष्यो के नग्न चित्र बनने शुरू हो गये थे। उन चित्रों मे भूरे, लाल व पीले रगो का प्रयोग भी किया जाता था। स्पेन व फ्रास की गुफाओ से उस काल के जो चित्र प्राप्त हुए हैं उनका रग अभी तक वैसा ही है।

प्रो० त्रिपाठी व मालवीय का मानना है कि 'मनुष्य ने इस युग मे कुछ उन आवश्यक गुणो को प्राप्त कर उन अनुकूल परिस्थितियो का निर्माण किया, जिसके बिना किसी भी प्रकार की उन्नति सभव नही थी।''

इस काल के अवशेष भारत मे काश्मीर मे पुन्छ के क्षेत्र मे तथा मद्रास मे पल्लवरम के क्षेत्र मे मिले है।

3. उत्तर पाषाण काल

इस काल मे मानव ने बहुत अधिक विकास किया। प्रोफेसर एच० जी० वेल्स के अनुसार इस काल की प्रमुख विशेषताएं निम्न थी—

(i) **औजार**—इस काल मे मनुष्य ने पत्थर के जो औजार बनाये थे व काफी चमकीले थे। इनसे वह शिकार करता था। उस समय के प्रमुख औजार कुल्हाडिया, हसिया, सडासी आदि थे।

(ii) **कृषि**—इस काल का सबस महत्वपूर्ण आविष्कार *कृषि था*। इस समय मनुष्य हल की सहायता स कृषि का कार्य करता था। जे० ई० स्वेन का मानना है कि "इस युग की मुख्य विशेषता कृषि करना" पेरी का मानना है कि सबसे पहले कृषि का कार्य नील नदी की घाटी में शुरु हुआ जबकि रूसी विद्वान वेवीलोन का मानना है कि सबसे पहले कृषि का कार्य अफगानिस्तान तथा पश्चिमी चीन मे शुरु हुआ।

(iii) **मिट्टी के बर्तन बनाना**—इस काल के मनुष्य ने हाथ स मिट्टी के बर्तन बनाने शुरू कर दिये थे और कुम्हार के चाक का भी आविष्कार कर दिया था।

(iv) **पशुपालन**—इस काल के मनुष्य ने सबसे पहले कुत्ते को अपना पालतु पशु बनाया। डा० गोयल ने लिखा है कि 'कुत्ता मनुष्य का सबसे पुराना पशु मित्र है। यह पहला पशु है जिसे मनुष्य पालतु बनाने म समर्थ होता है।[1] इसके अतिरिक्त उसने *गाय*, बकरी, कबूतर भेड, आदि को भी पाल लिया।

(v) **धातु युग**—इस काल म मनुष्य का धातु ज्ञान बहुत बढ गया। जब प्रारम्भ मे उसने सोने की चमक देखी तो वह इसकी ओर आकर्षित हुआ परन्तु उसे नरम वस्तु समझकर छोड दिया।

(i) **ताम्र काल**—इस काल के मनुष्य ने तांबे के हथियार बनाने शुरू कर *दिये क्योंकि यह धातु बहुत ही कठोर थी। इसलिये अधिकाश विद्वान इस काल को* ताम्र काल के नाम से पुकारते हैं। इसने मानव जीवन को बहुत प्रभावित किया। इतिहासकार सेबाइन ने लिखा है कि "पाषाण युग से धातु युग मे स्थानान्तरण मानव इतिहास मे एक महत्वपूर्ण मार्ग दर्शन चिन्ह अंकित करता है।"[2]

(ii) **कांस्य युग**—मनुष्य ने तांबे और टिन को मिश्रित किया जिससे एक नई धातु कांसा तैयार हुई जो तांबे से अधिक कठोर थी अब मनुष्य ने इस धातु के

---

1. डा० गोयल—विश्व की प्राचीन सभ्यताएं पृष्ठ 17
2. सेबाइन—ए हिस्ट्री ऑफ वर्ल्ड सिवलीजेशन पृष्ठ 33

हथियार बनाने शुरू कर दिये। इसलिये इस युग को कास्य युग के नाम से जाना जाता है। इस धातु का सर्व प्रथम प्रयोग मिश्र, सुमेरिया तथा सिन्धु में किया गया था।

(iii) लोह युग—इस काल में मनुष्य ने लोह का आविष्कार किया। इस लिये लोगो ने सारे उपकरण और शस्त्र लोहे के बनाने शुरू कर दिए।

अधिकाश विद्वानो का मानना है कि ईसा से छठी शताब्दी पूर्व धातु युग शुरू हुआ। इसी समय नदियो के किनारे सभ्यताए विकसित हो रही थी। धातु और लोह युग के प्रारम्भ के साथ ही प्रागैतिहासिक काल की समाप्ति होती है जो प्रागैतिहासिक युग कहलाता है।

डा० आर० पी० त्रिपाठी का मानना है कि 'लोहे का पता आज से पाच हजार वर्ष पहले लग गया था परन्तु उसे कम व्यय से गलाने की क्रिया का रहस्य अनुमानत ईसा से डेढ हजार वर्ष पूर्व ज्ञात हुआ।''

सभ्यता का वर्णन—

1. आवास व्यवस्था—कृषि कार्य और पशुपालन के लिये अब मनुष्य ने भ्रमणकारी जीवन को छोडकर नदी के किनारे पर मकान बनाकर रहना शुरू कर दिया था। इस काल के अन्त तक उसने पत्थर के मकान बनाने शुरू कर दिए थे। स्विटजरलैंड और एशिया माइनर से उस काल के पत्थर के मकानो के खडहर बहुत सख्या मे मिले हैं।

2 सामाजिक स्थिति—अब कई परिवार नदियों के किनारे पर मकान बनाकर रहने लगे। इससे छोटे-छोटे गावो का निर्माण होने लगा। इतना ही नही इस काल मे सामुदायिक कृषि भी होनी थी।

3 राजनैतिक अवस्था—उस समय प्रत्येक नदी के किनारे पर रहने वाले व्यक्तियो ने अपने अपने कबीलो का निर्माण किया। कबीले का एक सरदार होता था जो अपने कबीले के सदस्यो की रक्षा करता था।

4. धार्मिक जीवन—इस काल मे धार्मिक विचारो का विकास हुआ। मनुष्य ने प्रकृति की विविध शक्तियो की पूजा करना शुरू किया और उनके लिये मन्दिरो का निर्माण किया जाने लगा। मिश्र, सीरिया और ईरान मे अनेक स्त्रियो की मूर्तिया प्राप्त हुई हैं जिनको देखने से पता चलता है कि इस काल मे मनुष्य "मातृ देवता" की उपासना किया करते थे। इस काल मे मनुष्य जादू और टोने मे भी विश्वास रखता था। देवताओ को खुश करने के लिये पशु बलि भी दी जाती थी।

5. कला—इस काल मे भवन निर्माण कला के क्षेत्र मे बहुत विकास हुआ। इस समय मृत्यु के बाद मनुष्य को गाड दिया जाता था उसके साथ भोजन और

हथियार आदि भी रख दिये जाते थे। फिर, उसकी यादगार में उस पर स्मारक बना दिया जाता था। ये स्मारक उस काल की भवन निर्माण कला के श्रेष्ठ नमूने हैं। इंगलैंड के सेलिसबरी में भी ऐसे कई स्मारक मिले हैं। जहा पर पहले मनुष्य धार्मिक त्यौहार मनाया करते थे। इस काल में विज्ञान के क्षेत्र में भी बहुत विकास हुआ। मनुष्य इस समय सूर्य, चन्द्रमा और तारों को देखकर मौसम का पता लगा लेता था।

भारत में उत्तर पाषाण काल के अवशेष निम्न स्थानों पर प्राप्त हुए :—

1. मैसूर के चित्तल दुर्ग जिले में चन्द्र बल्ली तथा ब्रह्मगिरी।
2. दक्षिण भारत में स्थित बेल्लारी
3 कश्मीर म नूनर
4 उत्तर प्रदेश म स्थित मिरजापुर

6 **यातायात के साधनों का विकास**—इस काल में यातायात के साधनों का विकास हुआ । मनुष्य डोंगी से नदी के एक किनारे से दूसरे किनारे पर पहुंचता था। धीरे-धीरे उसने पालदार नावें बनाना सीख लिया और फिर उनके द्वारा नदी पार करने लगा। इसके अलावा मनुष्य ने पहिये का आविष्कार भी किया।

7 **उद्योग धन्धों का विकास**—इस काल में मनुष्य ने रुई तथा रेशम के कपड़े बनाना शुरू कर दिया था और फिर उनको रंग में डालकर रंग लिया करता था। इस समय बढ़ई गिरी के उद्योग भी शुरू हो गये थे। इस प्रकार मनुष्य निरन्तर विकास करता गया। सेवाइन ने लिखा है कि "पूर्व मानव ने उन शस्त्रों का निर्माण किया जो औद्योगिक क्रान्ति तक प्रयोग में आते रहे। सामाजिक व राजनीतिक संगठन बनाया और एक आर्थिक ढांचा तैयार किया, जिसमें कृषि और पशुपालन का विकास हुआ। भाषा, लिपि धर्म और कला सभी लिखित इतिहास से पूर्व एक विकसित प्रमाण बन चुके थे।"[1]

निष्कर्ष—

यह स्पष्ट है कि पाषाण काल के मानव का सभ्यता के विकास में बहुत महत्वपूर्ण योगदान रहा। उसने धीरे-धीरे अनेक महत्वपूर्ण आविष्कार किए और परिवार, समाज राजनीति और धर्म की नींव रखी। हम अपने उन पूर्वजों का आभार कभी नहीं भूल सकते, जिन्होंने उन कठिन परिस्थितियों में प्रकृति तथा पशुओं पर विजय प्राप्त की और हमारा जीवन सुखमय बना दिया।

प्रस्तावित सन्दर्भ पुस्तकें —

1. डा० गोयल—विश्व की प्राचीन सभ्यताएं
2. सेवाइन—ए हिस्ट्री आफ वर्ल्ड सिवलीजेशन
3. मैकनेल बर्नस—वेस्टर्न सिवलीजेशन
4. दिवाकर वी एम.—विश्व का ईतिहास

1. सेवाइन—p हिस्ट्री आफ वर्ल्ड सिवलीजेशन पृष्ठ 47,

अध्याय 2

मिश्र की प्राचीन सभ्यता

विश्व की सबसे प्राचीन सभ्यताए सिन्धु नदी, नील नदी, दजला तथा फरात नदियो की घाटियो मे ही विकसित हुई है। मिश्र की प्राचीन सभ्यता का विकास उत्तरी अफ्रीका की नील नदी घाटी मे हुआ था। नील नदी ने मिस्र के प्रदेश को उपजाऊ बनाया है, जिसके कारण मिश्र एक कृषि प्रधान देश बन सका। प्राचीन काल मे नील नदी मे बाढ आ जाया करती थी। विल डयुरेन्ट के अनुसार यह बाढ 100 दिन तक रहती थी। इस समय उपजाऊ मिट्टी नदी के किनारो से दूर दूर तक फैल जाती थी, जहा बाद मे बहुत अच्छी खेती की जाती थी इतिहासकार जार्ज फ्लेन का मानना है कि देश की सम्पन्नता और समृद्धि नील नदी की बाढ पर निर्भर करती थी।

विल डूरेन्ट ने लिखा है कि "अपनी सुदृढता और एकता की दृष्टि से, अद्भुत निर्माण शिल्प और कलागत सफलता की दृष्टि से मिश्र की सभ्यता सभवत. इस पृथ्वी पर स्थापित होने वाली सभ्यताओ मे महानतम थी। यदि हम उसकी बराबरी कर सके तो बहुत बडी बात होगी।[1]

सेवाइन ने लिखा है कि "प्राकृतिक परिस्थितियो को पालने मे नील नदी की घाटी मे इस सभ्यता का पालन पोषण हुआ।"[2]

वे लिखते हैं कि "महान नदी बजर चट्टानो मे से सकडी उपजाऊ घाटी बनाती है, अपने साथ उपजाऊ मिट्टी लाती है जो इसके किनारो को उपजाऊ बना देती है और अन्त मे अपनी सालाना बाढ़ से सिचाई के निपुण साधन जुटाकर बाशिन्दो का जीवन सम्पन्न व सुखी बना देती है।"[3]

बाढ़ के समय नदी के पानी का रग हरा हो जाता था इसके अतिरिक्त एक महत्वपूर्ण बात यह थी कि नदी मे बाढ़ ग्रीष्म ऋतु के अन्त मे ही आती थी। नील नदी के बाढ़ पर नियन्त्रण पाने के लिये अनेक स्थानो पर बांध बनाये गये तथा सिचाई के लिये नहरे निकाली गयी। धीरे-धीरे यहा पर जनसख्या मे वृद्धि होती गई और सभ्यता का विकास होता गया। मिश्र के सभी प्राचीन नगर सिकदरिया,

1 विल डुरेन्ट सभ्यता की कहानी पृष्ठ 201
2 सेवाइन "हिस्ट्री आफ वर्ल्ड सिवलीजेशन पृष्ठ 50
3, बीच, डबल्यू एन-हिस्ट्री आफ दी वर्ल्ड पृष्ठ 35

काहिरा मेम्फीम (जो पहले मिश्र की राजधानी थी) और कारनाक के खण्डहर आदि इसी नील नदी के तट पर बसे हुए हैं। इतिहासकार डेविस का यह कथन सत्य प्रतीत होता है कि "नील नदी समस्त युगों में मिश्रवासियों के जीवन तथा उनकी सम्पन्नता का साधन ही है। यही कारण है कि मिश्र जैसा रेगिस्तानी प्रदेश इस नदी के कारण हमेशा हरा भरा दिखाई देता है। यहां के निवासी इस नदी की उपासना करते है। इसलिये यूनानी इतिहासकार हेरोडोटस ने मिश्र को 'नील नदी का वरदान कहा है।' हेज तथा मून ने मिश्र को नील नदी की पुत्री माना है।' जे० एल० मायर्स का मानना है कि मिश्र नील नदी का वरदान है और नील नदी की समता पृथ्वी में कोई अन्य नदी नहीं कर सकती।" पंडित जवाहर लाल नेहरू ने लिखा है कि "नील नदी की सभ्यता मानव विकास के हार का एक महकता हुआ फूल है।"[1] बर्नस ने लिखा है कि "आधुनिक संसार में मिश्र के महत्व को पीछे छोडने वाली बहुत कम प्राचीन सभ्यताएं है।[2] प्लेट व जीन ने लिखा है कि "प्राचीन मिश्र ने यह सिद्ध कर दिया है कि मनुष्य क्या कुछ नहीं कर सकता,"[3] वीच ने लिखा है कि 'भौगोलिक प्रभाव में" मिश्र का इतिहास कम खण्डित और वहां के लोगों का रक्त दूसरे देशों से कम मिश्रित है क्योंकि यह देश अन्दर से बन्द था।'[4]

मिश्र की प्राचीन भौगोलिक स्थिति—

विश्व की प्राचीन विकसित सभ्यताओं में मिश्र का पहला स्थान है। यह देश अफ्रीका के उत्तर पूर्वी भाग में नील नदी की घाटी में बसा हुआ है। इसके पश्चिम में सहारा का रेगिस्तान, दक्षिण में भयंकर जंगल, उत्तर में भूमध्यसागर पूर्व में लाल सागर है। यहां की जलवायु और भौगोलिक स्थिति ने यहां के निवासियों को बिना किसी बाहरी हस्तक्षेप के, शान्तिपूर्ण ढंग से सभ्यता के विकास का मौका दिया।

सयभ्ता का काल—

पेरी का मानना है कि "मिश्र की सभ्यता विश्व की अति प्राचीन सभ्यता है। उनके अनुसार पृथ्वी पर मिश्र में ही सर्व प्रथम सभ्यता का विकास हुआ और वहां से दुनिया के अन्य लोगों ने सभ्यता सीखी थी।"

अधिकांश इतिहासकार पेरी के कथन को पूर्ण रूप से स्वीकार नहीं करते हैं लेकिन इस बात को सही मानते हैं कि पश्चिमी देशों में मिश्र की सभ्यता सबसे

1 नेहरू, जवाहरलाल विश्व इतिहास की झलक पृष्ठ 21

2 बर्नस बर्नस-वेम्टर्न सिवलीजेशन्स पृष्ठ 59

3 प्लेटवजीन विश्व का इतिहास पृष्ठ 25

4 वीच—डब्ल्यू० एन हिस्ट्री आफ दी वर्ल्ड पृष्ठ 36

प्राचीन है। इतिहासकार जे० सी० रेविल का मानना है कि 3000 ई० पू० से 2000 ई० पू० के बीच में ही मिश्र ने रहने की कला तथा संस्कृति को अफ्रीका तथा पूर्वी मध्य सागरीय प्रदेशों में फैलाने में सर्वाधिक उन्नति की।"

अधिकांश इतिहासकार यह मानते हैं कि पाश्चात्य देशों में जब मिश्र तथा मैसोपोटेमिया की सभ्यता का विकास हो रहा था, उस समय पूर्व में चीन तथा भारत की सभ्यताएं विकसित हो रही थी, किन्तु इस सत्यता को मानने से इन्कार नहीं किया जा सकता कि मिश्र की सभ्यता संसार की अति प्राचीन सभ्यता है।

मिश्र के इतिहास जानने के स्रोत—मिश्र के प्राचीन इतिहास जानने के प्रमुख साधन निम्न लिखित हैं—

1 हार्वर्ड कार्टर नामक एक अंग्रेज पुरातत्ववेता ने 1922 में सम्राट तूतखामेन के पिरामिड के एक गुप्त द्वार की खोज की। वहां पर बहुत सा सामान प्राप्त हुआ जिससे उस समय की सभ्यता और संस्कृति के बारे में जानकारी मिली।

2 फ्रांस के शासक नेपोलियन बोनापार्ट ने जब 1798 ई० में मिश्र पर आक्रमण किया, तब उसे नील नदी किनारे पर रोसेटा नामक स्थान पर एक प्रस्तर शिला लेख मिला। इससे मिश्र के टोलमी राजा के शासन प्रबन्ध के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त होती है।

3 मिश्र के लक्सर नगर के विशाल मन्दिर तथा मूर्तियाँ और काहिरा के पास गिजा के पिरामिड इतिहास जानने के महत्वपूर्ण साधन हैं।

4 मनथो जो मिश्र के राजा टोलमी का दरबारी इतिहासकार था, उसने मिश्र के राजाओं की वंशावली को तैयार किया। यद्यपि उसकी आधी सूची नष्ट हो गई है, परन्तु शेष आधी सूची से मिश्र का इतिहास जानने में महत्वपूर्ण सहायता मिलती है।

5 यूनानी इतिहासकार हेरोडोटस तथा रोमन इतिहासकार डायोडोरस ने मेनेथो को आधार मानकर मिश्र के इतिहास के बारे में लिखा है। इनके वर्णन में कल्पना का मिश्रण अधिक है। फिर, भी इन इतिहासकारों का वर्णन मिश्र के इतिहास को जानने के लिये बहुत उपयोगी है।

6 प्राचीन मिश्र का साहित्य जो कि ताम्र पत्रों और कागजों पर अंकित है, उससे मिस्र के साहित्य के बारे में बहुमूल्य जानकारी प्राप्त होती हैं।

मिस्र की सभ्यता का राजनीतिक इतिहास—

प्रो० फिलन्डर्स पेट्री का मानना है कि मिस्र की सभ्यता का विकास ईसा से दस हजार वर्ष पूर्व हो गया था। उस समय मिश्र छोटे छोटे राज्यों में बटा हुआ था। ईसा से 3400 वर्ष पूर्व मीनीज नामक व्यक्ति ने सम्पूर्ण मिश्र को अपने अधीन कर केन्द्रीय शासन लागू किया। शासन व्यवस्था का आधार राजतन्त्र को

बनाया गया। मीनीज ने मेम्फीज नगर को मिश्र की राजधानी बनाया। इतिहासकार डेविस का मानना है कि "मीनीज से मिश्र मे वशीय शासन चालू होता है और वह इस व श का प्रथम शासक था।"

मिश्र का राजा फराओ कहलाता था। फराओ का अर्थ है "सर्वोच्च भवन, जहा पर कि ईश्वर निवास करता है" कहने का मतलब यह है कि मिश्र का फराओ सर्व शक्तिशाली हुआ करता था। मिश्र मे लगभग 30 राजवशो ने शासन किया और 332 ई० पू० मे सिकन्दर ने इस पर अधिकार कर लिया।

मिश्र के राजनीतिक इतिहास को तीन भागों मे बाटा जा सकता है—

1 पिरामिड युग 3400 ई० पूर्व से 2160 ई० पूर्व

2 सामन्तवादी युग 2160 ई० पू० से 1580 ई० पूर्व

3. साम्राज्यवादी युग 1580 ई० पूर्व० से 650 ई० पूर्व

1. पिरामिड युग (3400 ई० पूर्व से 2160 ई० पूर्व)—

इस युग मे मिश्र के फराओ के द्वारा विशाल पत्थरो की गगन चुम्बी पिरामिडो का निर्माण करवाया गया। मिश्र की राजधानी काहिरा के दक्षिण मे मेम्फीज नगर के पास आज भी 70 पिरामिड बने हुए है। इनसे हम मिश्र की सास्कृतिक प्रगति के बारे मे जानकारी प्राप्त होती है।

पिरामिड निर्माण के उद्देश्य—

1 **धार्मिक उद्देश्य**—पिरामिडो के निर्माण का मुख्य उद्देश्य धार्मिक था। मिश्र वासियो का यह विश्वास था कि प्रत्येक मनुष्य के शरीर म आत्मा ('का') रहती है, जो मनुष्य की मृत्यु के पश्चात् भी नही मरती। मृत्यु के बाद भी प्रत्येक मनुष्य को दूसरे लोक मे इसी प्रकार का जीवन व्यतीत करना पडता है। इसलिये मृत मनुष्य की कब्र म उसका धन, सामग्री, हथियार आदि वस्तुए गाड दिया करते थे। फराओ के साथ तो उसके दासो को भी गाड दिया जाता था ताकि वे परलोक म भी उसकी सवा कर सके। इन कब्रो मे मृत मनुष्य के शव (ममी) को मसाला मे रखा जाता था। फराओ की कब्रो पर विशाल भवन निर्मित किये जाते थे जिनको पिरामिड कहते हैं। पिरामिड मे आत्मा को सन्तुष्ट करने के लिय उनकी दीवारो पर सुन्दर चित्रो का निर्माण भी किया जाता था। सबसे ऊचा पिरामिड मिश्र के चौथे व श के फराओ चियोप्स ने 2900 ई० पूर्व मे गिर्जा के समीप बनवाया। इसकी ऊचाई 476 फीट थी।

इतिहासकार हेरोडोटस का मानना है कि "गीजा के पिरामिड के निर्माण मे 20 वर्ष लगे और एक लाख बीस हजार व्यक्तियो ने बीस वर्ष तक काम करके इसका निर्माण किया था।"

गिजा का पिरामिड विश्व के सात आश्चर्य जनक चीजो मे से एक माना

इतना अधिक नहीं किया।'[1] सेबाइन ने भी लिखा है कि 'प्रथम युग की विशेष प्राप्ति पिरामिडों का निर्माण है। यह केवल जन शक्ति के प्रयोग का नमूना मात्र न होकर फराओ के अधीन शक्ति का प्रतिबिम्ब है।'[2]

(2) रोजगार देने के लिये—मिश्र के फराओ नील नदी में बाढ़ के समय पिरामिडों का निर्माण करवाते थे ताकि बाढ़ से पीड़ित जनता को रोजगार मिल सके। इतिहासकार बेन फिशर का मानना है कि "बहुत से मनुष्य पिरामिडों को झूठे अभिमान की स्मृति समझते हैं परन्तु सम्भवत ये उन लोगों को रोजी देने के लिये बनाये जाते थे, जबकि नील नदी में बाढ़ होती थी और खेत पानी से पूर्ण रहते थे।"

किन्तु बाद में वे अपनी जनता से बेगार लेकर पिरामिडों का निर्माण करवाने लगे। जनता उसका विरोध नहीं कर सकती थी क्योंकि मिश्र के फराओ निरंकुश थे।

(3) संस्कृति के स्थायित्व में विश्वास—मिश्र के फराओ ने अपनी सभ्यता तथा संस्कृति को दीर्घायु बनाने के लिये इन पिरामिडों का निर्माण करवाया था। वे अपनी संस्कृति के स्थायित्व में विश्वास करते थे। हर्बर्ट जे० मूलर का मानना है कि 'पिरामिड' मिश्र वासियों के दीर्घ जीवी विचारों के प्रतीक है।'

(4) सूर्य को प्रसन्न करना—मिश्र के शासक सूर्य को अपना इस्ट देवता मानते थे। इसलिये अधिकांश विद्वानों का यह मानना है कि सूर्य को प्रसन्न करने के लिये विशाल पिरामिडों का निर्माण करवाया गया होगा। फराओ यह मानते थे कि पिरामिड सबसे ऊँचे होने के कारण सूर्य की किरणें सबसे पहले इनके ऊपर आयेगी।

स्फिक्स—गिजे के पिरामिड के पास एक स्फिक्स है जिसका सिर मनुष्य की तरह और शरीर शेर जैसा बना हुआ है। इसकी लम्बाई 50 गज तथा ऊँचाई 25 गज है। मिश्र के निवासी इसे प्राचीन काल में 'हू' कह कर पुकारते थे जिसका मतलब "सुरक्षा का चौकीदार" होता है लेकिन आधुनिक काल में वे इसे "अब्बुल हाल' के नाम से पुकारते हैं जिसका अर्थ होता है 'भय का पिता।'

पिरामिड युग की शासन व्यवस्था—

इस युग में फराओ पूर्ण रूप से निरंकुश होता था और वह दैवी सिद्धान्त में विश्वास करता था। राज्य की समस्त शक्ति उसके हाथों में केन्द्रित थी। राज्य में शान्ति व्यवस्था बनाये रखना तथा प्रजा हितकारी कार्य करना आदि उसके कर्तव्य थे। प्लेट व जीन ने लिखा है कि "कानून व्यवस्था व समृद्धि के दृष्टिकोण

---

1. विल डूरेन्ट—आवर ओरियेंटल हैरिटेज पृष्ठ 149
2. सेबाइन—ए हिस्ट्री आफ वर्ल्ड सिविलीजेशन पृष्ठ 50-51
3. हर्बर्ट जे० मूलर—दी यूजेज आफ दी पास्ट

से बहुत उन्नति हुई, अनेक मिश्रवासियों के रहन-सहन का 'स्तर उन्नत' हो गया। फराओ ने अपने कृपा पात्र कुलीन सामन्तों को बड़ी बड़ी जागीरें देकर मानो पुरातन राजत्व के मृत्यु दण्ड आदेश पर हस्ताक्षर कर दिये।"[1]

2 सामन्तवादी युग—(2160 ई० पूर्व से 1580 ई० पूर्व)

इस युग म मिश्र अनेक छोटे छोटे राज्यों मे विभाजित हो गया और राज्य की शक्ति सामन्तों के हाथ मे आ गई। ये सामन्त आपस मे लड़ते रहते थे और जनता पर अत्याचार भी बहुत करते थे। ऐसे समय में सीरिया के हिक्सास लोगों ने मिश्र पर अधिकार कर लिया और 200 वर्षों तक उस पर शासन करते रहे। कुछ समय पश्चात् थिब्ज के सामन्त अमोसिस ने हिक्सास लोगों को मिश्र से बाहर निकाल दिया। इस युग म भी मिश्र म कला तथा साहित्य का विकास हुआ।

3 साम्राज्यवादी युग (1580 ई० पूर्व से 650 ई० पू०)

साम्राज्यवादी युग 1580 ई० पूर्व म 650 ई० पू० तक का माना जाता है। इस युग मे निम्न राजाओं का शासन रहा—

(i) अमेन महेत का शासन काल—अमेन महेत ने मिश्र मे सामन्तों की शक्ति को समाप्त कर दिया और उसके स्थान पर सुसगठित शासन व्यवस्था की स्थापना की। इसकी मृत्यु के बाद भी लगभग 500 वर्षों तक इसके वशज मिश्र पर शासन करते रहे। अन्त मे सीरिया के हिक्सास लोगों ने मिश्र पर कब्जा कर लिया।

(ii) आहमोज का शासन काल—फराओ आहमोज ने 1600 ई० पूर्व म हिक्साम जाति को पराजित कर मिश्र पर अधिकार कर लिया। उसने आन्तरिक व्यवस्था मे सुधार किया और सीरिया, सूडान, फिलीस्तीन तथा पश्चिमी एशिया आदि कई देशों पर अधिकार कर लिया। उसके शासनकाल को मिश्र के इतिहास मे स्वर्ण काल के नाम से जाना जाता है क्योंकि उसके समय म साम्राज्य का विस्तार हुआ, कला व विद्या का विकास हुआ और जनता सुखी थी।

(iii) थटमोस प्रथम का शासन काल—थटमोस प्रथम ने 1545 ई० पू० से 1514 ई० पू० तक राज्य किया। इसने पश्चिमी एशिया से अपार धन प्राप्त किया और इसके द्वारा उसने मिश्र म देवालयोंऔर पिरामिडों का निर्माण करवाया। उसने अपने जीवन मे ही अपने दफनाये जाने वाले स्थान पर एक पिरामिड का निर्माण करवा दिया था और उसकी मृत्यु के पश्चात् उसे वहीं दफना दिया गया। आगे चलकर इसके उत्तराधिकारियों को भी वहीं दफनाया गया। अत वहा कई पिरामिड खड़े हो गये और वह स्थान आगे चलकर "राजाओं की घाटी के नाम से प्रसिद्ध हुआ।"

1 प्लेट व जीन-विश्व का इतिहास पृष्ठ 27

(iv) हतशेपसुत व मिश्र की प्रगति—थटमोस प्रथम की मृत्यु के बाद उसकी लड़की हतशेपसुत मिश्र की शासिका बनी। वह विश्व की प्रथम महिला शासिका थी जिसने 1501 ई० पू० से 1479 ई० पू० तक (22 वर्ष तक) शासन किया। हतशेपसुत पुरुषों की भांति रहती थी और नकली दाढ़ी तथा मूँछे भी धारण करती थी। उसके सामन्त उसे पुरुषों की भांति ही सम्बोधित करते थे। हतशेपसुत के शासन काल में व्यापार तथा कला का बहुत अधिक विकास हुआ। उसने अपनी राजधानी कर्नाक में एक नुकीली मीनार का निर्माण करवाया, जिसका शीर्ष भाग सोने और चांदी के पत्रों से बनवाया गया था। इसके शासन काल में शांति और सुव्यवस्था बनी रही। चित्रकला का विकास हुआ और व्यापार में वृद्धि हुई। इसलिए उसका शासन काल मिश्र के इतिहास में स्वर्णयुग के नाम से प्रसिद्ध है।

(v) थटमोस तृतीय का शासन काल—हतशेपसुत की मृत्यु के पश्चात् उसका पति थटमोस तृतीय मिश्र का शासक बना। उसने 1479 ई० पू० से 1447 ई० पू० तक शासन किया। इसने सूडान, सीरिया, फिलिस्तीन आदि देशों पर विजय प्राप्त कर अपने साम्राज्य का विस्तार किया। विजित प्रदेशों में कुशल शासन प्रबन्ध की स्थापना की। उसने अपने साम्राज्य को 55 सूबों में विभाजन कर दिया तथा प्रत्येक सूबे में एक सूबेदार की नियुक्ति की जो वहाँ के शासन प्रबन्ध के कार्य को देखता था। इसके अतिरिक्त उसने दो प्रधान मन्त्रियों तथा सैनिक छावनियों की स्थल सेना को शक्तिशाली बनाया और जल सेना का विकास किया। उसके शासन काल में साम्राज्य का विस्तार हुआ और प्रजा सुख तथा शान्ति पूर्वक जीवन व्यतीत करती थी।। इसके अतिरिक्त चित्रकला का भी बहुत अधिक विकास हुआ।

(vi) आमेन होटेप तृतीय का शासनकाल—इसने 1411 ई० पू से लेकर 1375 ई० पू० तक शासन किया। इसके शासन काल में विद्या और कला के क्षेत्र में बहुत विकास हुआ।

(vii) आमेन होटेप चतुर्थ का शासन काल—आमेन होटेप तृतीय की मृत्यु के पश्चात् उसका लड़का आमेन होटेप चतुर्थ गद्दी पर बैठा। इसने 1375 ई० पू० से 1305 ई० पूर्व तक मिश्र पर शासन किया। गद्दी पर बैठने के बाद उसने अपना नाम अखनतन रखा। इसने बहुदेव वाद की आलोचना की और एकेश्वरवाद के सिद्धान्त को प्रचलित किया लेकिन मिश्र की जनता इसके धार्मिक विचारों को नहीं समझ सकी और उसकी मृत्यु के बाद उसके विचार मिश्र में समाप्त हो गये।

(viii) तूतान्खामेन का शासन काल—अखनतन की मृत्यु के पश्चात् उसका दामाद तूतानखामेन मिश्र का शासक बना। उसने अखनतन के धार्मिक सुधारों को समाप्त करदी और 1234 ई० पूर्व में उसकी मृत्यु हो गई।

धीरे-धीरे 1090 ई० पू० तक मिश्र मे अनेक प्रदेश स्वतन्त्र हो गए थे ऐसे समय मे 332 ई० पूर्व मे यूनान के सिकन्दर ने मिश्र पर अधिकार कर लिया। सिकन्दर की मृत्यु के बाद मिश्र पर टोलमी वश का शासन रहा। टोलमी वश के बाद, रोमनो का, अरबो का फिर अग्रेजों का शासन रहा। इस प्रकार 332 से लेकर 1822 ई० तक मिश्र गुलाम रहा।

मिश्र की सभ्यता एव सस्कृति का वर्णन—

मिश्र की सभ्यता विश्व की अति प्राचीन और उन्नत सभ्यता थी। इसने यूनान राम तथा यूरोप की सभ्यताओं को काफी प्रभावित किया। इस सभ्यता का सक्षेप मे वर्णन निम्न प्रकार से किया जा सकता है —

1. शासन प्रणाली

(i) राजा की स्थिति—मिश्र के फराओ निरकुश शासक थे। उनकी आज्ञा ही कानून थी। राज्य की सारी शक्ति उसके हाथों म केन्द्रित थी। इस समय के राजा दैविक सिद्धान्त मे विश्वास रखते थे। उनकी आज्ञा का विरोध करने का किसी को अधिकार नही था। फराओ को 20 आदमी मिलकर सजा कर तैयार करते थे। उसके बाल बनाने वाला, काजल डालने वाला, नाखून काटने वाला, जूते पहनाने वाले नौकर अलग-अलग होते थे। उनके ऊपर एक अधिकारी ओवरसियर होता था। जब फराओ अपने नौकरों से ऊब जाता था, तब वह नौका विहार का जाता था जहा पर खूबसूरत लडकिया एक बारिक चादर पहनकर उसका मनोरजन किया करती थीं।

(ii) वजीर—फराओं ने अपने प्रशासनिक कार्यों मे सहायता देने के लिये एक वजीर की नियुक्ति कर रखी थी। उसका मुख्य कार्य राजस्व कर वसूल करना, अपीलो पर निर्णय देना, आय तथा व्यय का हिसाब रखना और जनता से राजा के आदेशो का पालन करवाना था।

(iii) सारू—फराओ के दरबार म वृद्ध दरबारियों की एक परिषद होती थी उसे सारू कहा जाता था। इसका मुख्य कार्य राजा को परामर्श देना था लेकिन राजा निरकुश शासक था उसकी सलाह को मानने के लिये बाध्य नही था।

(iv) प्रान्तीय शासन व्यवस्था—फराओ ने राज्य को कई भागो मे बाट दया था। प्रत्येक भाग को नोम तथा उसके शासक को नौर्मार्क कहा जाता था। नोर्मार्क की नियुक्ति फराओ स्वय करता था। उसका मुख्य कार्य राजा के आदेशो का पालन करवाना था।

(v) गावों का प्रबन्ध—गावो का शासन प्रबन्ध सामन्तों के हाथ में था, जिन्हे पुलिस तथा न्याय सम्बन्धी अधिकार दिए गये थे।

(vi) नगरों का प्रबन्ध—प्रत्येक नगर में एक अधिकारी होता था, जिसका मुख्य कार्य राजस्व कर वसूल करता और सरकारी कानूनों का पालन करवाना था।

(vii) न्याय विधान—फराओ न्याय का कार्य करता था। उसके द्वारा मुकदमे का फैसला तीन दिन में कर दिया जाता था। उस समय अपराधी को अंग विच्छेद करना, जुर्माना करना, लाठी से मारना, देश से बाहर निकाल देना, जीवित मनुष्य की ममी बना देना आदि सजाएं दी जाती थी।

2. सामाजिक व्यवस्था

(i) समाज का विभाजन—मिश्र का समाज तीन वर्गों में बटा हुआ था—पहला, उच्च वर्ग था। इस वर्ग में राजा, पुरोहित, सामन्त और राज्य के उच्च पदाधिकारी आते थे।

दूसरा मध्यम वर्ग था जिसमें व्यापारी और शिल्पकार आते थे। तीसरा वर्ग निम्न वर्ग था जिसमें कृषक तथा दास आते थे। उस समय सामन्त कृषकों से भारी कर और बेगार आदि लेकर उनका शोषण करते थे। दासों की भी दयनीय दशा थी। उनके साथ भी अच्छा व्यवहार नहीं किया जाता था।

(ii) स्त्रियों की स्थिति—मिश्र में स्त्रियों को राजनैतिक अधिकार दिये गये थे। मैक्समूलर का मानना है कि "किसी भी प्राचीन या अर्वाचीन समाज में नारी को इतना ऊंचा कानूनी स्तर प्राप्त नहीं था।"

मिश्र में मातृ सत्तात्मक परिवार व्यवस्था थी और सम्पत्ति की उत्तराधिकारी भी स्त्रियां हुआ करती थी। हतशेप सुत तथा क्लीय नामक स्त्रियां मिश्र की शासिका रही। इसलिये इतिहासकार स्वेन का मानना है कि 'समाज में स्त्रियों को जो स्थान मिश्र में प्राप्त था वह तत्कालीन किसी सभ्य देश में नहीं था।"

(iii) विवाह सम्बन्ध—मिश्र में बहु विवाह प्रथा प्रचलित थी लेकिन फराओ और सामन्त ही बहु विवाह किया करते थे अन्य व्यक्ति नहीं। उस समय लड़कियों को अपने पति चुनने की पूर्ण स्वतन्त्रता थी। लड़कियां ही प्रेम की पहल करती थी वे अपने प्रेमी को प्यार भरे पत्र लिखा करती थी जैसे "ओ मेरे सुन्दर मित्र, मेरी इच्छा है कि मैं तुम्हारी पत्नी बनू तुम्हारे धन की स्वामिनी बनू। मिश्र में भाई अपनी सगी बहन से विवाह कर लेता था क्योंकि उसका मानना था कि इससे रक्त शुद्धता बनी रहती है। यानी जब भाई मौजूद है तो दूसरे के साथ शादी कर उसका अशुद्ध रक्त बहिन में क्यों प्रवेश कराया जाये? शादी से पहले लड़के लड़कियों को आपस में मिलने की छूट थी। शादी के समय पुरुष कसम खाता था कि मैं जीवन भर अपनी पत्नी की बात मानूंगा। मिश्र में प्रति वर्ष सबसे सुन्दर नारी को नील नदी में फेंक दिया जाता था ताकि नदी में बाढ़ का प्रकोप न बढ़े। उस समय यदि कोई सुन्दर कन्या झगड़ा करती तो अमीन देवता को उसकी

बली दे दी जाती थी। किसी बालक की मृत्यु होने पर उसके माता पिता को तीन दिन तक उसकी लाश को गोद म लेकर बैठे रहना पडता था। यदि किसी लडकी पर दो भाई मोहित हो जाते थे और लडकी छोटे भाई से शादी करना चाहती, तब भी उसकी शादी बडे भाई से ही की जाती थी। सेवाइन ने मिश्र मे नारी का स्थान बताते हुए लिखा है कि "मिश्र की नारी का जो स्थान था उसकी समानता प्राचीन सभ्यताओं मे कोई दूसरी नही कर सकती थी और आधुनिक समय मे भी कोई उसे पीछे नही छोड सका है।"[1]

(iv) **वस्त्र, आभूषण एवं फैशन**—पुरुष धोती पहनते थे लेकिन लडकिया कमर पर मिट्टी की गोलियो की मालाए पहनती थी। कमर के ऊपर का भाग खुला रहता था। पुरुष अगूठी पहनते थे जबकि स्त्रियाँ जजीर, बाजूबन्द, गले का हार, और कगन पहनती थी। उस समय पुरुष और स्त्रिया दोनो ही अपने सिर के बाल मुडवा लेते थे और फिर बालो को अनेक रगो मे रग कर रगीन बाल अपने सिर पर लिया करते थे। पुरुष दर्पण म देखकर अपने चेहरे पर पाउडर लगाता था। उस समय की स्त्रिया भी ओठो पर लाली लगाती थी और नाखून रगती थी।

(v) **खानपान**—मिश्र के लोग गेहू, जौ, चावल, दूध तथा दही खाते थ। उस समय कुछ लोग सुअर, घडियाल तथा मछली का मांस भी खाते थ और शराब पीते थे।

(vi) **पुरुषों का मनोरजन**—उस समय जुआ, शतरज, नाचगाना, नटबाजी साडो का युद्ध तथा शराब आदि पुरुषो के मनोरजन के साधन थे। इसके अतिरिक्त युद्ध म पराजित शत्रु का दाहिना हाथ काट कर ये अपने साथ ले आते थे, जिसका हिसाब भी रखा जाता था।

3. आर्थिक जीवन

(i) **कृषि की उन्नति**—मिश्र की अधिकाश जनता कृषि का कार्य करती थी। यहा की मुख्य ऊपज गेहू, जौ, मटर, तिल और फलो मे अगूर, अजीर आदि थे। सरकारी कर्मचारी कृषि कार्य का निरीक्षण किया करते थे। उनका मुख्य कार्य भूमि की पैमाइश करना तथा उपज का 10 प्रतिशत से लेकर 20 प्रतिशत तक राजस्व कर वसूल करना था। जो व्यक्ति लगान नहीं देता था उसे नील नदी मे डाल दिया जाता था, जहा मगरमच्छ उसे खा जाते थे।

(ii) **व्यवसाय का विकास**—मिश्र मे अनेक व्यवसायो का विकास हो चुका था। उस समय यहा के निवासी मिट्टी के बर्तन, सोने के आभूषण और लकडी के फर्नीचर बनाते थे। कागज बनाने की कला का आविष्कार मिश्र ने किया। वहा पर पेपाईरस नामक पौधे से कागज बनाया जाता था। विल ड्यूरेन्ट ने लिखा है कि

1. सेवाइन—ए हिस्ट्री आफ वर्ल्ड सिवलीजेशन पृष्ठ 53

"यदि हम प्राचीन मिश्र वासियो के आविष्कारो की तुलना ... आविष्कारो से करें तो ऐसा लगता है कि वाष्प शक्ति से चलने ... यन्त्रो के आविष्कार से पूर्व हम किसी भी दृष्टि से उनसे आगे बढे हुए ...।"[1]

(iii) व्यापार—मिश्र ... आन्तरिक व्यापार नील नदी के द्वारा होता था। विदेशी व्यापार मे वह ... प्रगति नही कर सका क्योंकि यहा पर माल अधिक मात्रा मे पैदा नही ... था। मिश्र भारत से मसाले, रग, इत्र आदि वस्तुए आयात करता था।

4. धार्मिक दशा

मिश्र वासी प्राचीन काल मे बहु देववाद में विश्वास रखते थे। वे प्रकृति शक्तियो की पूजा भी करते थे। उनके प्रमुख देवता सूर्य (रा या होरस) वायु (ओसिरिस) तथा चाद (सिन) थे जिनकी वे उपासना करते थे। इन देवताओ के लिये देवालयो का निर्माण किया जाता था, जिनमे पुजारियो को नियुक्त किया जाता था। डा० राधा कृष्णनन ने मिश्र के देवालयो के बारे मे लिखा है, ... के देवालय आज भी इस बात के प्रमाण है कि नील नदी की घाटी ... सदियो तक परमात्मा म विश्वास करत थे। इस युग म लक्जर के मन्दिर ... सना चलती रही। उपासना का यही भावना यहा आज भी विद्यमान है ... स्थान आज भी उतना ही पवित्र ह जितना ... वर्ष पूर्व था।"

फराओ अखनेतन (हामेन होटेप चतुर्थ) ने बहुदेववाद के स्थान ... केश्वरवाद की उपासना का सिद्धान्त प्रचलित किया। इसने एक देवता ... (सूर्य) की आराधना पर जोर दिया तथा निराकार ईश्वर की कल्पना की। ... जनता और धर्माधिकारी बहुदेववाद म विश्वास करते थे। इस ... उसके विचारो का विरोध किया गया। अत 1358 ई० में अखनेतन की म... साथ ही उनके धार्मिक विचार भी समाप्त हो गये।[2] उसकी मृत्यु के पश्च... धर्माधिकारियो ने उसे अपराधी घोषित कर जादू टोनो के द्वारा उसकी आत्म... भयकर कष्ट देने का प्रयास भी किया। इसके अतिरिक्त मिश्र म घड़िया... साड तथा बकरे आदि पशुओ की भी आराधना की जाती थी।

मिश्रवासी परलोक में विश्वास करते थे। ... है। इसलिये प्र... यह मान्यता था कि मृत्यु के पश्चात् भी शरीर से आत्मा को सम्बन्ध बना... मृतक व्यक्ति के शव के साथ भोजन, हथियार ... सुख सुविधा की अनेक वस्तुए गाड देत थे। इसके अतिरिक्त पिरामिड में सु... न्दर चित्र बनाये जाते थे, ताकि मृतक परलोक मे भी सुखी जीवन व्यतीत ... सके। उनका यह मानना था कि

1 विल डयूरेन्ट—सभ्यता की कहानी पृ० 52
2 मैकनेल बनर्स—वेस्टर्न सिवलीजेशन पृष्ठ 29

बली दे दी जाती थी। किसी बालक की मृत्यु होने पर उसके माता पिता को तीन दिन तक उसकी लाश को गोद मे लेकर बैठे रहना पडता था। यदि किसी लडकी पर दो भाई मोहित हो जाते थे और लडकी छोटे भाई से शादी करना चाहती, तब भी उसकी शादी बडे भाई से ही की जाती थी। सेवाइन ने मिश्र मे नारी का स्थान बताते हुए लिखा है कि "मिश्र की नारी का जो स्थान था उसकी समानता प्राचीन सभ्यताओं मे कोई दूसरी नही कर सकती थी और आधुनिक समय मे भी कोई उसे पीछे नही छोड सका है।"[1]

(iv) *वस्त्र, आभूषण एवं फैशन*—पुरुष धोती पहनते थे लेकिन लडकियां कमर पर मिट्टी की गोलियो की मालाए पहनती थी। कमर के ऊपर का भाग खुला रहता था। पुरुष अगूठी पहनते थे जबकि स्त्रियां जजीर, बाजूबन्द, गले का हार, और कगन पहनती थी। उस समय पुरुष और स्त्रियां दोनों ही अपने सिर के बाल मुडवा लते थे और फिर बालो को अनेक रगो म रग कर रगीन बाल अपने सिर पर लिया करते थे। पुरुष दर्पण म देखकर अपने चेहरे पर पाउडर लगाता था। उस समय की स्त्रिया भी ओठो पर लाली लगाती थी और नाखून रगती थी।

(v) **खानपान**—मिश्र के लोग गेहू, जौ, चावल, दूध तथा दही खात थे। उस समय कुछ लोग सुअर, घडियाल तथा मछली का मांस भी खाते थे और शराब पीते थे।

(vi) **पुरुषों का मनोरजन**—उस समय जुआ, शतरज, नाचगाना, नटबाजी साडो का युद्ध तथा शराब आदि पुरुषो के मनोरजन के साधन थे। इसके अतिरिक्त युद्ध म पराजित शत्रु का दाहिना हाथ काट कर य अपने साथ ले आते थे, जिसका हिसाब भी रखा जाता था।

3. आर्थिक जीवन

(i) **कृषि की उन्नति**—मिश्र की अधिकाश जनता कृषि का कार्य करती थी। यहा की मुख्य ऊपज गेहू, जौ, मटर, तिल और फलो मे अगूर, अजीर आदि थ। सरकारी कर्मचारी कृषि कार्य का निरीक्षण किया करते थे। उनका मुख्य कार्य भूमि की पैमाइश करना तथा उपज का 10 प्रतिशत से लेकर 20 प्रतिशत तक राजस्व कर वसूल करना था। जो व्यक्ति लगान नहीं देता था उसे नील नदी मे डाल दिया जाता था, जहा मगरमच्छ उसे खा जाते थे।

(ii) *व्यवसाय का विकास*—*मिश्र मे अनेक व्यवसायो का विकास हो चुका* था। उस समय यहा के निवासी मिट्टी के बर्तन, सोने के आभूषण और लकड़ी के फर्नीचर बनाते थे। कागज बनाने की कला का आविष्कार मिश्र ने किया। वहा पर पेपाईरस नामक पौधे से कागज बनाया जाता था। विल ड्यूरेन्ट ने लिखा है कि

1. सेवाइन—ए हिस्ट्री आफ वर्ल्ड सिवलीजेशन पृष्ठ 53

"यदि हम प्राचीन मिस्र वासियों के आविष्कारों की तुलना ... आविष्कारों से क
तो ऐसा लगता है कि वाष्प शक्ति से चलने ... के आविष्कार से पूर्व ह
किसी भी दृष्टि से उनसे आगे बढ़े हुए ..."

(iii) व्यापार—मिस्र ... आन्तरिक व्यापार नील नदी के द्वारा होता था
विदेशी व्यापार में वह ... प्रगति नहीं कर सका क्योंकि यहां पर माल अधि
मात्रा में पैदा नहीं ... था। मिस्र भारत से मसाले, रंग, इत्र आदि वस्तुएं आया
करता था।

4. धार्मिक दशा

मिस्र वासी प्राचीन काल में बहुदेववाद में विश्वास रखते थे। वे प्रकृ
शक्तियों की पूजा भी करते थे। उनके प्रमुख देवता सूर्य (रा या होरस) था
(ओसिरिस) तथा चाद (सिन) थे जिनकी वे उपासना करते थे। इन देवताओं
लिये देवालयों का निर्माण किया जाता था, जिनमें पुजारियों को नियुक्त कि
जाता था। डा० राधा कृष्णनन ने मिस्र के देवालयों के बारे में लिखा है, कि ...
के देवालय आज भी इस बात के प्रमाण है कि नील नदी की घाटी ... सदियों तक
परमात्मा में विश्वास करते थे। इस युग में लक्जर के मन्दिर ...
मना चलती रही। उपासना की यही भावना यहां आज भी विद्यमान है
स्थान आज भी उतना ही पवित्र है जितना कि ... वर्ष पूर्व था।

फराओं अखनेतन (हामेन होटेप चतुर्थ) ने बहुदेववाद के स्थान ... केश्वर-
वाद की उपासना का सिद्धान्त प्रचलित किया। इसने एक देवता ... (सूर्य) की
आराधना पर जोर दिया तथा निराकार ईश्वर की कल्पना की। ... आम
जनता और धर्माधिकारी बहुदेववाद में विश्वास करते थे। इस ... उसके विचारों
का विरोध किया गया। अतः 1358 ई० में अखनेतन की मृ... साथ ही उनके
धार्मिक विचार भी समाप्त हो गये। उसकी मृत्यु के पश्चा... धर्माधिकारियों ने
उसे अपराधी घोषित कर जादू टोनों के द्वारा उसकी आत्मा ... भयंकर कष्ट देने
का प्रयास भी किया। इसके अतिरिक्त मिस्र में घड़ियाल ... सांड तथा बकरे आदि
पशुओं की भी आराधना की जाती थी।

मिस्रवासी परलोक में विश्वास करते थे। ... यह मान्यता था कि मृत्यु
के पश्चात् भी शरीर से आत्मा का सम्बन्ध बना ... है। इसलिये ... मृतक
व्यक्ति के शव के साथ कब्र में भोजन, हथियार ... सुख सुविधा की अनेक वस्तुएं
गाड़ देते थे। इसके अतिरिक्त पिरामिड में सुन्दर ... चित्र बनाये जाते थे, ताकि
... उनका यह मानना था कि

मृत्यु के पश्चात् ... व्यक्ति की आत्मा नाव में बैठकर परलोक में सत्य के भवन में जाती है, जहा उस व्यक्ति ... अच्छे और बुरे कार्यों का निर्णय किया जाता है। डा० गोयल ने लिखा है कि "इतिहास ... यह पहला उदाहरण है जब किसी जाति ने पारलौकिक सुख दुख को ऐहिक जीवन के का... पर निर्भर माना।"[1] इसी प्रकार प्लेंट व जीन ने भी लिखा है कि "यह समझा जाता ... कि परलोक का प्रवेश द्वार केवल उन लोगो के लिये खुला है जो यह सिद्ध कर सकेकि उ... इस पृथ्वी पर भला जीवन बिताया है।"[2] इसलिये धर्माधिकारी मृतक की यात्रा ... आरामदायक बनाने के लिये कई प्रकार की धार्मिक क्रियाए किया करते थे। कभी ... मृत्यु संस्कार मे 70 दिन तक का समय लग जाता था।

... साहित्य—मिश्र के साहित्य मे कहानी तथा काव्य को अधिक महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त था। उस समय के लोग 40 पृष्ठ की कहानिया लिखते थे। मिश्र का थीब्ज नगर उन दिनो साहित्य का एक प्रसिद्ध केन्द्र था। उस काल मे एतिहासिक साहित्य के क्षेत्र मे एक पुस्तक "मृतको की पुस्तक" लिखी गई थी, जिसमे मिश्र के ... शासन काल का वर्णन किया गया है। धार्मिक साहित्य मे "पिरामिड ... पुस्तक प्राप्त हुई है। उसमे देवताओ की प्रशंसा तथा मृत आत्मा ... यात्रा के बारे मे वर्णन किया गया है। इसके अलावा आमेन होटेप के ... देश तथा "इपूवेर की भविष्यवाणी" आदि रचनाएं भी बहुत महत्वपूर्ण ... का साहित्य बोल चाल की भाषा मे नही होने के कारण जनता मे ... लोकप्रिय ... हो सका। हेरोडोटस का मानना है कि "संसार के प्राचीन साहित्य मे और शि... क्षेत्र मे कोई ऐसा देश नही जिसकी तुलना मिश्र से की जा सके।"

6 शिक्षा लिपि—विश्व म सर्वप्रथम शिक्षा का विकास मिश्र मे ही हुआ। वहा शिक्षा ... पुरोहितों के द्वारा विद्यालयो मे दी जाती थी। राज्य सरकार के अधिकारी समय ... पर निरीक्षण करने के लिये आया करते थे। उस समय मन्दिर ही शिक्षा के के... । उन्ही को विद्यालय कहा जाता था। सेस और हैलियोपेलिस उस समय के ... शिक्षा केन्द्र थे।

मिश्रवासियों ने ले... कला का भी आविष्कार किया। शुरू मे उनकी लिपि चित्रात्म... थी, परन्तु धीरे धी... समे शब्द सकेत और वर्णमाला का विकास हुआ। ...की वर्णमाला मे 2800 सांकेति... चिन्ह बनाये गये थे जो साम्राज्यवादी युग मे चलकर 500 चिन्ह रह गये। इन... वर्णमाला मे घर को "पर" तथा "सर्प" को "स" कहा जाता था। ...

मानव समाज में सबसे बड़ी क्रान्ति उत्पन्न की है और इसके लिये मिस्र का कृतज्ञ होना चाहिये।"

7. कला—

(i) भवन निर्माण कला—मिस्र के फराओ ने अपने वैभव तथा धार्मिक उद्देश्यों को लेकर अपनी समाधियों के ऊपर विशाल पिरामिडों का निर्माण करवाया, जो उस काल की भवन निर्माण कला के सुन्दर नमूने हैं। ये पिरामिड गगन चुम्बी भवन हैं। गीजे का पिरामिड जिसका निर्माण चौथे फराओ चियोप्स ने 2900 ई० पू० में करवाया था, वह संसार की सात आश्चर्यजनक चीजों में से एक है। गीजो के पिरामिड के अलावा कारनाक, थीब्ज तथा लक्सोर के देवालय भी बहुत सुन्दर बने हुए हैं। जिससे हमें उस काल की विकसित भवन निर्माण कला के बारे से जानकारी प्राप्त होती है।

(ii) मूर्ति कला—इस समय मूर्ति कला का बहुत अधिक विकास हुआ। पत्थर की मूर्तियों में विशाल स्फिक्स की मूर्ति बहुत प्रसिद्ध है। यह संसार की सबसे बड़ी पत्थर की मूर्ति है। इसका शरीर शेर जैसा और मुंह फराओ जैसा है। धातु की मूर्तियों में पेपी प्रथम की मूर्ति संसार में प्रसिद्ध है। जिसका निर्माण लकड़ी पर तांबा चढ़ा कर किया गया था। इसके अलावा कारनाक के मन्दिरों में 80 से 90 फिट तक ऊंची अनेक देवताओं की मूर्तियों का निर्माण किया गया है। गीजे के पिरामिड के समीप विशाल नर पशु देवता की मूर्ति प्राप्त हुई है। जिसका शरीर शेर की तरह है उसकी लम्बाई 160 फीट है और सिर मनुष्य की तरह है जिसकी चौड़ाई ग्यारह फुट आठ इंच है। उसकी आख की पलक 6 फुट है। मूर्ति की कुल ऊंचाई 70 फीट है।

(iii) चित्र कला—चित्रकला के क्षेत्र में उस समय काफी विकास हो चुका था। उस समय के कलाकार चित्रों में रंग का प्रयोग करते थे। अधिकांश चित्र थीब्ज के मन्दिर की दीवारों तथा पिरामिड के अन्दर के कमरों की दीवारों पर बने हुए पाये गये हैं। इन में फराओ का दरबार, शिकार, पशुओं, पक्षियों, मछलियों तथा खेतों के चित्र प्रमुख हैं। आगे चलकर मिट्टी के बर्तनों पर भी अच्छे अच्छे चित्र बनाये जाने लगे। इन चित्रों को देखने से यह स्पष्ट हो जाता है कि इनमें यथार्थता (वास्तविकता) पर अधिक ध्यान दिया जाता था।

(iv) संगीत कला—संगीत कला के क्षेत्र में भी उस समय काफी विकास हो चुका था। संगीत आध्यात्मिक होते थे। जिनका उपयोग देवालय में किया जाता था। हार्प उस काल का प्रसिद्ध वाद्ययन्त्र माना जाता था। इस काल के प्रसिद्ध संगीतज्ञ अमेन होटेप, स्नेफरू, नोफर सयर रेमरी प्रा आदि थे। देवालयों में जो नृत्य करने वाली महिलाएं रहती थी वे देवताओं के सामने नृत्य किया करती थी।

8. विज्ञान—

नील नदी में बाढ़ आने के कारण प्रति वर्ष सरकारी अधिकारियों द्वारा खेतों को मापा जाता था। इस प्रथा से मिश्र में ज्यामिति का विकास हुआ। गणित के क्षेत्र में उनको काफी ज्ञान था। उनको 1 से 9 तक गिनती आती थी और उसके लिए इन्होंने चिन्ह बना रखे थे। इसके अतिरिक्त सौ, हजार और लाख तक की संख्याओं के लिए भी उन्होंने चिन्ह बना रखे थे उनको जोड़ गुणा भाग भी आता था परन्तु वे दशमलव पद्धति से अनजान थे। मिश्रवासियों ने नक्षत्रों को आधार मानकर 365 दिन का एक वर्ष 30 दिन का एक महिना और 12 महिनों का एक वर्ष माना था। इनको चन्द्र ग्रहण तथा सूर्य ग्रहण के बारे में भी ज्ञान था।

मिश्रवासियों ने चिकित्सा विज्ञान के क्षेत्र में भी काफी प्रगति कर ली थी। वे तापक्रम और नाड़ी देख लेते थे तथा आंत एवं गुर्दे से पीड़ित रोगियों का इलाज भी कर लेते थे। रसायन के क्षेत्र में उन्होंने बहुत से ऐसे लेप बनाये थे जिसे लाश पर लगाकर कई वर्षों तक उसे सुरक्षित रखा जा सकता था।

मिश्र की विश्व को देन

1. मिश्र ने ही 365 दिन का एक वर्ष तथा कैलेण्डर संसार को प्रदान किया।
2. उन्होंने 1 से 9 तक की गिनती, जोड़, गुणा बाकी, भाग आदि गणित का ज्ञान दिया।
3. वर्णमाला तथा लिपि का आविष्कार मिश्र ने किया।
4. कागज तथा स्याही का प्रयोग मिश्र ने संसार को सिखाया।
5. कृषकों से कर वसूल करना, बेगार लेना, तथा सामन्तों द्वारा किसानों तथा मजदूरों का शोषण करना मिश्र ने हम सिखाया।
6. मिश्र ने पिरामिड का निर्माण किया जो विश्व के आश्चर्यजनक चीजों में से एक माना जाता है।
7. सामाजिक गठन तथा उसमें मातृ प्रधानता मिश्र ने दी।
8. लकड़ी का सुन्दर फर्नीचर और विलासिता की सामग्री दी तथा शृंगार के अनेक साधन दिए।
9. एकेश्वरवाद के सिद्धान्त का प्रचलन, आत्मा की अमरता, और परलोक के बारे में विचार दिए।
10. साहित्य में काव्य तथा कहानियों का प्रयोग सिखाया।
11. देवालयों को विद्यालय बनाकर, उसमें शिक्षा का सर्वप्रथम प्रयोग यहीं हुआ।
12. सूर्य घड़ी तथा जलघड़ी का आविष्कार मिश्र ने ही किया था।

13 शव पर रसायनिक पदार्थों द्वारा निर्मित मसाले लगाकर वे उसे कई वर्षों तक सुरक्षित रख सकते थे।

प्रो० हनेशा के अनुसार "अपने जीवन की बीस रचनात्मक शताब्दियों मे मिश्र ने खोजें की तथा उन अविष्कारों को पूर्ण किया जो मानव जाति की सामाजिक और पैत्रिक सम्पत्ति की अमूल्य निधियां हैं।"

स्मिथ का मानना है कि "वर्तमान युग की सामान्य सभ्यता के कई विषयो मे मिश्री सभ्यता की मौलिकता झलक रही है। दाढ़ी बनाना, कृत्रिम केश, हेट का प्रयोग, जूते, कई प्रकार के वस्त्र, वाद्य यन्त्र कुर्सी चारपाई, आभूषण के सन्दूक, दीपक आदि वस्तुए मनुष्य को नील नदी की घाटी मे उत्तराधिकार मे प्राप्त हुई हैं।"

प्रो० विल ड्यूरेन्ट का मानना है कि "मिश्र की सभ्यता की प्रमुख देन कृषि, काँच, सन के वस्त्र, कागज, स्याही, घड़ी, ज्यामिति, जनगणना, प्रारम्भिक व माध्यमिक शिक्षा का विकास, वर्णमाला, गृह को सजाने की वस्तुए और एकेश्वरवाद की प्रथम भावना है। मिश्र की सभ्यता के कई प्रमुख तत्वों को सीरिया क्रीट, यूनान व रोम के निवासियों ने अपनाया और परिणाम स्वरूप यूरोप की प्राचीन सभ्यताए मिश्र की ऋणी हो गई।"

प्रो० मालवीय व त्रिपाठी का यह कथन उपयुक्त प्रतीत होता है कि" इतिहास के उषा काल मे मिश्र ने जो कुछ किया, उसकी स्मृति या उसका प्रभाव प्रत्येक युग से मानव सभ्यता के ऊपर रहा है।"

उपरोक्त विवेचन से स्पष्ट है कि वर्तमान मानव सभ्यता अपनी प्रगति के लिये मिश्र की प्राचीन सभ्यता की ऋणी है। प्रो० हनेशा का मानना है कि "मिश्र ने वह पक्की नींव डाली जिस पर पाश्चात्य जगत की सारी संस्कृति खड़ी है। उसने अनुसधान किये और आविष्कारों को पूर्णता दी, जो मानव जाति की परम्पराओं का बहुमूल्य अंग है।"

मिश्र की सभ्यता का पतन—

मिश्र पर 31 राजवशों का शासन रहा। 332 ई० पूर्व में यूनान के शासक सिकन्दर ने मिश्र पर विजय प्राप्त की, उसके बाद रोम के शासकों ने इस पर अधिकार कर लिया। इस सभ्यता के पतन पर प० जवाहरलाल नहरू ने लिखा है कि "कई हजार वर्षों के गौरवमय इतिहास के उपरान्त मिश्र की प्राचीन सभ्यता लुप्त हो गई और सिवाय महान पिरामिड, स्फिक्स, व मेम्फीज के नगरों के पीछे कुछ भी निशान नहीं छोड़ गई।"

पतन के कारण :—

इस सभ्यता के पतन के प्रमुख कारण निम्नलिखित थे—

1. मिश्र के सामन्तों व शासकों ने कृषकों, मजदूरों तथा दासों का शोषण किया। इसलिये इस निम्न वर्ग ने सकट के समय शासक वर्ग का साथ नहीं दिया।

2. मिश्र के फराओ द्वारा जनता पर नये नये धर्म थोप दिये जाते थे इसलिये वहा की जनता शासको से असन्तुष्ट थी।
3. मिश्र पर निरन्तर विदेशी आक्रमण होते रहे और एक के बाद एक मिश्र पर अधिकार करते रहे लेकिन वहाँ पर सगठित सैनिक व्यवस्था नहीं थी। सामन्त आपस मे लड रहे थे। फराओ ने विलास प्रिय जीवन व्यतीत करना प्रारम्भ कर दिया। इसका परिणाम यह हुआ कि मिश्र पर विदेशियो का अधिकार हो गया।

इतिहासकार प्लेट व जीन ने लिखा है कि "1100 ई० पूर्व के बाद मिश्र वासी काम करने की पुरानी पद्धतियो के चिन्तन मे ही इतना अधिक समय लगाते रहे कि उनका देश बहुत कम प्रगति कर सका। फिर भी हम 20वी शताब्दी के लोग बाद मे हुई विश्व की प्रगति के लिये आधार तैयार करने के वास्ते प्राचीन मिश्र को जितना भी धन्यवाद दें, वह थोडा ही है।"[1]

प्रस्तावित सन्दर्भ पुस्तकें—

1. विल ड्यूरेन्ट–सभ्यता की कहानी
2. मैक्नैल बर्नस–वेस्टर्न सिवलीजेशन
3. सेवाइन–ए हिस्ट्री आफ वर्ल्ड सिवलीजेशन
4. प्लेट व जीन इमड–विश्व का इतिहास
5. बीच, डब्ल्यू० एन–हिस्ट्री आफ दी वर्ल्ड
6. नेहरू जवाहरलाल–विश्व इतिहास की झलक भाग I
7. विल ड्युरेन्ट–आवर ओरियटल हैरिटेज
8. डा० गोयल—विश्व की प्राचीन सभ्यताएं

1. प्लेट व जीन—विश्व का इतिहास पृष्ठ 45

मैसोपोटामिया की सभ्यता

आज का ईराक देश प्राचीन काल में मैसोपोटामिया के नाम से जाना जाता था। मैसोपोटामिया यूनानी भाषा का शब्द है जो 'मैसो' और 'पोटामिया' इन दो शब्दों से मिलकर बना है। मैसो का अर्थ "मध्य" तथा पोटम का अर्थ "नदी" होता है। इसलिये जो प्रदेश दजला तथा फरात नदियों के बीच में स्थित था, उसे ही मैसोपोटामिया के नाम से जाना जाता था।

अनुसंधान–1350 ई० में हेनरी रोलिन्सन को फारसीराजा और वेरियस द्वारा लिखवाया गया एक शिलालेख मिला। यह फारसी और बेबीलोनियन भाषा में लिखा हुआ था। जिसको पढ़ने के पश्चात् दूसरे साहित्य को पढ़ने व समझने में आसानी हो गई थी। दूसरा शिलालेख 1901 ई० में सुसा में मिला। जिसमें बेबीलोनी भाषा में कानूनी संहिता का वर्णन किया गया था। इतिहासकार हेरोडोटस ने इस प्रदेश को "अदन का बाग" कहा हैं। उनका कहना है कि "जब मैंने लोगों को बताया कि इस सुरम्य भूमि में अन्न की कितनी लम्बी बालियाँ उगती हैं तो उन्हें मुझ पर विश्वास नहीं हुआ।[1]

दजला और फरात नदियों ने मैसोपोटामिया की सभ्यता का पालन किया। नील नदी की भांति इन दोनों नदियों में भी बाढ़ आ जाती थी, जिससे यहाँ के कृषकों का जीवन सदेह जनक ही रहा करता था। विल ड्यूरेन्ट ने लिखा है कि "आज दजला नदी के किनारे फैले भग्नावशेषों को देखकर यह अन्दाज लगाना कठिन है कि यहाँ कभी प्राचीन बेबीलोन की सभ्यता ने बड़ी बड़ी ऊंचाइयाँ पार की थी। बेबीलोन के ये अवशेष उस प्राचीन राजधानी के अवशेष है। आज शान्ति से बहती हुई दजला और फरात नदियों को देखकर यह विश्वास कर पाना कठिन है कि यह वे नदियां है जिन्होंने सुमेरिया और अक्काद को जीवनदान दिया था और बेबीलोन के प्रसिद्ध झूलेदार बगीचों को सींचा था।"[2]

दजला और फरात नदियों ने मैसोपोटामिया की सभ्यता का पालन किया। नील नदी की भांति इन दोनों नदियों में भी बाढ़ आ जाती थी। जिससे यहां के कृषकों का जीवन सदेह जनक ही रहा करता था। मैसोपोटामिया पर उत्तर की ओर से खानाबदोश निरन्तर आक्रमण करते रहे। इसलिये यहाँ पर नई सभ्यताओं

---

1. एलिस व जौन–संसार का इतिहास, पृष्ठ 45
2. विल ड्यूरेन्ट–सभ्यता की कहानी पृष्ठ 282

इस लिपि को कीलाक्षर कहा जाता था। इसके कई मिट्टी के तख्ते उर नगर की खुदाई में मिले है। सुमेरिया में देवालय ही शिक्षा के केन्द्र थे। जहा पर विद्यार्थियो को कानूनी, तथा व्यापारिक शिक्षा दी जाती थी। इतिहासकार जेकाइस पेरेनी का मानना है कि शिक्षा के कारण ही यह सभ्यता विकसित एव स्थायी बन सकी थी।"

5 धार्मिक दशा—प्रारम्भ म सुमेरिया के लोग एकेश्वरवाद के सिद्धान्त मे विश्वास रखते थे लेकिन ईसा से 3500 वर्ष पूर्व वे बहुदेववाद मे विश्वास रखन लगे। प्रत्येक नगर राज्य का अलग अलग देवता होता था। उर नगर का देवता सिन (चाद) लारसा नगर का शोमेस (सूर्य) तथा अरक नगर की देवी ईश्तर (रक्षा करने वाली देवी) थी। इसके अतिरिक्त आकाश का देवता अनु समुन्द्र का देवता 'आ' तथा पृथ्वी का देवता "एनिल" आदि की भी उपासना की जाती थी। देवताओ को खुश करने के लिये यहा के लोग मनुष्य की बलि भी देते थे। ये लोग अध विश्वासी थे, इसीलिये इनका शकुन, स्वप्न आदि मे विश्वास था। मिश्र के लोगो की भाति ये भी मृतकों के शव के साथ कब्र मे उसके प्रिय पदार्थ गाड देते थे।

6 सामाजिक जीवन—सुमेरिया के समाज म तीन वर्ग थे। पहला, उच्च वर्ग था जिसम राजा, उच्च पदाधिकारी तथा पुरोहित आदि आते थे समाज म पुरोहितो का विशेष सम्मान था। दूसरा, मध्यम वर्ग था जिसमे सामन्त तथा व्यापारी आते थे। तीसरा, निम्न वर्ग था जिसम दास तथा किसान आते थे। समाज मे स्त्रियो की दशा सन्तोषजनक थी। उस समय पुरुष घुटने तक ही कपडे पहनते थे जबकि स्त्रिया कधे से शरीर को ढकने के लिये कपडा लटका लेती थी। उस समय घरो मे काम करने वाले सेवक तथा सेविकाए कमर तक नग्न रहते थे। उस काल मे स्त्रिया कगन, कठहार, अगूठी तथा कानो म आभूषण पहनती थी। इतिहासकार चाइल्ड का कहना है कि "सुमेरिया की तत्कालीन स्त्रिया आभूषणो मे आज की अमेरिकन औरतो की भाति लगती थी।"

7 विज्ञान—विज्ञान के क्षेत्र मे उन्होने बहुत विकास कर लिया था। सुमेर निवासियो न एक वर्ष म बारह महीने और एक महीने म तीस दिन मान उन्होने वीनस, जुपीटर, मार्स तथा सेटर्न आदि नक्षत्रो के बारे मे खोज कर यह मत व्यक्त दिया कि नक्षत्र नियमानुसार परिक्रमा करते है।

8 कला—सुमेरिया मे सगीत कला का बहुत विकास हुआ। उस समय देवालय सगीत के प्रमुख केन्द्र थे। वीन उस समय का प्रसिद्ध वाद्ययन्त्र था। देवताओ की मूर्तियो के निर्माण के कारण मूर्तिकला का भी काफी विकास हुआ। चित्रकला के क्षेत्र मे युद्ध के दृश्य ही चित्रित किये जाते थे। इसके अतिरिक्त भवन निर्माण कला का भी बहुत अधिक विकास हुआ। सुमेरियन लोग ईंटो के मकान बनाते थे। धनी लोग अपने मकान भूमि से ऊचे 40 फीट के टीले पर बनाते थे, जिसम जाने का केवल एक ही रास्ता होता था। कई नगरो की गलिया तथा सडके मोहन-

जोदड़ों की भांति ही बनी हुई थी। प्रत्येक नगर मे विशाल मीनारों वाला एक देवालय होता था, जिसके मेहराव, गुम्बद और स्तम्भ बहुत ही सुन्दर होते थे। उस काल मे उर नगर म निर्मित नानार का देवालय कला की दृष्टि से आज भी अद्वितीय है।

सुमेर की सभ्यता की विश्व को देन—

सुमेर की सभ्यता से बेबीलोन तथा ईरान सभ्यता ने बहुत सी अच्छी बातें ग्रहण की। विल डयरेन्ट का मानना है कि "सिंचाई की सर्वप्रथम प्राचीन व्यवस्था ऋण प्रणाली, लेखन कला न्याय विधान, पुस्तकालय व विद्यालय, प्राचीन मन्दिर व मूर्तियां और मेहराब व गुम्बद सुमेरिया की अभूतपूर्व देन है।

सुमेरियन सभ्यता का पतन—यद्यपि सुमेरियन लोग बहादुर सैनिक और योग्य शासक थे फिर भी खानाबदोश अकादियन जाति ने सुमेरिया के शासक को युद्ध म पराजित कर उस पर अपना अधिकार कर लिया। सेरेगान प्रथम अकादियन जाति का पहला सम्राट था।

अकादियन वंश का शासन—सेरेगान प्रथम शाही वंश का नहीं था। इसके पिता के बारे मे कोई जानकारी नहीं मिलती। इतिहासकार बीच का मानना है कि "यह एक बागवान का पुत्र था तथा इसकी माता ने इसे नरमलों की छोटी सी नाव मे बिठा कर छोड़ दिया था। बड़ा होने पर वह किशनगर के शासक के यहा एक साधारण सेवक की हैसियत मे कृषि करता था और अपना जन्म एक सराय के चौकीदार मे बताता था।"

नेल का मानना है कि "सेरेगान का जीवन किश के शासक के प्याले उठाने वाले से प्रारम्भ होता है।"

इन विद्वानों के कथनों से स्पष्ट है कि सेरेगान प्रथम का जन्म साधारण परिवार म हुआ था और वह अपनी योग्यता से उन्नति करता हुआ किशनगर का शासक बना तथा अपने साम्राज्य का विस्तार किया। उसने सुमेरियन जाति को पराजित कर उसके साम्राज्य पर अधिकार कर लिया। इतिहासकार बीच का मानना है कि 'सेरेगान प्रथम के विवरण मे ज्ञात होता है कि उसका साम्राज्य भूमध्य सागर तक पहुच गया था और उसने साईप्रस पर भी अधिकार कर लिया था।"

यद्यपि उसने 45 वर्ष तक शासन किया परन्तु उसके शासन के अन्तिम वर्षों मे विद्रोह हुए, जिसके कारण राज्य मे अशान्ति और अव्यवस्था बनी रही।

सरगान प्रथम के उत्तराधिकारी अयोग्य और दुर्बल सिद्ध हुए—

अकादियन वंश का पतन—

विलड्यरेन्ट का मानना है कि "अकादियन साम्राज्य की वह शान शीघ्र ही विलुप्त हो गई और पूर्व के लड़ाकू इलेमाइट ने उर पर अधिकार कर लिया।"

इतिहासकार जे० सी० रेविल का मानना है कि 'पहाड़ी लोगों के आक्रमण के परिणाम स्वरूप वह साम्राज्य समाप्त हो गया।"

अकादियन सभ्यता का वर्णन—

अकादियन जाति के लोगो ने सुमेरियन सभ्यता को अपना लिया था, उनकी अपनी कोई नवीन देन नही थी। अकादियन साम्राज्य मे धर्माधिकारियो का महत्व घट गया था। 2000 ई० पूर्व तक अकादियन जाति की सभ्यता भी उन्नत हो गई थी।

बेबीलोनिया की सभ्यता— 2200 ई० पू० मे सेमेटिक लोगो की एक शाखा एमोराइट जाति ने सुमेर पर अपना राज्य स्थापित किया। इसके पश्चात् अकादियन साम्राज्य पर अधिकार कर लिया और बेबीलोन को अपनी राजधानी बनाया, जिसके कारण यह सभ्यता बेबीलोनिया सभ्यता के नाम से जानी जाती है।[1]

एमोराइट जाति का सबसे प्रसिद्ध शासक हम्मूराबी था, जिसने अपने 42 वर्ष के शासन काल मे साम्राज्य का विस्तार किया। हम्मूराबी के समय म बेबीलोन अपनी प्रगति की चरम सीमा पर था। उसकी विधि सहिता इतिहास म बहुत महत्वपूर्ण स्थान रखती है। विल डयूरेन्ट ने लिखा हैं कि "राज्य निर्माता क रूप मे इसे पूजा जाता था। प्राप्त मोहरो और सीलो के आधार पर हम कह सकते है कि वह एक प्रतिभाशाली-अत्यन्त उत्साही और शक्तिशाली राजा था। युद्ध म वह बिजली की तरह नाचता था और अपने शत्रुओ को गाजर मूली की तरह काटता चलता था। दुर्गम पर्वत भी उसकी सेना का रास्ता नही रोक सकते थे।[2]

हम्मूराबी—(2123 ई० पू० से 2081 ई० पू०)—हम्मूराबी अपने वश का सबसे योग्य राजा था, जिसने 2123 ई० पू से लेकर 2081 ई० पू० तक 42 वर्ष तक शासन किया। जिस समय हम्मूराबी शासक बना उस समय मैसोपोटामिया मे अनेक छोटे छोटे राज्य थे, जो आपस म लडत रहते थे। हम्मूराबी ने अपनी योग्यता से निप्पुर, ऐरक, लारसा, किस आदि राज्यो को बेबीलोन मे मिलाकर एक विशाल साम्राज्य की स्थापना की। इसके पश्चात् साम्राज्य म शान्ति और सुव्यवस्था कायम की।

हम्मूराबी के जनोपयोगी सुधार—हम्मूराबी ने अपने शासन काल म प्रजा की भलाई के लिये निम्न कार्य किए —

1. कृषि की उन्नति के लिय किश से फारस की खाडी तक एक नहर का निर्माण करवाया।
2. उसने अपने साम्राज्य को कई जिलो मे विभक्त किया और वहा पर योग्य व्यक्तियो को राज्यपाल के पद पर नियुक्त किया।
3. कर्जदारो की सुविधा के लिये रेहन रखने की प्रथा शुरू की।

---

1. वेल्स, एच० जी०—दी आउट लाइन आफ हिस्ट्री पृ० 166
2. विल ड्यूरेन्ट-सभ्यता की कहानी पृष्ठ 203

4 इस समय, देवालयों में बहुत धनराशि जमा थी। हम्मूराबी ने उनको बाध्य किया कि वे गरीबों को ऋण दें। प्लेट व जीन ने लिखा है कि "बेबीलोन का राजा हम्मूराबी प्राचीन संसार के उन थोड़े से राजाओं में से एक था जिन्होंने विधवाओं, अनाथों व गरीबों के प्रति सहानुभूति दिखाई, किसान मजदूर शोषक महाजनों, बेईमान, धन लोलुप अधिकारियों क्रूर सामन्तों और पाशविक सैनिक धर्माधिकारियों से रक्षा पाने के लिए उसका मुँह जोहते थे।"[1] इतिहासकार स्वेन का मानना है कि "हम्मूराबी निसन्देह एक महान विजेता तो था ही पर इतिहास में एक सुप्रशासक के रूप में अधिक विख्यात है।"

हम्मूराबी ने धार्मिक क्षेत्र में एनिल के स्थान पर बेबीलोन के देवता मारदुक की उपासना पर अधिक बल दिया। उसके शासन काल में विज्ञान और कला कौशल का बहुत अधिक विकास हुआ। विधि संहिता के निर्माता के रूप में वह विश्व में सदा अमर रहेगा।

हम्मूराबी की विधि (विधान) संहिता—हम्मूराबी की विधि संहिता संसार का न्याय सम्बन्धी पहला ग्रन्थ था। उसके कानूनों का यह विशाल संग्रह मार्दुक के देवालय के आठ फीट ऊँचे गोल बेलनाकार पत्थर पर खुदा हुआ है। जिसमें सम्राट को सूर्य देवता से कानून प्राप्त करता हुआ दिखाया गया है - इससे शायद हम्मूराबी जनता को यह दिखाना चाहता था कि कानून दैविक शक्ति की देन है। विल ड्यूरेन्ट ने इसकी प्रशंसा करते हुए लिखा है कि "कई मायनों में तो यह किसी आधुनिक यूरोपीय राज्य के कानूनों की बराबरी कर सकती है।"[2] सेबाइन ने लिखा है कि "हम्मूराबी लौह हाथों से शासन करता था, उसकी सत्ता दैविक सिद्धान्तों पर आधारित थी क्योंकि वह निरंकुश था। अतः देश और जनता का भाग्य उसकी दया पर आधारित था।"[3] 1902 में फ्रांस के एक पुरातत्ववेत्ता कोमुसा के पास खुदाई में विधि संहिता प्राप्त हुई थी, जो आज भी लंदन संग्रहालय में सुरक्षित रखी हुई है। इस विधि संहिता ने हम्मूराबी को विश्व इतिहास में अमर बना दिया है।

विधि संहिता की मुख्य धारायें—इस विधि संहिता में 285 धाराऐं तथा 12 अध्याय थे। इसमें 3600 पंक्तियाँ हैं। इसकी मुख्य धारायें निम्नलिखित थी-

1. कर्जदारों को सुविधा देने के लिये रहन रखने की प्रथा शुरू की गई।
2. सभी प्रकार के ठेकों के सम्बन्ध में कानून बना दिये गये।
3. मुआवजा देने की प्रथा को शुरू किया गया।

1. प्लेट व जीन-विश्व का इतिहास, पृष्ठ 39
2. विल ड्यूरेन्ट सभ्यता की कहानी पृष्ठ 203
3. सेबाइन-ए हिस्ट्री आफ वर्ल्ड सिविलीजेशन पृष्ठ 72

4 नौकर और मालिक दोनों के लिए कानून बनाये गये जिसमें दोनों के कर्तव्य का उल्लेख था।
5 मजदूरों की मजदूरी निश्चित कर दी गई।
6 डाक्टरों की फीस भी निश्चित कर दी गई।
7 देवालयों में बहुत धन जमा था। इसलिये उनको बाध्य किया कि वे कर्जदारों को मुफ्त में पैसा दें ताकि वे दासता से मुक्ति प्राप्त कर सकें।
8 ब्याज की दरें ठेकेदारों के लिये 35 प्रतिशत तथा व्यवसायिक कार्य के लिये 20 प्रतिशत निश्चित की गई।

विधि संहिता की मुख्य विशेषतायें—

विधि संहिता समेटिक भाषा में लिखी हुई थी। इसकी प्रमुख विशेषतायें *निम्नलिखित थी—*

1. इस विधि संहिता के द्वारा समाज के भिन्न भिन्न वर्गों के आपसी सम्बन्धों को निश्चित किया गया था। पिता पुत्र पति पत्नि जमींदार कृषक सेठ साहूकार व्यापारी ग्राहक, मालिक-मजदूर आदि के सम्बन्ध निश्चित किये गये थे।

2 *एक ही जैसा अपराध करने पर उच्च, मध्यम तथा निम्न वर्ग के लिये अलग* अलग दंड निश्चित किये गये थे। यदि एक उच्च वर्ग का व्यक्ति पशु चुराने के लिए अपराधी सिद्ध हो जाता तो उसे पशु की तीस गुनी कीमत हरजाने के रूप में देनी पड़ती थी जबकि निम्न वर्ग के मनुष्य को सिर्फ दस गुनी कीमत ही हरजाने के रूप में देनी पड़ती थी। जो व्यक्ति जान बूझकर अपराध करता था उसे कठोर सजा दी जाती थी और जो व्यक्ति अनजान में अपराध करता था उसे कम सजा दी जाती थी। उदाहरण के लिये यदि *किसी डाक्टर की लापरवाही से किसी बिमार व्यक्ति की मृत्यु हो जाती तो* उस डाक्टर को कठोर सजा दी जाती थी।

3 कानून की दृष्टि में समाज का गरीब और उच्च वर्ग एक समान था। इस कानून का उद्देश्य समाज में समानता स्थापित करना और गरीबों की रक्षा करना था। हम्मूराबी ने कर्जदारों के साथ सहानुभूति का व्यवहार किया। उसने देवालयों को गरीबों के लिये ऋण देने को मजबूर किया। इस प्रकार इस विधि संहिता ने उस समय के समाज में व्याप्त बुराइयों को समाप्त कर दिया।

4 इस विधि संहिता में विवाह के बारे में भी कानूनी व्यवस्था थी। यदि पत्नी और पति के आपस में सम्बन्ध खराब हो जाय तो वे एक दूसरे को तलाक दे सकते थे लेकिन स्त्री को तलाक देने पर दहेज में प्राप्त सारा सामान उसे लौटाना पड़ता था।

5. इस संहिता में न्याय की भी व्यवस्था थी। कानून की दृष्टि में सब समान थे। किसी के साथ पक्षपात नहीं किया जाता था। मन्दिर उस समय न्यायालय का काम करते थे जिसमें सम्राट द्वारा नियुक्त न्यायाधीश न्याय का कार्य करते थे।
6. हम्मूराबी का कानून अपराधी के लिए बहुत कठोर था। उसका कानून इस कहावत पर आधारित था कि 'आँख के बदले आँख व और दांत के बदले दांत।" व्यभिचार, बलात्कार, चोरी आदि अपराधों के लिए मृत्यु दंड दिया जाता था। विद्रोही गुलामों को आश्रय देने पर आर्थिक दंड दिया जाता था। यदि किसी व्यक्ति ने मुकदमा दायर किया और वह अपने विपक्षी के विरुद्ध लगाये गये आरोपों को सिद्ध करने में असफल रहा तो मुकदमा दायर करने वाले व्यक्ति को मौत की सजा दी जाती थी। किसी मकान के गिरने पर मालिक के लड़के की मृत्यु हो जाती थी तो मकान का निर्माण करने वाले कारीगर के लड़के को मृत्यु दंड दिया जाता था। इसी प्रकार किसी पर जादू टोने का अपराध होता तो उस व्यक्ति को नदी में डाल दिया जाता जाता था। यदि उसकी पानी में मृत्यु हो जाती तो उसे दोषी मान लिया जाता था और उसकी सारी सम्पत्ति दोष लगाने वाले को देदी जाती थी लेकिन यदि वह नदी से जीवित बाहर निकल कर आ जाता, तो उसे निर्दोष समझा जाता था।

हम्मूराबी की विधि संहिता में प्रत्यक विषय पर लिखित कानून थे। कानूनों का पालन करवाना उसके अधिकारियों का मुख्य कर्तव्य था। उस समय के कानून से बेबीलोनिया की राजनैतिक, सामाजिक एवं धार्मिक अवस्था के बारे में जानकारी प्राप्त होती है। स्पष्ट है कि हम्मूराबी कानून के सहारे ही समस्त साम्राज्य में एक सुव्यवस्थित शासन प्रबन्ध की स्थापना करने में सफल हुआ। इसके अतिरिक्त उसने अपने कानूनों से कमजोर वर्ग तथा कर्जदारों को राहत पहुँचाई। हम्मूराबी स्वयं कहता है कि उसकी संहिता असहायों को शक्तिशाली व्यक्तियों से सुरक्षा तथा सर्व-साधारण की भलाई करने वाली है।"

बेबीलोनिया साम्राज्य का पतन—हम्मूराबी की मृत्यु के बाद साम्राज्य में अराजकता और अव्यवस्था फैलने लगी। इसका मुख्य कारण यह था कि उसके उत्तराधिकारी अयोग्य और दुर्बल सिद्ध हुए। जो उसके विशाल साम्राज्य को संभालने में असफल रहे। ऐसी परिस्थितियों में हिट्टाइट व कैसाइट जाति ने बेबीलोनिया पर अधिकार कर लिया।

बेबीलोनिया की सभ्यता का वर्णन—

1. सामाजिक जीवन

(i) **समाज का विभाजन**—बेबीलोनिया कालीन समाज तीन वर्गों में विभाजित था। पहला, उच्च वर्ग था। इसमें मन्त्री, राजा, सामन्त, पुजारी, राजवंश के

सदस्य और राज्य के उच्च पदाधिकारी आते थे। इस वर्ग को अलीवलन कहा जाता था। दूसरा, मध्यम वर्ग था। इसमें व्यापारी आते थे। इस वर्ग को "मुस्केनन" कहा जाता था। तीसरा, निम्न वर्ग था। इसमें दास आते थे। इस वर्ग को "अरद" कहा जाता था। यदि कोई दास दोषी सिद्ध हो जाता तो बाजार में उसके कोड़े लगाये जाते थे। कर्ज चुकाने में असमर्थ रहने पर व्यक्ति को दास बना लिया जाता था और वह दास अपने स्वामी की सेवा करके कर्ज से छुटकारा पा सकता था।

(ii) स्त्रियों की दशा—उस समय स्त्रियों की दशा दयनीय थी। उस युग के इतिहासकारों का मानना है कि स्त्रियों को नैतिकता से गिरने के लिये मजबूर किया जाता था तथा उस समय वेश्यावृति भी बहुत जोरों से चल रही थी। यूनानी इतिहासकार हेरोडोटस का मानना है कि उस युग में नारी का स्थान गिरा हुआ था। जबकि सेवाइल, वर्नस, एच० जी० वेल्स तथा विल ड्यूरेन्ट आदि इतिहासकारों का मानना है कि उस युग में नारी को पुरुष के बराबर अधिकार प्राप्त थे। नारी को समाज में उच्च तथा प्रतिष्ठित स्थान प्राप्त था। वे स्वतन्त्रतापूर्वक व्यापार कर सकती थी।

(iii) विवाह—विवाह के योग्य लड़कियों को अपना मनपसंद लड़का चुनने का अधिकार था। जो लड़की विवाह के लिए इच्छुक होती थी, वह देवालय में हरे बाड़े पहनकर बैठ जाती थी। वहां पर लड़के उन्हें देखने आते थे। जो लड़का उस लड़की को पसन्द करता था वह उस लड़की की गोद में एक सिक्का डाल देता था। यदि उस लड़की को वह लड़का पसन्द आ जाता तो वह सिक्का उठाती थी अन्यथा नहीं। उसके पश्चात दोनों कुछ समय साथ रहकर अपना जीवन व्यतीत करते। इन दिनों में यदि दोनों का स्वभाव मिल जाता था तो वे एक दूसरे से शादी कर लेते थे अन्यथा लड़का व लड़की फिर अपने नये साथी को चुनने के लिये स्वतन्त्र थे। विवाह के समय लड़की को जो दहेज मिलता था उस पर आजीवन उसी का अधिकार रहता था। यदि कोई व्यक्ति दूसरी शादी करता तो उसे अपनी पहली स्त्री का दहेज उसे लौटाना पड़ता था।

(iv) दास प्रथा—कुछ इतिहासकारों के अनुसार दासों की दशा शोचनीय थी। उनके स्वामी के द्वारा उन पर भयंकर अत्याचार किये जाते थे। अपराधी सिद्ध होने पर उनको कोड़े मारे जाते थे। प्रत्येक स्वामी अपने दास के हाथ पर अपना दाग अंकित करता था। युद्ध के समय प्राप्त दासों को देवालयों के निर्माण कार्य में लगा दिया जाता था। भागे हुए गुलाम को यदि कोई व्यक्ति आश्रय देता तो ऐसे व्यक्ति के हाथ काट लिये जाते थे। इसके विपरीत कुछ अच्छे स्वामी अपने दासों को अधिकार भी देते थे। जैसे मेहनत करके दास अपनी व्यक्तिगत सम्पत्ति एकत्रित कर सकते थे और अपना कर्जा चुकाकर वे दासता से मुक्ति प्राप्त कर सकते थे। वे अपनी लड़की से विवाह कर सकते थे आदि।

यदि किसी मालिक की स्त्री को उसके गुलाम से पुत्र पैदा हो जाता था तो उसे दासता से मुक्त कर दिया जाता था। इसी प्रकार दासी के स्वामी से पुत्र पैदा हो जाता था तो वह उसकी पत्नी बन कर रह सकती थी। मेकनील बर्नस ने लिखा है कि "कर्ज के लिये बेचे गये गुलाम बच्चे व औरतों को चार वर्ष से अधिक गुलाम नहीं रखा जा सकता था और जिस गुलाम स्त्री से मालिक की सन्तान जन्म ले ले उसे फिर बेचा नही जा सकता था।"[1]

(v) वेष भूषा—पुरुष लुगी और गले मे दुपट्टा पहनते थे। स्त्रियाँ चमड़े की मुलायम जूतिया पहनती थी। उच्च वर्ग की स्त्रिया नाक, कान-गला, बाहु और उगलिया पर कीमती आभूषण पहनती थी। वे चेहरो पर लाली लगाती थी तथा सोने की बाल पिनों का प्रयोग कर विलासी जीवन बिताती थी। मध्यम वर्ग की स्त्रिया चादी के आभूषण तथा निम्न वर्ग की स्त्रिया मिट्टी के रगीन आभूषण बनाकर पहनती थी। उस समय भी स्त्रिया चुस्त कपड़े पहनती थी। विल ड्यूरेन्ट ने लिखा है कि "स्त्रियो के साज व शृगार की दृष्टि से सचमुच ही तब से लेकर अब तक कोई विशेष परिवर्तन नही हुआ हैं।"

(vi) खान पान एव मनोरजन—उस समय कुछ लोग मासाहारी भोजन करते थे जबकि कुछ लोग शाकाहारी भोजन करते थे। शाकाहारी मे दूध, फल, अन्न आदि खाते थे जबकि मासाहारी मछली खाते थे। प्रत्येक व्यक्ति शराब पीता था और युद्ध मे सैनिक भी शराब पीकर ही युद्ध करते थे। मनोरजन के साधन सगीत तथा नृत्य थे। देवालयो मे धार्मिक उत्सवो पर सगीत तथा वैश्याओ द्वारा नृत्य किया जाता था। पिता को उच्च स्थान प्राप्त था और पुत्र आज्ञाकारी होते थे। प्लैट व जीन ने लिखा है कि "यदि कोई पुत्र अपने पिता को पीटे, तो उसकी उगलिया काट दी जाती थी।"[2]

इस प्रकार स्पष्ट है कि बेबीलोन का समाज सगठित तथा सुखी था।

2. आर्थिक दशा

(i) कृषि एव पशुपालन व्यवसाय—बेबीलोन के लोगो का मुख्य व्यवसाय कृषि था। वहा की मुख्य पैदावार खजूर, अगूर, जैतून आदि थी। हेरोडोटस का मानना है कि 'बेबीलोन अन्न उत्पन्न करने म सबसे अधिक समृद्ध था" बेबीलोनिया म पशुपालन व्यवसाय भी विकसित था। यहा के लोग गाय, भेड, बकरी, सूअर, गधे, ऊट आदि पालते थे।

(ii) उद्योग एव व्यापार—इस समय उद्योग धन्धो का काफी विकास हो चुका था। यहा पर चमड़े की वस्तुए, ऊनी, सूती वस्त्र तथा धातुओ के सामान का

---

1 मैकनील बर्नस–वेस्टर्न सिवलीजेशन्स पृष्ठ 68
2 प्लैट जीन–विश्व का इतिहास, पृष्ठ 39

उत्पादन होता था । कुछ वस्तुओं का उत्पादन कारखानों में बड़े पैमाने पर किया जाता था । कारखानों में काम करने वाले मजदूरों ने अपने संघों का निर्माण कर लिया था । बेबीलोन का व्यापार भी काफी विकसित हो चुका था । वह सागवान की लकडी तथा बहुमूल्य रत्न भारत से, सीरिया से देवदार, मिश्र से सोना तथा अरब से गर्म मसाले आयात करता था और खाद्यान्न वस्त्र तथा धातुओं की वस्तुए विदेशों को निर्यात करता था । प्रारम्भ में व्यापार का माध्यम विनिमय था लेकिन कुछ समय बाद सोना और चादी विनिमय का साधन हो गया । हम्मूराबी के कानून ने व्यापार में आने वाली बाधाओं को दूर कर दिया । व्यापारी पैसे के अभाव में हुडी लिखकर सामान खरीद सकता था । देवालयों से ब्याज पर कर्जा ले सकता था । उस समय देवालयों में काफी धन जमा था । इसलिए वे बैंकों का काम करने लगे । इस प्रकार बैंक व्यवस्था का सर्व प्रथम विकास बेबीलोन में हुआ । इस समय प्रत्येक वस्तु का मूल्य निश्चित कर दिया था कोई भी व्यक्ति उससे ज्यादा मूल्य नहीं ले सकता था । सरकार की तरफ से नाप तोल के बाट निर्धारित कर दिये गए थे । जिनको शेकल, मीना तथा टेलेन्ट कहते थे । वस्तुओं के आयात और निर्यात के नियम बने हुए थे । स्पष्ट है कि उस समय व्यापार पर सरकार का कठोर नियन्त्रण था । बर्नस ने लिखा है कि ' बेबीलोनिया के शासक स्वतन्त्र प्रतियोगिता में विश्वास नहीं रखते थे फिर भी व्यापार, बैंकिंग और उद्योग धन्धे राज्य द्वारा सचालित थे । [1] सेवाइन ने भी लिखा है कि "व्यापार सरकारी देख रेख में चलता था । [2]

3–धार्मिक दशा—बेबीलोन के लोग बहुदेववाद में विश्वास रखते थे । कुछ इतिहासकारों के अनुसार यहा के निवासी लगभग 65 हजार देवता की पूजा करते थे । प्रत्येक नगर, परिवार तथा व्यक्ति का अपना अलग अलग देवता होता था । उस समय के प्रमुख देवता अनु (आकाश) नन्नर (चन्द्रमा) तामुज (उपज का देवता तथा ईश्तर (प्रेम की देवी) आदि थे । जिनकी यहा के निवासी पूजा करते थे और उनको प्रसन्न करने के लिए बली भी देते थे । बेबीलोन में सूर्य तथा मारदुक (सूर्य का पुत्र) को देवताओं में सबसे अधिक महत्व दिया जाता । सूर्य तथा मारदुक को अधिक महत्व देने के बारे में बेबीलोन के लोगों का मानना था कि इसने पृथ्वी पर राक्षसों को पराजित कर शान्ति व्यवस्था स्थापित की । सूर्य का विशाल मन्दिर लारसा में तथा मारदुक का बेबीलोन नगर में बना हुआ था । यहा के निवासी देवताओं को शरीर धारी मानते थे । जो खाना खाते थे, स्त्रियों को सन्तान दे सकते थे और देवालयों में पुजारियों से आराधना करवाते थे ।

1 मैक्नेल–बर्नस–वैस्टर्न सीवलीजेशन पृष्ठ 68
2 सेवाइन—ए हिस्ट्री आफ वर्ल्ड सिवलीजेशन पृष्ठ 73

बेबीलोन धर्म का उद्देश्य भौतिक लाभ की प्राप्ति तथा भय से छुटकारा प्राप्त करना था। यहां के निवासी उन देवताओं को पूजा करते थे, जिनसे उन्हें कुछ लाभ प्राप्त होता था। भूतों की पूजा इसलिए करते थे क्योंकि उनसे विनाश का डर रहता था।

बेबीलोन वासियों के परलोक के बारे में विचार अस्पष्ट थे। जिस का पता हमें "गिलगमेश आख्यान,, नामक महाकाव्य के 12 वें सर्ग में मिलता है। इनका मानना था कि मृत्यु के बाद मनुष्य परलोक में जाता है। इसलिए उसके शव के साथ कब्र में भोजन और उसकी प्रिय वस्तुएं गाड़ दी जाती थी ताकि वह व्यक्ति परलोक में शान्तिपूर्वक जीवन व्यतीत कर सके। जो व्यक्ति मृतक के साथ कब्र में कुछ नहीं गाड़ते थे उसके बारे में यहां कहा जाता कि मृतक व्यक्ति की आत्मा को चैन नहीं मिलेगा और वह भूत बनकर दूसरों को कष्ट पहुंचायगा।

देवालयों में पुजारी देवताओं की पूजा करता था। पुजारियों का समाज में प्रतिष्ठित स्थान था। ये जादू टोने करके भूतों से रक्षा करते थे। जादू टोना असफल रहने पर इनको राजा की तरफ से कठोर सजा दी जाती थी। पुजारियों का एक वर्ग देवज्ञ कहलाता था, जो शकुन बताता था। इसके अतिरिक्त देवज्ञ देवताओं के सामने भेड़ की बलि देते थे और भेड़ के लिवर के चिन्ह ही देखकर भविष्यवाणी करते थे। जो व्यक्ति अपने भविष्य के बारे में जानना चाहता था वह देवज्ञ को एक भेड़ बली चढ़ाने को देता था। पुजारियों का दूसरा वर्ग ज्योतिषी था। जो नक्षत्रों का अध्ययन कर, राज्य पर होने वाले शुभ अशुभ प्रभावों की भविष्यवाणी करते थे। इसके अतिरिक्त पंचाग का निर्माण और वर्ष का नामकरण भी करते थे। यूरोपवासियों ने ज्योतिष का कार्य बबीलोनिया के निवासियों से सीखा। बेबीलोन में एक अशिष्ट प्रथा थी कि जो स्त्री सन्तान की इच्छुक होती थी उसे इशतर देवी के मन्दिर में जाकर अपरिचित पुरुष के साथ अपनी रातें व्यतीत करनी पड़ती थी। इस वेश्यावृत्ति से जो धन प्राप्त होता था उसका उपयोग मन्दिर के लिये किया जाता था।

4 दर्शन—बेबीलोनिया के निवासी दर्शन के प्रति रुचि रखते थे। मनुष्य की मृत्यु क्यों होती है? मृत्यु के बाद व्यक्ति कहां पर जाता है? मौत की सजायें क्यों दी जाती है? सज्जन व्यक्तियों को कष्ट क्यों सहना पड़ता है? आदि अनेक प्रश्न इनके सामने थे उनकी यह धारणा थी कि मनुष्य देवता की कृपा पर ही जीता है और मृत्यु के पश्चात मनुष्य को अपने कार्यों के अनुसार स्वर्ग तथा नरक मिलता है।

5 शिक्षा एवं लिपी—संसार के प्राचीनतम शब्द कोष की उत्पत्ति बबीलोन में हुई थी। यहाँ विद्यालय मन्दिरों में होते थे। विद्यार्थियों को विद्यालयों में मिट्टी की तख्तियों पर पढ़ाया जाता था। इन तख्तियों को अभ्यास पुस्तक कहा जाता था। ऐसी 30,000 तख्तियों बोर्सिया नामक स्थान पर प्राप्त हुई है। यहां छात्रों को कानून धर्म दर्शन, ज्योतिष, इतिहास, भूगोल, गणित, विदेशी भाषा आदि विषयों की शिक्षा दी

जाती थी। इसके अतिरिक्त छात्रों को धनुष चलाना और शिकार करना भी सिखाया जाता था। छात्राओं को नृत्य तथा संगीत सिखाया जाता था। बेबीलोन वासियों ने सुमेरिया की कीलाक्षर लिपि में सुधार कर उसको अपना लिया। उनकी लिपि में 300 शब्द थे। बेबीलोन की भाषा सर्व प्रथम पढ़ने का श्रेय अंग्रेज राजदूत हेनरी रॉलिसन को है, जिसने बहिस्तान नामक स्थान पर बेबीलोन के शिलालेख को पढ़ कर इसकी लिपि को स्पष्ट किया।

6 साहित्य—बेबीलोनिया ने साहित्य के क्षेत्र में भी काफी प्रगति करली थी। सर्वप्रथम महाकाव्य, 'गिलगमेश' लिखा गया। जिसमें 12 अध्याय थे। इसमें युद्ध, साहसपूर्ण कार्य, मित्रता, स्त्री का प्रेम तथा घृणा आदि का उल्लेख है। यह पश्चिमी एशिया में बहुत लोकप्रिय हुआ। और कुछ समय पश्चात् अन्य भाषाओं में भी इसका अनुवाद हुआ। महाकाव्य के अतिरिक्त कविताओं की रचनायें की गई तथा कहानियां भी लिखी गई। 'भाग्य लेख' 'एटन' गडरिये की कथा, मानव की आकाश में उड़ने की सबसे प्राचीन कहानी, अमद मधुए की कहानी आदि उस समय की प्रसिद्ध लोकप्रिय कथायें हैं। उस समय बेबीलोन में बैरोसस नामक एक प्रसिद्ध इतिहासकार हुआ, जिसने 280 ई० पू० में बेबीलोन का सारा इतिहास लिखा।

7 कला—

(i) स्थापत्य कला—बेबीलोनिया में स्थापत्य कला का बहुत अधिक विकास हुआ। उस समय विशाल एवं उच्च देवालयों का निर्माण किया जाता था, जिसकी सबसे ऊपर की एक बुर्ज सोने से अलंकृत की जाती थी। डेल और जिग्गुरत के देवालय उस समय की स्थापत्य कला के सुन्दर नमूने हैं।

(ii) मूर्ति कला—इस समय मूर्तिकला के क्षेत्र में भी काफी प्रगति हुई। उस समय के लोग पत्थरों की विशालकाय मूर्तियां बनाते थे। राजा तथा दास की अनेकों ऐसी मूर्तियां प्राप्त हुई हैं।

(iii) चित्रकला—बेबीलोन के राजमहलों तथा देवालयों की दीवारों पर बहुत चित्र उपलब्ध हुए हैं। इस समय अधिकांश चित्र युद्ध, जंगली जानवर तथा सांडों के बनाये जाते थे और उनमें सातों रंगों का प्रयोग किया जाता था।

(iv) संगीत कला—बेबीलोन के निवासी संगीत के प्रेमी थे। देवालयों में धार्मिक उत्सवों के अवसर पर सामूहिक गानों में गायक लोग गाने गाते थे, तथा महिलायें देवालयों में नृत्य करती थी। उस समय के प्रमुख वाद्य यन्त्र बांसुरी, बीन, सारंगी, ढोल आदि थे।

8 विज्ञान—

(i) गणित—बेबीलोन के निवासियों ने गुणा करने की पद्धति तथा 1,10 और 100 के तीन अंकों का सर्वप्रथम आविष्कार किया। इनको दशमलव प्रणाली का भी ज्ञान था एवं 1 से 9 तक की संख्यायें लिखना आता था। दस, बीस, तीस तथा

उसके बाद फिर साठ का एक चिन्ह था, जिससे ये बडी बडी संख्याऐं लिख सकते थे।

(ii) ज्योतिष क्षेत्र—बेबीलोनिया ने ज्योतिष के क्षेत्र मे काफी उन्नति कर ली थी। उन्होंने नक्षत्रों का अध्ययन कर सूर्य ग्रहण तथा चन्द्र ग्रहण की भविष्य वाणी करनी शुरू करदी। इसके अतिरिक्त उन्होंने पर्चांग का निर्माण कर लिया तथा जल घडी व धूप घडी के द्वारा समय का पता लगाते थे। उनके अनुसार एक वर्ष में 12 महिने, एक दिन मे 12 घटे तथा एक घटे मे 60 मिनिट होते थे इसके अतिरिक्त खगोल विद्या मे इन्होंने इतना अधिक विकास कर लिया था कि वे समुद्र मे आने वाले तूफानो की पहले से भविष्यवाणी कर देते थे। इतिहासकार टोयनबी का मानना है कि "बेबीलोनिया के ज्योतिष अध्ययन ने ही ज्योतिष की नीव रखी है।"

(iii) चिकित्सा शास्त्र के क्षेत्र मे—बेबीलोन के लोगो ने अध विश्वासी होते हुए भी चिकित्सा के क्षेत्र मे मन भावन प्रगति की। ये लोग बीमारियों का इलाज करना जानते थे। प्रत्येक बीमारी के लिये अलग अलग दवाईया होती थी। यहा के लोग ऐसा मानते थे कि बिमारी भूत-प्रेत आदि के कारण हुई है, इसलिये दवा के स्थान पर जादू, मन्त्र, टोना, तावीज आदि से इसका उपचार कर देते थे। रोगी के शरीर से प्रेत को भगाने के लिये दवाइयो मे साप का मास, मिट्टी बच्चा मास, हिड्डिया तथा मल मूत्र आदि मिलाकर देते थे। यदि किसी डाक्टर का इलाज असफल रहने पर रोगी की मृत्यु हो जाती थी तो ऐसी अवस्था मे डाक्टर के दोनो हाथ काट दिए जाते थे।

सभ्यता को विश्व को देन—बेबीलोन की सभ्यता का दक्षिण पश्चिमी एशिया तथा यूनान पर गहरा प्रभाव पडा और मानव सभ्यता को काफी प्रभावित किया। बेबीलोन ने माप प्रणाली का अविष्कार किया। विल डुरा का मानना है कि "एक मास का विभाजन चार सप्ताहो मे, घडी का 12 घटो मे, घटे का 60 मिनट मे और मिनट का 60 सैकण्डों मे विभाजन बेबीलोन का अवशेष है।"

इनके द्वारा महाकाव्य तथा लोकप्रिय कथाऐं लिखी गई। गणित ज्योतिष शास्त्र, खगोल शास्त्र आदि मे भी काफी प्रगति कर ली थी। टायनबी का मानना है कि "ज्योतिष का प्रसार यहीं से हुआ। भारत को इनका ऋणी होना चाहिये। इन्होने 12 राशिया और नक्षत्रो के नाम रखे। एक कैलेण्डर तैयार किया। आज का कैलेण्डर बेबीलोनिया के कैलेण्डर पर आधारित है। सेवाइन ने लिखा है कि "बाद के विकास के लिये आधार भूमि के रूप मे बेबीलोनी सभ्यता के महत्व की अब पूरी तरह प्रशंसा की जा रही है।"[1]

1 सेवाइन—ए हिस्ट्री आफ वर्ल्ड सिवलीजेशन पृष्ठ 79

सभ्यता का पतन—जब बेबीलोनिया के शासकों ने विलासी जीवन व्यतीत करना शुरू कर दिया। तब 17वी शताब्दी मे केसाइट जाति ने बेबीलोनिया पर अधिकार कर लिया। इतिहासकार जेक्रास पिरेनी का मानना है कि "केसाइट जाति के जगली लोग 17वी शताब्दि ई० पू० मे गद्दी पर बैठ गये। सुमेरियन नगरो का पूर्ण पतन हो गया और बेबीलोन का सम्राट अब इन मनुष्यों से परास्त हो गया जो कि खानाबदोश से अधिक कुछ नही थे। केवल एक शहर बबीलोन रहा किन्तु वह भी राजधानी मे नही। सेवाइन ने लिखा है कि "वास्तव मे बेबोलोनिया के ज्ञान के सागर पर अज्ञान मार्गों को आश्रित किया। उनके प्रबुद्ध लोग आने वाली कई शताब्दियों के विद्वानो के लिये मार्ग दर्शक सकेत बने रहे।"[1]

हर्नशा का मानना है कि "उनकी सभ्यता हमारे विधि विधान, हमारे ज्योतिष ज्ञान, कैलेण्डर, समय विभाजन आदि म आज भी जीवित है।

असीरिया—समटिक जाति ने दजला नदी के तट पर अधिकार कर लिया। असुर नगर के नाम पर ही यह सभ्यता असीरिया की सभ्यता के नाम से प्रसिद्ध हुई। सेमेटिक जाति ने निन्वेह को अपनी राजधानी बनाकर 700 वर्षों तक यहा पर राज्य किया। यहा के प्रमुख शासक निम्नलिखित थ —

1. **सेरेगान द्वितीय का शासन काल**—सेरेगान द्वितीय ने 772 ई० पू० से लेकर 705 ई० पू० तक शासन किया। यह सबसे प्रतापी राजा था। सेरेगान द्वितीय टीगलेथ पिलसर के यहा पर सनापति था। उसकी मृत्यु के पश्चात् सेरेगान द्वितीय ने राज्य पर अधिकार कर लिया व खुद शासक बन गया। सेरेगान द्वितीय ने ही असीरियन साम्राज्य की नीव रखी। यह एक महत्वाकांक्षी शासक था। जिसने कई युद्ध किये और सभी मे विजय प्राप्त की। इतिहासकारो का कहना है कि "यह सम्राट वीर एव उत्साही था और वह जो भी युद्ध लडता था उसमे स्वय व्यक्तिगत रूप से भाग लेता था और प्रत्येक युद्ध मे जिसमे वह लडता था, सकटमय स्थान ग्रहण करता था।" उसने मिश्र, एलम तथा फिलीस्तीन के शासकों को युद्धो मे पराजित किया। निन्वेह मे एक सुन्दर महल का निर्माण करवाया तथा अपने नाम पर एक नया नगर बसाकर उसे राजधानी बनाया। उस नगर का नाम 'सेरेगान बर्ग" रखा। उसके शासनकाल मे व्यापार की प्रगति हुई। 705 ई० पू० मे वह युद्ध करते हुए मृत्यु को प्राप्त हुआ।

2. **सेनाचेरिब का शासन काल** (705 ई० पू० से 681 ई० पू०)—

सेरेसेगान द्वितीय की मृत्यु के पश्चात् उसका पुत्र सेनाचेरिब असीरिया का शासक बना। यह भी एक महान योद्धा तथा कुशल प्रशासक था। इसके साम्राज्य का विस्तार होने के कारण स्थान स्थान पर विद्रोह होने लग गए थे। लेकिन इसने उन विद्रोहों को कुशलता से दबा दिया। जब मिश्र ने स्वतन्त्रता प्राप्त करने के लिये विद्रोह कर दिया तो सनाचेरिब ने उस विद्रोह का दमन कर दिया। इसने

1. सेवाइन—ए हिस्ट्री आफ वर्ल्ड सिवलीजेशन पृष्ठ 80

"निनवेह नगर" को अपनी राजधानी बनाया, जिसके चारो ओर दीवार बनवाकर उसे सुरक्षित कर दिया। सनाचेरिब एक कुशल प्रशासक था। इसलिये उसने अपने साम्राज्य को प्रान्तो व जिलो मे विभाजित कर रखा था। प्रान्त का सूबेदार तथा जिले का जिलाधीश उसकी आज्ञा का पालन करते थे। व्यापार का विकास करने के लिये सडको का निर्माण करवाया और डाक व्यवस्था को चालू किया। जनता को पानी उपलब्ध कराने के लिये निनवेह नगर मे एक नहर का निर्माण करवाया। दुर्भाग्यवश इसके लडके ने इसका वध कर दिया।

3. असुर बेनीपाल (668 ० पूर्व से 606 ई० पूर्व)—

असुर बेनीपाल 668 ई० पूर्व मे असीरिया का शासक बना। यह सेनाचेरिब का पौत्र था तथा अपने समय का एक महान विजेता और कुशल प्रशासक था। इसका साम्राज्य बबीलोनिया मीडिया, सीरिया, फिनीशिया, सुमेरिया, एलम तथा मिस्र तक फैला हुआ था। असुर बेनीपाल युद्ध के समय क्रूर बन कर शत्रुओं का विध्वस करता था। इसकी पुष्टि इलेम से प्राप्त शिलालेख से होती है। यह सब कुछ होते हुए भी उसके शासन काल मे व्यापार, शिक्षा और कला आदि ने काफी उन्नति की। इसलिए उसका शासनकाल "स्वर्णयुग" कहलाता है। असुर बेनीपल की मृत्यु के पश्चात साम्राज्य पतन की ओर अग्रसर हो गया, एव 606 ई० पूर्व मे कैल्डियो ने इस पर अधिकार कर लिया।

असीरिया की सभ्यता का वर्णन—असीरिया निवासियो ने बेबीलोन की सभ्यता को अपनाया। इस क्षेत्र मे उनकी कोई नई देन नही है। केवल उन्होने प्रशासन व्यवस्था तथा सेना के क्षेत्रो म विशेष उन्नति की। उनकी सभ्यता का वर्णन निम्न प्रकार स किया जा सकता है—

1. आर्थिक व्यवस्था—असीरिया के लोगो का मुख्य व्यवसाय कृषि था। नदियो के पानी मे खेतो की सिचाई की जाती थी। सेनाचेरिब पहला शासक था, जिसने सिचाई की व्यवस्था के लिए एक पक्की नहर का निर्माण करवाया। जिसके द्वारा निनवेह नगर से तीस मील दूरी तक पानी पहुचाया जाता था। असीरिया की मुख्य पैदावार गेहू, जौ, जैतून, कपास तथा अगूर आदि थी। उस समय कई वस्तुओ का उत्पादन कारखानो मे किया जाता था। प्रत्येक उद्योग ने अपना एक सघ बना रखा था। राजा ने उद्योगो को कई करो मे छूट दे रखी थी। सेनाचेरिब ससार का पहला राजा था, जिसने चादी के सिक्के चलाए थे।

2 सामाजिक व्यवस्था—समाज तीन भागो मे विभक्त था। उच्च वर्ग 2—मध्यम वर्ग तथा 3—निम्न वर्ग। उच्च वर्ग में राजा सामन्त, पुरोहित एव मध्यम वर्ग मे व्यापारी तथा मजदूर और निम्न वर्ग मे दास, आते थे। उस समय दासो की दशा बहुत शोचनीय थी। युद्ध मे बन्दी बनाये गये व्यक्तियो के साथ अमानुषिक व्यवहार किया जाता था। उनके जीते जी खाल खिचवा ली जाती थी,

उनको जंगली जानवरों से लड़ने के लिये बाध्य किया जाता था और उनके सामने ही उनके बच्चों की आँखें निकाल दी जाती थी। असीरिया में स्त्रियों को सम्मान नहीं दिया जाता था। उस समय पुरुष दूसरी स्त्रियों का उपभोग कर सकते थे। जबकि स्त्रियां किसी दूसरे पुरुष के साथ उपभोग नहीं कर सकती थी। समाज में वेश्यावृत्ति भयंकर रूप से प्रचलित थी और सरकार ने उसे संरक्षण दे रखा था। यदि कोई व्यक्ति अपनी पत्नी के प्रेमी की हत्या कर देता तो उसे सरकार की ओर से कोई सजा नहीं दी जाती थी। असीरिया के लोग अपनी जनसंख्या में वृद्धि करना चाहते थे, इसलिये यदि कोई स्त्री गर्भपात करवा लेती थी तो उसे राजा की ओर से कठोर सजा दी जाती थी।

3 प्रशासन व्यवस्था—असीरिया के सम्राट युद्ध के समय, क्रूर व अत्याचारी बन जाते थे। नगरों को जलाने में तथा युद्ध बन्दियों को कत्ल करने में उन्हें आनन्द प्राप्त होता था। युद्ध में भय उत्पन्न करने के लिए नगर के लोगों की खाल खिचवा लेते थे। एच० जी० वेल्स ने इस बारे में लिखा है कि "असीरिया ही प्रथम शक्ति थी जिसने लौह और रुधिर (Blood and Iron) के सिद्धान्तों को विश्व में प्रतिपादित किया।"

असीरिया के सम्राट निरंकुश थे। वे दैविक सिद्धान्त के अनुसार अपनी प्रजा पर शासन करते थे। उनके अधिकारों पर कोई नियन्त्रण नहीं था। वे परम्परागत नियमों का पालन करते थे। पुरोहितों के द्वारा बताये गये अपशकुन से वे डरते थे। असीरिया राज्य का प्रमुख देवता "असुर" था। युद्ध के समय भीषण अत्याचार इस देवता को प्रसन्न करने के लिए किए जाते थे।

असीरिया के राजाओं ने अपने साम्राज्य में कुशल शासन प्रबन्ध की स्थापना की। उन्होंने साम्राज्य को कई प्रान्तों में विभाजित किया। प्रत्येक प्रान्त में एक गवर्नर की नियुक्ति की जाती थी जिसका काम प्रान्त में शान्ति व्यवस्था बनाये रखना था। राजस्व कर वसूल करना, तथा मुकदमों का फैसला करना था। सम्राट का प्रान्तों के गवर्नर पर कठोर नियन्त्रण होता था।

असीरिया का न्याय एवं दंड विधान बहुत कठोर था। अंग विच्छेद करना कोड़ों से पीटना, मृत्यु दंड देना, शारीरिक कष्ट पहुँचाना आदि सजाएं अपराधियों को दी जाती थी। विल्डयूरेन्ट का कहना है कि "असीरिया की राज्य व्यवस्था मुख्य रूप से एक प्रकार से युद्ध तन्त्र का ही एक रूप था।"

4 धार्मिक दशा—असीरिया के निवासियों की धर्म के प्रति अधिक आस्था नहीं थी। इनका इष्ट देवता "असुर" था जो कि शत्रुओं का विनाश करता था। इसके अतिरिक्त वे बेबीलोनिया के सर्वोच्च देवता "मार्डुक" और देवी "इश्तर" की भी पूजा करते थे। इन लोगों की ऐसी धारणा थी कि मृत्यु के पश्चात प्रत्येक व्यक्ति की आत्मा नरक में जाती है जहां का राक्षस अलात उनको अपने कर्मों

अनुसार सजा देता है। जिसने बुरे कर्म किए हो उसकी आत्मा को कष्ट पहुचाया जाता है और जिसने अच्छे कर्म किए हो उसकी आत्मा को वो राक्षस स्वर्ग के जल की बून्द भी नही देता है। असीरियन लोग भूत प्रेत मे विश्वास रखते थे और उनने अपनी रक्षा के लिए जादू और मत्रो के द्वारा तैयार किए गए ताविजो को अपने गले मे पहनते थे।

5 कला—

I. स्थापत्य कला—असिरिया ने स्थापत्य कला के क्षेत्र मे काफी प्रगति कर ली थी। उनके द्वारा निर्मित भवनो की विशेषता यह थी कि वे बहुत विशाल होते थे, लेकिन उसमे सौन्दर्य का अभाव था। इन्होने अपने भवनो के अन्दर मेहराबो और स्तम्भो का प्रयोग अधिक मात्रा मे किया। इतिहासकार विलड्युरेन्ट ने अपनी पुस्तक "सभ्यता की कहानी" मे लिखा है कि " ईरानियो ने स्तम्भो का प्रयोग इन्ही लोगो से सीखा।"

(ii) मूर्ति कला—असीरिया की मूर्ति कला के बारे मे कोई विशेष जानकारी नही मिलती है। ऐसा प्रतीत होता है कि उस समय पत्थरों की विशाल मूर्तिया बनाई जाती थी। ये मूर्तिया जानवरों और मनुष्यो दोनो की बनाई जाती थी। खोरसाबाद के नगर द्वार के पास बनी हुई बैलो की मूर्तिया तथा ब्रिटिश संग्रहालय में रखी असुर बेनीपाल द्वितीय की विशालकाय मूर्ति बहुत सजीव व सुन्दर लगती है।

(iii) चित्रकला—असीरिया ने प्रस्तर चित्र निर्माण कला मे काफी उन्नति की। उस समय देवताओ के चित्र, पशुओ के चित्र तथा मानव की आकृतियों के चित्र आदि प्रस्तर पर चित्रित किये जाते थे। पशुओ के प्रस्तर चित्र अधिक सजीव लगते हैं। एक प्रस्तर चित्र का टुकडा प्राप्त हुआ है, उसमे एक शेर शेरनी के साथ पेड की छाव के नीचे आराम ले रहा है। यह चित्र विश्व मे प्रस्तर कला का अद्वितीय नमूना है।

6. विज्ञान तथा साहित्य—असीरिया के निवासियो ने वनस्पति विज्ञान के क्षेत्र मे सर्वाधिक उन्नति की। ये केन, केमल तथा बेरी आदि पौधों से औषधियाँ बनाते थे। उस समय की मिट्टी की तख्तियों को देखने से पता चलता है कि यहां के लोग इतिहास भी लिखा करते थे। इनके इतिहास मे अपनी विजयो को बढ़ा चढ़ाकर लिखा गया है और पराजयो का उल्लेख नही किया गया है। असुर बेनीपाल के पुस्तकालय मे अभ्यास पुस्तको के रूप मे 30,000 तख्तिया मिली हैं। इनमे से बहुत कम ऐसी तख्तिया हैं, जिनसे साहित्यिक जानकारी प्राप्त होती हैं।

असीरिया की विश्व सभ्यता को देन—प्रान्तीय शासन व्यवस्था असीरिया की देन है। डाक व्यवस्था का प्रचलन भी उनके द्वारा किया गया था। युद्ध कला

मे यहा के सैनिक बहुत दक्ष थे। इनके सम्राटों द्वारा लिखवाई गई मिट्टी की तख्तिया प्राप्त हुई है, जिससे ऐतिहासिक जानकारी प्राप्त होती है। उनकी हिंसावादी प्रवृत्ति और रक्तपात की नीति से जनता असन्तुष्ट थी। उनकी यही नीति पतन का कारण सिद्ध हुई।

सभ्यता का पतन—असीरियन शासक अपनी निरकुश नीति के आधार 150 वर्ष तक राज्य करते रहे। उनकी नीति के कारण न तो व्यापार, कला का विकास हुआ और न ही साम्राज्य म शाति व्यवस्था बनी रही। यहा का सामाजिक जीवन नष्ट हो गया। प्रसिद्ध इतिहासकार टायनबी ने अपनी पुस्तक 'स्टडी आफ हिस्ट्री" म इस सभ्यता के पतन के कारणो पर प्रकाश डालत हुए लिखा है कि "असीरियन सभ्यता के विनाश का कारण यह नहीं था कि उनक शस्त्रो पर जग लग गया था। सैनिक दृष्टि से वे निरन्तर प्रगतिशील व योग्य रहे। उनका विनाश इसलिये हुआ कि उनकी आक्रान्ता नीति न उनको थका दिया और वे अपने पडोसियो को असहाय हो गय।[1]'

केल्डियन सभ्यता—

"केल्डियन लोग फारस की खाडी से आये थे इनके नेता नबोपोलसर न असीरिया पर अधिकार कर लिया। इस जाति का सबसे पराक्रमी राजा नेबूचन्द था, जिसन 604 ई० पूव मे 562 ई० तक राज्य किया। उसन 587 इ० पू० म जेरुसलम पर विजय प्राप्त की और बेबीलोन को अपनी राजधानी बनाया। बबीलोन की सुरक्षा के लिये एक 200 वर्ग मील ऊची दीवार का निमाण करवाया एव दजला नदी पर एक पुलका निर्माण करवाया। नेबूचन्द न अपनी ईरानी रानी को खुश करने के लिये बबीलोन में "हेंगिग गार्डन' बनवाया, जो सुन्दरता की दृष्टि स विश्व की आश्चर्यजनक चीजो म से एक है। इसके अतिरिक्त उसने नगर म कई सुन्दर देवालयो का निर्माण करवाया। इन सब निर्माण कार्यों के कारण बेबीलोन नगर ससार का सबसे समृद्ध और विशाल नगर बन गया। व्यापारिक प्रगति के कारण यहा की जनसख्या 5 लाख हो गई थी।

विज्ञान से क्षेत्र म भी इस समय काफी विकास हो चुका था। यहाके निवासी सात ग्रहो को देवता समझकर उनकी पूजा करते थे। इन्होंने तारो का भी अध्ययन किया। यूनानियो ने इसकी ज्योतिष विद्या का अनुसरण किया।

साम्राज्य का पतन—नेबूचन्द की मृत्यु के पश्चात् उसके उत्तराधिकारी दुर्बल तथा अयोग्य सिद्ध हुए। दुर्भाग्यवश इस जाति का अन्तिम शासक विद्वान था। इसलिये उसने प्रशासन मे कोई रुचि नही ली और 538 ई० पूर्व मे ईरानियो ने बेबीलोन पर आक्रमण कर अधिकार कर लिया।

1 टायनबी–स्टडी आफ हिस्ट्री

स्पष्ट है कि मैसोपोटामिया में कई जातियां आई और यहां पर कई सभ्यताओं का विकास हुआ। इतिहासकार वार्स का कहना है कि 'मैसोपोटामिया एक जल-समान है जिसमें भिन्न भिन्न मानव जातियों की धाराओं का संगम है।"

प्रस्तावित सन्दर्भ पुस्तकें

1 नेहरू, जवाहर लाल—विश्व इतिहास की झलक भाग प्रथम
2 पन्ट व जौन—विश्व का इतिहास
3 मैकनल बर्नस—वेस्टर्न सिवलीजेशन
4 वीच, डबल्यू एन—हिस्ट्री आफ दी वर्ल्ड
5 सेवाइन—ए हिस्ट्री आफ वर्ल्ड सिवलीजेशन
6 विल डयूरेन्ट—सभ्यता की कहानी
7 डा गोयल—विश्व की प्राचीन सभ्यताएं
8 वेल्स, एच जी दी आउट लाइन आफ हिस्ट्री



अध्याय 4

फारस की सभ्यता

फारस की खाड़ी के पूर्व मे "पार्स" नामक एक प्रदेश था। यहा के शासकों ने 200 वर्षों तक चार करोड लोगो पर राज्य किया। यहा पर जिस सभ्यता का विकास हुआ, उसे ईरान या फारस की सभ्यता कहते हैं। फारसी लोगा का नतिक स्तर काफी ऊँचा था। इस बारे म" सेवाइन" ने लिखा है कि" पारसियो म यह कहावत प्रचलित थी कि" झूठ बोलने का दोषी होने स मर जाना बेहतर है।"। फारस का राजनैतिक इतिहास ईसा मे नवी शताब्दी पूर्व म प्रारम्भ होता है। प्राचीन काल में यह प्रदेश सभ्यता का एक महत्वपूर्ण केन्द्र बना हुआ था। बीच" का कहना है कि" यद्यपि अन्य सभ्यताओ के मुकाबले म फारसियो की वास्तविक देन कम महत्वपूर्ण है परन्तु उन्होने एक महत्वपूर्ण लक्ष्य के लिये कार्य किया।" 2

फारसी लोग कौन थे या इनका मूल निवास स्थान कौनसा प्रदेश था। इस पर दो मत दिए जाते है। पहले मत के अनुसार ये आर्यों की ही एक जाति थी जो मध्य एशिया से चलकर ईसा मे 1500 वर्ष पूर्व फारस मे आई थी। दूसरे मत के अनुसार ये आर्य लोग भारत के निवासी थे, परन्तु इनके धार्मिक विचार आर्यो से नही मिलतेथे। इसलिये ये भारत को छोडकर फारस चले गए। इस कथन की पुष्टि फारसियो के धार्मिक "जिन्द अवेस्था" से भी होती है।

फारस का इतिहास जानने के स्रोत

फारस का इतिहास जानने के प्रमुख साधन निम्नलिखित हैं—

1— जिन्दअवेस्ता—फारस काइ तिहास जानने के लिये उनका धार्मिक ग्रन्थ अवेस्ता" बहुत उपयोगी है। डा० गोयल का मानना है कि "फारस के ग्रन्थ "अवेस्ता का इतिहास मे वही स्थान है जो भारत मे वेदो का है।" 1

जिन्द अवेस्ता मे 12,000 अध्याय है और इस ग्रन्थ को 12,000 पशुओ की खालो पर लिखा गया था। 1000 ई० पूर्व मे जरथुस्त्र नामक धर्म सुधारक

1—सेवाइन—हिस्ट्री आफ वल्र्ड सिविलाइजेशन पृष्ठ 102
2—बीच, डब्ल्यू, एन—हिस्ट्री आफ दि वल्र्ड पृष्ठ 63
3—डा० गोयल—विश्व की प्राचीन सभ्यतायें, पृष्ट 509

ने इसमे कई संशोधन किए थे। इसके पश्चात् भी हारवामशी साम्राज्य के शासको तथा पार्थियन सम्राटो के द्वारा इसमे और कई संशोधन किए गए। फिर भी वहा के इतिहास को जानने के लिए यह एक मूल्यवान ग्रन्थ है।

यूनानी इतिहासकार हरोडोटस की पुस्तक 'हिस्ट्री "भी फारस के इतिहास को जानने के लिए बहुत उपयोगी है यद्यपि यह पुस्तक कल्पना प्रदान अधिक है, फिर भी इससे उस समय की एतिहासिक जानकारी प्राप्त होती है।

"फारस का राजनैतिक इतिहास—फारस का राजनैतिक इतिहास ईसा से 9 वीं शताब्दी के पूर्व प्रारम्भ होता है। इस प्रदेश पर मीडिया नामक जाती ने अधिकार लिया। इस जाती ने यहा पर कृषि का अच्छा विकास किया। उनके राजा दायोसिज ने मूसा नगर पर विजय प्राप्त की। इसके पश्चात उसने 702 ई० पूर्व मे असीरियन सम्राट मेनाचेरिब के विरुद्ध आक्रमण किया लेकिन फारस का वास्तविक राजनैतिक उत्थान 700 ई० पूर्व से शुरु होता है। यहा पर निम्न राजाओ ने शासन किया –

1 साइरस (कुरुष)—जब लीडिया पर इश्तुवेग जैसा अयोग्य शासक राज्य कर रहा था, उस समय साइरस द्वितीय ने 550 ई पूर्व मे मीडिया पर अधिकार कर लिया। वह अपने समय का प्रतापी शासक था, जो प्रजा हित कारी कार्य करना अपना कर्तव्य समझता था। मीडिया का शासक बनते ही साइरस ने साम्राज्य विस्तार की नीति अपनाई।

साइरस की विजयें—साइरस की प्रमुख विजयें निम्नलिखित थी—

1 लीडिया पर विजय—उस समय लीडिया पर क्रोसेस नामक व्यक्ति शासन कर रहा था, जो कि अत्यन्त वीर तथा साहसी था। उसके अधीन लीडिया के साम्राज्य की सीमाऐं एशिया माइनर तक पहुच गई थी। साइरस लीडिया जैसे सम्पन्न व उन्नत राज्य पर अधिकार करना चाहता था। इसलिये उसने लीडिया की राजधानी सार्डिस पर आक्रमण कर दिया। क्रोसेस ने बडी बहादुरी से सामना किया, परन्तु युद्ध मे साइरस को विजय प्राप्त हुई। क्रोसेस अपनी पराजय से दुखी होकर स्वय को अग्नि देव के भेंट चढाने वाला था परन्तु साइरस ने उसे बचा लिया और अपने दरबार मे उसे सम्मानित पद प्रदान किया।

2 बेबीलोनिया पर विजय—उस समय बेबीलोनिया पर नेबोनीडस नामक व्यक्ति शासन कर रहा था। वह शासन के प्रति उदासीन था इसलिये जनता इससे असन्तुष्ट थी। साइरस ने जनता का सहयोग प्राप्त कर बेबीलोनिया पर आक्रमण कर दिया। नेबोनीडस ने बडी बहादुरी के साथ सामना किया परन्तु युद्ध मे साइरस विजयी हुआ इसके पश्चात् साइरस ने सीरिया तथा फिनिशिया पर भी अधिकार कर लिया।

3 यूनानी नगर राज्यों पर अधिकार—साइरस ने एशिया माइनरके तटवर्ती यूनानी नगर राज्यो पर भी अधिकार कर लिया। इसमे उसे वहा के व्यापारियो ने भी सहयोग दिया परन्तु इस विजय के परिणाम स्वरुप साइरस को आगे चलकर यूनान से युद्ध करना पडा।

डा0 गोयल ने साइरस की विजयो के बारे मे लिखा है कि उसका ईरान के इतिहास मे वही स्थान है जो युनान के इतिहास म सिकन्दर का और भारत के इतिहास मे चन्द्र गुप्त मौर्य का।"[1]

साइरस का मुल्याकन—साइरस अपने समय का प्रतापी शासक था जिसने एक विशाल सेना तैयार की और उसकी सहायता से लीडिया असीरिया, बेबीलोन, यूनानी नगर राज्यों पर विजय प्राप्त कर एक विशाल साम्राज्य स्थापित किया। वह एक बहादुर योद्धा था, और बहादुरो की कद्र करता था। यही कारण था कि उसने कासेस को अग्नी मे जलने से बचाया तथा उसे अपने दरबार मे सम्मानित पद प्रदान किया। साइरस शारीरिक दृष्टि से बहुत सुन्दर था, इसलिए युनानी नाटककारो ने अपनी रचनाओं मे उसे नायक का स्थान प्रदान किया।

2 केम्बीसस—साइरस की मृत्यु 529 ई० पूर्व म हो गयी उसकी मृत्यु के पश्चात उसका पुत्र केम्बीसस फारस का शासक बना। गद्दी पर बैठने के पश्चात इसने भी साम्राज्य विस्तार की नीति को अपनाया। केम्बिसिस ने 525 ई0 पूर्व में मिश्र पर आक्रमण किया। उस समय वहाँ अराजकता एव अव्यवस्था फैली हुई थी। इसलिए उसका मिश्र पर अधिकार हो गया। वह अपने पिता की भांती उदार नही था अपितु-क्रूर एव असहिष्णु था इसलिए इसन मिश्र के पराजित सैनिको के साथ क्रूरतापूर्ण व्यवहार किया और मिश्र के कई देवालयो को तोडा तथा मूर्तियो का सहार किया। इसके पश्चात् उसने अपने भाई स्मर्डिस, अपनी पत्नी और अपने एक पुत्र तथा क्रोसेस को मौत के घाट उतार दिया। केम्बिसस के इन अमानवीय अत्याचारो के कारण साम्राज्य म असन्तोष फैल गया। इसकी मृत्यु कब हुई इस बारे म जानकारी नही मिलती लेकिन इतना अवश्य पता चला है कि एक दिन वह राजधानी मे नहीं था। तब गौतम नामक व्यक्ति ने सिंहासन पर अधिकार कर लिया।

3 दारा—गौतम ने फारस पर कुछ दिन तक शासन किया। फारस के सामन्तो ने इसका वध कर दिया और 521 ई० पूर्व मे दारा या दारियस को फारस का शासक बनाया, जो 485 ई० पूर्व तक राज्य करता रहा। दारा के गद्दी पर बैठने ही मिश्र, लीडिया असीरिया, बेबीलोनिया आदि फारस के उपनिवेशो ने विद्रोह कर दिए। उसने 3 वर्षों म इन सभी विद्रोहो का दमन कर दिया। विद्रोहियों म आतक पैदा करने के लिये उसने बेबीलोनिया पर विजय प्राप्त करने के

1, डा० गोयल—विश्व की प्राचीन सभ्यताऐ, प्रष्ठ 508

पश्चात् वहां तीन हजार लोगों का सामूहिक वध करा दिया। इसका परिणाम यह हुआ कि फिर कभी किसी प्रांत ने विद्रोह करने का साहस नहीं किया।

इसके पश्चात् दारा ने साम्राज्य विस्तार की नीति को अपनाया। थ्रेस, मसीडोन पर उसने अधिकार कर लिया और भारत के पंजाब व सिन्ध प्रान्त के अनेक प्रदेशों पर भी अधिकार कर लिया। फारस के साम्राज्य का इतना विस्तार कभी नहीं हुआ जितना कि दारा के समय में हुआ। उसने 490 ई० पूर्व में यूनान पर आक्रमण किया परन्तु युद्ध में पराजित हुआ। दारा की इस पराजय से उत्साहित होकर मिश्र ने विद्रोह कर दिया। इस विद्रोह को दबाने से पहले ही 485 ई० पूर्व में उसकी मृत्यु हो गई।

फारस यूनान युद्ध—फारस के शासक दारा ने यूनान पर अधिकार करने के लिये 490 ई० पूर्व में एथेन्स नगर पर पहला समुद्री आक्रमण किया। उसके पश्चात् फारस और यूनान के बीच में यह युद्ध 12 वर्षों तक चलता रहा। इसे मैराथान युद्ध के नाम से भी पुकारा जाता है।

युद्ध के कारण—इस युद्ध के प्रमुख कारण निम्नलिखित थे—

1 व्यापारी प्रतिस्पर्धा—यूनान का व्यापार पर एकाधिकार था। यहां के निवासी भूमध्य सागर के सभी देशों में व्यापार करते थे। फारस का व्यापार पिछड़ा हुआ था। इसलिए वह यूनान पर अधिकार करना चाहता था। दोनों के बीच यह व्यापारिक प्रतिस्पर्धा युद्ध का कारण बनी।

2[1] राज्य विस्तार के लिए टक्कर—यूनान और फारस दोनों ही राज्यों के शासक महत्वाकांक्षी थे और विशाल साम्राज्य की स्थापना करना चाहते थे। दोनों ही शक्तियां सीरिया, फिनीशिया और पेलेस्टाइन पर अधिकार करना चाहती थीं। जब फारस ने फिनीशिया पर अधिकार कर लिया तो दोनों के बीच युद्ध अवश्यम्भावी हो गया।

3 धर्म के क्षेत्र में विभिन्नता—यूनान के लोग बहुदेववाद में विश्वास रखते थे, जबकि फारस के लोग एकेश्वरवाद के सिद्धान्त में विश्वास रखते थे। धर्म के क्षेत्र में यह विभिन्नता भी युद्ध का कारण बनी क्योंकि दोनों एक दूसरे पर धार्मिक प्रभुत्व स्थापित करना चाहते थे।

4 प्रशासन व्यवस्था—फारस का शासक निरंकुशता के आधार पर अपने विशाल साम्राज्य पर शासन करता था जबकि यूनान में छोटे स्वतन्त्र नगर राज्य थे उनमें प्रजातन्त्रात्मक व्यवस्था विद्यमान थी। इसलिये फारस के शासक ने इन छोटे छोटे स्वतन्त्र नगर राज्यों की आपसी फूट का लाभ उठाकर उन पर अधिकार करने के लिये यूनान पर आक्रमण कर दिया।

---

1 वेल्स, एच० जी०—दी आउट लाइन आफ हिस्ट्री पृष्ठ 311

5 **दारा की साम्राज्यवादी नीति**—फारस का शासक दारा एक महत्वाकांक्षी शासक था और गद्दी पर बैठने के पश्चात् एक विशाल साम्राज्य की स्थापना करने के लिए उसने साम्राज्यवादी नीति अपनाई। अपने इस उद्देश्य की पूर्ति करने के लिये दारा ने यूनान पर आक्रमण कर दिया।

6 **फारस के उपनिवेशों मे विद्रोह**—दारा के शासक बनते ही पहला विद्रोह सिथियनों ने किया। दारा ने इस विद्रोह का दमन कर दिया। दूसरा विद्रोह एशिया माइनर व यूनानी जाति के लोगों द्वारा किया गया। दारा अपनी सेना लेकर विद्रोह का दमन करने के लिए पहुंचा। उस समय एथेन्स ने 20 पानी के जहाज भेजकर इन विद्रोही बस्तियों की सहायता की। इस पर यूनानी सेना ने सार्डिस पर विजय प्राप्त की और इस नगर को जला कर राख कर दिया गया। दारा ने दो वर्ष में इस विद्रोह का दमन कर दिया, लेकिन एथेन्स के द्वारा विद्रोहियों की सहायता की गई थी। इसलिये उसे सजा देने के लिये दारा ने 490 ई० पूर्व में यूनान पर आक्रमण कर दिया।

7 **हिप्पियस का फारस के दरबार मे आगमन**—पिसिस ट्रेटस की मृत्यु के पश्चात उसका पुत्र हिप्पियस यूनान का शासक बना। वह यूनान का अन्तिम प्रजापीडक था। जब उसे राज्य सिंहासन छोड़ने के लिए मजबूर किया गया तो उसने भागकर फारस के सम्राट दारा के दरबार में आकर शरण ली। उसी ने दारा को यूनान पर आक्रमण करने के लिये उत्साहित किया।

युद्ध की घटनाऐं—प्रथम, दारा ने एक विशाल जलसेना के साथ 490 ई पूर्व में यूनान के नगर एथेन्स पर आक्रमण कर दिया परन्तु समुद्री तूफान के कारण उसको सफलता नहीं मिली। दूसरा आक्रमण दारा के पौत्र दतिस ने किया। मैराथान के मैदान में युद्ध हुआ, यूनानी सेना का नेतृत्व मिल्टीडसस कर रहा था। मैराथान के युद्ध मे यूनान के 1000 सैनिक तथा फारस के 6400 सैनिक मारे गए। इस युद्ध मे एथेन्स की विजय हुई और फारस का सम्राट दारा पराजित हुआ। तीसरा भयानक युद्ध 480 ई पूर्व में थर्मोपोली नामक स्थान पर हुआ। युद्ध में यूनानी सेनापति लियोनीदास अपने साथियों के साथ मारा गया। इस युद्ध मे यूनानियों की पराजय हुई और फारस की शानदार विजय हुई। इसके बाद फारस की सेना ने एथेन्स पर भी अधिकार कर लिया। थर्मोपोली की विजय को देखने से पहले ही दारा की मिश्र के विद्रोह का दमन करते समय 40> ई0 पूर्व मे मृत्यु हो गई। दारा की मृत्यु के पश्चात् उसके पुत्र जरर्क्सीज ने यूनान विजय की नीति जारी रखा। इसके पश्चात् यूनान के थेमस्टीक्लीज ने सेलेमिस के युद्ध मे फारस के जहाजी बेड़े को बुरी तरह से हराया। एक बार फिर फारस ने 479 ई0 पूर्व मे यूनान पर आक्रमण किया। दोनो के बीच प्लेटिया के मैदान मे युद्ध हुआ जिसमे फारस की पराजय हुई और यूनान की शानदार विजय हुई। इस प्रकार फारस का यूनान विजय का स्वप्न पूरा नहीं हो सका।

1 **फारस की पराजय के कारण**—यूनान के साथ हुए युद्धो मे फारस की पराजय के प्रमुख कारण निम्नलिखित थे—

1 बेमेल सेना—फारस की सेना मे विभिन्न जातियो के सैनिक थे। जिनकी भाषा अलग अलग थी। उनमे राष्ट्रीय भावना का अभाव भी था। यही कारण था कि फारस की सेना सख्या मे अधिक होते हुए भी पराजित हुई।

2 गुरिल्ला युद्ध पद्धति—फारस के सैनिक खुले मैदानो मे युद्ध करना जानते थे। वे छापामार युद्ध प्रणाली मे अपरिचित थे, जबकि यूनानी सैनिक गुरिल्ला युद्ध पद्धति मे दक्ष थे। इसलिये जब फारस की सेना को यूनान की तग घाटियो मे व पहाड़ो मे युद्ध करना पडा तो उसकी पराजय निश्चित थी।

3. यातायात के साधनो का अभाव—फारस से यूनान बहुत दूर था। उस समय यातायात के साधनों का अभाव के कारण फारस के लिए अपनी सेना को समय समय पर सहायता पहु चाना सम्भव नही था। इसके अतिरिक्त वे वहा की भौगोलिक स्थिति से परिचित नही थे। इसलिए उनकी पराजय हुई।

4 जल शक्ति की निर्बलता—यूनानियो के जहाजी बेडे के मुकाबले मे फारसियो का जहाजी बेडा बहुत कमजोर था। इसलिये यूनानियों ने फारस को सालमीज, प्लेटा व माइकल के युद्धो मे पराजित कर उनकी शक्ति को बहुत कमजोर कर दिया।

5 सेना का सामन्तों पर निर्भर होना—फारस के सम्राट के पास स्वय की कोई सेना नही थी। उसे अपने सामन्तो की सेना पर निर्भर रहना पडता था। जब कभी युद्ध होना था, तो ये सामन्त अपनी सेना लेकर सम्राट की सहायता के लिए पहु,च जाते थे। ऐसी सेना मे अनुशासन नाम की कोई चीज नही होती थी। वे राजा की अपेक्षा सामन्त के प्रति अधिक स्वामीभक्त होती थी। इसलिये सैनिक कभी कभी युद्ध के बीच मे ही राजा के विरुद्ध विद्रोह कर देते थे। इसके अतिरिक्त सामन्त युद्ध के समय अपनी सैनिक सख्या को पूरी करने के लिये किराये के सैनिक लेकर पहु च जाते थे। फारस के किराए के सैनिकों से यूनान पर विजय करना नितान्त असम्भव था

6 सैनिकों में धन लोलुपता की प्रवृति व्याप्त होना—फारस के सैनिक धन के लालची थे और अपने इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए ही वे सेना में भर्ती होते थे। उनमे देश भक्ति का अभाव था। जबकि यूनानी सैनिक देश भक्ति की भावना में ओत प्रोत होकर युद्ध मे भाग लेते थे।

7 योग्य नेतृत्व का अभाव—फारस के सेनापतियो मे योग्य नेतृत्व का अभाव था। जबकि यूनान के सेनापति युद्ध सचालन कार्यो मे काफी दक्ष थे।

युद्ध के परिणाम—मैराथान का युद्ध विश्व इतिहास म अपना एक प्रमुख स्थान रखता है। इस युद्ध के प्रमुख परिणाम निम्नलिखित हैं :—

1 दारा की सैनिक दुर्बलता का स्पष्ट होना—इस युद्ध के पूर्व दारा की सेना का पडौसी देशो पर आतक छाया हुआ था। उसे अविजय समझा जाता था लेकिन जब यूनानियों ने उसे मैराथान के युद्ध मे पराजित कर दिया तो उसकी सैनिक दुर्बलता स्पष्ट हो गई। ईरान का साम्राज्य विस्तार रूक गया।

2 यूनानी संस्कृति नष्ट होने से बच गई—यदि इस युद्ध में यूनान की पराजय हो जाती तो फारस के क्रुद्ध सैनिक उनकी संस्कृति को हमेशा के लिए नष्ट कर देते। यूनानियों की विजय का सबसे महत्त्वपूर्ण परिणाम यह निकला कि वे अपनी स्वतन्त्रता को कायम रखने में सफल हो गए और उनकी संस्कृति नष्ट होने से बच गई।

3 यूनान के उत्कर्ष का समय होना—इस युद्ध में फारस की पराजय से वह पतन की ओर अग्रसर हुआ, जबकि यूनान का उत्कर्ष सम्भव हो गया। यूनान के नगर राज्यों में व्यापार और कला के क्षेत्र में प्रगति हुई। यूनान ने अब साम्राज्यवादी नीति को अपनाया। इसलिये इतिहासकार डेविस का कहना है कि "इस विजय के उपरान्त ही एथेन्सवासी एक विशाल यूनानी साम्राज्य की स्थापना का स्वप्न देखने लगे।" युद्ध में विजय प्राप्त करने के पश्चात् वे अपनी सभ्यता का स्वतन्त्रतापूर्वक विकास कर सके।

4 डेलियन संघ की स्थापना—इस युद्ध की समाप्ति के पश्चात् एथेन्स के प्रयासों से डेलियन संघ की स्थापना हुई। इसका मुख्य उद्देश्य यूनान के नगर राज्यों की सुरक्षा करना था। इसमें उसे पर्याप्त सफलता प्राप्त हुई।

5 एथेन्स व स्पार्टा के बीच, संघर्ष का कारण—इस युद्ध में यूनान की विजय के कारण आगे चलकर एथेन्स व स्पार्टा के बीच युद्ध हुआ। युद्ध से पूर्व एथेन्स व स्पार्टा के बीच मतभेद थे लेकिन उन दोनों ने आपसी मत भेदों को भुलाकर फारस का सामना किया और उसे युद्ध में पराजित किया। इस युद्ध में विजय प्राप्ति के पश्चात एथेन्स यूनान का शक्तिशाली राज्य हो गया और उसका साम्राज्य और सम्मान इतना अधिक बढ़ गया कि वह यूनान की सभ्यता और संस्कृति का एक प्रमुख केन्द्र बन गया। एथेन्स ने अपने नगर राज्यों की सुरक्षा के लिए संघ भी बनाया। एथन्स के बढ़ते हुए प्रभाव से स्पार्टा भयभीत हो गया और उसने डेलियन भी एथेन्स के संघ के विरुद्ध अपना एक संघ बनाया। इस प्रकार एथन्स के बढ़ते हुए प्रभाव को स्पार्टा ने रोका अतः दोनों के बीच मत भेद निरन्तर बढ़ते गए। अन्त में स्पार्टा और एथेन्स के बीच संघर्ष प्रारम्भ हो गया।

जर्क्सीज का शासन काल—दारा की मृत्यु के पश्चात् उसका पुत्र जर्क्सीज फारस का शासक बना। वह अपने पिता की भांति एक बहादुर और कुशल प्रशासक नहीं था। उसने राजकीय कार्यों के प्रति उदासीन होकर भोग विलास का जीवन व्यतीत करना शुरू कर दिया। यद्यपि उसने थर्मोपोली के युद्ध में यूनानियों को पराजित कर मैराथान की पराजय का बदला ले लिया था। फारस के सैनिकों ने स्थल युद्ध में यूनानियों को पराजित किया था लेकिन जल युद्ध में यूनानियों ने उनको बुरी तरह पराजित कर उनकी शक्ति को नष्ट कर दिया। इसका परिणाम यह हुआ कि 332 ई० पूर्व यूनान के शासक सिकन्दर ने फारस पर अधिकार कर लिया।

फारस के पतन के कारण—फारस के सम्राट दारा की मृत्यु के पश्चात् उसके पुत्र जरक्सीज ने अपने पिता की नीति पर चलते हुए फारस को नव जीवन प्रदान करने का प्रयास किया था, परन्तु वह फारस के पतन को रोकने में असफल रहा। फारस के पतन के प्रमुख कारण निम्नलिखित थे—

1 **केन्द्रीय शासन की दुर्बलता**—दारा ने साम्राज्यवादी नीति पर चलते हुए एक विशाल साम्राज्य की स्थापना कर ली थी, लेकिन केन्द्र में वह एक सुदृढ़ सरकार की स्थापना करने में असफल रहा। उसके राज्य का आधार दोषपूर्ण सामन्त प्रथा थी। इसलिए ये सामन्त अपने को स्वतन्त्र करने के लिए सम्राट के विरुद्ध षडयन्त्र रचते रहते थे, जिससे साम्राज्य की जड़े खोखली हो गई।

2 **प्रान्तपतियों द्वारा जनता का शोषण**—फारस के सम्राट ने प्रत्येक प्रान्त की शासन व्यवस्था सुचारु ढंग से चलाने के लिए वहां क्षत्रप की नियुक्ति कर रखी थी। ये क्षत्रप सम्राट को वार्षिक कर देते रहते थे। सम्राट को वार्षिक कर प्राप्त होने पर वह प्रान्तीय प्रशासन में किसी प्रकार का हस्तक्षेप नहीं करता था। प्रान्त के क्षत्रप शासक को प्रसन्न रखने के लिए अपनी जनता से बहुत पैसा वसूल करते थे। इसलिए प्रान्तो की जनता सम्राट से असन्तुष्ट रहती थी।

3 **फारस का विशाल साम्राज्य**—फारस का साम्राज्य मिश्र, सूडान, साइरस बबीलोनिया तथा यूनान के प्रदेशों तक फैला हुआ था। इस विशाल साम्राज्य में विभिन्न धर्म, भाषा, जातियों और परम्पराओं को मानने वाले लोग रहते थे। इसलिए उन राज्यो को सदैव के लिए फारस के अधीन रहना असम्भव था।

4 **उत्तराधिकारियों की दुर्बलता**—जरक्सीज की मृत्यु के बाद उसके उत्तराधिकारी अयोग्य और दुर्बल सिद्ध हुए। वे फारस के विशाल साम्राज्य को सभालने में असमर्थ रहे। इसका परिणाम यह हुआ कि फारस का साम्राज्य निरन्तर पतन की ओर अग्रसर होता चला गया।

5. **फारस की सैनिक दुर्बलता**—जरक्सीज के बाद फारस की सेना दुर्बल हो गई, इसलिए विशाल साम्राज्य पर शासन करना असभव हो गया। यह भी फारस के पतन का कारण बना।

6 **जरक्सीज की अत्याचारपूर्ण नीति**—जरक्सीज ने थर्मोपोली के युद्ध मे विजय प्राप्त करने के पश्चात् यूनान के एथेन्स नगर को जलाकर राख कर दिया। उसके इस निर्मम काय से उसकी विजय सदैव के लिए कलंकित हो गई। अन्य राज्य भी उसकी अत्याचारपूर्ण नीति से भयभीत हो गये और वे अपनी स्वतन्त्रता प्राप्ति का प्रयास करने लगे।

7 **उत्तराधिकारो के लिए युद्ध**—जरक्सीज की मृत्यु के पश्चात् उसके अयोग्य उत्तराधिकारी गद्दी प्राप्त करने के लिए आपस मे सघर्ष करने लग गये। इसका परिणाम यह हुआ कि फारस के सम्राट का दरबार षडयन्त्रो और गुटबन्दियों का अखाड़ा बन गया। अब फारस का पतन अवश्यम्भावी था।

8. **सिकन्दर का फारस पर अधिकार**—जब तक फारस का साम्राज्य शक्तिशाली रहा, तब तक उसने यूनान पर अधिकार करने का हर सम्भव प्रयास किया। जर्क्सीज की पराजयके पश्चात् यूनान की गणना एक शक्तिशाली राज्य के रूप मे होने लगी। कुछ समय पश्चात् सिकन्दर यूनान का सम्राट बना और उसने 332 ई० पूर्व मे फारस पर आक्रमण करके वहा पर अधिकार कर लिया।

9. **फारसवासियो का नैतिक पतन**—जब फारस ने एक विशाल साम्राज्य स्थापित कर लिया, तो वहा के राजा, सामन्त, सैनिको ने भोग विलास का जीवन व्यतीत करना प्रारम्भ कर दिया। परिणामस्वरूप उनका नैतिक पतन होता गया और उन्होंने राष्ट्रीय हितो के स्थान पर व्यक्तिगत हित को अधिक महत्व देना शुरू कर दिया अत साम्राज्य का पतन अवश्यम्भावी था।

फारस की सभ्यता का वर्णन

1 प्रशासन व्यवस्था

(i) **सम्राट**—फारस की शासन प्रणाली का प्रधान राजा होता था। यहाँ के राजा दैविक सिद्धान्त मे विश्वास रखत थ और अपनी प्रजा पर निरकुशतापूर्वक शासन करते थे। उनकी इच्छा ही कानून थी। शासन के प्रत्येक क्षेत्र मे उनका निर्णय अन्तिम समझा जाता था। उनकी किसी भी आज्ञा का कोई भी व्यक्ति विरोध नही कर सकता था। वे सिर्फ ईश्वर के प्रति उत्तरदायी होते थ। राजा का एक स्थायी समिति की सलाह से शासन करना पडता था परन्तु वह उसकी सलाह मानने को बाध्य नही था। यद्यपि फारस के राजा निरकुश थे, तथापि प्रजा की भलाई करना वे अपना कर्त्तव्य समझते थे।

(ii) **प्रान्तीय शासन व्यवस्था**—प्रत्येक प्रान्त मे तीन अधिकारी होते थे। 1 क्षत्रप, 2–सेनाध्यक्ष और तीसरा सचिव। पहला क्षत्रप की नियुक्ति सम्राट करता था जिसका मुख्य कार्य प्रान्त म शान्ति व्यवस्था बनाये रखना, आय तथा व्यय का हिसाब रखना, न्याय करना, राजस्व कर वसूल करना आदि थे। दूसरा, अधिकारी सेनाध्यक्ष होता था जिसकी नियुक्ति सम्राट द्वारा क्षत्रप पर नियन्त्रण रखने के लिए की जाती थी। तीसरा अधिकारी सचिव होता था जो प्रान्त की सूचनायें सीधी सम्राट के पास भेजता था।

(iii) **न्याय व्यवस्था एव दण्ड विधान**—राजा राज्य का सबसे बडा न्यायाधीश था। मुकदमो पर उसका निर्णय अन्तिम समझा जाता था। उसके फैसले का

उल्लंघन करने का किसी को अधिकार नहीं था। उस समय की मुख्य सजायें अंग-भंग करना, कोड़े मारना आदि थी। राजद्रोह, बलात्कार, हत्या आदि अपराध सिद्ध होने पर अपराधी को मृत्यु दण्ड दिया जाता था।

(iv) गुप्तचर विभाग की स्थापना—फारस के सम्राटों ने गुप्तचर विभाग की स्थापना की। सम्राटों ने राज्य के प्रत्येक कोने में गुप्तचर नियुक्त किये। ये गुप्तचर प्रान्तो की खबरें सीधी सम्राट को भेजते थे। गुप्तचर व्यवस्था फारस के शासन व्यवस्था की एक महत्वपूर्ण देन है।

(v) सड़कें एवं डाक व्यवस्था—यहां के शासकों ने साम्राज्य में सड़कों का जाल बिछा दिया था। फारस के सभी प्रान्तो को सड़कों के माध्यम द्वारा राजधानी से जोड़ दिया गया था। दारा ने सूसा नगर से सार्डिस नगर तक 1500 मील लम्बी सड़क बनवाई, जिसके दोनो ओर छायादार वृक्ष लगाए गए थे। सड़कों पर तीन चार मील पर सरायें बनाई गई थी। ये सरायें डाक चौकियों का काम कर देती थी। प्रत्येक सराय में डाक लाने व ले जाने के लिए घुड़सवार नियुक्त रहते थे। साम्राज्य के किसी भी प्रान्त की सूचना डाक द्वारा राजधानी पहुंचने में सात दिन का समय लगता था।

2. सामाजिक व्यवस्था

(i) समाज की स्थिति—फारस का समाज तीन वर्गों में विभाजित था। पहला, उच्च वर्ग, दूसरा, मध्यम वर्ग और तीसरा, वर्ग निम्न वर्ग। पहले वर्ग में राजा तथा उसके परिवार के सदस्य, सामन्त, उच्च पदाधिकारी और पुरोहित वर्ग आदि आते थे। यह वर्ग जीवन की सभी सुख सुविधाओं से सम्पन्न था। इनको समाज में विशेष अधिकार प्राप्त थे। दूसरा, मध्यम वर्ग जिसमें व्यापारी वर्ग आता था इनकी दशा ठीक ठीक थी। तीसरे, वर्ग में किसान, श्रमिक और गुलाम आदि आते थे। इस वर्ग की दशा ठीक नहीं थी। दासो पर उनके स्वामी बहुत अत्याचार करते थे। फारस के लोग युद्ध प्रिय होने के कारण परिवार में पुत्री की अपेक्षा पुत्र को अधिक महत्व देते थे। अधिक पुत्र पैदा करने वाले व्यक्ति को राज्य की ओर से पुरस्कार प्रदान किया जाता था। शिष्टाचार के नियमो में फारस वासी सबसे आगे थे। ये झूठ बोलना पाप समझते थे और छोटे अपने से बड़ों के चरण छूकर उनके प्रति अपना सम्मान प्रकट करते थे।

(ii) स्त्रियों की दशा—जरथुस्त्र के समय तक स्त्रियों की दशा अच्छी थी। उन्हें पुरुषों के समान अधिकार प्राप्त थे। उनका सम्पत्ति पर अधिकार था लेकिन यूनानियो से पराजित होने के बाद फारस में स्त्रियों की दशा बिगड़ने लगी। अब स्त्रियां घर से बाहर निकलने के लिए पुरुषों से पर्दा करने लगी। इससे पर्दा प्रथा का प्रचार हुआ। पर्दा प्रथा संसार को फारस की देन है।

(ii) खानपान रहन-सहन एवं मनोरंजन—फारसवासी दिन में चार बार भोजन करते थे। उनका मुख्य भोजन जौ, गेहूं तथा मांस था। उस समय पुरुष और स्त्रियां एक जैसे कपड़े पहनते थे। वहां पुरुष और स्त्रियां चेहरे को छोड़कर बाकी सारा बदन कपड़े से ढक लेते थे। पुरुषों को नकली बाल जुल्फ और दाढ़ी रखने का बहुत शौक था। फारस के लोगों के मनोरंजन के मुख्य साधन नृत्य, संगीत शतरंज, चौपड़, घुड़ दौड़, मल्ल युद्ध और शिकार थे।

3. आर्थिक दशा

(i) कृषि—फारस के लोगों का मुख्य व्यवसाय कृषि था। सामन्त अपनी भूमि में खेती दासों से करवाते थे। यहां सिंचाई की व्यवस्था विद्यमान थी, जिसके द्वारा पानी खेतों में पहुंचाया जाता था। यहां की मुख्य ऊपज गेहूं तथा जौ थी। कृषि के अलावा यहां के लोग बागवानी का काम भी करते थे।

(ii) उद्योग धन्धे—फारस में उद्योग धन्धे नहीं पनपे क्योंकि साम्राज्य के विभिन्न भागों से यहां माल आ जाता था। ये लोग यूनानी जहाजों के माध्यम से व्यापार करते थे, इसलिए यहां पर व्यापार के क्षेत्र में भी कोई विशेष उन्नति नहीं हुई। सर्वप्रथम मुद्रा का प्रयोग फारसवासियों के द्वारा किया गया। यहां पर डैरिक और टेलेन्ट दो सोने की मुद्रायें चलती थी। डा आर पी त्रिपाठी ने लिखा है कि 'दारियस ने लीडिया के अनुकरण पर सोने व चांदी के सिक्के चलाये। चैकों द्वारा लेन देन होता था।"[1]

4—धर्म—इतिहासकार विल ड्यूरेन्ट का मानना है कि "फारस के आर्य लोगों का धर्म, भाषा और दैवी देवता भारत के आर्य लोगों से मिलते जुलते थे।" वेदों के अनेक शब्द फारसियों के धर्म ग्रन्थ अवेस्ता से मिलते जुलते है, जैसे ये लोग यम को यिम' यज्ञ को यस्न तथा मन्त्र को मन्त्र कहते थे। यहां के लोग बहुदेववाद में विश्वास रखते थे। पुरोहित इन देवी देवताओं की पूजा करते थे। ये अपने देवता जीयस को प्रसन्न करने के लिए पशु बलि भी देते थे। न्याय करना देवता का कार्य समझा जाता था। फारसी लोग जादू टोने में भी विश्वास रखते थे। उस समय विश्व के अन्य भागों में धर्म सुधार आन्दोलन चल रहे थे जैसे भारत में बुद्ध और चीन में कन्फ्यूशियस नामक व्यक्तियों ने धर्म सुधार आन्दोलन चलाऐ। उसी प्रकार फारस में जरथुस्त्र ने एक नये सुधारवादी धर्म की नींव रखी। उसने बहुदेववाद तथा अन्ध विश्वासों का खण्डन करके एकेश्वरवाद के सिद्धान्त को प्रचलित किया।

जरथुस्त्र का उत्कर्ष—

जरथुस्त्र के जन्म और उसके जन्म वर्ष के बारे में इतिहासकार एकमत नहीं हैं। यूनानी साधनों के अनुसार जरथुस्त्र का जन्म ईसा से 5500 वर्ष पूर्व हुआ था।

1—त्रिपाठी आर० पी०—विश्व इतिहास पृष्ठ 309

हेरोडस के अनुसार उसका जन्म 2000 ई० पूर्व हुआ था। जे, ई० स्नेन नामक इतिहासकार ने भी इसी कथन का समर्थन किया है।

फारस की एक किंवदन्ती के अनुसार ईसा से कई शताब्दी पूर्व पारस के उमिया गाव मे जरथुस्त्र नामक एक धर्म सुधारक का जन्म हुआ था। बाल्यकाल से ही जरथुस्त्र की धार्मिक प्रवृत्तियो मे रुचि थी। इसलिए युवा होते ही वह ज्ञान की खोज म जगल मे निकल गया। वहा पर चिन्तन करता रहा। एक दिन भगवान "अहुर मज्दा" ने उसको दर्शन दिय और उन्होंने जरथुस्त्र को एक धार्मिक पुस्तक 'अवस्ता' दी तथा उसके उपदेशो का प्रचार करन का आदेश दिया।

जरथुस्त्र का "जिन्द अवस्ता" यह फारसियो का पवित्र धार्मिक ग्रन्थ है। यह ग्रन्थ फारसियो की प्राचीन भाषा 'जिन्दा' मे लिखा गया है। यह कई भागो मे विभाजित है लेकिन उसमे गाथा और वेनीडाइड का प्रमुख स्थान प्राप्त है। गाथा में जरथुस्त्र के सिद्धान्त सगृहित है जबकि वेनिडाइड म अहुर मज्दा के गुण और अहिरमन की बुराइयो का कहानियो के रूप म वर्णन किया गया है। इस ग्रन्थ मे जीवन को नैतिक और सदाचारी बनान की बहुत सी शिक्षाए सकलित है। जरथुस्त्र के इस ग्रन्थ के कारण ही पारसी धर्म आज भी विश्व का एक प्रमुख धर्म बना हुआ है।

अहुर मज्दा—जरथुस्त्र क अनुसार ईश्वर एक है और वह अहुर मज्दा है। जो समस्त सृष्टि का सचालन करता है। इसलिए मनुष्य को अहुर मज्दा की उपासना करनी चाहिए।

अहिरमन—जरथुस्त्र के अनुसार अहिरमन दुष्ट आत्माओ का नेतृत्व करता है। उसका मानना था कि अहिरमन और अहुर मज्दा इन दोनो म निरन्तर सघर्ष होता रहता है, लेकिन इस सघर्ष मे अहुर मज्दा की ही विजय होगी।

जरथुस्त्र की शिक्षाए —जरथुस्त्र की प्रमुख शिक्षाए निम्नलिखित हैं—

1 एकेश्वरवाद मे विश्वास—जरथुस्त्र स पूर्व फारस लोग बहुदेववाद मे विश्वास रखते थे, लेकिन जरथुस्त्र ने एकश्वरवाद के सिद्धान्त को प्रचलित किया। उसका कहना था कि ईश्वर एक है और वह अहुर मज्दा है, जो सारी सृष्टि का सचालन करता है।

2 जरथुस्त्र ने अग्नि को पवित्र माना और उसको सबस अधिक महत्व दिया। उसका यह मानना था कि जिस घर मे सदैव अग्नि जलती रहती है उस पर "अहुर मज्दा" प्रसन्न रहता है। इसका परिणाम यह हुआ कि प्रत्येक घर मे 24 घन्टे अग्नि जलती रहती थी।

3 जरथुस्त्र पाप-पुण्य, स्वर्ग-नरक, कर्म एव पुनर्जन्म के सिद्धात म विश्वास रखता था। उसका यह मानना था कि मृत्यु के बाद व्यक्ति की आत्मा तीन दिन तक उसके ऊपर मडराती रहती है और उसके पश्चात् न्याय के लिए देवताओं के

पास जाती है। जहां से अच्छे कर्म करने वाले को स्वर्ग में तथा बुरे कर्म करने वाले को नरक में भेज दिया जाता है।

4 इस धर्म में मनुष्य के नैतिक जीवन के उच्च आदर्शों पर बहुत अधिक बल दिया गया है। जरथुस्त्र ने लोगों को यह शिक्षा दी कि मनुष्य को दूसरों के साथ वैसा ही व्यवहार करना चाहिए जैसाकि वो दूसरों से अपने प्रति चाहता है।

5 यह धर्म आशावादी है। इसमें यह कल्पना की गई है कि बारह हजार वर्ष के पश्चात् अहुर मज्दा और अहिरमन में संघर्ष होगा। उस संघर्ष में अहुर मज्दा की विजय होगी, जिससे सारा मानव समाज सुखी जीवन व्यतीत कर सकेगा।

6. इस धर्म में मोक्ष प्राप्त करने के लिए वैराग्य धारण करना आवश्यक नहीं है। इसमें जीवन की प्रधानता को स्वीकार किया गया है और विवाह को जीवन का एक महत्वपूर्ण कार्य बताया गया है। इसके अनुसार मनुष्य को जीवन के प्रत्येक कार्य में भाग लेना चाहिए।

7 इस धर्म के अनुसार मृत्यु के बाद शरीर तो नष्ट हो जाता है किन्तु आत्मा नहीं मरती। आत्मा अजर अमर है।

जरथुस्त्र द्वारा धर्म प्रचार एवं उसकी मृत्यु—अहुर मज्दा से ज्ञान प्राप्त करने के पश्चात् जरथुस्त्र धर्म के सिद्धान्तों का प्रचार करने के लिए स्थान स्थान पर घूमता रहा, पर उसे कोई विशेष सफलता नहीं मिली। अन्त में वह फारस के शासक के पास गया। उसने धर्म के प्रसार में सहायता देने का वचन दिया। फारस के शासक साइरस और दारा के सहयोग से जरथुस्त्र के धर्म का फारस में प्रचार हुआ। अपने धर्म का प्रचार करते हुए जरथुस्त्र काफी वृद्ध हो चुका था। अन्त में एक दिन उस पर बिजली गिरी और वह इस दुनिया से चल बसा। इतिहासकार सेबाइन ने जरथुस्त्र का महत्व बताते हुए लिखा है कि "जरथुस्त्र का आगे चलकर पतन हो गया।' इस आधार पर उसकी अवहेलना करना उसी प्रकार अन्याय होगा, जिस प्रकार रोम के पतन के बाद रोमन सभ्यता की अवहेलना करना है। इस धर्म ने पारसियों के लिए सदियों तक उच्च नैतिक स्तर कायम रखा और उनके आगामी धर्मों पर उसका प्रभाव अंकित है। यहूदियों ने नरक और स्वर्ग का विचार उससे लिया और यही विचार ईसाई और "मथरीवाद" ने अपनाए। इस्लाम भी जरथुस्त्र से प्रभावित था और अनेक महत्व के सम्प्रदायों पर पूरा प्रभाव था।"[1] जरथुस्त्र ने मद्यपान के सेवन का तथा पशु बलि का विरोध किया और सभी जीवों के प्रति दया पूर्ण व्यवहार करने का उपदेश दिया। इस क्षेत्र में जरथुस्त्र के उपदेश महात्मा बुद्ध के उपदेशों से मिलते हैं। प्रो० विलड्यूरेन्ट इस धर्म के बारे में लिखते है कि "कुल मिलाकर यह एक बहुत अच्छा धर्म था। जो अपने समकालीन अन्य धर्मों की

1–सेबाइन–ए हिस्ट्री आफ वर्ल्ड सिवलीजेशन, पृष्ठ 107

तुलना में कहीं अधिक उदार व अहिंसक था। यह मूर्ति पूजा और अन्ध विश्वास से काफी हद तक बचा हुआ था।"

फारस का नया धर्म मैगरीवाद—जरथुस्त्र की मृत्यु के पश्चात् पुरोहितों के कारण जादू-टोना, अंध विश्वास और देवी देवताओं की मूर्ति पूजा आदि दोषों ने फिर स फारस के धर्म मे प्रवेश कर लिया। इस प्रकार जरथुस्त्र के धर्म के सिद्धान्त के साथ प्राचीन परम्पराओं को भी धर्म म स्थान दिया गया। इससे एक नये धर्म का निर्माण हुआ। जो मैगरीवाद के नाम से प्रसिद्ध हुआ। जरथुस्त्र की मृत्यु को लेकर ईसाई धर्म के उत्कर्ष तक मैगरीवाद फारस का प्रमुख धर्म बना रहा। ईसाई धर्म का उत्कर्ष होने के कारण इस धर्म का अस्तित्व समाप्त हो गया।

5 कला—फारस म स्थापत्य कला के क्षेत्र म विशेष प्रगति हुई। उस समय यहा पर महल, सरकारी इमारतें और मकबरो का निर्माण किया जाता था। उनकी स्थापत्य कला की मुख्य विशेषता यह थी कि महल पहाडियो पर बनाये जाते थे, जो सौन्दर्य तथा विशालता की दृष्टि से अपना विशेष स्थान रखते थे। महल तक जाने के लिए बडी बडी सीढियां होती थी। उनके ऊपर पख वाले सांड बनाये जाते थे। महलो को अन्दर से सजाने के लिए दीवारो पर सुन्दर चित्र बनाये जाते थे। उस समय के पर्सेपोलिस के महल, सूसा के महल, साइरस का मकबरा आदि भवन निर्माण कला के सुन्दर नमूने हैं, जो विशालता तथा सौन्दर्य की दृष्टि म अद्वितीय है। फारस म मूर्ति कला का भी बहुत विकास हो चुका था। उस समय लोग सांडो की बहुत सुन्दर मूर्तियाँ बनाते थे।

6 साहित्य, शिक्षा और भाषा—फारस में साहित्य के क्षेत्र में, अधिक उन्नति नहीं हुई, लेकिन उस समय के प्राप्त साहित्य से पता चलता है कि यहां के लोग गीत, कहानी तथा नाटक आदि लिखते थे। गीत धर्म पर ज्यादा लिखे जाते थे। शिक्षा का भी अधिक विकास नही हुआ था। उस समय पुरोहितो द्वारा मन्दिरो म विद्यार्थियो को धार्मिक और सैनिक शिक्षा दी जाती थी। धार्मिक शिक्षा मे "अवेस्ता" ग्रन्थ पढाया जाता था, जबकि सैनिक शिक्षा मे तीर चलाना, घुडसवारी करना, तलवार चलाना आदि सिखाया जाता था। इसके अतिरिक्त बच्चो म सर्दी, गर्मी तथा हर कष्ट सहन करने की क्षमता पैदा की जाती थी। समाज मे गुरु का बहुत आदर होता था। फारसवासियों ने व्यापार के लिए आरम्भिक लिपि को ग्रहण किया। इनकी वर्णमाला मे 39 संकेत चिन्ह थे। पेपरस पर वे कलम से लिखते थे। यद्यपि प्राचीन फारस में कई भाषायें बोली जाती थी परन्तु जिन्दा और पहलवी भाषा उस समय की मुख्य भाषाएँ थी। पहलवी भाषा आगे चलकर फारसी भाषा के रूप म प्रसिद्ध हुई। विज्ञान के क्षेत्र म भी उन्होने प्रगति की। यहा के लोगो ने कुछ औषधियो का आविष्कार किया।

फारस के साम्राज्य का पतन—फारस के सम्राट दारियस की मृत्यु के पश्चात् उसके उत्तराधिकारी दुर्बल और अयोग्य सिद्ध हुए। इस कारण दरबार में

गुटबन्दी और षडयन्त्र होने लगे। शासको ने शासन के कार्यों के प्रति उदासीन होकर विलासी जीवन व्यतीत करना शुरू कर दिया। इसलिए जनता मे असन्तोष बढता गया। और फारस के साम्राज्य के अधीन प्रान्तो ने विद्रोह करने शुरू कर दिए। फारस यूनानी युद्धो म फारस की पराजय से उसकी शक्ति नष्ट हो गई। इसका परिणाम यह हुआ कि यूनान के शासक सिकन्दर ने 332 ई० पूर्व मे फारस पर अधिकार कर लिया।

फारस की विश्व सभ्यता को देन—फारस ने विश्व सभ्यता को बहुत अधिक प्रभावित किया। यहा के शासको ने सर्वप्रथम विशाल साम्राज्य की स्थापना की और उसम उच्च कोटि का शासन प्रबन्ध स्थापित किया। उनके राजनैतिक सगठन और शासन व्यवस्था आदि को रोमवासियो ने ग्रहण किया। धर्म के क्षेत्र मे भी फारसियो ने एक महत्वपूर्ण देन प्रस्तुत की। जरथुस्त्र नामक धर्म सुधारक ने विश्व को एक नैतिकता पूर्ण धर्म प्रदान किया। इस धर्म का यहूदियो, ईसाईयो और मुस्लिम धर्म पर गहरा प्रभाव पडा। फारसियो ने मिश्र और बेबीलोनिया आदि देशों की रीति रिवाजो को अपनाया और उनको विकसित करके रोमनो को प्रदान किया। यही फारस सभ्यता की मानव समाज को देन है।

प्रस्तावित संदर्भ पुस्तकें

1– सेबाइन–हिस्ट्री आफ वर्ल्ड सिवलीजेशन
2– डब्ल्यू एन –हिस्ट्री आफ दि वर्ल्ड
3– डा गोलल–विश्व की प्राचीन सभ्यताए
4– त्रिपाठी, आर पी विश्व इतिहास



अध्याय 5

चीन की प्राचीन सभ्यता

चीन की सभ्यता मिश्र, मैसोपोटामिया और सिन्धु घाटी की सभ्यता से भी प्राचीन है। आज जबकि मिश्र, मैसोपोटामिया यूनान व रोमन आदि सभ्यताओं का अस्तित्व समाप्त हो चुका है। वहा चीन की सभ्यता आज तक जीवित है। प्लेट व जीन के अनुसार "प्राचीन" चीन ने एक ऐसी सभ्यता को जन्म दिया, जो कभी नही मरी "[1] वाल्तेयर का भी यही कहना है कि "चीनी साम्राज्य का शरीर बिना किसी परिवर्तन के चार हजार वर्षों से जीवित है। उसके कानून, परम्परायें भाषा और फैशन आज भी वैसे है।" स्पष्ट है कि चीन की सभ्यता चार हजार वर्ष व्यतीत हो जाने पर आज भी वैसी की वैसी है। इसकी निरन्तरता ने इसे महान बना दिया है।

चीन की भौगोलिक दशा—चीन की जनसंख्या सत्तर करोड और उसका क्षेत्रफल 15 लाख वर्ग मील है। यह एशिया के उत्तरी पूर्वी भाग मे स्थित है। इसके उत्तर म बर्फ जमी रहती हैं और दक्षिण मे हिमालय पर्वत है। चीन की राजधानी पेंकिग है। मिश्र की भाति चीन मे भी सिक्याग, हाग हो, और वाग हो नदी की घाटियो म सभ्यता का विकास हुआ। इन नदियो मे निरन्तर बाढ आने के कारण नदी के किनारो पर अच्छी फसल पैदा होती थी। चीन का प्राचीन नाम 'च ग को' था जिसका अर्थ है "स्वर्ग के नीचे का राज्य" आगे चलकर चिन वश के समय मे विदेशी यहाँ आये वे चु ग नही बोल सकते थे इसलिए वे इसे चीन के नाम से पुकारने लगे। चीन के निवासियो की यह धारणा थी कि ससार का स्वर्ग पहले यहीं विद्यमान था, लेकिन आदमियो के कुकृत्यो के कारण उनका अन्त हो गया है। चीनी लोग मगोल जाति के थे। इनका रग पीला, कद छोटा और सिर चपटा होता था। हम यहा पर उस सभ्यता का वर्णन करेंगे जो चीन की सभ्यता का प्रतिनिधित्व करती थी। वह थी, हाग हो नदी की घाटी मे विकसित सभ्यता। जिसे मध्य चीन, या स्वर्ग का राज्य भी कहते थे।

चीन के इतिहास जानने के स्त्रोत—प्राचीनकाल में चीन के इतिहासकार अपने देश के गौरव की कहानियां लिखते थे। इन पौराणिक कथाओं में चीन के

---

1. प्लेट व जीन-विश्व का इतिहास पृष्ठ 27

तत्कालीन इतिहास के बारे मे जानकारी प्राप्त होती है। कन्फ्यूशियस द्वारा रचित "शुचिंग" नामक पुस्तक चीन के प्रारंभिक इतिहास को जानने के लिए बहुत उपयोगी है। इसके अतिरिक्त पीकिंग के पास चाऊ-कोउ तिएन की गुफा मे चीनी मानव के जो अवशेष प्राप्त हुए हैं उससे पता चलता है कि पूर्व पाषाण काल मे भी चीन मे मानव जाति का विकास हो चुका था।

चीन का राजनैतिक इतिहास—चीन की पौराणिक गाथाओं के अनुसार ईसा से लगभग 22 लाख 29 हजार वर्ष पूर्व पानकू नामक एक व्यक्ति ने संसार का निर्माण किया और इसने 18,000 वर्ष तक शासन किया। इस प्रकार कथाए विश्वसनीय नहीं है। सुमाचीएन नामक विद्वान का मानना है कि चीन का क्रमबद्ध राजनैतिक इतिहास 2852 ई० पूर्व से आरंभ होता है। इस काल के प्रसिद्ध राजा फूशी, शेननु ग, तथा ह्वांग टी है।

चीनी इतिहासकारो के अनुसार फूशी चीन का पहला सम्राट था जिसने 2852 ई० पूर्व से लेकर 2738 ई० पूर्व तक शासन किया। इसने चीनीयो को शिकार करना और मवेशी पालना सिखाया था। इसके पश्चात् चीन का दूसरा सम्राट शेननु ग हुआ। इसके शासन काल मे कृषि का विकास हुआ और नाप तोल की विधि भी चालू की गई। तीसरा सम्राट ह्वाग टी बना। जिसने "महासम्राट" की उपाधि धारण की। इसने छोटे-छोटे राज्यो मे विभाजित चीन को संयुक्त बनाया। इसके शासनकाल मे यातायात के साधनो का विकास हुआ। ह्वाग टी के पश्चात् चीन पर निम्न वंशो का शासन रहा।

1 हाशिया वंश का शासन (2205 ई० पूर्व से 1766 ई० पूर्व)—

चीन मे हाशिया वंश की स्थापना सम्राट यू ने ई० से 2205 वर्ष पूर्व की। इस वंश के 14 सम्राटो ने 439 वर्ष तक चीन पर राज्य किया। इस वंश का अन्तिम सम्राट च्यीह् विलासी व्यक्ति था। इसलिए उसके मंत्री त्वाग ने उसे गद्दी से हटा दिया। 1766 ई० पूर्व मे इस वंश का पतन हो गया।

2 शाग वंश का शासन (1766–1122 ई० पूर्व)—

चीन में शाग वंश की स्थापना सम्राट त्वाग ने 1766 ई० पूर्व मे की। इस वंश के राजाओ ने 1766 ई० पूर्व से लेकर 1122 ई० पूर्व तक 644 वर्ष तक राज्य किया। इस वंश के अन्तिम सम्राट चाऊ सिन ने जनता पर भयंकर अत्याचार किये। इसका परिणाम यह हुआ कि उसके सेनापति चाऊ कुवाग ने उसे गद्दी से हटा दिया और स्वयं ने शासन पर अधिकार कर लिया।

शाग वंश के शासकों के शासनकाल मे शासन व्यवस्था सुसगठित थी। साम्राज्य का विभाजन प्रान्तो मे कर दिया और प्रान्तो मे सम्राट द्वारा नियुक्त अधिकारी शासनकार्य चलाते थे। इस युग मे समाज पितृ सत्तात्मक था। व्यवसाय के आधार पर समाज का वर्गीकरण हो चुका था। इस युग मे लिपि का विकास

हुआ तथा आधुनिक लिपि के हर अक्षर का निर्माण कर दिया गया था। इस युग के लोग कलैण्डर का प्रयोग करते थे और उन्हें ऋतुओं की भी जानकारी थी। इस काल के हड्डियों पर लिखे कुछ अभिलेख प्राप्त हुए हैं, जिसमें इस वंश के 30 राजाओं के नाम लिखे हुए हैं। इस युग में कला और साहित्य आदि क्षेत्र में भी बहुत विकास हुआ।

3. चाऊ वंश का शासन (1122 ई० पूर्व से 255 ई० पूर्व)—

चाऊ युवाग नामक सम्राट ने 1122 ई० पूर्व में चीन में चाऊ वंश की स्थापना की। इस वंश के शासकों ने 1122 ई० पूर्व से लेकर 255 ई० पूर्व तक 875 वर्ष तक चीन पर शासन किया। इस काल में सभ्यता तथा संस्कृति के क्षेत्र में आश्चर्यजनक प्रगति हुई। इस युग में कृषि का विकास हुआ। धातुओं के सुन्दर सुन्दर वर्तन बनाये गए। मुद्रणकला तथा बारूद का भी आविष्कार हुआ। उस समय के शासक निरकुंश होते हुए भी प्रजा की भलाई करना अपना कर्तव्य समझते थे। कर्मचारियों की नियुक्ति परीक्षा पास करने के बाद की जाती थी। इससे योग्य व्यक्ति ही सरकारी पद पर नियुक्त होते थे। इस काल में कन्फ्यूशियस और लाओत्से, जैसे दार्शनिकों के कारण चीन में दर्शन शास्त्र के क्षेत्र में बहुत अधिक उन्नति हुई। इसलिए चाऊ वंश का शासनकाल चीन के इतिहास में "स्वर्ण युग के नाम से प्रसिद्ध है। आधुनिक इतिहासकार तान-यून-शान का कहना है कि "उस काल में संस्कृति तथा सभ्यता का सर्वतोन्मुखी विकास हुआ।"

सामंतवादी प्रथा भी चाऊ वंश की देन है। इस वंश के शासन में साम्राज्य का बहुत अधिक विस्तार हो गया था, इसलिए ईसा से सातवीं शताब्दी पूर्व इस वंश के शासकों ने अपने साम्राज्य का विभाजन कई प्रान्तों में कर दिया। उन प्रान्तों का शासन प्रबन्ध योग्य सेनापतियों के हाथों में सौंप दिया गया। कमजोर सम्राटों के समय इन सामन्तों ने स्वतन्त्र राज्य स्थापित करने के प्रयास किये इससे चाऊ वंश का पतन हो गया। अराजकता के इस काल में भी सांस्कृतिक क्षेत्र में प्रगति होती रही।

4. हानवंश का शासन—चीन में ये सामन्त आपसी ईर्ष्या व द्वेष के शिकार थे। इनका एक दूसरे से निरन्तर युद्ध चलता रहता था। ऐसे वातावरण में चीन प्रान्त का सामन्त चैन अधिक शक्तिशाली बन गया। उसने चाऊ वंश के शासक को गद्दी से हटाकर स्वयं शासक बन गया। इसी चैन ने चीन में हानवंश की स्थापना की। चिन प्रान्त के नाम पर इस देश का नाम चीन पड़ा। चैन ने सभी सामन्तों के राज्यों पर अधिकार कर लिया।

शीहांग टी का शासन काल—चैन ने हानवंश की स्थापना के पश्चात् अपने साम्राज्य का विस्तार किया। जब सभी प्रान्तों पर उसका अधिकार हो गया तो उसने 221 ई० पूर्व में अपने को चीन का सम्राट घोषित किया और शीहांग टी की

उपाधि धारण की । यह हानवंश का पहला शासक था जिसकी गिनती चीन के महानतम शासकों में की जाती है । यह न केवल एक महान विजेता था अपितु कुशल प्रशासक भी था । इसने प्रशासन व्यवस्था में सुधार करने की दृष्टि से योग्य व्यक्तियों को ही राज्य के उच्च पदों पर नियुक्त किया । विल ड्यूरेन्ट ने उसे लौह पुरुष तथा भयानक व्यक्तित्व का सम्राट कहा है और इस क्षेत्र में उसकी तुलना बिस्मार्क से की है । "शीहांग टी ने सियेन यंग को अपनी राजधानी बनाया और वहां पर एक सुन्दर महल का निर्माण करवाया, जो 2500 फीट लम्बा तथा 500 फीट चौड़ा था । इसने अपने जीवन काल में ही लिशन की पहाड़ी पर अपनी समाधि का भी निर्माण करवा दिया था । इन सबके अलावा उसने विश्व प्रसिद्ध चीन की दीवार का निर्माण करवाया ।

(i) **विश्व प्रसिद्ध चीन की दीवार**—चीन की उत्तरी पश्चिमी सीमा पर बाहरी आक्रमणों से रक्षा करने के लिए शीहांग टी ने एक विशाल दीवार का निर्माण करवाया । इस दीवार की लम्बाई 1800 मील, चौड़ाई, 20 फीट तथा ऊंचाई 22 फीट है । इसमें 20,000 गुम्बदे 23,000 स्तम्भ और 10,000 सुरक्षा चौकियां बनी हुई हैं । इस दीवार के निर्माण में दस वर्ष का समय लगा । इस पर ये शब्द लिखे हुए हैं कि "स्वर्ग के नीचे यह सबसे बड़ी सैनिक रोक है ।" इसने चीन की हजारों वर्षों तक रक्षा की, जिसके कारण यहां की जनता ने हजारों वर्षों तक शान्तिपूर्ण जीवन व्यतीत किया । इसकी विशालता तथा बनावट के कारण इसकी गिनती विश्व के सात आश्चर्यों में की जाती है । इस दीवार के निर्माण के बारे में इतिहासकारों ने अलग-अलग मत प्रकट किये है ।

विलड्यूरेन्ट का कहना है कि "मिश्र के पिरामिड भी इस दीवार के पीछे तुच्छ है और चीन की सभ्यता व संस्कृति आज भी इस दीवार से झांक रही है । इस दीवार के बनने से ही रोम का पतन संभव हुआ । इस प्राचीर के निर्माण के उपरान्त ही हूण लोगों ने पश्चिम की ओर जाना आरम्भ किया और रोम की नींव को खोखला बनाना आरम्भ किया ।"

वाल्तेयर इस दीवार की तुलना मिश्र के पिरामिडों से करता हुआ लिखता है कि वे तो इसके समक्ष खिलौने मात्र लगते हैं ।"

(ii) *आर्थिक क्षेत्र में सुधार*—इस वंश के शासन काल में आर्थिक क्षेत्र में महत्वपूर्ण सुधार किये गये । सरकार भूमि कर उपज का $\frac{1}{10}$ भाग लेती थी इसके अतिरिक्त जनता से पोल टैक्स भी लिया जाता था । इस युग में एक विशाल सेना रखी गई । उसका खर्चा जनता से टैक्स के रूप में लिया जाता था । राज्य के कर्मचारियों को वेतन का आधा नकद और आधे वेतन का अनाज दिया जाता था ।

(iii) **प्रशासनिक सुधार**—इस युग में कानून के समक्ष असमानता को दूर कर दिया गया । न्यायालय के लिये अमीर और गरीब सभी बराबर थे । कानूनों को

कठोर बना दिया गया। अपराधियो को कठोर दंड दिया जाता था। साम्राज्य का विभाजन 55 प्रान्तो मे कर दिया गया और वहां पर योग्य व्यक्तियों को ही राज्यपाल के पद पर नियुक्त किया गया। कर्मचारियो की नियुक्ति के लिये परीक्षा ली जाने लगी। जो व्यक्ति उस परीक्षा मे उत्तीर्ण होता था उसी को सरकारी पदों पर नियुक्त किया जा सकता था।

(iv) केन्द्रीय शासन प्रबन्ध—उस युग के शासक दैविक सिद्धान्त मे विश्वास रखते थे। वे निरकुश तथा स्वेच्छाचारी होते थे। उनकी आज्ञा ही कानून थी। राजा की सहायता के लिये प्रधान मन्त्री होता था, परन्तु राजा प्रधान मन्त्री की सलाह को मानने के लिये बाध्य नहीं था। इस समय के शासको ने पूरे साम्राज्य मे गुप्तचरो का जाल बिछा रखा था।

(v) *व्यापार के क्षेत्र में प्रगति*—*हान वंश के शासन काल* मे चीन ने व्यापार के क्षेत्र मे बहुत प्रगति की। यहा के व्यापारी फारस पार्थिया तथा रोम आदि देशों से व्यापार करते थे। चीन इन देशो को रेशम, चमडा, रबड, दाल और चीनी आदि वस्तुएं निर्यात करता था।

(vi) विदेशी सम्पर्क का प्रभाव—जब चीन के व्यापारी अपने व्यापारिक कार्य के लिये विदेशो म गये और विदेशो के व्यापारी चीन मे आये तो इसका परिणाम यह हुआ कि कला का आदान प्रदान होने लगा। मगोलिया की कला पर चीन का प्रभाव पडा। इसकी पुष्टि उर्गा की खुदाई से प्राप्त उपकरणों से होती है। चीन की मूर्ति कला पर रोम की मूर्तिकला का प्रभाव पडा। इसकी पुष्टि तारिम घाटी की खुदाई मे प्राप्त मूर्तियो से होती है। चीन की सगीत कला, गणित, ज्योतिष आदि पर यूनान का बहुत अधिक प्रभाव पडा। इस प्रकार विदेशी सम्पर्क के कारण चीन का अन्य देशों के साथ सास्कृतिक आदान प्रदान हुआ।

(vii) विज्ञान के क्षेत्र मे विकास—हान वशीय शासको के *शासन काल* मे चीन मे विज्ञान के क्षेत्र में काफी विकास हुआ। इस युग मे धूप घडी का आविष्कार हुआ। मू-य-चियेन ने चीन मे एक नये पचाग की रचना की। चाग चू ग नामक वैज्ञानिक ने भूकम्प के कारणो पर प्रकाश डाला। लु ग-हग नामक ग्रन्थ से चन्द्र ग्रहण विषय म जानकारी मिलती है। उस युग के प्रसिद्ध चिकित्सक नी चिग ने अपनी पुस्तक "कैनन आफ मेडीसिन" मे शल्य चिकित्सा पर काफी प्रकाश डाला।"

(viii) दर्शन—हान वशीय शासको के शासनकाल मे चीन मे दर्शन के क्षेत्र में भी बहुत अधिक विकास हुआ। उस काल मे ताओत्से तथा कन्फ्यूशियस जैसे दार्शनिक चीन में पैदा हुए। *ताओवाद तथा कन्फ्यूशियस* के विचारो का चीन के दर्शन पर बहुत अधिक प्रभाव पड़ा, परन्तु हानवश के शासको को ताओवाद ने अधिक प्रभावित किया।

(ix) संगीत कला के क्षेत्र में प्रगति—हानवंशीय शासकों के शासन काल में संगीत कला के क्षेत्र में अधिक प्रगति हुई। इस वंश के सम्राट तथा जनता दोनों ही संगीत प्रेमी थी। सम्राट वू संगीत कला से बहुत प्रेम करता था उसने अपने दरबार में कई संगीतज्ञों को आश्रय प्रदान किया। उस काल के प्रमुख वाद्ययन्त्र पि-पा (वीणा) कु गहाऊ तथा जियर आदि थे। इस समय संगीत जनता के मनोरञ्जन का अच्छा साधन था।

(x) शिक्षा के क्षेत्र में विकास—हानवंशीय शासकों के शासन काल में शिक्षा के क्षेत्र में काफी विकास हुआ। उस समय कई स्थानों पर विश्वविद्यालय खोले गए। चगन के विश्वविद्यालय में 30 हजार छात्र पढ़ते थे। इसके अतिरिक्त हीनयाग उस समय शिक्षा का प्रसिद्ध केन्द्र था। उस काल में परीक्षा प्रणाली बहुत कठोर थी।

(xi) बौद्ध धर्म का प्रचार—हान वंश के शासकों के शासन काल में चीन में बौद्ध धर्म का प्रचार हुआ। इस धर्म का चीन के धार्मिक चिन्तन पर गहरा प्रभाव पड़ा। हानवंश के सम्राट मिंगटी ने इस धर्म को स्वीकार कर लिया। उसके पश्चात् यह चीन का प्रधान धर्म बन गया।

5 तांग वंश का शासन—तांग वंश से पूर्व चीन में 581 से 619 ई० तक सूई वंश के शासकों ने शासन किया। इस वंश के शासक ने 611 से 614 तक कोरिया से युद्ध किया, जिसमें चीन की पराजय हुई। इस युद्ध में चीन को जन व धन की काफी क्षति हुई, और देश में अराजकता एवं अव्यवस्था फैलने लगी। ऐसी परिस्थितियों में लीयान ने सूई वंश को समाप्त कर तांग वंश की स्थापना की। इस वंश का अन्तिम सम्राट मोगहुआग था, जो शासन के प्रति उदासीन होकर रंग-रेलियों में अपना समय व्यतीत करता था। अन्त में इसने राज्य अपने पुत्र को सौंप दिया। मौगडक का मानना है कि "इस समय चीनी सभ्यता के मामले में संसार में सबसे आगे था। चाय इसी युग की देन है।" इस वंश के शासकों ने साम्राज्य विस्तार की नीति को अपनाया। शीघ्र ही मंगोलिया, तुर्किस्तान, अनाम, चम्पा आदि राज्यों पर अधिकार कर लिया। इस काल में चीन ने प्रत्येक क्षेत्र में विकास किया और वह एशिया का एक शक्तिशाली देश बन गया। इसका परिणाम यह हुआ कि 631 ई० में जापान ने भी अपना बाजार चीनियों के लिए खोल दिया। इस प्रकार इस युग में चीन ने आर्थिक क्षेत्र में बहुत उन्नति की। इस वंश के शासकों के प्रमुख प्रशासनिक सुधार निम्न प्रकार है—

(i) केन्द्रीय शासन प्रबन्ध—इस वंश के शासन काल में चीन में एक सुदृढ़ केन्द्रीय शासन की स्थापना हुई और प्रान्तों के अधिकार कम कर दिए गए। सम्राट की सहायता के लिए तीन मन्त्री होते थे। पहला, प्रधान मन्त्री था जिसका मुख्य कार्य कृषि, राजस्व-कर वसूल करना, न्याय व्यवस्था तथा राजा के आदेशों का पालन

नहीं समझ सकता । चीन में बड़े परिवार वाला होना बड़प्पन का चिह्न समझा जाता था।"[1]

(iii) खान पान, रहन सहन एवं मनोरञ्जन—चीनी लोग मुर्गीयां, सूअर का मांस खाते थे। चीनी समाज में गरीब और अमीर में बड़ा अन्तर था। गरीब लोग अपना मकान मिट्टी का बनाते थे जबकि अमीर लोग शानदार मकान बनवाते थे, जिसके चारों ओर बगीचे लगवाते थे। उस समय स्त्रियां कमर से एड़ी तक एक चोंगा पहनती थी, और फूलों तथा पंखों से अपने बाल सजाती थी। उस काल के लोग अपनी मूछें, नाक की भौंहें तथा सिर के बाल मुंडवा लिया करते थे। उस समय के मनोरञ्जन के साधनों के बारे में एलिस व जौन ने इस प्रकार लिखा है कि "कुलीनों के पास शतरंज खेलने, शिकार पर जाने, घोड़ों को ट्रेनिंग देने, जुआ खेलने व मुर्गों की लड़ाई देखने और मनमौजी खेलकूदों में भाग लेने के लिए पर्याप्त समय रहता था। दूसरी ओर गरीब लोगों को अपनी आजीविका उपार्जन के लिये अपनी जाग्रत अवस्था के सभी घंटे खर्च करने पड़ते थे।"[2]

(iv) स्त्रियों की दशा—कन्फ्यूशियस से पहले चीन के परिवारों में स्त्रियों का स्थान प्रधान था, परन्तु ईसा से छठी शताब्दी पूर्व पुरुषों का स्थान प्रधान हो गया। चीन में स्त्रियों की दशा शोचनीय थी। परिवार में पुत्री की अपेक्षा पुत्र को अधिक महत्व दिया जाता था। जिस लड़की के छोटे पैर होते थे, उसे सबसे सुन्दर माना जाता था। इसलिए चीनी लोग अपनी लड़कियों को बचपन से ही लोहे के जूते पहनाते थे, ताकि उनके पैर बड़े न हो। चीनी समाज में स्त्रियों के चरित्र पर बहुत महत्व दिया जाता था। यदि किसी कुमारी लड़की को कोई पुरुष छू लेता था तो वह लड़की आत्म हत्या कर लेती थी। चीन में लड़कों के लिए विवाह की आयु 30 वर्ष और लड़कियों के लिए 20 वर्ष थी। लड़की को परिवार का अस्थायी सदस्य समझा जाता था, क्योंकि वह शादी के बाद दूसरे घर की सदस्य बन जाती थी। लड़की को केवल घरेलू कार्यों की शिक्षा दी जाती थी। शादी के पश्चात् जो लड़की सबसे ज्यादा पुत्र पैदा करती थी, उसी को समाज में सबसे ज्यादा सम्मान मिलता था। अगर विवाह के पश्चात् सन्तान न हो तो पुरुष अपनी स्त्री को तलाक देकर दूसरा विवाह कर सकता था। यदि पुरुष दुराचारी होता तो भी स्त्री उसे तलाक नहीं दे सकती थी। उस समय कुलीन वर्ग के लोग बहु विवाह करते थे। वे अपने भोग विलास के लिए कई रखैलें भी रखते थे, फिर भी उनकी स्त्रियां को अपना चरित्र उज्जवल रखना पड़ता था। इस प्रकार स्पष्ट है कि चीन में स्त्रियों

1—प्लेट व जीन—विश्व का इतिहास, पृष्ठ 71

2—एलिस व जौन—संसार का इतिहास पृष्ठ 66

की दशा बहुत शोचनीय थी। चीन के प्रसिद्ध कवि फूहमान् न स्त्रियों की दशा के बारे मे लिखा है कि "कन्या के जन्म से किसी को खुशी नही थी। युवा होने पर वह पुरुषों से छिपकर कमरे मे रहती थी, पुरुष से मिलने स डरती थी। वह नित्य मुक्ती थी, कहना मानती थी और छुप छुप कर रोती थी। कितना दुखी था नारी होना। ससार मे इतनी सस्ती वस्तु न थी।"

4 **धार्मिक जीवन**—चीन के विद्वान एकेश्वर वाद के सिद्धान्त मे विश्वास रखते थे, जबकि चीन की साधारण जनता बहु देववादी थी। प्राचीन काल म चीनी प्राकृतिक शक्तियों की पूजा करते थे। जैसे कि पृथ्वी (चिन) वायु आकाश (यग) वृक्ष और पर्वत आदि की पूजा की जाती थी। चीनी लोग अपने पूर्वजो की पूजा करते थे। उनका यह मानना था कि सकट के समय पूर्वज उनकी रक्षा करते हैं। इसलिए उनके सम्मान मे बहुत उत्सव मनाते थे। इस प्रकार वे उत्सव चीन में आज भी प्रचलित है। चीन के निवासी बहुत अ ध विश्वासी थे। वे भूत-प्रेत, अपशकुन और जादू-टोने मे विश्वास रखते थे। भूत-प्रेत से अपनी रक्षा करने के लिए वे कई तरह के जादू टोने करते थे और गले म एक तावीज धारण करते थे। यहा के लोग देवताओं को प्र सन्न करने के लिए अनुष्ठान करते थे और इस अवसर पर मनुष्य की बलि भी दी जाती थी। चीन का सम्राट ईश्वर का पुत्र समझा जाता था। वह वर्ष मे एक बार देवता का वस्त्र पहनता था और आकाश तथा पृथ्वी को खुश करने के लिए बलि चढाता था। कन्फ्यूशियस के विचारो तथा भारत के बौद्ध धर्म का चीन के धर्म पर गहरा प्रभाव पडा। इतिहासकार क्रैन ब्रिटन का तो यह कहना है कि "चीन मे भारत, यूरोप व अरब की भाति विशेष धर्म नही था।" चीन के धर्म म नैतिकता के सिद्धान्तो पर अधिक जोर दिया गया था। जान बाउल लिखता है कि "भारतीय धर्म चाहे काल्पनिक हो, परन्तु चीन का धर्म वास्तविक धार्मिक कार्यों से सम्बन्धित तथा ठीक आचरण वाला था।" इस प्रकार स्पष्ट है कि चीन के धर्म मे पूर्वजो की पूजा, भूत प्रेत म विश्वास कन्फ्यूशियस की विचारधारा का प्रभाव तथा बौद्ध धर्म का मिश्रण रहा है। प्लेट व जीन का कहना है कि "बहुत से चीनी बहुत समय से एक से अधिक धर्म को मानते रहे हैं।"[1]

5 **दर्शन**—चीन ने दर्शन के क्षेत्र मे सराहनीय प्रगति की। 1250 ई० पूर्व मे यू तिज नामक चीनी दार्शनिक ने दर्शन को निम्न शब्दो म व्यक्त किया—"वह जो ख्याति को छोड देता है उस कोई दु ख—नही होता"[2] चाऊ वश के समय दार्शनिको ने स्थान स्थान पर घूम कर अपन विचारो का प्रचार किया। इस कार्य मे उन्हे चीन के प्रान्तीय शासको और धनिक व्यापारियो ने काफी सहयोग दिया। ईसा

1—प्लेट व जीन—विश्व का इतिहास, पृष्ठ 71

2—सेवाइन—ए हिस्ट्री आफ वर्ल्ड सिवलीजेशन, पृष्ठ 224

से छठी शताब्दी चीन में कन्फ्यूशियस की विचारधारा का काफी प्रभाव पड़ा। इस समय कन्फ्यूशियस, मेन्सियस, लाओत्से आदि प्रमुख दार्शनिक हुए। मेन्सियस प्रजातन्त्र को अच्छा शासन समझता था, इसलिए उसने युद्ध की निन्दा की। चीनी लोग विश्व बन्धुत्व के सिद्धान्त में विश्वास रखते थे। इतिहासकार बेन फिगर ने लिखा है कि "चीनी" दार्शनिक मनुष्यों को आपस में प्रेम करना, सहयोग देना, सहिष्णुता का पाठ सिखाते थे। ये लोग शत्रु से भी शिक्षा लेते थे। चीनी कहावत थी कि "मेरे शत्रु में भी कुछ है जिससे मैं कुछ सीख सकता हूं।" इस समय के प्रमुख दार्शनिक निम्न थे 1I कन्फ्यूशियस 2–लाओत्से, 3–मेन्सियस और 4–मोत्सू। हम पहले कन्फ्यूशियस का वर्णन करते हैं।

1. कन्फ्यूशियस–(551–478 ई० पूर्व)—ईसा से 6 शताब्दी पूर्व भारत में महावीर और गौतम बुद्ध तथा फारस में जरथुस्त्र की भांति चीन में दार्शनिक कन्फ्यूशियस ने भी सामाजिक और धार्मिक सुधार आन्दोलन चलाया। कन्फ्यूशियस का जन्म 551 ई० पूर्व में शान्तुग प्रान्त के लू नामक नगर में हुआ था। वह अपने पिता के बुढ़ापे की औलाद था। जब इसका पिता 70 वर्ष का था तो उसने एक और विवाह किया था, उसी से कन्फ्यूशियस पैदा हुआ था। चीनी कथाओं के अनुसार इसके पूर्वज शाग वंश के उत्तराधिकारियों में से थे। कन्फ्यूशियस के पिता का नाम कू गकू था। जब वह 9 वर्ष का था तब उसके पिता की मृत्यु हो गई, और जब 17 वर्ष का हुआ तब इसकी माता भी पर लोक सिधार गई। इसका बचपन दुःखमय बीता। धन की कमी के कारण वह सुचारु रूप से शिक्षा प्राप्त नहीं कर सका, इसलिए उसने एक स्कूल में अध्यापक के रूप में अपना जीवन प्रारम्भ किया और वहां उसने अनेक दार्शनिक ग्रन्थों को पढ़कर अपने ज्ञान में वृद्धि की।

प्लेट व जीन का कहना है कि "कन्फ्यूशियस ने आनन्द की सक्रिय खोज का प्रचार किया। जब लाओत्से बहुत बूढ़ा हो गया था और उसके शरीर पर झुरियां पड़ गई थी, तब एक युवक और उत्साही शिक्षक जिसका नाम कन्फ्यूशियस था, उससे मिलने के लिए आया और उनमें बहुत लंबा वार्तालाप हुआ किंतु वे इस विषय पर एकमत नहीं हो सके कि आनन्द तक पहुंचने का सही मार्ग कौनसा है।"[1] कन्फ्यूशियस धर्म और समाज के दोषों को दूर करना चाहता था। अपने इस उद्देश्य की पूर्ति करने के लिए उसने एक स्कूल खोला, जिसमें इतिहास, कविता और शिष्टाचार के नियमों की शिक्षा दी जाती थी। उसका कहना था कि "मनुष्य चरित्र का निर्माण कविताओं द्वारा होता है और चरित्र की पूर्णता संगीत द्वारा प्राप्त होती है।"

कन्फ्यूशियस के स्कूल में अमीर और गरीब दोनों के बच्चे एक साथ पढ़ते थे। वह जादू-टोना एवं देवता आदि में विश्वास नहीं करता था। कन्फ्यूशियस एक

1–सेबाइन–ए हिस्ट्री आफ वर्ल्ड सिवलीजेशन, पृष्ठ 224

आदर्श समाज का निर्माण करना चाहता था। वह कहता था कि मनुष्य को सदव्यवहार करना चाहिये और अपने कर्तव्यो का पालन करना चाहिये। कन्फ्यूशियस सरकारी कर्मचारियो की शिक्षा पर भी बल देता था, उसका यह कहना था कि मनुष्य ऐसे कर्म करे जो दूसरे के लिये उदाहरण स्वरूप हो। ल्यू का शासक भी कफ्यूशियस के सिदान्तो से बहुत प्रभावित हुआ। उसने उसे प्रशासक के पद पर नियुक्त कर दिया। कन्फ्यूशियस ने अब अपने दार्शनिक सिद्धान्तो का प्रचार करना शुरू कर दिया उसने मानव जीवन के स्तर को ऊ चा उठाने के लिए जीवन के प्रत्येक अ ग के नियम बनाये। उसने लोगो का भोजन और वस्त्र निश्चित कर दिया। उसके नगर के लोग एक जैसा भोजन करते थे तथा एक जैसे कपडे पहनते थे। उसने सामाजिक बुराईयो को दूर करने के लिए राज्य शक्ति का प्रयोग किया। उसके प्रयत्नो के फलस्वरूप राज्य मे चोरी और अधिकारियो के अत्याचार समाप्त हो गए। वह मृत्यु द ड का विरोधी था। उसने राजा से कहा कि" श्रीमान राज्य मे मृत्यु दड की आवश्यकता ही क्या है ? यदि आप वास्तव मे अच्छा होन की इच्छा करोगे तो प्रजा आपकी भाति अच्छी हो जायेगी। शासक मे हवा का गुण होना चाहिए और प्रजा मे सास का।"

उस समय भोग विलास म डूबे सामन्त कन्फ्यूशियस के सिद्धान्तो से परेशान हो गए थे। उन्होने लू के शासक के कान कन्फ्यूशियस के विरुद्ध भरे। शासक ने कन्फ्यूशियस को उसके पद से हटा दिया और उसके द्वारा किये गये सुधारो को भी समाप्त कर दिया। इस समय उसकी आयु 52 वर्ष की हो गई थी। वृद्धा वस्था म कफ्यूशियस एक स्थान से दूसरे स्थान का भ्रमण कर अपने सिद्धान्तो का प्रचार करता रहा। उसने चीनी जीवन और चरित्र का ऊ चा उठाने का भरसक प्रयास किया। अन्त मे 478 ई० पूर्व मे ल्यु राज्य मे 70 वर्ष की आयु मे उसका देहान्त हो गया। अन्त समय मे उसने निराशापूर्ण शब्दो मे कहा कि "इस साम्राज्य मे कोई ऐसा नही जो मुझे अपना गुरु बनाये, अब मेरे मरने का समय आ गया है।" यद्यपि कफ्यूशियस को अपने जीवन काल म सफलता नही मिली परन्तु उसकी मृत्यु के पश्चात् चीन मे उसके सिद्धान्तों का बहुत अधिक प्रचार हुआ।

कन्फ्युशियस लेखक के रूप मे–कन्फ्युशियस ने साहित्य के माध्यम से अपने सिद्धान्तो को जनता तक पहुचाने का प्रयास किया। उसने निम्न पाच ग्रन्थ लिखे –1–ली चिग, 2 - ई– चिग, 3– शी– चिग 4–शूचिग, 5– घुन छिऊ चिग। उसने शू– चिग मे चीन के राजनीतिक इतिहास का वर्णन किया है। शूचिग मे उसने गीतो और कविताओ का वर्णन किया है। ली चिग मे सामाजिक परम्पराओ और कानून आदि का वर्णन किया गया है। ई चिग मे उसने आध्यात्मिक विचारो का वर्णन किया है। चीन मे इन पाचो ग्रन्थो को चिग कहा जाता है। कन्फ्यूशियस की मृत्यु के पश्चात उसके शिष्यो ने उसकी शिक्षाओ का एक ग्रन्थ

करवाना था। दूसरा, मन्त्री उद्योग, यातायात व जन हित के कार्यों की देख-भाल करता था। तीसरा, मन्त्री सेनाध्यक्ष होता था। शिक्षा पर सरकार का नियन्त्रण था। सरकार ने स्थान स्थान पर स्कूल खुलवाकर शिक्षा का प्रचार किया।

(ii) राजस्व सुधार—इस समय भूमि पर राज्य का अधिकार घोषित कर दिया गया। सरकार अपनी इच्छानुसार किसानों को भूमि का वितरण करती थी। कृषकों से भूमि कर के स्थान पर वार्षिक किराया लिया जाता था। अब भूमि पर कृषकों का अधिकार नहीं रहा।

(iii) धार्मिक नीति—चीन में इस समय बौद्ध धर्म का प्रचार हो रहा था, इसलिए ताग वंश के शासकों ने धार्मिक सहिष्णुता की नीति पर चलते हुए बौद्धों के तीन मठों को छोड़कर बाकी सभी मठों को गिरवा दिया।

(iv) न्याय व्यवस्था—इस वंश के शासकों ने 637 ई० में एक कानून संहिता तैयार करवाई। इसके बन जाने के बाद शिक्षित मनुष्य को समाज में आदर मिलने लगा। राजकीय पदों पर योग्य व्यक्तियों को नियुक्त किया जाने लगा। इसके द्वारा समाज में समानता स्थापित कर दी गई। इस कानून संहिता पर कन्फ्यूशियस के विचारों का बहुत प्रभाव पड़ा। इस प्रकार स्पष्ट है कि ताग वंश के शासन काल में चीन का साम्राज्य विस्तार हुआ तथा राज्य में जनता सुखी और शान्तिपूर्वक जीवन व्यतीत कर रही थी। इसलिए यह काल चीन के इतिहास में द्वितीय स्वर्ण युग के नाम से प्रसिद्ध है।

6—शुग वंश का शासन (960–1127 ई०)—

चीन में तामो क्वाग ने ताग वंश समाप्त कर शुग वंश की स्थापना की। जान बाउल का मानना है कि शुग वंश में शासक सर्वाधिक सभ्य थे। क्वागयीन एक कुशल राजनीतिज्ञ सम्राट था। इसने अपनी प्रजा के हित के लिए कई सुधार किए, जिससे जनता उससे सन्तुष्ट थी। प्रमुख सुधार निम्नलिखित थे—

1 उसने कृषकों की सुविधा के लिए ग्रीन शूटस नियम बनाए। इनके द्वारा किसानों को सरकार की ओर से ऋण दिया जाता था, जिस पर ब्याज नहीं लिया जाता था।

2 उसने जन साधारण की सुविधा के लिए मापतौल अधिनियम बनायें ताकि व्यापार में बेईमानी समाप्त की जा सके।

3 चीन की रक्षा के लिए उसने एक विशाल और शक्तिशाली सेना का निर्माण किया।

इतना सब कुछ होते हुए शुग वंश के अन्तिम शासकों के समय में चीन में अराजकता एवं अव्यवस्था फैलने लगी। ऐसी परिस्थितियों में मंगोलों के नेता कुबलाईखां ने शुग वंश को समाप्त कर चीन पर अधिकार कर लिया।

मगोलों ने चीन में यूयान वंश की स्थापना की और प्राचीन युग समाप्त हो गया। इस प्रकार स्पष्ट है कि चीन पर विभिन्न वंशों का शासन रहा और विदेशी आक्रमण भी हुऐ। फिर, भी चीन की सभ्यता लगभग चार हजार वर्ष तक निरन्तर विकास करती रही।

चीन की सभ्यता का वर्णन

1. प्रशासन व्यवस्था—

(i) **राजा**—चीन के सम्राट दैविक सिद्धान्त मे विश्वास रखते थे। उनकी आज्ञा ही कानून थी। उनके किसी भी आदेश का कोई भी व्यक्ति विरोध नही कर सकता था। प्रत्येक क्षेत्र मे उनका निर्णय अन्तिम समझा जाता था। सम्राट सिर्फ ईश्वर के प्रति उत्तरदायी होते थे। यहा के सम्राट निरंकुश होते हुए भी प्रजा की भलाई करना अपना कर्तव्य समझते थे। वह देश के रीति रिवाजो को ध्यान मे रखते हुऐ अपने मन्त्रियो की सलाह से शासन करते थे। यहाँ का प्रत्येक सम्राट प्रति वर्ष शीतकाल मे आगामी वर्ष को सुखद बनाने के लिऐ पैकिंग मे स्थित ' स्वर्ग देवी'' की पूजा करता था।

(ii) **मंत्री परिषद**—सम्राट अपनी सहायता के लिए चार मंत्रीयो की नियुक्ति करता था, जो समय समय पर राजा को प्रशासनिक कार्यों मे सलाह देते थे। इसके अतिरिक्त राज्य का कार्य छः विभागो मे बाट दिया गया था। राजा जिले मे एक कमीश्नर की नियुक्ति करता था, जो "सेंसर" कहलाता था। यद्यपि ये सभी अधिकारी राजा को सलाह देते थे, लेकिन वह इनकी सलाह को मानने के लिए बाध्य नही था।

(iii) **नियुक्ति का तरीका**—चीन मे योग्य व्यक्तियो को ही सरकारी पदो पर नियुक्त किया जाता था। नियुक्तियां लोक सेवा आयोग के माध्यम से की जाती थी। लोक सेवा आयोग तीरन्दाजी, घुडसवारी, परम्पराओ की जानकारी और सगीत आदि विषयों की परीक्षाए आयोजित करता था। इनमे सफलता प्राप्त करने वाले व्यक्तियो को ही शासन सम्बन्धी कार्यों का प्रशिक्षण दिया जाता था, और बाद मे उन्हे योग्यतानुसार पद पर नियुक्त कर दिया जाता था। यदि कोई अधिकारी अपराधी सिद्ध हो जाता तो उसे कठोर दड दिया जाता था। लोक सेवा आयोग द्वारा अधिकारियो की नियुक्ति करना चीन की ससार को एक महत्वपूर्ण देन है। चीनी विद्वान नानचन सान ने लिखा है कि कि " जब हम प्राचीन चीन में अफसरो की नियुक्ति और कर्तव्यो की व्यवस्था का अध्ययन करते हैं तो हमे अपने पूर्वजो की भावना और योग्यता की प्रशसा करनी पडती है। "

(ix) **प्रान्तीय शासन प्रबन्ध**—प्रान्तो का शासन प्रबन्ध चलाने के लिये सम्राट प्रत्येक प्रान्त मे एक न्यायाधीश और एक राज्यपाल की नियुक्ति करता था।

कालान्तर में प्रान्त मे सामत शक्तिशाली होने लगे। ये जनता पर अत्याचार कर बहुत सा धन कर के रूप में वसूल करते थे लेकिन सम्राट को कुछ भी नही देते थे। अत केन्द्रीय सरकार की आर्थिक दशा शोचनीय रहती थी। चीनी साम्राज्य के पतन के लिये ये सामन्त काफी सीमा तक उत्तरदायी थे। राज्य की आय का मुख्य साधन कृषि कर था। बेन फिगर ने लिखा है कि" हैलरी जार्ज ने जिस भूमि कर पर 19 वी शताब्दी मे जोर दिया था, वह भूमि कर चीन म उस समय था"।

(v) ग्रामों की शासन व्यवस्था—चीन म छोटे छोटे गांव और छोटे छोटे नगर थे। हर गाव मे अलग अलग शासन व्यवस्था थी। प्रत्येक नगर या गाव का शासन एक मुखिया के हाथ मे होता था। कई गावो के समूह को एक "हीन-" कहा जाता था और दो तीन हीन का एक "फू" बनता था जो प्रान्त के बराबर होता था। उनकी सहायता के लिये एक न्यायाधीश, एक कोषाध्यक्ष और एक कर वसूल करने वाला अधिकारी होता था। ये चारो अधिकारी मिलकर गाव का शासन प्रबन्ध चलाते थे। चीन म काम नहीं करने वाले व्यक्ति को हीन दृष्टि से देखा जाता था। पश्चिमी देशों के विद्वानो ने चीन के तत्कालिन प्रशासन व्यवस्था की कठ मुक्त होकर प्रशसा की है। इतिहासकार विलड्युरेन्ट ने चीन की शासन व्यवस्था के बारे म लिखा है कि "चीन का प्रशासन राजतन्त्र और कुलीनतत्र का एक सुदर समन्वय था।

चीन क शासक स्वेच्छाचारी होने हुऐ भी प्रजा की भलाई करना अपना प्रमुख कर्तव्य समझते थे। यहा सम्राट को "स्वर्ग का पुत्र" की उपाधि मिली हुई थी फिर भी वहा पर राजनीतिक एकता का अभाव था। पुलिस व जान का कहना है कि "सम्राट को स्वर्ग पुत्र का खिताब मिला हुआ था और उसका बहुत सम्मान किया जाता था लेकिन उसकी शक्ति बहुत कम थी। विभिन्न राज्यो मे आपस म युद्ध चला करते थे। शक्तिशाली कमजोर को जीत लेता था और अन्त में राज्यों की सख्या घटकर 52 हो गई।"[1]

2. आर्थिक व्यवस्था—

(i) कृषि तथा पशुपालन—चीनी लोगो का मुख्य व्यवसाय कृषि था। यहाँ के लोग अच्छे खाद का प्रयोग करते थे और पत्थर, लकड़ी और लोहे के हलो का प्रयोग करते थे। राज्य द्वारा नहरो का निर्माण करवाया जाता था ताकि खेतो में पानी पहुंचाया जा सके। हानवश के सम्राटों ने कृषि के विकास के लिये 56 नहरो का निर्माण करवाया था। यहाँ उपजाऊ भूमि पर सामूहिक खेती की जाती थी और कर भी सामूहिक रूप से चुकाया जाता था। यहा भूमि पर सम्राट का अधिकार माना जाता था। यहा की मुख्य उपज चावल गेहू और जौ आदि थी। कृषि के अतिरिक्त उनका दूसरा व्यवसाय पशुपालन था। यहा के लोग भेड़, सूअर और कुत्ता आदि को पालते थे।

1— पुलिस व जोन—ससार का इतिहास, पृष्ठ 49

मगोलो ने चीन में युआन वश की स्थापना की और प्राचीन युग समाप्त हो गया। इस प्रकार स्पष्ट है कि चीन पर विभिन्न वशो का शासन रहा और विदेशी आक्रमण भी हुऐ। फिर, भी चीन की सभ्यता लगभग चार हजार वर्ष तक निरन्तर विकास करती रही।

चीन की सभ्यता का वर्णन

1. प्रशासन व्यवस्था—

(i) राजा—चीन के सम्राट दैविक सिदधान्त मे विश्वास रखते थे। उनकी आज्ञा ही कानून थी। उनके किसी भी आदेश का कोई भी व्यक्ति विरोध नही कर सकता था। प्रत्येक क्षेत्र म उनका निर्णय अन्तिम समझा जाता था। सम्राट सिर्फ ईश्वर के प्रति उत्तरदायी होते थे। यहा के सम्राट निरकुश होते हुए भी प्रजा की भलाई करना अपना कर्तव्य समझते थे। वह देश के रीति रिवाजो को ध्यान म रखते हुऐ अपने मत्रियो की सलाह से शासन करते थे। यहाँ का प्रत्येक सम्राट प्रति वर्ष शीतकाल मे आगामी वर्ष को सुखद बनाने के लिये पैकिंग म स्थित "स्वर्ग देवी" की पूजा करता था।

(ii) मत्री परिषद—सम्राट अपनी सहायता के लिए चार मत्रीयो की नियुक्ति करता था जो समय समय पर राजा को प्रशासनिक कार्यो मे सलाह देते थे। इसके अतिरिक्त राज्य का कार्य छ, विभागो म बाट दिया गया था। राजा जिले मे एक कमीश्नर की नियुक्ति करता था, जो 'सासर" कहलाता था। यदयपि ये सभी अधिकारी राजा को सलाह देते थे, लेकिन वह इनकी सलाह को मानने के लिए बाध्य नही था।

(iii) नियुक्ति का तरीका—चीन मे योग्य व्यक्तियो को ही सरकारी पदो पर नियुक्त किया जाता था। नियुक्तिया लोक सेवा आयोग के माध्यम से की जाती थी। लोक सेवा आयोग तीरन्दाजी, घुडसवारी, परम्पराओ की जानकारी और सगीत आदि विषयो की परीक्षाए आयोजित करता था। इनमे सफलता प्राप्त करने वाले व्यक्तियो को ही शासन सम्बन्धी कार्यों का प्रशिक्षण दिया जाता था, और बाद मे उन्हें योग्यतानुसार पद पर नियुक्त कर दिया जाता था। यदि कोई अधिकारी अपराधी सिद्ध हो जाता तो उसे कठोर दड दिया जाता था। लोक सेवा आयोग द्वारा अधिकारियो की नियुक्ति करना चीन की ससार को एक महत्वपूर्ण देन है। चीनी विद्वान नानचन मान ने लिखा है कि कि "जब हम प्राचीन चीन मे अफसरो की नियुक्ति और कर्तव्यो की व्यवस्था का अध्ययन करते हैं तो हमे अपने पूर्वजो की भावना और योग्यता की प्रशसा करनी पडती है।"

(iv) प्रान्तीय शासन प्रबन्ध—प्रान्तो का शासन प्रबन्ध चलाने के लिये सम्राट प्रत्येक प्रान्त म एक न्यायाधीश और एक राज्यपाल की नियुक्ति करता था।

कालान्तर में प्रान्त मे सामंत शक्तिशाली होंने लगे। ये जनता पर अत्याचार कर बहुत सा धन कर के रूप मे वसूल करते थे लेकिन सम्राट को कुछ भी नही देते थे। अत केन्द्रीय सरकार की आर्थिक दशा शोचनीय रहती थी। चीनी साम्राज्य के पतन के लिये ये सामन्त काफी सीमा तक उत्तरदायी थे। राज्य की आय का मुख्य साधन कृषि कर था। केन फिगर ने लिखा है कि" हैलरी जार्ज ने जिस भूमि कर पर 19 वी शताब्दी मे जोर दिया था, वह भूमि कर चीन म उस समय था"।

(४) ग्रामों की शासन व्यवस्था—चीन में छोटे छोटे गांव और छोटे छोटे नगर थे। हर गाव में अलग अलग शासन व्यवस्था थी। प्रत्येक नगर या गाव का शासन एक मुखिया के हाथ मे होता था। कई गावो के समूह को एक "हीन-' कहा जाता था और दो तीन हीन का एक "फू" बनता था जो प्रान्त के बराबर होता था। उनकी सहायता के लिये एक न्यायाधीश, एक कोषाध्यक्ष और एक कर वसूल करने वाला अधिकारी होता था। ये चारो अधिकारी मिलकर गाव का शासन प्रबन्ध चलाते थे। चीन म काम नही करने वाले व्यक्ति को हीन दृष्टि से देखा जाता था। पश्चिमी देशों के विद्वानो ने चीन के तत्कालिन प्रशासन व्यवस्था की कंठ मुक्त हाकर प्रशसा की है। इतिहासकार विलड्यूरेन्ट ने चीन की शासन व्यवस्था के बारे म लिखा है कि " चीन का प्रशासन राजतन्त्र और कुलीनतंत्र का एक सुन्दर समन्वय था।

चीन क शासन स्वेच्छाचारी होने हुऐ भी प्रजा की भलाई करना अपना प्रमुख कर्तव्य मनमने थे। यहा सम्राट को "स्वर्ग का पुत्र" की उपाधि मिली हुई थी फिर भी वहा पर राजनीतिक एकता का अभाव था। पुलिस व जान का कहना है कि " सम्राट को स्वर्ग पुत्र का खिताब मिला हुआ था और उसका बहुत सम्मान किया जाता था लेकिन उसकी शक्ति बहुत कम थी। विभिन्न राज्यो मे आपस मे युद्ध चला करते थे। शक्तिशाली कमजोर को जीत लेता था और अन्त मे राज्यो की सख्या घटकर 52 हो गई।"[1]

2. आर्थिक व्यवस्था—

(1) कृषि तथा पशुपालन—चीनी लोगो का मुख्य व्यवसाय कृषि था। यहाँ के लोग अच्छे खाद का प्रयोग करते थे और पत्थर, लकड़ी और लोहे के हलों का प्रयोग करते थे। राज्य द्वारा नहरों का निर्माण करवाया जाता था ताकि खेतो में पानी पहुचाया जा सके। हानवश के सम्राटो ने कृषि के विकास के लिये 56 नहरो का निर्माण करवाया था। यहाँ उपजाऊ भूमि पर सामूहिक खेती की जाती थी और कर भी सामुहिक रुप से चुकाया जाता था। यहा भूमि पर सम्राट का अधिकार माना जाता था। यहाँ की मुख्य उपज चावल गेहू और जौ आदि थी। कृषि के अतिरिक्त उनका दूसरा व्यवसाय पशुपालन था। यहा के लोग भेड, सूअर और कुत्ता आदि को पालते थे।

1– पुलिस व जौन–ससार का इतिहास, पृष्ठ 49

(ii) उद्योग धन्धे—चीन मे उद्योग धन्धो का बहुत अधिक विकास हुआ। चीनियो का मुख्य व्यवसाय रेशम के कपडो का निर्माण करना था। यहा के निवासी रेशम के उच्च कोटी के वस्त्र बनाकर पश्चिमी देशो को निर्यात करत थे। मार्कोपोलो का कहना है कि "चीन मे हर घर रेशम का कारखाना था, जिनमे 20 से 30 तक मजदूर काम करते थे"। चीन मे बढई उद्योग का भी काफी विकास हो चुका था। यहा के बढई लकडी के मकान और सुन्दर फर्नीचर बनाते थे। इसके अतिरिक्त मछली पकडने के व्यवसाय का भी काफी विकास हो चुका था। चीन मे लोग वशानुगत व्यवसाय करते थे।

(iii) व्यापार—चीन ने व्यापार के क्षेत्र मे भी बहुत प्रगति कर ली। सम्राट शीहाग टी ने व्यापार के विकास के लिए चीन मे सडको का जाल बिछा दिया था। चीन चाय, रेशम, चीनी, मिट्टी के बर्तन, बारुद, ताश आदि वस्तुए भारत, ईरान मैसोपोटामिया और पश्चिमी देशो को निर्यात करता था और इन देशो से शीशा, तम्बाकू व अफीम का आयात करता था। चीन म सिक्को का प्रचलन होने से व्यापार मे काफी सुविधा हुई। यहा व्यापारिक बैंक थे, जो व्यापारियो के ऊची ब्याज दरो पर रुपया उधार देते थे।

3 सामाजिक व्यवस्था (i) समाज का विभाजन—चीनीयो के अनुसार ससार के निर्माता पानकू ने समाज को चार वर्गों मे विभाजित किया था। पहला वर्ग, मन्दारिन था। उच्च शिक्षा प्राप्त व्यक्ति, विद्वान और प्राध्यापक इनमे स कोई भी व्यक्ति मन्दारिन बन सकता था। इनका समाज मे बहुत अधिक सम्मान था। इनकी परामर्श के बिना समाज का कोई भी महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न नही हो सकता था। ट्रेन ब्रिन्टन ने लिखा है कि" इस वर्ग ने चीन मे बाहरी विचारो को आने से नही रोका वरन् इसने चीन की सभ्यता को स्थायी बना दिया।" दूसरा वर्ग कृषको का था जिसकी दशा अच्छी नही थी। तीसरा वर्ग कारीगरो का था। चौथा वर्ग व्यापारियो का था। चीनी लोग शान्ति पूर्ण जीवन व्यतीत करते थे। इतिहासकार डेविस ने लिखा है कि " चीनी सभ्यता सुनिश्चित रूप से शाति क लिये सगठित है और चीन ही केवल ऐसा देश है जहा पर सैनिक होना अपमान जनक समझा जाता है।"

(ii) सयुक्त परिवार प्रथा—भारत वर्ष की भाति चीन मे भी सामाजिक जीवन की आधारशिला सयुक्त परिवार प्रथा थी। यहा समाज पितृसतात्मक परिवार पर आधारित था। परिवार के सभी सदस्य मुखिया की आज्ञा का पालन करना अपना कर्तव्य समझते थे। परिवार म पुत्री की अपेक्षा पुत्र को अधिक महत्व दिया जाता था। परिवार के सदस्य अपने पूर्वजो की पूजा करते थे। चीन मे बडे परिवार का होना बडप्पन का चिन्ह समझा जाता था। प्लेट व जीन का मानना है कि जो व्यक्ति चीनी परिवार को नही समझता वह चीन भी

तैयार किया जैसे "लुन—यूई" कहा जाता है। अपने उपदेशो मे व्यवहारिकता पर अधिक जोर दिया है।

कन्फ्यूशियस के सिद्धान्त- कन्फ्यूशियस के प्रमुख सिद्धान्त निम्न लिखित थे।

1. कन्फ्यूशियस के अनुसार प्राथमिक कक्षाओ म इतिहास, धर्म और शिष्टाचार अनिवार्य विषय के रुप में पढाये जाने चाहिए। उच्च शिक्षा मे विद्यार्थी को साहित्य, काव्य और विज्ञान आदि विषय पढाने चाहिए। मनुष्य के चरित्र निर्माण के लिए शिक्षा पर अधिक महत्व दिया जाना चाहिए और शिक्षकों को समाज मे अधिक से अधिक सम्मान मिलना चाहिए।
2 कन्फ्यूशियस के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति को शिष्टाचार पूर्ण व्यवहार करना चाहिए। माता पिता और गुरू का सम्मान करना चाहिए। मनुष्य को प्रत्येक के साथ नम्रता का व्यवहार करना चाहिए और अपने कर्तव्य का पालन करना चाहिए।
3 कन्फ्यूशियस ने व्यक्ति के नैतिक विकास पर बहुत अधिक बल दिया है। उनका कहना था कि मनुष्य को झूठ नही बोलना चाहिए एवं ईमानदारी से कानून का पालन करना चाहिये। कन्फ्यूशियस के उपदेशो को नैतिक नियमों का सग्रह कहा जा सकता है।
4 कन्फ्यूशियस राजतत्र का समर्थक था। वह राजा को ईश्वर का प्रतिनिधि मानता था। उसका कहना था कि राजा को अपने कर्तव्यो का पालन करना चाहिए। उसका व्यक्तिगत चरित्र ऐसा होना चाहिए ताकि जनता बिना आदेश दिये उसका अनुसरण करने लगे। राजा को अपनी शक्ति का दुरुपयोग नहीं करना चाहिए। प्रजा की भलाई करना उसका मुख्य उद्देश्य होना चाहिए।
5 यदयपि कन्फ्यूशियस ने चीन की प्राचीन परम्पराओ तथा रीति रिवाजो का समर्थन किया लेकिन वह अध विश्वास का विरोधी था। प्राचीन परम्पराओं मे जो बुराइयाँ आ गई थी। उसम उसने सुधार करने का सुझाव दिया।
6 कन्फ्यूशियस के अनुसार प्रत्येक मनुष्य को अपने कर्त्तव्य का पालन करना चाहिए और सभी के प्रति आदर का भाव रखना चाहिए।
7 कन्फ्यूशियस ने कभी धर्म सुधार का प्रयास नही किया। वह न धर्म प्रचारक था और न ही इसने धर्म से सबन्धित सिद्धातो का प्रचार किया। इसने तो समाज म व्याप्त बुराइयों और अध विश्वासों को दूर करने का प्रयास किया, लेकिन कालातर म कन्फ्यूशियस एक धर्म प्रचारक के रुप में प्रसिद्ध हुआ।

8 कन्फ्यूशियस ने दयापूर्ण व्यवहार पर बहुत अधिक बल दिया।

9 कन्फ्यूशियस ने अपने शिष्यों को अनुशासनपूर्ण जीवन व्यतीत करने तथा कुछ नियमों का पालन करने का आदेश दिया।

10 कन्फ्यूशियस ने चीन का इतिहास, कविता सग्रह आदि पर महत्वपूर्ण ग्रन्थ लिखे। उसके शिष्यो ने उसके उपदेशो पर एक ग्रन्थ लिखा। जो चीन की सस्कृति मे महत्वपूर्ण स्थान रखता है।

11\. कन्फ्यूशियस मानववाद के सिद्धान्तो मे विश्वास रखता था। उसका मानना था कि सच्चा पुरुष वही है जो दूसरो के लिए जीता है।

12 कन्फ्यूशियस मनुष्य के जीवन को सुखमय बनाने के लिये, दया, ज्ञान, न्याय, सत्य और सेवा, भक्ति आदि पचगुणो को आवश्यक मानता था। उसने साधारण जनता को सुधारने के लिये निम्नलिखित उपदेश दिये थे :—

1. *गुरुजनो का सम्मान करना चाहिये।*
2. पूर्वजो की पूजा तथा सम्मान करना चाहिये।
3. विद्वानो का आदर करना चाहिये।
4. व्यक्ति को अपना चरित्र अच्छा रखना चाहिये।
5. गरीबो के प्रति दया का भाव रखना चाहिये।
6. कर्त्तव्य का पालन करना चाहिये।
7. राजा के आदेशो का पालन करना चाहिये।
8. शिष्टाचार के नियमो का पालन करना चाहिये।
9. विदेशियो के प्रति अच्छा व्यवहार करना चाहिये।

विल ड्यूरेन्ट ने कन्फ्यूशियस के उपदेशो के बारे मे लिखा है कि 'इस दर्शन की सहायता से चीन मे एक सम्मिलित सामूहिक जीवन की विद्या और ज्ञान के प्रति प्रशसा की उत्साहमय भावना जागृत हुई।

कन्फ्यूशियस की कहावतें—कन्फ्यूशियस की कहावतें चीन मे आज भी प्रसिद्ध है। प्रमुख कहावतें निम्नलिखित है—

1. "जो तुम अपने साथ किया जाना पसद नहीं करते, वह दूसरो के साथ मत करो।"
2. *"सही बात को समझना और उसके अनुसार आचरण न करना* कायरता है।"
3. "चोट का बदला न्याय से दो, और दयालुता का बदला दयालुता से दो।"
4. "बिना सोचे समझे पढना समय और नष्ट करना है। बिना पढ़े विचार करना खतरनाक है।"

5 "ज्ञानी मनुष्य की पहचान यह है कि वह जानता है कि वह क्या चीज जानता है और क्या नहीं जानता।"

कन्फ्यूशियस के विचारों का चीन पर प्रभाव—कन्फ्यूशियस के विचारों का चीन पर ऐसा ही प्रभाव पड़ा जैसा कि ईसा का ईसाइयों पर और महात्मा बुद्ध का भारत वासियों पर पड़ा। महात्मा गांधी की तरह कन्फ्यूशियस के विचारों का सामन्तों ने विरोध किया। अन्तर केवल इतना है कि ये महापुरुष अपने जीवन में ख्याति प्राप्त कर चुके थे, जबकि कन्फ्यूशियस को अपने जीवन में असफलता का सामना करना पड़ा। उसे उसकी मृत्यु के पश्चात् ख्याति मिली। उसकी मृत्यु के लगभग 100 वर्ष पश्चात मेन्सियस नामक दार्शनिक ने उसके विचारों का चीन में प्रसार किया और उसे सदा के लिए अमर बना दिया। कन्फ्यूशियस के विचारों का 20 वीं शताब्दी के मध्य तक चीन पर प्रभाव रहा। होमर ने लिखा है कि 'चीनी उसके बारे में कम कहते हैं तो भी प्रत्येक शिक्षित चीनी के मस्तिष्क में कन्फ्यूशियस की परम्परा उसके सोचने के दृष्टिकोण को प्रभावित करती है।"

चीन का अन्य कोई भी दार्शनिक कन्फ्यूशियस की समता नहीं कर सकता। इसके उपदेशों का उस समय के अराजकता के युग में चीनी जनता पर गहरा प्रभाव पड़ा। उसके उपदेश काफी समय तक राजनीतिक अधिकारियों का मार्ग दर्शन करते रहे। चीनी जनता लगभग 2000 वर्ष तक उसके उपदेशों का पालन करती रही। विलड्यूरेन्ट का कहना है कि "कन्फ्यूशियस चीनी सभ्यता को इतना सुदृढ़ तथा शक्तिशाली बना दिया कि वह प्रत्येक आक्रमणों का सामना करने के बाद भी जीवित रही और प्रत्येक आक्रमणकारी अपने रूप में बदल सकी।"

इस प्रकार चीनी सभ्यता को इतना संगठित और अमर बनाने का श्रेय बहुत अंशों में कन्फ्यूशियस को ही है। वह मृत्यु के पश्चात् चीन में देवता की तरह पूजा गया। उसके अनुयाईयों ने उसे देवता मान कर मन्दिरों का निर्माण किया और उसमें कन्फ्यूशियस की मूर्ति की स्थापना कर उसकी पूजा करने लगे। चीन के निवासी प्राचीन परम्परा और रूढ़ीवादी विचारों में विश्वास रखते थे। इसलिए वे कन्फ्यूशियस के उपदेशों का निरन्तर पालन करते रहे और समय के अनुसार वे उसमें सुधार नहीं कर सके। इसका परिणाम यह हुआ कि वह 19 वीं शताब्दी के अन्त तक विकास नहीं कर सके।

2. लाओत्से (604–517 ई० पूर्व)—चीन का लाओत्से नामक एक दार्शनिक कन्फ्यूशियस का समकालीन था। जब इसकी आयु 50 वर्ष की थी, तब कन्फ्यूशियस पैदा हुआ था। उसका जन्म 604 ई० पूर्व में होनान नामक प्रान्त में हुआ था। लाओत्से का वास्तविक नाम "ली" था लेकिन ख्याति प्राप्त करने के पश्चात् उसने "लाओ" की उपाधि धारण की। "लाओ" जिसका अर्थ होता है" पुराना आचार्य (वृद्ध गुरु)। उसने "ताओ-ते-किंग" नामक ग्रन्थ लिखा। इस ग्रंथ

के आधार पर ही चीन में "ताओवाद" नामक एक नये पथ की स्थापना हुई। उसने मनुष्य और ईश्वर के बीच सम्बन्ध स्थापित करने का प्रयास किया। लाओत्से ने स्थान स्थान पर भ्रमण कर अपने ताओवाद का प्रचार किया। रूसो की तरह उसका भी यह मानना था कि "प्रकृति ने मनुष्य के जीवन को सरल और शांतिपूर्ण बनाया था परन्तु मनुष्य ने ज्ञान प्राप्त करके इसे जटिल कर दिया।

ताओवाद के सिद्धान्त—*ताओवाद के प्रमुख सिद्धान्त निम्नलिखित थे* —

1 **शिक्षा की उपेक्षा**—लाओत्से ने शिक्षा के प्रसार को उचित नहीं माना। उसका यह मानना था कि शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात् व्यक्ति स्वार्थी बन जाता है और वह राज्य व समाज के लिए संकट पैदा करता है। इसलिए यदि मनुष्य शिक्षा प्राप्त न करे तो वह सुखी जीवन व्यतीत कर सकता है। उसका कहना था कि "शिक्षा के प्रसार के साथ मूर्खों की संख्या बढ़ती है। बुद्धिमान जन राज्य के संकट का कारण बन जाते हैं।" उसका दर्शन चीन में "अज्ञान" के नाम से प्रसिद्ध है। चीन के अशिक्षित लोग सैकड़ों की संख्या में अनुयायी बन गये।

2, **प्रकृति की पूजा में विश्वास**—*लाओत्से प्रकृति की पूजा में विश्वास करता था। उसका यह मानना था कि मनुष्य को प्रकृति की पूजा करना चाहिये और प्रकृति के नियमों का अपने जीवन में पालन करना चाहिये।*

3 **दूसरों के प्रति दया का भाव रखना**—लाओत्से के अनुसार मनुष्य को दूसरों के प्रति प्रेम और दया का व्यवहार करना चाहिए। उसने कहा कि 'यदि तुम किसी से झगड़ा न करो तो संसार में किसी को भी तुमसे झगड़ा करने का साहस न होगा—यदि तुम्हें कोई चोट पहुँचाए तो उसका उत्तर दयालुता से दो,— — संसार में सबसे कोमल वस्तु सबसे कठोर वस्तु से टकराकर उसे परास्त कर देती है।' लाओत्से का कहना था कि मनुष्य को आघात का बदला दयालुता से देना चाहिए। डा० गोयल का मानना है कि 'ईसा मसीह के समान लाओत्से का कहना था कि जो तुम्हारे मार्ग में कांटे बोये उनके मार्ग में तुम फूल बोओ क्योंकि दुनिया में क्षमा, प्रेम, धैर्य और शांति से बड़ा कोई शस्त्र नहीं है।"[1]

4 **शांतिपूर्ण जीवन में विश्वास**—लाओत्से के अनुसार मनुष्य को शांतिपूर्ण जीवन व्यतीत करना चाहिए। वह राज्य समाज और कानून को आवश्यक नहीं मानता था और भाग्य में विश्वास रखता था। उसका यह मानना था कि यदि भाग्य में लिखा हुआ है तो हर वस्तु अपने आप मिल जायगी। उसके लिए काम करने की आवश्यकता नहीं है। वह युद्ध का विरोधी था। उसका मानना था कि युद्ध में निरपराध व्यक्ति अकारण नहीं मारे जाते हैं। प्लेट व जीन का कहना है कि

1—*प्लेट व जीन—विश्व का इतिहास, पृष्ठ 68*

"लाओत्से का मानना था कि लोगो को इतना शान्त होना चाहिये कि जब उन पर आक्रमण भी किया जाऐ तब भी वे लड़े नही।[1] लाओत्से की युद्ध विरोधी विचारधारा से चीन का विकास अवरूद्ध हो गया। उसका कहना था कि मनुष्य की बढ़ती हुई आवश्यकताए उसके सुन्दर जीवन की समाप्ति कर देती है। उसका नारा था कि' 'आन्तरिक शांति महान वस्तु है और मनुष्य को सदाचारी होना चाहिए।" लाओत्से के उपदेशो से चीन मे ताओवाद नामक एक नया धर्म चल पडा। इस धर्म का चीन मे काफी प्रचार हुआ।

5. मैन्सियस (378–288 ई० पूर्व) चीन मे मैन्सियस नामक दार्शनिक ने कन्फ्यूशियस के विचारों का प्रचार किया। वह भी ल्यू राज्य का रहने वाला था। उसकी मां को चीन की आदर्श मा कह कर पुकारा जाता है। मैन्सियस राजतन्त्र का समर्थक था। उसका यह मानना था कि " जो कुछ राजकुमार मे गलती है उसे ठीक कर दो। यदि राजकुमार सुधार गया तो राज्य व्यवस्थित हो जायेगा।" उसने कहा कि राजा को प्रजा की भलाई के कार्य करना चाहिए, यदि राजा अत्याचार करता है तो जनता को उसे हटाने का अधिकार है। वह प्रजातन्त्र व्यवस्था का इसलिये विरोधी था, क्योंकि इस व्यवस्था की सफलता के लिये जनता का शिक्षित होना आवश्यक था जो बडा मुश्किल काम था। वह युद्ध का विरोधी था और सेनापतियो को अपराधी मानता था। उसने कहा 'कोई ऐसा युद्ध नही हुआ जो अच्छा रहा हो।" उसने मनुष्य मात्र भाव पर अधिक बल दिया। उसने कहा "परमात्मा की इच्छा है प्रेम, सबमे प्रेम, और किसी प्रकार का भेद भाव किये बिना प्रेम।'

इन दार्शनिको के विचारो का चीनी जनता पर बहुत अधिक प्रभाव पडा। चीन मे बौद्ध धर्म के प्रचार के पश्चात् भी यहा के लोग इन दार्शनिकों के उपदेशों का पालन करते रहे।

6. कला—प्राचीन काल म चीन मे स्थापत्य कला, संगीत कला, मूर्तिकला और चित्रकला का बहुत अधिक विकास हुआ।

(i) वस्तुकला–चीन मे वस्तुकला के क्षेत्र मे बहुत अधिक विकास हुआ। यहा की 1800 मील लम्बी दीवार विश्व के सात आश्चर्यों मे से एक है। जब चीन मे बौद्ध धर्म का प्रचार होने लगा तो वहा पर अनेक बौद्ध मन्दिरो का निर्माण किया जाने लगा। पेकिंग के पास महात्मा बुद्ध का एक मन्दिर उस युग की स्थापत्य कला का शानदार नमूना है।

(ii) मूर्ति कला—चीन मे मूर्ति कला के क्षेत्र मे काफी प्रगति हुई। शु़ग वश और चाउ वश के समय मे कांसे के बर्तन पर पशुओ की सुन्दर मूर्तियां

1. प्लेट व जोन—विश्व का इतिहास, पृष्ट 68

बनाई जाती थी। चीन मे बौद्ध धर्म के प्रचार के बाद ताग वश के समय मे महात्मा बुद्ध की सुन्दर मूर्तियो का निर्माण किया गया।

(iii) चित्रकला—चीन मे चि कला के क्षेत्र मे भी काफी प्रगति हुई। चीनी चित्रकला की दो मुख्य विशेषतायें थी। पहली, चित्रों मे भावों को प्रधानता देना और उसका प्रदर्शन रेखाओ के द्वारा करना। दूसरी, विशेषता प्राकृतिक दृश्यो के चित्र बनाना। यहा के चित्रकार प्रारम्भ म पशुओ के चित्र ही बनाते थे परन्तु बौद्ध धर्म के प्रचार के बाद वे मानव आकृतियो के चित्र भी बनाने लगे। *यहाँ पर मिट्टी के बर्तनो पर भी सुन्दर चित्र बनाये जाते थे।* हान वश के समय चित्रकला अपनी उन्नति की चरम सीमा पर थी। इस वश के प्रसिद्ध चित्रकार, कुनाई, दोगवी, लिन्सी और हू गता आजू थे, जिन्होने लगभग 40,000 सुन्दर चित्रों का निर्माण किया। प्रसिद्ध चित्रकार कुनाई ने एक शृगार दान के ढक्कन पर एक पक्षी का सुन्दर चित्र बनाया था, जो उस समय की चित्रकला का सुन्दर नमूना है।

(iv) सगीत कला—चीन ने सगीतकला के क्षेत्र मे भी विशेष उन्नति की। चीनियो का यह मानना था कि सगीत ही जीवन है। सगीत को वे मानसिक तनाव से मुक्ति का साधन मानते थे। यद्यपि चीन मे 5000 वर्ष पूर्व सगीत का आविष्कार हो चुका था परन्तु प्रारम्भ मे दर्शन शास्त्र के आधार पर सगीत बनाते थे। *कुछ समय पश्चात् उन्होने उच्च कोटि के संगीतों की रचना की।*

7. भाषा, शिक्षा और साहित्य—चीनी मत के अनुसार उनकी भाषा ईश्वर प्रदत्त है। इसमे 40000 चिन्ह है लेकिन उनमें से 4, 000 चिन्ह ही काम मे आते है। प्रत्येक विचार को व्यक्त करने के लिये एक चिन्ह था। चीन की लिपि चित्रात्मक थी। इस लिपि मे 40, 000 चिन्ह होने के कारण उसको याद करना बहुत कठिन था। इसलिये वहा शिक्षा का विकास नही हो सका और अधिकाश जनता अशिक्षित रही। चीन में अधिकाश साहित्य पद्य मे लिखा गया है। यहा के कवि सुन्दर कविताओ की रचना करते थे लेकिन श्रेष्ठ कविता वही समझी जाती थी जो कम से कम शब्दो मे अधिक से अधिक भावो की अभिव्यक्ति कर सके। *कन्फ्यूशियस का कवित्व संग्रह काव्य कला की दृष्टि से अद्वितीय* है। उसकी रचनायें चीन के साहित्य म महत्वपूर्ण स्थान रखती है। उसने अपनी पुस्तक" शी किग मे 305 गीत लिखे है। उस समय चीन का एक और प्रसिद्ध कवि ताई ली पो था, जिसने 30 ग्रन्थ लिखे। उसने अपनी पुस्तक ' तू—फू" मे करुणा भरे गीत लिखे। चीन मे गद्य साहित्य में लेख और कहानियां लिखी जाती थी। मगोलो के आक्रमण के समय चीन म गद्य साहित्य के क्षेत्र मे बहुत उन्नति हुई।

8 विज्ञान—चीन ने गणित, ज्यामिति, ज्योतिष शास्त्र और चिकित्सा विज्ञान के क्षेत्र में बहुत प्रगति कर ली थी। चीनी लोगों ने सूर्यग्रहण और चन्द्र ग्रहण का अध्ययन कर लिया था। उन्होंने एक पचांग भी बनाया। घूपघडी से वे समय का पता लगाते थे। ज्योतिष विद्या के आधार पर वह भूकम्प का पता लगा लेते थे। चीन ने कुतुबनुमा का भी आविष्कार किया। जिससे नाविक रात्रि के समय दिशा का पता लगा सकते थे। विश्व में सर्व प्रथम चीन ने ही बारूद का आविष्कार किया। चीन ने अच्छे किस्म के कागज का आविष्कार किया। छापेखाने में भी सबसे आगे था। ग्नेट व जीन का कहना है कि "चीन की वैज्ञानिक प्रगति पहले तो तेज रही किन्तु बाद में मंद पड़ गई। यूरोपियनों से पांच शताब्दी पहले वे पुस्तकें छापा करते थे। वे जिस कागज पर अपनी पुस्तकें छापा करते थे। वह संसार का सर्वप्रथम वास्तविक कागज था। व्यक्ति की पहचान के लिये अंगुलियों के छाप के महत्व को समझने वाले सर्वप्रथम लोग भी वे ही थे।" [1] चीन में चिकित्सा विज्ञान के क्षेत्र में भी बहुत अधिक विकास हुआ। चाऊ वंश के समय चिकित्सा पर" चिकित्सा के सिद्धान्त नामक पुस्तक लिखी गई। जिसमें बीमारियों के नाम और उनको दूर करने वाली औषधियों का वर्णन किया गया था। दूसरी शताब्दी में चीन के प्रसिद्ध चिकित्सा चांग चुग ने टाइफाइड बुखार की औषधि का आविष्कार किया। इतना सब कुछ होते हुए भी चीनी लोग अंध विश्वासी थे इसलिये वे बीमारियों का इलाज जादू टोने से ही करते थे।

सभ्यता की समीक्षा—प्राचीन काल में चीन एक सभ्य तथा सुसंस्कृत देश माना जाता था। इसकी सभ्यता का विकास धीरे धीरे हुआ। यहां के लोग विश्व बन्धुत्व के सिद्धान्त में विश्वास करते थे। चीन ने सारे संसार के मनुष्यों को शांति पूर्ण ढंग से जीवन व्यतीत करने का उपदेश दिया। यहां के लोग युद्ध से घृणा करते थे। और सेनापति को अपराधी समझते थे। उनका यह कहना था कि आज तक ऐसा कोई युद्ध नहीं हुआ जिसके परिणाम अच्छे रहे हों। प्रोफेसर डेविस का कहना है कि "चीनी सभ्यता सबसे सुनिश्चित रूप से शांति के लिये संगठित है और चीन ही केवल एक ऐसा देश है जहां सैनिक होना अपमानजनक समझा जाता है। आज के वातावरण में चीन के इस शान्तिपूर्ण दर्शन का विशेष महत्व है।" चीन में विद्वानों और अध्यापकों का बहुत आदर होता था। एच० जी० वेल्स ने लिखा है कि "आक्रमणकारी और राजवंश आए और चले गए लेकिन चीनी सभ्यता का जीवन क्रम अभी भी अपरिवर्तित रूप से मौजूद है।"

चीन के शासकों की एक महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि उन्होंने दूसरे धर्मों के प्रति भी सहिष्णुता की नीति अपनाई। चीन की सभ्यता का प्रभाव कोरिया, मंगोलिया, मन्चूरिया तिब्बत और इण्डोचाइना आदि देशों पर भी पड़ा। बी० एन० राय का कहना है कि" कलाओं, साहित्य और दर्शन में

के पास जो कुछ भी है लगभग वह सम्पूर्णत प्रत्यक्ष रूप से चीनी प्रतिभा की ऊपज है।"

चीन की विश्व सभ्यता का देन–

चीन ने निम्न आठ महत्वपूर्ण चीजें ससार को दी है जिसके लिये ससार हमेशा उसका ऋणी रहेगा—

1. चीन ने अच्छे किस्म के कागज का आविष्कार किया।
2. चीन ने चाय का आविष्कार किया।
3. चीन ने ताश के पत्तो का आविष्कार किया।
4. छापे खाने मे चीन सबसे आगे था।
5. सर्व प्रथम रेशम के वस्त्रो का निर्माण किया।
6. चीन ने कुतुबनुमा का आविष्कार किया। जिसमे भौगोलिक खोजे संभव हो सकी।
7. चीन ने बारूद का आविष्कार किया।
8. प्रतियोगिता परीक्षा चीन की देन है।

प्रस्तावित सन्दर्भ पुस्तकें

1 प्लेट व जीन—विश्व का इतिहास
2. एलिस व जौन—ससार का इतिहास
3. सेवाइन—ए हिस्ट्री आफ वर्ल्ड सिवर्लीजेशन्स

अध्याय 6

वृत्ति

यूनान की प्राचीन सभ्यता

प्राचीन काल में यूनान में जिस सभ्यता का विकास हुआ, उसके कई तत्व रोम निवासियों ने अपनाए। रोम की सभ्यता ने मध्यकालीन युग की पाश्चात्य सभ्यता को बहुत प्रभावित किया। इस प्रकार यूनान की सभ्यता का रोम के द्वारा पाश्चात्य देशों में प्रचार हुआ। इसलिये यह कहा जाता है कि पाश्चात्य देश जितने यूनानी सभ्यता के ऋणी हैं उतने अन्य किसी सभ्यता के नहीं। अंग्रेजी भाषा के प्रसिद्ध कवि शैली ने लिखा है कि "हम सभी यूनानी हैं, हमारे कानून, हमारा साहित्य, हमारा धर्म, हमारी कलाएं इन सबका मूल यूनान में है।" विल ड्यूरेन्ट का भी कहना है कि "मशीनों के अतिरिक्त हमारी संस्कृति का कदाचित ही कोई ऐसा लौकिक तत्व हो, जिसका उद्भव यूनान में न हुआ हो। हमारी संस्कृति में ऐसी कोई वस्तु नहीं जिसकी प्रेरणा यूनान से न मिली हो।" एलिस व जौन ने लिखा है कि "संसार ग्रीकों का ऋणी है।"[1] रोमन सभ्यता का विकास के मार्ग पर प्रकाश डालते हुए स्लेट व जौन ने लिखा है कि "सभ्यता यूनान के रास्ते यूरोप पहुंची।"[2]

यूरोप के दक्षिण पूर्व में, बाल्कन प्रदेश के दक्षिण में और एशिया माइनर के पश्चिम में भूमध्य सागर में दूर दूर फैले हुए टापुओं वाला जो देश है, उसे यूनान कहा जाता है। इस देश का क्षेत्रफल 25,000 वर्गमील था। यूनान के एथेन्स नगर के उत्तर में पिड्स पहाड़ में सोना चांदी और संगमरमर बहुत निकलता है। इस देश में 502 टापू हैं, जिसमें से क्रीट, साइप्रस, ट्राय और स्पार्टा आदि मुख्य हैं। इस सभ्यता के उदय का समय ईसा से 1500 वर्ष पूर्व माना जाता है। यूनान में आर्य जाति के लोगों ने विकसित सभ्यता को जन्म दिया। आर्य जाति की एकियन शाखा और डोरियन शाखा ने यूनान में प्रवेश किया। एकियन जाति ने एथेन्स की सभ्यता का विकास किया और डोरियन जाति ने स्पार्टा की सभ्यता का विकास किया। इन दोनों सभ्यता के समन्वय

---

1 एलिस व जौन—संसार का इतिहास पृष्ठ 94

2. स्लेट व जौन—विश्व का इतिहास पृष्ठ 84

से एक नई सभ्यता का विकास हुआ। जो" इयोनियन सभ्यता " के नाम से प्रसिद्ध है। आर्यों ने यूनान का नाम हेलास पहाड़ के नाम पर "हेलास" रखा। पेरिक्लीज ने इसका नाम यूनान रखा और 145 ई० म रोमन लोगों ने यूनान पर अधिकार करने के पश्चात् इसका नाम " ग्रीस " रख दिया।

यूनान का राजनैतिक इतिहास—

प्राचीन काल में यूनान के क्रीट नामक द्वीप का समस्त यूनान पर अधिकार रहा। ईसा से 1400 वर्ष पूर्व आर्यों की एकियन शाखा ने क्रीट के राजा को परास्त कर यूनान पर अधिकार कर लिया और इसी जाति ने एथेन्स नगर बसाया। इसके पश्चात् यूनान की सभ्यता का निरन्तर विकास होता रहा। यूनान के राजनैतिक इतिहास को अध्ययन की सुविधा के लिये तीन भागो मे बांटा जा सकता है :—

1 अधकार या होमर का युग
2 यूनान के प्रमुख नगर राज्य
3 हेलेनिस्टिक सभ्यता 323 ई० पूर्व से 146 ई० पूर्व

1. होमर युग—

ईसा से 1000 वर्ष पूर्व यूनानियो की सभ्यता का वर्णन प्रसिद्ध यूनानी कवि होमर के दो महा काव्यो मे मिलता है। जिनके नाम है इलियड और ओडसी। इसीलिये इस युग को होमर युग भी कहा जाता है। को होमर ने अपने महाकाव्यो म जन साधारण की दशा पर प्रकाश डालने की अपेक्षा उस समय के राजाओ के युद्धो पर अधिक प्रकाश डाला है। होमर अधा था, वह इयोनिया का रहने वाला था। उसने "इलियड" महाकाव्य मे ट्राय के घेरे का वर्णन किया है और "ओडेसी" महाकाव्य मे यूनानी सेनापति ओडेसियस को ट्राय विजय यात्रा से लौटने का वर्णन किया है।

1. इलियड में ट्राय के घेरे का वर्णन—

उस समय ट्राय और स्पार्टा के बीच आये दिन सघर्ष होता रहता था। इस आपसी वैमनस्य को समाप्त करने के लिये ट्राय के राजा का लडका पेरिस, स्पार्टा के शासक मैन्यूलस के दरबार मे आया। पेरिस स्पार्टा के शासक मैन्यूलस की पत्नी हेलन पर मोहित हो गया और हेलन भी उस पर मोहित हो गई। रात को वह हेलन को लेकर ट्राय भाग गया। जब मैन्यूलस को इस बात का पता चला तो वह बहुत क्रोधित हुआ, क्योंकि पेरिस के व्यवहार से यूनान की प्रतिष्ठा को बडा धक्का पहुचा था। मैन्यूलस ने इस अपमान का बदला लेने का निश्चय किया। उसने अपने सेनापति ओडेसियस को ट्राय पर आक्रमण करने के लिये भेजा। ओडेसियस ने ट्राय पर आक्रमण कर दिया। उसने दस वर्ष तक ट्राय को घेरे रखा, लेकिन उसको कोई विशेष सफलता नहीं मिली।

इस संघर्ष में ट्राय का सेनापति हेक्टर मृत्यु को प्राप्त हुआ, लेकिन पेरिस ने हिम्मत नहीं हारी और ट्राय के द्वार नहीं खोले। इस पर ओडेसियस ने चालाकी से ट्राय को जीतने के लिये एक नई योजना बनाई। उसके अनुसार एक बहुत बडा लकडी का घोडा तैयार किया गया और उसके पेट में यूनानी सैनिक छिपा दिये गये।

एक रात्रि को यूनानी सैनिकों ने लकडी का घोडा युद्ध के मैदान में छोडकर वापस लौट जाने का प्रदर्शन किया। यूनानी सैनिक वहा से रवाना होकर थोडी दूर पहाडियों के पीछे छिप गए। सैनिकों के जाने के पश्चात ट्राय निवासियों ने ट्राय के द्वार खोल दिये और युद्ध के मैदान में लकडी के घोडे को यूनानियों द्वारा दिया गया विजय का पुरस्कार समझ कर उसे नगर के अन्दर ले आए। रात्रि को ट्राय के द्वार बन्द कर दिये गए। विजय की खुशी में ट्राय के सैनिक शराब पीकर अपना मनोरंजन करते रहे और फिर सो गये। होमर के अनुसार लकडी के घोडे में बैठे हुए यूनानी सैनिकों ने रात्रि को ट्राय के द्वार खोल दिये। अब तक यूनानी सेना वापस ट्राय लौट आई थी। रात्रि के अंधेरे में यूनानी सैनिकों ने सोये हुऐ ट्राय वासियों पर अचानक आक्रमण कर दिया। ट्रायवासियों को संभलने का मौका नही मिला, और यूनानियों ने बहुत से ट्रायवासियों को मौत के घाट उतार दिया। पेरिस युद्ध करता हुआ मारा गया और हेलन को यूनानी सैनिकों ने अपने अधिकार में ले लिया। यूनानी सैनिकों ने बदले की भावना से प्रेरित होकर ट्राय को लूटा और जला कर राख कर दिया। इस विजय के पश्चात् यूनानी सैनिकों ने ट्राय के आस पास के प्रदेशों पर अधिकार कर वहा अपने उपनिवेश स्थापित कर दिये। इस प्रकार दस वर्ष के संघर्ष के बाद हेलन को जबरदस्ती स्पार्टा वापस लाया गया।

2 ओडेसी—होमर का दूसरा महाकाव्य "ओडेसी" है। यूनानी सेनापति ओडेसियस ने ट्राय पर विजय प्राप्त की थी। अत उसके नाम पर होमर ने अपने दूसरे महाकाव्य का नाम 'ओडेसी' रखा। इस महाकाव्य में ट्राय विजय करने के बाद ओडेसियस की वापसी यात्रा का वर्णन है। यूनानी इस वीर गाथा को बहुत महत्व देते हैं। डब्ल्यू एन० वीच का कहना है कि" युद्ध के लगभग तीन शताब्दी बाद होमर नामक एक असाधारण प्रतिभा के कवि ने इन गाथाओं से दो महाकाव्यों की रचना की, जो कि आज भी संसार की श्रेष्ठ कविताओं में गिनी जाती है और सम्मान से पढी जाती हैं।"[1]

इन महाकाव्यों से यूनानियों के उस समय के रहन सहन और जनजीवन के बारे में जानकारी प्राप्त होती है। इसके अतिरिक्त यूनान के उपनिवेशों

1 वीच, डब्ल्यू० एन०हिस्ट्री आफ दि वर्ल्ड, पृष्ठ 100-101

के बारे में भी इस महाकाव्य से पता चलता है। कुछ इतिहासकार होमर युग को वीर गाथा काल के नाम से पुकारते हैं।

होमर युग की सभ्यता का वर्णन—

1. शासन व्यवस्था—इस युग में यूनान के नगर राज्यों में राजा दैविक सिद्धान्त के अनुसार प्रजा पर शासन करते थे। राजा की सहायता के लिये सरदारों की एक समिति होती थी। जो उसकी शक्ति पर नियन्त्रण रखती थी। कभी-कभी राजा अपनी नीति का समर्थन प्राप्त करने के लिये जन साधारण की सभा बुलाता था।

2. आर्थिक व्यवस्था—इस युग में यूनानियों का मुख्य व्यवसाय कृषि तथा पशु पालन था। यहाँ की मुख्य पैदावार गेहूँ, जौ एवं बाजरा आदि थी। यहा के लोग गाय, भेड, बैल तथा कुत्ता आदि जानवरों को पालते थे। इस काल की स्त्रियाँ वस्त्र भी बुनती थी। होमर युग में सिक्कों का प्रचलन नहीं था, इसलिये यहा के व्यापारी तांबे, चांदी या सोने के टुकडों या बैलों के द्वारा वस्तुओं का मूल्य निश्चित करते थे।

3. सामाजिक जीवन—इस युग का समाज छोटे-छोटे कबीलों पर, मे विभाजित था। प्रत्येक व्यक्ति को कबीले के नियमों का पालन करना पडता था। इस समय माता पिता का बहुत आदर किया जाता था। स्त्रियों को भी समाज में सम्मानपूर्ण स्थान प्राप्त था।

4 धार्मिक जीवन—यूनानी लोग बहुदेववादी थे और प्रकृति की शक्ति को देवता समझ कर उनकी पूजा करते थे। यहा के मुख्य देवता जीयस (बिजली तथा तूफान का देवता) (पोसीडोन) (समुद्र का डिमिटर) (उपज का) (हेस्टिया) (गृह का), (हेडस) (मृतकों का), (जियस का पुत्र एरिस) (युद्ध का) (अपोलो) (प्रकाश का) (हिप्पास्टस) (अग्नि का) (डायोनियस) (फल के बागों का) (जियस पुत्री एथेन) (कला की देवी,) (एफरोडिट) (प्रेमी की देवी) आदि थे। यहा के लोग अपने व्यक्तिगत स्वार्थों की पूर्ति के लिये इनकी पूजा करते थे। परलोक के विषय में इनके विचार अस्पष्ट थे। ये लोग भूत-प्रेत में विश्वास रखते थे।

5. यूनान के प्रमुख नगर राज्य—यूनान में छठी शताब्दी के आस पास अनेक स्वतन्त्र नगर राज्यों की स्थापना हुई थी। उनमें से स्पार्टा और एथेन्स के नगर राज्य प्रमुख थे। सेवाइन ने लिखा है कि नगर राज्य प्राचीन सर्वोच्च यूनान की उत्कृष्ट राजनीतिक प्राप्ति है।"[1] अब हम पहले स्पार्टा नगर के राज्य का अध्ययन करेंगे।

1. स्पार्टा—

यूनान के दक्षिण मे स्पार्टा नगर राज्य का विकास हुआ। यहा की भूमि बहुत उपजाऊ थी। आर्य जाति की डोरियन शाखा ने स्पार्टा पर अधिकार कर लिया और यहा के लोगो को गुलाम बना लिया, जो उनके लिये खेतों मे काम करते थे। स्पार्टा की सुरक्षा के लिये नगर के चारो तरफ एक दीवार का निर्माण किया गया। यहा के लोग लौह शस्त्रो से सुसज्जित होकर अपने नगर की रक्षा के लिये सदैव तैयार रहते थे।

1. स्पार्टा की शासन व्यवस्था—स्पार्टा मे निरकुश राजतन्त्रात्मक शासन व्यवस्था विद्यमान थी। यहा के सैनिकों की वीरता की धाक सारे ससार मे जमी हुई थी। स्पार्टा के सविधान का निर्माण लाइकर्गस नामक व्यक्ति ने किया। सविधान मे अनुशासन, स्वास्थ्य और सैनिक शिक्षा पर अधिक जोर दिया गया था। इस नगर मे दो राजा शासन करते थे। सविधान मे दो शासकों की व्यवस्था के पीछे मुख्य उद्देश्य यह था कि एक राजा दूसरे राजा की निरकुशता पर अंकुश रख सकें। दोनो ही शासक सीनेट (गेरूसिया) की सहायता से शासन चलाते थे और इसके प्रति उत्तरदायी होते थे। सीनेट की अनुमति के बिना दोनो ही शासक किसी भी शक्ति से युद्ध या सधि नही कर सकते थे। इसके अतिरिक्त शासकों की सहायता के लिये पाचों सदस्यों की एक सस्था थी जिसे "एफेरो" कहा जाता था। इसके पाचो सदस्यों का चुनाव प्रति वर्ष होता था। अपोलो नामक एक अन्य सस्था और थी। जिसके सदस्यो की सख्या 800 थी। इसका सदस्य तीस वर्ष की आयु से ऊपर वाला व्यक्ति ही बन सकता था। इस सस्था के सदस्यों के द्वारा ही गेरूसिया और एफेरो के सदस्यो का चुनाव किया जाता था। कालान्तर मे सम्पूर्ण शासन व्यवस्था पर एफेरो के सदस्यों का प्रभुत्व स्थापित हो गया।

2. सामाजिक व्यवस्था

(i) **समाज का विभाजन**—स्पार्टा का समाज तीन वर्गों मे विभाजित था। पहला, उच्च वर्ग, दूसरा मध्यम वर्ग और तीसरा, निम्न वर्ग था। पहले उच्च वर्ग मे शासक, कुलीन वश के व्यक्ति और स्पार्टा के स्वतन्त्र नागरिक आते थे, जिनका प्रशासन व्यवस्था पर पूरा नियन्त्रण था। दूसरे, मध्यम वर्ग मे स्पार्टा नगर के आस पास के 100 गावो के निवासी आते थे जिनको पेरि-आईसी कहा जाता था। इस वर्ग के लोगो को स्पार्टा मे व्यापारिक सुविधायें प्राप्त थी। इसके बदले मे उन्हे स्पार्टा की सीमा की रक्षा करने के लिये अपना सहयोग देना पड़ता था। तीसरा, निम्न वर्ग था जिसमे गुलाम आते थे जिनको हेलोट कहा जाता था। स्पार्टा के लोग युद्ध मे पराजित लोगो को गुलाम बनाकर उनसे खेती करवाते थे। ये लोग स्पार्टा की सीमा के बाहर नही जा सकते थे।

गुलामो की दशा बहुत शोचनीय थी, क्योंकि उनके स्वामी उन पर बहुत अधिक अत्याचार करते थे। यदि कोई गुलाम स्वतन्त्र होने का प्रयास करता तो उसे मार दिया जाता था। मैक्नेल बर्नस ने लिखा है कि "नागरिक वर्ग की निरकुंश सता के लिये लोह अनुशासन और कठोर नियन्त्रण आवश्यक था और उनकी दूसरो के प्रति घृणा ने उन्हें युद्ध मे व्यस्त रख मिटा दिया।" [1]

(ii) स्त्रियों की दशा—स्पार्टा मे स्त्रियो की दशा बहुत अच्छी थी। उन्हें पुरुषो के समान राजनीतिक और सामाजिक अधिकार प्राप्त थे। उन्हें निजी धन इकट्ठा करने और उसका उत्तराधिकारी नियुक्त करने का अधिकार था। यहां की स्त्रिया धार्मिक उत्सवो मे भाग ले सकती थी और सार्वजनिक समस्याओ पर अपने विचार व्यक्त कर सकती थी।

(iii) विवाह—यहा के लोग केवल सन्तानोत्पत्ति के लिये ही विवाह करते थे। प्रेम करने वालो के लिये यहा के समाज मे कोई स्थान नही था। विवाह के लिये लडके की आयु 30 वर्ष और लडकी की आयु 20 वर्ष थी। समाज में कवारो की आलोचना की जाती थी। स्पार्टा मे पति पत्नी दिन म नही मिल सकते थे, वे केवल रात्री म ही थोडे से समय के लिये एक दूसरे से मिल लेत थे। यहा की कोई भी स्त्री बलिष्ठ पुत्र को प्राप्त करने के लिये किसी भी बलवान पुरुष से गर्भाधान करवा सकती थी, लेकिन ऐसा करने के लिये उसे अपने पति से स्वीकृति लेनी पडती थी। यहा की स्त्रिया अपने भय को दूर करने के लिये विशेष अवसरो पर नग्न होकर सार्वजनिक समाओ और व्यायामशालाओ म जाती थी। यहा यदि उन्हें कोई भी व्यक्ति खराब निगाह से देखता था तो उसकी बुरी दशा की जाती थी।

(iv) समाज—स्पार्टा का समाज एक सैनिक शिविर की भांति था। जिसमे सैनिको को बहुत ऊचा स्थान प्राप्त था। वीर सैनिको का समाज मे बहुत आदर किया जाता था। यहां के लोग युद्ध कला के उपासक थे और सैनिकवाद म विश्वास रखते थे। अत स्पार्टा मे बच्चो के स्वास्थ्य पर सबसे अधिक ध्यान दिया जाता था। प्लेट व जीन ने लिखा है कि स्पार्टा के सैनिक उनके सिर पर जीते थे, जो काम करते थे।" [2] यहा के समाज म परिवार का मुखिया पिता होता था। परिवार के सभी सदस्य मुखिया की आज्ञा का पालन करते थे। स्पार्टा मे उन्ही नवजात शिशुओ को जीवित रहने का अधिकार था, जिनका स्वास्थ्य काफी अच्छा होता था यदि कोई नवजात शिशु कमजोर होता तो उसे पहाड स नीचे फेंक कर मार दिया जाता था। स्पार्टा की प्रत्येक माता

---

1. मैकनेल बर्नस—वैस्टर्न सिवलीजेशन्स पृष्ठ 132
2 प्लेट व जीन—विश्व का इतिहास पृष्ठ 89

अपने बच्चे को यह शिक्षा देती थी कि "अपनी ढाल के साथ लौटाना या उस पर लौटना"। इसका अर्थ यह था या तो युद्ध में विजय प्राप्त करके घर आना या फिर युद्ध के मैदान में ही शहीद हो जाना। युद्ध में जो व्यक्ति मर जाते थे तो उनकी माताओं को फूल की मालायें पहनाकर सम्मानित किया जाता था, और जो व्यक्ति पराजित होकर घर आ जाता था उनके घर में मातम मनाया जाता था।

3. शिक्षा—

स्पार्टा में यदि कोई भी लडका सात वर्ष का हो जाता तो उसे सरकार ले लेती थी और 12 वर्ष तक उसे सैनिक शिक्षा दी जाती थी। उनकी सैनिक शिक्षा बहुत कठोर थी। शीतकाल में उनको नंगे पाँव चलना पडता था। उनकी शिक्षा के प्रमुख विषय कुश्ती, बाक्सिंग, जिम्नास्टिक, लम्बी दौड तथा अस्त्र-शस्त्र संचालन में निपुणता आदि थे। स्पार्टा में लडकियों को भी लम्बी दौड और जिम्नास्टिक की शिक्षा दी जाती थी, ताकि स्त्रियाँ शारीरिक दृष्टि से बलिष्ठ होकर बलिष्ठ सन्तान पैदा कर सकें। डब्ल्यू एन० बीच का कहना है कि "नारी को शिक्षा दी जाती थी कि उसका एक मात्र उद्देश्य स्पार्टियन रक्त के बहादुर सैनिकों को जन्म देना है अन्य यूनानी महिलाओं से भिन्न वह कठोर शारीरिक प्रशिक्षण पाती थी, ताकि शक्तिशाली माँ बन सकें।"[1]

4. आर्थिक व्यवस्था—

स्पार्टा की आर्थिक व्यवस्था ज्यादा अच्छी नहीं थी। यहाँ पर उद्योग धंधों का भी विकास नहीं हुआ। स्पार्टा के लोग विदेशी सम्पर्क को महत्व नहीं देते थे, इसलिये इनका व्यापार भी प्रगति नहीं कर सका। यहाँ के शासकों ने धन संग्रह पर रोक लगाने की दृष्टि से लोहे की मुद्रा का प्रचलन किया।

5. साहित्य और कला कौशल —

स्पार्टा साहित्य और कला कौशल के क्षेत्र में प्रगति नहीं कर सका। स्पार्टा का समाज एक सैनिक शिविर था, जिसका मुख्य उद्देश्य साहसी सैनिकों को तैयार करना था। यहाँ के सैनिक सिर्फ युद्ध करना जानते थे अन्य कोई काम उन्हें नहीं आता था। इसका परिणाम यह हुआ कि उन्होंने युद्ध में तो अपना नाम कमाया, लेकिन कला, साहित्य और विज्ञान के क्षेत्र में कुछ प्रगति नहीं कर सके और उनकी सभ्यता के विकास का मार्ग अवरुद्ध हो गया। पतन से पूर्व स्पार्टा के शासक लियोनीडास ने थर्मोपोली के युद्ध में अद्भुत वीरता का प्रदर्शन कर यूनान की प्रतिष्ठा में वृद्धि की। इसके पश्चात् स्पार्टा ने एथेन्स की साम्रा-

1 बीच, डब्ल्यू०एन०—हिस्ट्री आफ दि वर्ल्ड, पृष्ठ 109

त्र्यवादी नीति पर अंकुश लगाने का प्रयास किया। इसी उद्देश्य से दक्षिणी के यूनानी राज्यो की स्वतन्त्रता को बनाये रखने के लिये उसने "फेलोपोनेशियन" संघ का निर्माण कर उसका नेतृत्व किया। इस प्रकार एथेन्स की बढती हुई शक्ति पर प्रतिबन्ध लगा दिया। छठी शताब्दी मे स्पार्टा का गौरव समाप्त हो गया और उसके स्थान पर यूनान मे एथेन्स का प्रभाव बढ गया।

2. एथेन्स—

यूनान का दूसरा प्रमुख नगर राज्य एथेन्स था। यूनान मे प्रत्येक नगर राज्य का एक न एक ईष्ट देवता अवश्य होता था। एथेन्स की ईष्ट देवी एथिना थी। इसका मन्दिर निक्स नामक स्थान पर बना हुआ था। इसी देवी के नाम पर इस नगर का नाम एथेन्स पडा। यह नगर एकापोलिस नामक दुर्ग के चारो तरफ बसा हुआ था। इस नगर की सुरक्षा के लिये चारो तरफ लकडी की दीवार का निर्माण करवाया। आर्यों की आयोनियन शाखा ने एथेन्स की सभ्यता का विकास किया। यूनान मे होमर युग के बाद कुलिन राजतन्त्र की स्थापना हुई और अत्याचारियो का युग आरम्भ हुआ।

1. अत्याचारियो का युग—

1000 ई० पूर्व से 461 ई० पूर्व कुलीन राजतत्र की स्थापना नवीं शताब्दी ईसा पूर्व तक कुलीन वर्ग के लोगो ने यूनान की राज सत्ता पर अधिकार कर लिया। इस प्रकार यहा कुलीन राजतत्र की स्थापना हुई। इसके पश्चात् राज्य के उच्च पदो पर कुलीन वर्ग के व्यक्ति ही नियुक्त किये जाने लगे। राज्यों का शासन प्रबन्ध आर्कन्स के हाथ मे था। प्रत्येक आर्कन्स दस वर्ष तक राज्य करता था। उसके बाद उच्च वर्ग के किसी अन्य व्यक्ति को आर्कन्स के पद पर दस वर्ष के लिये नियुक्त किया जाता था। यह व्यवस्था लगभग एक सौ वर्ष तक यूनान मे चलती रही।

अत्याचारियों का शासन—

इस समय के शासको ने अपनी प्रजा पर बहुत अत्याचार किये, इसलिये उनके शासनकाल को अत्याचारियो के शासनकाल के नाम से जाना जाता है। यद्यपि इस युग के शासक निरकुश थे तथापि प्रजा की भलाई करना वे अपना कर्त्तव्य समझते थे। इन शासको के शासनकाल मे यूनान में व्यापार कला व धर्म के क्षेत्र मे बहुत अधिक विकास हुआ। इतिहासकार बीच ने लिखा है कि "वे योग्य एव उत्साही व्यक्ति थे। जिन्होने व्यापार को प्रोत्साहन दिया और नगरो के सौन्दर्य व धन को बढाया। उन्होने प्रजा के कार्यों पर व्यय कर गरीबो को रोजी दी।"

इससे यह स्पष्ट है कि अत्याचारियो का शासन इतना खराब नहीं था। शासन को कुशल बनाने की दृष्टि से उन्होने कानून मे भी कुछ सुधार किये, परन्तु जनता फिर भी उनसे असन्तुष्ट थी।

अत्याचारी युग की सभ्यता का वर्णन

(i) शासन प्रबन्ध—

प्राचीन यूनान में छोटे-छोटे नगर राज्य थे। प्रत्येक नगर राज्य का एक संरक्षक देवता अवश्य होता था। इन नगर राज्यो मे अलग अलग शासन व्यवस्था होती थी। ये नगर राज्य आपस में युद्ध करते रहते थे, लेकिन जब फारस ने यूनान पर आक्रमण कर दिया तब इन राज्यों ने संयुक्त होकर एथेन्स के नेतृत्व मे फारस से युद्ध किया।

(ii) कला व विज्ञान का विकास—

इस युग मे कला व विज्ञान के क्षेत्र मे बहुत अधिक विकास हुआ। पाइथागोरस और थेलिज जैसे महापुरुष भी इसी काल में पैदा हुए। इस समय स्थापत्य कला का भी बहुत विकास हुआ। यूनान मे कई मन्दिरो का निर्माण हुआ। मूर्तिकला के क्षेत्र मे भी बहुत उन्नति हुई और कांसे व सगमरमर की अनेक मूर्तिया बनाई गई। कला, विज्ञान और दर्शन के विकास के कारण अत्याचारियों का युग यूनान की संस्कृति मे विशेष महत्व रखता है।

(iii) कानूनों में सुधार—

इस काल मे लिखित कानून बनाए गए। ड्रेको एव सोलन ने इन कानूनो म निम्नलिखित सुधार किए।

1. ड्रेको की विधि संहिता—एथेन्स मे 621 ई० म ड्रेको ने वहां के रीति रिवाजो को ध्यान मे रखते हुए कानूनो मे सशोधन करने का प्रयास किया। उसने सामन्तों के विशेष अधिकारो को समाप्त करने का प्रयास किया। इसके अलावा उनके अपराधो की जाच करने के लिये एक न्यायालय गठित किया। इसका परिणाम यह हुआ कि सामन्त ड्रेको से नाराज हो गये। इसलिये उसके द्वारा सशोधित कानूनो से जन साधारण को कोई लाभ नही हुआ और कानून पहले से अधिक कठोर हो गये।

1. सोलन के द्वारा कानून में सुधार—

सोलन 594 ई०पूर्व० मे आर्कन पद पर चुना गया। ड्रेको के पश्चात् उसने उस युग मे प्रचलित रीति रिवाजों को ध्यान मे रखते हुए लिखित कानूनो का निर्माण किया। उसने कानून में निम्नलिखित सुधार किए —

(i) कानून मे दासों की मुक्ति का प्रावधान रखा।

(ii) गरीबो का कर्ज माफ कर दिया।

(iii) शासन व्यवस्था चलाने के लिये 400 सदस्यो की एक समिति का निर्माण किया।

(iv) आर्थिक व्यवस्था को आधार बनाकर समाज को चार वर्गों में विभाजित किया।

(v) सोलन के सुधारों ने यूनान में प्रजातन्त्र की स्थापना में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

(vi) वैश्यावृति को कानूनी मान्यता दी।

(vii) युद्ध में मृतक सैनिकों के बच्चों की व्यवस्था राज्य की ओर से की जाने लगी।

(viii) व्यक्तियों के शारीरिक विकास के लिये राज्य की ओर से शारीरिक व्यायाम शालाओं की स्थापना की।

3. सुधारों का प्रभाव—

सोलन यूनान का एक महान सुधारक था। उसके सुधारों से समाज के सभी वर्ग पूर्ण रूप से सन्तुष्ट थे। उसके सुधारों ने यूनान में प्रजातन्त्र की स्थापना में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

4 यूनान में गणतन्त्र की स्थापना—

सोलन के सुधारों से जन साधारण को लाभ पहुंचा, क्योंकि उनको भी कुछ अधिकार दिये गए थे। प्रजापीड़क फिसिस ट्रेटस ने सोलन के सुधारों को समाप्त कर दिया। फिसिस ट्रेटस की मृत्यु 527 ई० पूर्व० में हो गई। उसकी मृत्यु के पश्चात उसके दोनों पुत्रों हिफियस और हिफर्कस में उत्तराधिकार के लिये युद्ध छिड़ गया। हिफियस यूनान छोड़कर चला गया। और हिपर्कस मौत के घाट उतार दिया गया। अतः अब सोलन का भतीजा क्लाइस्थेनिस 510 ई० पूर्व. में गद्दी पर बैठा।

क्लाइस्थेनिस के सुधार—यद्यपि क्लाइस्थेनिस कुलिन वंश का था परन्तु शासन व्यवस्था में इस वर्ग के व्यक्तियों को उच्च पद पर नियुक्त नहीं किया। उसने प्रजातान्त्रिक शासन प्रणाली को सुदृढ़ करने के लिये निम्नलिखित सुधार किये —

(i) उसने यूनान के समाज को दस श्रेणियों में विभाजित कर दिया।

(ii) सीनेट के सदस्यों की संख्या 500 निर्धारित की गई। प्रत्येक श्रेणी को 50 प्रतिनिधि भेजने का अधिकार दिया गया।

(iii) एटिका के दासों को स्वतन्त्र कर दिया गया।

(iv) चुनाव के माध्यम से सदस्यों को नियुक्त किया जाने लगा।

(v) साधारण सभा का अधिवेशन दस दिन में एक बार बुलाया जाता था।

(vi) यदि किसी भी अधिकारी के विरुद्ध 6 हजार नागरिक मतदान कर देते तो उसको राजकीय पद से हटा दिया जाता था।

(vii) असेम्बली की शक्ति में वृद्धि की गई। युद्ध की घोषणा करना और काउन्सिल द्वारा रखे गये कानून में संशोधन करने का अधिकार उसे प्राप्त हो गया।

(viii) प्रत्येक जाति क्रम से अपने सेनापति नियुक्त करती थी।

उपरोक्त सुधारों से यूनान में प्रजातन्त्र का विकास हुआ।

5 फारस-यूनान युद्ध— 1 मैराथान का युद्ध 490 ई पूर्व

फारस के शासक दारा ने 490 ई पूर्व में यूनान पर अधिकार करने के लिये ऐथेन्स नगर पर समुद्री आक्रमण किया। उस समय सभी यूनानी राज्यों ने ऐथेन्स के नेतृत्व में फारस की सेना का मुकाबला किया। फारस और यूनान की सेनाओं के बीच एटिकाराज्य के मैराथान के मैदान में इतिहास प्रसिद्ध युद्ध हुआ। युद्ध में यूनानी सेना का नेतृत्व मिल्टीडास कर रहा था। मैराथान के युद्ध में यूनान के 1000 सैनिक तथा फारस के 6400 सैनिक मारे गये। यूनान की शानदार विजय हुई और फारस का सम्राट दारा युद्ध में पराजित हुआ। मैराथान युद्ध के कारणों और परिणामों का वर्णन पीछे कर दिया गया है।

2 थर्मोपोली का युद्ध 480 ई पूर्व—

480 ई० पूर्व० फारस के शासक दारा की मृत्यु के पश्चात् उसके पुत्र जरक्सीज ने 480 ई० पूर्व० में यूनान पर आक्रमण किया। यूनान ने स्पार्टा के शासक लियोनीडास के नेतृत्व में सामना किया। दोनों सेनाओं के बीच थर्मोपोली नामक स्थान पर युद्ध हुआ। इस युद्ध में यूनानी सेनापति लियोनी-डास अपने साथियों के साथ मारा गया। इस युद्ध में यूनानियों की पराजय हुई और फारस की शानदार विजय हुई।

3 सेलेमिस का युद्ध—इसके पश्चात् जरक्सीज ने यूनान पर फिर आक्रमण किया। यूनानियों ने थेमीस्टोक्लीज के नेतृत्व में फारस का सामना किया। दोनों सेनाओं के सेलेमिस टापू पर युद्ध हुआ। इस युद्ध में यूनानियों ने फारस के जहाजी बेड़े को नष्ट कर दिया और जरक्सीज अपने प्राण बचाकर भाग गया। सेलेमिस के युद्ध में फारस की पराजय हुई और यूनानियों की शानदार विजय हुई।

4 प्लेटिया का युद्ध (479 ई० पूर्व०—

अन्तिम युद्ध फारस और यूनान की सेना के बीच 479 ई० पूर्व० में प्लेटिया के मैदान में हुआ। फारस का सेनानायक मार्डोनियस इस युद्ध में मारा गया। यूनानी सैनिकों ने फारस के अधिकांश सैनिकों को मौत के घाट उतार दिया। यह युद्ध एक निर्णायक युद्ध सिद्ध हुआ। इसमें यूनान की शानदार

विजय हुई और फारस की सेना ने फिर कभी यूनान पर आक्रमण करने का साहस नहीं किया।

युद्ध के पश्चात् यूनान की स्थिति

फारस से युद्ध करते समय यूनान को काफी कठिनाईयों का सामना करना पड़ा, परन्तु इस युद्ध के परिणाम यूनान के लिये काफी लाभदायक सिद्ध हुए। यूनान ने प्लेटिया के युद्ध मे फारस की सेना को पराजित करने के पश्चात् एशियाई कोचक पर अधिकार कर लिया इसके पश्चात् एथेन्स यूनान का नेता बन गया और उसके शासक थेमोस्टोक्लीज ने साम्राज्य वादी नीति अपनाई।

डेलियन संघ का निर्माण और उद्देश्य

फारस को युद्ध मे पराजित करने के पश्चात् एथेन्स के शासक थेमिस्टाक्लीज ने 477 ई पूर्व मे एथेन्स, एजियन समुद्र के मारोनिस द्वीप और एशिया माइनर के तटो के पास के यूनानी द्वीपो को मिलाकर एक सघ की स्थापना की, जिसे डेलियन सघ कहा जाता था। इस सघ का कोष अपोलो मन्दिर मे रखा गया तथा इसकी बैठकें डेलोस द्वीप मे बुलाई जाती थी।

डेलियन सघ का निर्माता थेमिस्टोक्लीज था। इसलिये एथेन्स यूनान का नेता बन गया। उसने साम्राज्यवादी नीति अपनाई। इस सघ का मुख्य उद्देश्य फारस के आक्रमण से उसके सदस्यों की रक्षा करना था, लेकिन थेमिस्टोक्लीज इस सघ के माध्यम से स्पार्टा को युद्ध मे पराजित कर एथेन्स के साम्राज्य का विस्तार करना चाहता था। सीमोन नामक नाविक सेनापति स्पार्टा से मित्रता रखना चाहता था, इसलिये उसने थेमिस्टोक्लीज की नीति का विरोध किया। एथेन्स की सभा ने सीमोन की नीति पर अपनी स्वीकृति प्रदान की और थेमिस्टोक्लीज को उसके पद से हटा दिया। सीमोन एथेन्स का शासक बना। उसने स्पार्टा के साथ मित्रतापूर्ण सम्बन्ध रखे - 461 ई पूर्व मे स्पार्टा के नागरिको ने विद्रोह किया और सीमोन उस विद्रोह को दबाने मे असफल रहा। एथेन्सवासी स्पार्टा को विद्रोह के लिये सजा देना चाहते थे। इसलिये एथेन्स की एसेम्बली ने सीमोन को राज्य से निर्वासित कर दिया। उसके स्थान पर जनतान्त्रिक दल के नेता पेरिक्लीज को यूनान के आर्कन पद पर नियुक्त किया।

पेरिक्लीज का काल–(461–430 ई पूर्व)—

एथेन्स के आर्कन पद पर निर्वाचित होने के बाद पेरिक्लीज ने समस्त यूनान पर अपना प्रभाव स्थापित कर लिया। उसके शासन काल मे यूनान ने प्रत्येक क्षेत्र मे आश्चर्य जनक प्रगति की। उसका शासन काल एक युग बन गया

यूनान के इतिहास में पेरिक्लीज युग के नाम से प्रसिद्ध है। एथेन्स के सर्वांगीण विकास के कारण पेरिक्लीज का शासन काल यूनान का स्वर्ण काल भी कहा जाता है।

पेरिक्लीज का प्रारम्भिक जीवन—पेरिक्लीज 490 ई० पूर्व० में एक कुलीन परिवार में पैदा हुआ था। इसके पिता का नाम जेन्थिपस था। उसकी माता एथेन्स के शासक क्लाईस्थेनीज की पौत्री थी। पेरिक्लीज ने उस युग के प्रसिद्ध विद्वानों से शिक्षा प्राप्त की। प्रसिद्ध संगीतकार डेमन ने उसे संगीत की तथा पाइथोक्लिडियस ने उसे साहित्य की शिक्षा दी। डा. गोयल ने लिखा है कि "उसके व्यक्तित्व में कुलीनता शौर्य तथा तत्कालीन यूनानी संस्कृति के सर्वोत्तम तत्वों का अद्भुत समन्वय हो गया था। वह अत्यन्त गंभीर और अल्प भाषी था।"[1] उसके भाषणों में जनता मोहित थी और वह जन हित के लिये सदैव तैयार रहता था। डब्ल्यू. एन. बीच ने लिखा है कि "एथेन्स के निवासी जो अपने नेताओं के प्रति तीव्र प्यार या घृणा का भाव अनुभव करते थे, किन्तु कदाचित ही किसी को सम्मान देते थे, उसी जनता ने उस सर्वशक्तिमान का उपनाम दे दिया था।"[2]

पेरिक्लीज 461 ई पूर्व में एथेन्स का शासक बना और 461 ई पूर्व से लेकर 430 ई. पू. तक 30 वर्ष तक उसने एथेन्स पर शासन किया। उसने अपने शासन काल में एथेन्स नगर को सर्वाधिक सुन्दर और समृद्ध शाली बनाया। इस काल में साहित्य, संगीत कला, दर्शनशास्त्र आदि का बहुत विकास हुआ और इस समय एथेन्स का सर्वांगीण विकास हुआ। इसलिये उसका शासनकाल प्राचीन यूनान के इतिहास में स्वर्णकाल माना जाता है। जे सी गबिल का मानना है कि 'पेरिक्लीज का शासन काल एथेन्स के इतिहास में इसके सर्वाधिक गौरव का काल है।" पेरिक्लीज एथेन्स का बहुमुखी विकास कर यूनान की सभ्यता और संस्कृति का केन्द्र बनाना चाहता था। अतः शासक बनते ही उसने एथेन्स के निर्माण का कार्य शुरू कर दिया। पेरिक्लीज ने साम्राज्यवादी नीति अपनाई और विदेशों में बस्तियां स्थापित की। इसके पीछे उसके दो उद्देश्य थे। पहला, वह इन बस्तियों में एथेन्स की सभ्यता और संस्कृति का प्रचार करना चाहता था। दूसरा, संकट के समय इन बस्तियों से एथेन्स को सहायता मिल सकती थी। उसे अपने उद्देश्य में सफलता नहीं मिली। उसकी साम्राज्यवादी नीति उसके साम्राज्य के पतन का कारण सिद्ध हुई, परन्तु अन्य क्षेत्रों में एथेन्स ने इतना अधिक विकास किया कि उसका शासनकाल यूनान के इतिहास में चिर स्मरणीय बना हुआ है।

---

1. डा गोयल–विश्व की प्राचीन सभ्यतायें, पृष्ठ 451
2 बीच, डब्ल्यू. एन —हिस्ट्री आफ दि वर्ल्ड, 122

1 साम्राज्यवादी नीति—

पेरिक्लीज अपने नगर राज्य एथेन्स को यूनान की सर्वोच्च शक्ति बनाना चाहता था, इसलिये उसने शासक बनते ही साम्राज्यवादी नीति का पालन किया। फारसी युद्धो के समय थेमिस्टोक्लीज ने यूनान के कई राज्यो को मिलाकर एथेन्स के नेतृत्व मे एक सघ की स्थापना की थी, जिसे डेलियन सघ कहा जाता था। फारसी युद्धो की समाप्ति के पश्चात् सघ के कई सदस्य राज्यो ने उसकी सदस्यता छोडने का प्रयास किया परन्तु व पेरिक्लीज के दबाव के कारण ऐसा नही कर सके। पेरिक्लीज ने कुछ दूसरे राज्यो को भी सघ का सदस्य बनने के लिये बाध्य किया। उसने सघ का कोष डलॅस नगर से हटाकर एथेन्स मे मगा लिया था। अब सघ के लिये धन सग्रह करने का काम एथेन्स द्वारा किया जाने लगा।

डेलियन सघ का नेता एथेन्स था। सघ के सदस्य एटिका, थॅसेने अर्गोलिस अकेट्या आदि द्वीपो से एथेन्स कर वसूल करता था। इन राज्यो की विदेश नीति भी पेरिक्लीज निर्धारित करता था। कभी-कभी वह सघ के इन सदस्य राज्यो की आन्तरिक नीति मे भी हस्तक्षेप करता था। इससे स्पष्ट है कि पेरिक्लीज सघ के इन सदस्य राज्यों म एथेन्स की प्रभुता स्थापित करने म सफल हुआ।

पेरिक्लीज के हस्तक्षेप मे बाध्य होकर सघ के कुछ सदस्य राज्यो ने विद्रोह कर दिया, जिसको उसने दबा दिया। अब सघ का उपयोग कवल एथेन्स की समृद्धि के लिये किया जाने लगा। पेरिक्लीज ने एथेन्स की सुरक्षा के लिये उसके दोनो ओर दीवारो का निर्माण करवाया और उसके समुद्री बेडे को और अधिक शक्तिशाली बनाया। उसने यूनान के कुछ शक्तिशाली नगर राज्यो–थॅसली, अर्गोस आदि से मित्रता के सम्बन्ध बनाकर एथेन्स को यूनान की सर्वोच्च शक्ति बना दिया।

2 विशाल साम्राज्य का निर्माण—

पेरिक्लीज ने शासक बनने के पश्चात् साम्राज्यवादी नीति पर चलते हुए स्पार्टा के एगिना उपनिवेश पर अधिकार कर लिया। उसके शासनकाल म 459 ई पूर्व म स्पार्टा और एथेन्स के बीच युद्ध छिड गया। यह युद्ध दोनो राज्यो म तेरह वर्ष (459–446 ई पू) तक चलता रहा। इस युद्ध को पलोपोनेशियसन युद्ध कहा जाता है। इस युद्ध म किसी भी पक्ष को विजय प्राप्त नही हुई और 446 ई पू में दोनो राज्यो के बीच शाति पूर्ण सम्बन्ध स्थापित हो गये। 431 ई पू म एथेन्स और स्पार्टा के बीच फिर युद्ध छिड गया। इस समय एथेन्स म प्लेग की बीमारी फैल रही थी और उसे अकेले

स्पार्टा की विजय हुई। पेरिक्लीज ने अपने शासन काल के अन्तिम वर्षों में कई नगरों को अपने साथ मिलाकर स्पार्टा को युद्ध में पराजित कर दिया। इस वर्णन से स्पष्ट है कि पेरिक्लीज काफी वर्षों तक स्पार्टा के साथ संघर्ष करता रहा। फिर, भी उसके अधीन एथेन्स ने संस्कृति के प्रत्येक क्षेत्र में आश्चर्यजनक प्रगति की।

पेरिक्लीज के आदर्शवादी सिद्धान्त—

प्रसिद्ध इतिहासकार थूसीडाइडीज ने पेरिक्लीज के आदर्शवादी सिद्धान्तों का बड़ा ही सुन्दर ढग से वर्णन किया है। पेरिक्लीज ने एथेन्स में सुदृढ़ प्रजातन्त्रात्मक शासन व्यवस्था की स्थापना की। एथेन्स के निवासी सामाजिक व व्यक्तिगत जीवन में सहिष्णुता की नीति का पालन कर रहे थे। पेरिक्लीज स्वयं इन आदर्शों का पालन करता था। वह योद्धा होने के साथ साथ कला और साहित्य के क्षेत्र में भी अधिक रूची रखता था। यही कारण था कि उसके शासन काल में कला में कला दर्शनसाहित्य, नाटक व कविता आदि के क्षेत्र में आश्चर्यजनक उन्नति हुई। इसलिये उसका शासन काल यूनान के इतिहास में अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान रखता है। एच० जी० वेल्स ने लिखा है कि "वह गरीब ही रहा और गरीब ही मर गया, कदाचित वह प्रजातन्त्रियों में सबसे ईमानदार आदमी था।"[1]

एथेन्स की शासन व्यवस्था—

एथेन्स में प्रजातन्त्रात्मक शासन व्यवस्था विद्यमान थी। यहाँ का प्रत्येक नागरिक एसेम्बली का सदस्य बन सकता था। इसकी बैठक सप्ताह में एक बार बुलाई जाती थी,। जिसमें किसी भी समस्या का निर्णय बहुमत के आधार पर किया जाता था। एसेम्बली के द्वारा पास किये गये कानून पर कौन्सिल अपनी स्वीकृति देने के लिये बाध्य थी। दासो, स्त्रियों और विदेशियों को छोड़कर, एथेन्स के सभी नागरिकों को सभाओं में भाग लेने तथा शासक सम्बन्धी मामलों पर अपना मत देने का अधिकार था। ऐसी सभायें एक वर्ष में दस बार आयोजित की जाती थी। एथेन्स की सेना और विदेश नीति का निर्धारण दस जनरलों की एक संस्था "स्ट्रैटोगोई" के द्वारा किया जाता था। जनरलों का चुनाव एसेम्बली के द्वारा एक वर्ष के लिये किया जाता था।

एथेन्स के नागरिकों को भाषण देने तथा विचार प्रकट करने की स्वतन्त्रता प्राप्त थी। यदि किसी भी सभा ने किसी भी नागरिक के विरुद्ध छ हजार व्यक्ति मत देते थे तो उस व्यक्ति के मौलिक अधिकार छीन लिये जाते थे। पेरिक्लीज ने हेलीयायी

---

1. वेल्स, एच. जी. —दी आउट लाइन आफ हिस्ट्री, पृष्ठ –327-29

नामक एक नये न्यायालय की स्थापना की। सम्पूर्ण एथेन्स में 6000 हजार ज्यूररों की नियुक्ति की गई थी। इनका चुनाव जनता के द्वारा किया जाता था। सम्भवतः एथेन्स का प्रत्येक व्यक्ति जीवन में एक बार जूरी का सदस्य बन जाता था। जूरी के सदस्यों को वेतन दिया जाता था ताकि वे ईमानदारी से कार्य करें। पेरिक्लीज ने जनता की सुविधा के लिये चलित न्यायालय भी स्थापित किये। उस समय अपराध सिद्ध हो जाने पर कठोर दण्ड दिया जाता था। अपराधी व्यक्ति को ज्यूरी के सामने सफाई पेश करने का अवसर दिया जाता था।

5. सामाजिक दशा—

पेरिक्लीज के समय स्त्रियों को सामाजिक उत्सवों में भाग लेने का अधिकार नहीं था, लेकिन घर में उन्हें सब प्रकार का सम्मान प्रदान किया जाता था। एथेन्स के समाज में दासों की दशा बहुत शोचनीय थी। उन्हें नागरिक अधिकार प्राप्त नहीं थे। यहां के निवासियों को नाटक देखने का बड़ा शौक था।

6. एथेन्स के गणतन्त्र का विकास—

यद्यपि पेरिक्लीज साम्राज्यवादी नीति का प्रबल समर्थक था। फिर भी उसने एथेन्स में प्रजातान्त्रात्मक पद्धति को अपनी शासन व्यवस्था का आधार बनाया। एथेन्स के नागरिकों को भाषण देने और विचार व्यक्त करने की पूर्ण स्वतन्त्रता थी। आर्कन पद पर पहले कुलीन वर्ग के व्यक्ति की ही नियुक्ति की जा सकती थी, लेकिन पेरिक्लीज ने इसमें सुधार किया और अब जन साधारण का कोई भी व्यक्ति इस पद पर नियुक्त किया जा सकता था। सम्पूर्ण एथेन्स नगर में स्त्रियों, दासों और विदेशियों को राजनीतिक अधिकार प्राप्त नहीं थे। एथेन्स में प्रत्यक्ष प्रजातन्त्र था और प्रत्येक नागरिक शासन के कार्य में भाग लेता था। पेरिक्लीज कहा करता था कि "उस व्यक्ति का जीवन निरर्थक है जो नागरिक सेवा में भाग नहीं लेता।"

प्रत्येक अपराधी व्यक्ति को ज्यूरी के सामने अपनी सफाई पेश करने का अधिकार था। पेरिक्लीज ने ज्यूरी को वेतन देना प्रारम्भ किया, ताकि वे ईमानदारी से कार्य कर सकें। एथेन्स में जनसभा के सदस्यों का चुनाव वहां के नागरिकों के द्वारा किया जाता था। यदि किसी व्यक्ति के विरुद्ध 6000 व्यक्ति मत दे देते थे तो उस व्यक्ति को राजनीतिक अधिकारों से वंचित किया जा सकता था। जन सभा के अलावा एक काउंल परिषद् थी, जिसमें 500 सदस्य होते थे। ये दोनों ही संस्थाएं ज्यूरी और अन्य समितियों की सहायता शासन के कार्य का संचालन करती थी। इस प्रकार पेरिक्लीज ने एथेन्स में प्रत्यक्ष प्रजातन्त्रात्मक शासन व्यवस्था को सशक्त बनाया, जिससे वह जनता में बहुत अधिक लोकप्रिय हो गया। मैकनेल बर्नस पेरिक्लीज प्रजातन्त्र शासन पद्धति की प्रशंसा करते हुए लिखता है

कि "पेरिक्लीज के युग मे एथेन्स का प्रजातन्त्र अपनी पूर्ण निपुणता को प्राप्त कर चुका था।"[1]

7 धार्मिक जीवन—

इस काल मे भी यूनान के लोग बहुदेववादी थे। प्रत्येक नगर राज्य के अलग अलग देवता होते थे। पुरोहित इन देवताओ की उपासना करते थे और धार्मिक उत्सवो पर पूजा के पश्चात् बलि भी चढाते थे। प्रत्येक यूनानी भोजन करते समय अपने इष्ट चार देवताओ को भोजन व शराब की भेंट चढाते थे। उनके धर्म मे आध्यात्मिक विचारो का कोई स्थान नहीं था।

पेरिक्लीज का काल यूनान का स्वर्ण काल

पेरिक्लीज के शासन काल (461 ई० पूर्व से 430 ई० पूर्व) को यूनान के इतिहास का स्वर्ण युग कहा जाता है। शाति तथा समृद्धि के इन वर्षों मे एथेन्स का गौरव सर्वोच्च शिखर पर जा पहुँचा। सगीत कला, चित्रकला, स्थापत्य कला, साहित्य और शिक्षा आदि सभी क्षेत्रो मे एथेन्स ने अभूतपूर्व उन्नति की। पेरिक्लीज एक कुशल प्रशासक था। उसने सुदृढ शासन व्यवस्था की स्थापना की। उसके शासन काल मे जनता सुखी और समृद्ध थी। उसने एथेन्स नगर को सर्वाधिक सुन्दर और समृद्धशाली बना दिया। उस काल मे एथेन्स यूनान की सभ्यता और सस्कृति का केन्द्र बन गया। उसके शासन काल में यूनान का सर्वांगीण विकास हुआ। इसलिये यदि उसके शासन काल को यूनान का स्वर्ण काल कहा जाय तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। सेवाइन का मानना है कि "पेरिक्लीज यूनान के महानतम शासको म से एक था और कला का सबसे बडा समर्थक था। उसके युग मे एथेन्स सफलता की चोटी पर था"।[2] बीच ने लिखा है "पाचवी ईसा पूर्व के मध्य लगभग 30 वर्ष तक एथेन्स मे एक ही व्यक्ति इतना श्रेष्ठ था कि यह यूनान के इतिहास का महानतम युग सदा इसका नाम लेता रहेगा। वह नाम पेरिक्लीज था"।[3] सेवाइन ने लिखा है कि "इसमे शका नही कि अन्य किसी देश मे किसी भी समय विद्वानो का ऐसा चमत्कारिक समूह नही हुआ जैसा पेरिक्लीज के समय यूनान मे"।[4] प्रोफेसर डेविस ने भी लिखा है कि "पेरिक्लीज का युग *यूनान के इतिहास* का ही नही वरन् विश्व के इतिहास का बडा शानदार युग था, क्योंकि इस युग मे कला साहित्य और मानव जीवन के उच्च मूल्यों की आशातीत

1 मैक्नेल बर्न्स—वेस्टर्न सिवलीजेशन पृष्ठ 137
2. सेवाइन—ए हिस्ट्री आफ वेस्टर्न सिवलीजेशन पृष्ठ 159
3. बीच, डब्ल्यू० एन—हिस्ट्री आफ दी वर्ल्ड पृष्ठ 122
4 सेवाइन—ए हिस्ट्री आफ वर्ल्ड सिवलीजेशन पृष्ठ 159

प्रगति हुई।" जॉजफ रीथर के विचारो से यह स्पष्ट हो जाता है कि "पेरिक्लीज का युग यूनान के इतिहास मे स्वर्ण युग कहा जा सकता है" उपरोक्त विद्वानो के कथनो से भी स्पष्ट हो जाता है कि पेरिक्लीज के राज्य काल मे अवश्य वे सारी विशेषतायें विद्यमान थी, जिनके आधार पर उसके शासन काल को स्वर्ण युग कहा जा सकता है।

1. आर्थिक सम्पन्नता—

पेरिक्लीज का शासन काल आर्थिक दृष्टिकोण सम्पन्नता का काल था। उसके समय मे जन साधारण की आर्थिक दशा बहुत अच्छी थी और किसी के सामने जीवनोपार्जन की कोई समस्या नही थी पेरिक्लीज के कुशल शासन प्रबन्ध तथा कृषको के प्रति सहानुभूति के कारण कृषको की दशा निरन्तर सुधरती जा रही थी। उसने करो मे बहुत वृद्धि की। फिर भी जनता उससे असन्तुष्ट नही थी, क्योंकि राज्य की ओर से जन साधारण को रोजगार देने की व्यवस्था की गई थी। इसलिये जनता को आर्थिक कठिनाईयो का सामना नहीं करना पड़ा।

पेरिक्लीज ने साम्राज्यवादी नीति पर चलते हुए विदेशों मे बस्तियां स्थापित की और उनके साथ व्यापारिक समझौते किए, जिससे जन साधारण की दशा मे सुधार हुआ। पेरिक्लीज के समय यूनान, मिश्र तथा एशिया के देशो से व्यापार करता था। इस के शासन काल मे यूनान ने व्यापार के क्षेत्र मे बहुत अधिक प्रगति की। एथेन्स, डेन्यूब से दास तथा पशु मिस्र एव मेसोपोटामिया से गलीचे, रेशम, मसाले और बहुमूल्य धातुयें, तथा भूमध्य सागर के निकटवर्ती प्रदेशो से अनाज, लकड़ी, चादी और सोने का आयात करता था, इनके बदले मे यूनान इन देशों को मिट्टी के बर्तन, शराब तथा आभूषण आदि वस्तुओं का निर्यात करता था। इस प्रकार पेरिक्लीज के शासनकाल मे व्यापार का काफी विकास हुआ। प्रो० ब्रेस्टेड के अनुसार 'देश का व्यापार विकसित था। उद्योग धन्धे सुविकसित थे और उत्पादन मे 30 प्रतिशत तक लाभ होना तो एक सामान्य बात थी। काले सागर तक व्यापार करने पर एथेन्सवासियो को अपना व्यय निकाल कर शत-प्रतिशत लाभ होता था। राज्य द्वारा विदेशी व्यापार को बहुत प्रोत्साहन दिया जाता था।"

2 प्रजा हितैषी तथा सुदृढ़ शासन प्रबन्ध—

पेरिक्लीज का शासन प्रबन्ध बहुत सुदृढ था। उसकी शासन व्यवस्था का आधार प्रत्यक्ष प्रजातन्त्र था। एथेन्स के सभी नागरिक वहा की राजनीतिक समस्याओं में प्रत्यक्ष रूप से भाग लेते थे। वहा के नागरिको को भाषण देने व विचार प्रकट करने के अधिकार प्राप्त थे। पेरिक्लीज के अधीन जनता सुख और शांति पूर्वक जीवन व्यतीत कर रही थी। वह सरकारी पदो पर योग्य व्यक्तियों को नियुक्त करता था। शासन व्यवस्था की इन विशेषताओं के कारण पेरिक्लीज के साम्राज्य

की आय दिन प्रतिदिन बढ़ती जा रही थी और राज्य मे सुख शान्ति का वातावरण था।

3 साहित्य के क्षेत्र में विकास—

पेरिक्लीज के शासन काल म साहित्य के क्षेत्र मे बहुत अधिक विकास हुआ। इस युग मे कई उच्च कोटि के साहित्यकार पैदा हुए, जिन्होंने साहित्य के सभी क्षेत्रों मे नाटक, गीत काव्य और इतिहास आदि में महत्वपूर्ण ग्रन्थों की रचना की।

(i) नाटक—

पेरिक्लीज के समय यूनान ने नाटको के क्षेत्र मे बहुत अधिक प्रगति की। वह स्वय नाटकों से बहुत प्रेम करता था। उसने अनेक नाटककारों को अपने दरबार मे आश्रय दे रखा था, जिन्होंने अपने अपने क्षेत्र मे प्रशसनीय रचनायें रची। यूनान में नाटककारो ने सुखान्त एव दुखान्त दोनों ही प्रकार के नाटको की रचना की।

दुखान्त नाटक

इस समय एसकाइलस सोफोक्लीज तथा यूरोपीडीज आदि नाटककारो ने दुखान्त नाटको की रचना की। एसकाईलस यूनान के दुखान्त नाटको का जन्म दाता था। यूनानी लोग सुखान्त नाटको की अपेक्षा दुखान्त नाटको को अधिक पसन्द करते थे। इसलिए उनको दुखान्त नाटक पर तेरह बार पुरस्कार प्रदान किया गया। सोफोक्लीज ने अपने एक सौ नाटको मे दुख भरे चित्रों का वर्णन किया है। इसलिये उसको भी दुखान्त नाटक पर पुरस्कार प्रदान किया गया तीसरा प्रसिद्ध दुखान्त नाटककार यूरोपीडीज था, जिसने अपने नाटको मे तर्क के आधार पर यूनानी देवताओं का मजाक उडाया।

सुखान्त नाटक

यूनान मे एरिस्टोफेनिज नामक नाटककार ने सुखान्त नाटको की रचन की। एथेन्स वासी सुखान्त नाटको की अपेक्षा दुखान्त नाटक अधिक पसन्द करते थे इसलिये यूनान के दुखान्त नाटककारो को कई बार राष्ट्रीय पुरस्कार प्रदान किे गये। यूनान के प्रसिद्ध थियेटर डायोनिशस में वर्ष मे दो बार नाटक हुआ करते थे। इसकी सीटें पत्थर की बनी हुई थी। इस थियेटर मे हजारो लोग प्रत्येक रा को नाटक देखने के लिये जाते थे।

(ii) गीत काव्य का विकास—

इस युग में गीत काव्य के क्षेत्र में बहुत अधिक विकास हुआ। इस का म प्रणय गीत, शोक गीत, विनाद गीत और वीर गीत आदि लिखे गये। इस का के प्रसिद्ध कवि आरचीलोकस, आलावेग्रस, साफो एनाक्रियन और पिण्डार आ थे। आरचीलोकस ने अपने गीतों मे सामाजिक बुराइयो पर प्रकाश डाला। अल केग्रस ने अपने गीतो मे सामाजिक अराजकता का वर्णन किया। साफो यूनान क

प्रसिद्ध कवियित्री थी। उसने अपने गीतों में प्रकृति के सुन्दर दृश्यों का वर्णन किया है। एनाक्रियन ने अपने गीतों में सुरा और सुन्दरी का वर्णन किया है। पेरिक्लीज के काल का प्रसिद्ध कवि पिन्डार था, जिसने कोरस के गीत लिखे। उसके गीत इस काल में बहुत अधिक लोकप्रिय हुए।

(iii) गद्य साहित्य—

वेल्स ने लिखा है कि "गद्य साहित्य का जन्म सबसे पहले इतिहास के रूप में हुआ था, जिसका पिता हेरोडोटस है। उसने पेरिक्लीज के समय में एथेन्स का भ्रमण किया था।"[1] पेरिक्लीज ने अपने दरबार में इतिहासकारों को भी संरक्षण प्रदान किया। उस युग के प्रमुख इतिहासकार हेरोडोटस और थुसीडाईडीज आदि थे। हेरोडोटस (480 ई० पूर्व) *यूनान का प्रथम और सर्वश्रेष्ठ इतिहासकार था।* उसे इतिहास का जन्मदाता भी कहते हैं। उसने नौ ग्रन्थ लिखे। उसके द्वारा लिखे गये ग्रन्थ से फारसी यूनानी युद्धों के बारे में जानकारी प्राप्त होती है इसके अतिरिक्त उस काल की राजनैतिक, सामाजिक व आर्थिक दशा के बारे में भी जानकारी प्राप्त होती है। सेवाइन ने लिखा है कि "तीक्ष्ण बुद्धि वाले यूनानियों ने जिस साहित्य की रचना की, उस साहित्य का पिता हेरोडोटस था। वह जो कुछ लिखता था उस पर स्वयं विश्वास नहीं करता था। लेकिन सोचता था कि औरों को बता दूं।"[2] दूसरा इतिहासकार थुसीडाइडीज था। जिसने अपने ग्रन्थ में एथेन्स व स्पार्टा के बीच हुए संघर्ष का वर्णन किया। उसका इतिहास अधिक *प्रमाणिक माना* जाता है।

4 विज्ञान के क्षेत्र में प्रगति—

पेरिक्लीज के काल में एथेन्स में विज्ञान के क्षेत्र में भी बहुत प्रगति हुई। अरस्तू भौतिक विज्ञान का जन्मदाता था उसने पशुओं का वर्गीकरण कर जीव *विज्ञान की नींव रखी।* हिप्पोक्रेटीज यूनान में चिकित्सा विज्ञान का जन्मदाता माना जाता है। उसने बीमारियों और औषधियों पर प्रकाश डाला। इसके अतिरिक्त एनेक्सागोरस नामक ज्योतिषि ने सूर्य ग्रहण, चन्द्र ग्रहण और नक्षत्रों का अध्ययन किया।

5. दर्शन के क्षेत्र में विकास—

इस युग में दर्शन के क्षेत्र में भी बहुत अधिक विकास हुआ। यहां पर दर्शन का विषय आत्मा, जीव आदि नहीं था, अपितु यहां के दार्शनिकों ने प्रकृति के रहस्यों का पता लगाने की चेष्टा की। दार्शनिक थेलीज ने बताया कि जल नामक

1 वेल्स एच० जी०—दी आउट लाईन आफ हिस्ट्री पृष्ठ 341

2. सेबाइन—ए हिस्ट्री आफ वर्ल्ड सिवलीजेशन पृष्ठ 155

पदार्थ से सृष्टी की उत्पति हुई है। यद्यपि उसका यह सिद्धान्त पूर्ण रूप से सत्य नहीं है। फिर, भी इसका एक अच्छा परिणाम यह हुआ कि सृष्टि की उत्पति के सम्बन्ध मे जो धार्मिक कहानिया लिखी हुई थी, उसमे दार्शनिकों का विश्वास हट गया। एनेक्जामेडर के अनुसार मनुष्य प्रारम्भ में मछली के रूप मे था। फिर' धीरे-धीरे विकास किया। यूनान में पाइथागोरस नामक दार्शनिक ईसा से छठी शताब्दी पूर्व हुआ था। उसने आत्मा की मुक्ति के लिये धार्मिक तथा नैतिक शुद्धि-करण पर जोर दिया। जेनोफ़ेनीज नामक दार्शनिक एकेश्वरवाद के सिद्धान्त में विश्वास करता था। इम्पेडोक्लीज नामक दार्शनिक के अनुसार वायु, अग्नि, भूमि व जल इन चार तत्वो मे सृष्टि का निर्माण हुआ।

पेरिक्लीज के युग का सबसे प्रसिद्ध दार्शनिक सुकरात (470–399 ई० पूर्व) था। जिसने सत्य को जानने के लिए तर्क पर सर्वाधिक बल दिया। इस प्रकार उसने दर्शन के क्षेत्र में एक नई परम्परा का विकास किया। उसने आत्म निरीक्षण पर जोर दिया और सबके साथ अच्छा व्यवहार करने का उपदेश दिया। उस समय के अधिकारियों ने उस पर जनता को भ्रष्ट करने का आरोप लगाया और उसे विषपान द्वारा मृत्यु दण्ड दिया गया। उसका यह विषपान एथेन्स के गौरव पर सबसे बडा कलक है। सुकरात की भाति उसका शिष्य प्लेटो भी तर्क पर अधिक बल देता था। वह भी एक आदर्श समाज और एक आदर्श राज्य क निर्माण पर जोर देता था। प्लेटो के बाद उनका शिष्य अरस्तु महान दार्शनिक हुआ, जो सिकन्दर महान का गुरु भी था। इसके अतिरिक्त सोफिस्ट विचारकों ने भी अपन दार्शनिक विचारो मे तर्क व स्वतन्त्र चिन्तन पर अधिक जोर दिया। ये ईश्वर में विश्वास नहीं करते थे। इन्होंने अपने ज्ञान का प्रसार तर्क के द्वारा किया। सेबाइन ने लिखा है कि "यह सन्देहपूर्ण है कि अन्य किसी भी समय या स्थान पर ऐसे प्रबुद्ध मस्तिष्कों का समूह रहा हों जैसा कि पेरिक्लीज के युग में एथेन्स म था।"[1]

5. कला के क्षेत्र में विकास—पेरिक्लीज एक उच्च कोटि का सेनानायक था फिर, भी उसके प्रयासो से यूनान में कला के क्षेत्र मे बहुत अधिक विकास हुआ। उस समय स्थापत्य कला, चित्रकला, मूर्तिकला और संगीत कला आदि क्षेत्रो मे आश्चर्यजनक उन्नति हुई।

(i) स्थापत्य कला—

पेरिक्लीज के शासन काल मे स्थापत्य कला के क्षेत्र मे बहुत अधिक प्रगति हुई। शासक बनने के बाद एथेन्स में ईरानी लोगों द्वारा नष्ट की गई इमारतों के पुनर्निर्माण का कार्य शुरु कर दिया। उसने एथेन्स मे लम्बी चौडी सडकों तथा भव्य इमारतों का निर्माण करवाया और एथेन्स की सुरक्षा के लिए चारो और दीवार

1. सेबाइन ए हिस्ट्री आफ वेस्टर्न सिविलीजेशन, पृष्ठ 159

का भी निर्माण करवाया। इस काल मे विभिन्न नगर राज्यो ने कई सुन्दर मन्दिरो का निर्माण करवाया। यूनान की तीन शैलियो के अनुसार यहा के मन्दिरो का निर्माण किया गया। ये शैलियां डोरिक, आयोनिक और कोरिन्थियन के नाम से प्रसिद्ध है। डोरिक शैली के मन्दिर मे स्तम्भ कम भारी और सादे बने हुए हैं। आयोनिक शैली के मन्दिर मे स्तम्भ कम भारी व सुन्दर बने हुए है कोरिन्थियन शैली के मन्दिर के स्तम्भ बहुत लम्बे और अलकृत है।

पेरिक्लीज के काल मे अनेक सुन्दर मन्दिरो का निर्माण हुआ। एथेन्स की पहाडी पर एक्रोपोलिस मे स्थित "पार्थनान" का मन्दिर सबसे बडा मन्दिर है। इस मन्दिर का निर्माण इक्टीनस ने किया। इसके निर्माण म डोरिक शैली का प्रयोग *किया गया है, यह पूरा मन्दिर सफेद सगमरमर का बना हुआ है।* इसमे *एथेना* देवी की सुन्दर मूर्ति स्थापित की गई है। इस मन्दिर की लम्बाई 76 गज, चौडाई साढे तेतीस गज और ऊचाई साढे इक्कीस गज थी। मन्दिर मे 46 स्तम्भ बनाये गये थे। प्रत्येक स्तम्भ 39 फीट ऊचा था। पार्थनान का मन्दिर उस समय की स्थापत्य कला का एक शानदार नमूना है और विश्व की सबसे प्रसिद्ध इमारत है।"[1] इसके अतिरिक्त उस समय फिडियस नामक कलाकार ने डायोनिसस नामक देवता के मन्दिर का निर्माण किया। उस काल मे अनेक सुन्दर किलो और भवनो का निर्माण भी हुआ। वाऊस ने लिखा है कि "उस समय यूनान मे मिश्र के नमूने के देवालय अवश्य बनते थे किन्तु वे मिश्र के देवालयो की भाति विशालकाय नही होते थे।" उस समय एक्रोपोलिस की पहाडी पर बना हुआ डायोनिसस का थियेटर भी उस काल की स्थापत्य कला का सर्वश्रेष्ठ नमूना था। इस थियेटर मे लोगो के बैठने के लिए पत्थर की सीटें बनाई गई थी। इस थियेटर म वर्ष मे अनेक बार नाटक खेले जाते थे, जिसे देखने के लिए हजारो लाग आते थे।

(ii) मूर्ति कला—

इस काल म मूर्ति कला क क्षेत्र मे बहुत अधिक विकास हुआ। यहा के मूर्तिकार सोने, कासे तथा पत्थर की मूर्तिया बनाते थे। मूर्तियो म खिलाडियो तथा देवी देवताओ की मूर्तिया अधिक बनाई जाती थी। इस युग की मूर्ति कला की मुख्य विशेषता यह थी कि मूर्तियों म शरीर के अ गो का सुन्दर चित्रण किया जाता था और यथार्थ तथा सौन्दर्य को अधिक महत्व दिया जाता था। इस काल के प्रसिद्ध मूर्तिकार फीडियस, माइरन और पोलीक्लेटस आदि थे। उस समय के प्रसिद्ध मूर्तिकार फीडियस ने नग्न मूर्तियो का सुन्दर निर्माण किया। उसने ओलम्पिया के मन्दिर मे स्थित "जियस" की मूर्ति का निर्माण किया। इसके अतिरिक्त पार्थनान के मन्दिर मे एथेना देवी की सुन्दर मूर्ति का निर्माण भी

---

1 एपिल और जौन—ससार का इतिहास पृष्ठ 100

फिडियस ने किया। इस मूर्ति की ऊंचाई 11 75 मीटर है। "एथेना देवी" की मूर्ति उस समय की मूर्ति कला का सर्वोत्कृष्ट नमूना है। उसकी मूर्तियो मे सौन्दर्यता और कोमलता के भाव दिखाई देते हैं। बर्नस ने लिखा है कि "शहरों मे फैली शोहरत के अनुसार यूनानी मूर्ति कला ने फिडियस के युग मे सर्वोच्चता प्राप्त करली थी।"[1] माइरन नामक मूर्तिकार खिलाडियो की मूर्तिया बनाने मे प्रवीण था। उसने "डिस्कस थ्रोअर" की अनेक मूर्तियो का निर्माण किया। पोलीक्लेट नामक मूर्तिकार ने मनुष्य की अनेक मूर्तियो का निर्माण किया

(iii) चित्रकला—

पेरिक्लीज के अधीन चित्र कला के क्षेत्र मे बहुत अधिक विकास हुआ। इस काल में चित्रकार लकडी के सुन्दर चित्रो का निर्माण करते थे और उनम रगों का प्रयोग इस तरह से करते थे कि वह चित्र सजीव की भांति दिखाई देता था। इस युग के प्रसिद्ध चित्रकार पोलिग्नोटस, ज्यूक्सिज और परासियस आदि थे। पोलीग्नोटस ने ट्राय का ध्वस "और" थ्रोडेसियम" के सुन्दर चित्रो का निर्माण किया। ज्यूक्सिज ने "धावक" और "हेलन" के सुन्दर चित्र बनायें। ज्यूक्सिज ने "धावर" चित्र मे पसीने की बूदे इस प्रकार से दिखाई है जैसे अभी नीचे गिरने वाली हैं। उसका "हेलन" चित्र भी नारी सौन्दर्य का एक आदर्श नमूना है।

(iv) सगीत कला—

पेरिक्लीज के समय सगीत कला के क्षेत्र मे बहुत अधिक उन्नति हुई। इस समय वाद्य सगीत तथा शास्त्रीय सगीत का बहुत प्रसार हुआ। यूनान मे नाटक का विकास होने के कारण सगीत का बहुत अधिक विकास हुआ। हर नाटक के प्रारम्भ और अन्त मे गीतो की धुने बजाई जाती थीं।

उपसहार—

उपरोक्त विवचन से स्पष्ट है कि पेरिक्लीज के समय मे एथेन्स के साम्राज्य का विस्तार हुआ। अब एथेन्स ने सम्पूर्ण भूमध्य सागर पर अधिकार कर लिया। एथेन्स यूनान के कई नगर राज्यों का शासक बन गया और एथेन्स नगर राज्य से साम्राज्य म परिवर्तित हो गया। इस समय एथेन्स मे कई महान व्यक्तियों ने जन्म लिया। इसके अतिरिक्त पेरिक्लीज के समय एथेन्स ने साहित्य, विज्ञान, दर्शन, चित्रकला, सगीत कला स्थापत्य कला, मूर्तिकला, और जन तान्त्रिक स्थापना के क्षेत्र मे आश्चर्यजनक उन्नति की। इन सब बातो के लिए उसके युग को यूनान के इतिहास का स्वर्ण युग माना जा सकता है।

पेरिक्लीज की मृत्यु एवं मूल्यांकन—

पेरिक्लीज 429 ई० पूर्व मे इस ससार से चल बसा। उसके शासन काल

---

1 मेक्नेल बर्नस वेस्टर्न सिवलीजेशन पृष्ठ 157

में जनता सुखी एवं समृद्ध जीवन व्यतीत कर रही थी। रेविल का कहना है कि 'पेरिक्लीज के शासनकाल में प्रत्येक क्षेत्र में प्रगति हुई और वह प्रगति अपने अनुपम प्रभाव छोड़ गई।" प्रसिद्ध राजनीतिज्ञ शूमा ने लिखा है कि 'पेरिक्लीज के मरते ही एथेन्स का गौरव दीप टिमटिमाने लगा और कालान्तर में बुझ गया।" पेरिक्लीज के यूनान के इतिहास में महत्वपूर्ण स्थान है, और उसकी उपलब्धियों के आधार पर ही उसका युग यूनान के इतिहास में स्वर्ण युग माना जाता है। सर देसाई ने लिखा है कि "यूनान के इतिहास का सर्वाधिक गौरव काल पेरिक्लीज का नेतृत्व का काल है–यह कहना पर्याप्त होगा कि पेरिक्लीज ने यूनान में सर्वश्रेष्ठ संस्कृति को जन्म दिया।" इस समय एथेन्स में सभी क्षेत्रों में इतनी अधिक प्रगति हुई कि वह यूनान की सभ्यता और संस्कृति का केन्द्र बन गया। विल ड्यूरेन्ट का मत है कि "इतिहास में शायद ही ऐसा कोई युग हो जिसमें इतनी अधिक मात्रा में सांस्कृतिक व आर्थिक उन्नति हुई हो।"

पेरिक्लीज के शासनकाल में इतनी अधिक प्रगति हुई लेकिन यूनान के पतन के लिए भी वही उत्तरदायी था। उसने डेवीयन संघ के धन को एथेन्स के निर्माण कार्यों में लगाकर संघ के अन्य सदस्यों को नाराज कर दिया। इसके अतिरिक्त पेरिक्लीज ने साम्राज्यवादी नीति अपनाई जिससे स्पार्टा वासियों में भय उत्पन्न हो गया। इसके कारण आगे चलकर एथेन्स और स्पार्टा में संघर्ष हुआ और अन्त में यूनान पराधीन हो गया।

एथेन्स और स्पार्टा के बीच संघर्ष—

फारस से युद्ध समाप्त होते ही एथेन्स व स्पार्टा के बीच संघर्ष प्रारम्भ हो गया। स्पार्टा एक सैनिक राज्य था। इस राज्य में प्रत्येक नागरिक को सैनिक शिक्षा दी जाती थी। यहां के निवासी खेलकूद में काफी रुचि रखते थे, इसलिए प्रति वर्ष यहां ओलम्पिक खेलों की प्रतियोगिता आयोजित की जाती थी। वर्तमान की ओलम्पिक खेल प्रतियोगिता स्पार्टा की मुख्य देन है। दूसरा राज्य एथेन्स था जिसने पेरिक्लीज के अधीन प्रत्येक क्षेत्र में आश्चर्य जनक प्रगति की। पेरिक्लीज ने डेलियन संघ का प्रयोग एथेन्स की रक्षा के लिये किया। जब उसने साम्राज्यवादी नीति अपनाई तो स्पार्टा वासियों के मन में भय उत्पन्न हो गया। जिससे आगे चलकर स्पार्टा व एथेन्स के बीच युद्ध प्रारम्भ हो गया। इन दोनों के बीच में जो युद्ध हुआ उसे इतिहास में पलोपोनेशियन युद्ध कहते हैं।

पेलोपोनेशियन युद्ध के कारण—

पेलोपोनेशियन युद्ध के प्रमुख कारण निम्नलिखित हैं—

1. जब यूनान का फारस से संघर्ष चल रहा था तब उस समय यूनान में दो संघों का निर्माण हुआ। पहला डेलियन संघ और दूसरा पेलोपोनेशियन

आयोनिन जाति के थे। इस संघ का एथेन्स नेतृत्व कर रहा था, लेकिन धीरे-धीरे एथेन्स ने इस संघ के सदस्य राज्यों पर अधिकार कर वहा अपना साम्राज्य स्थापित कर दिया। दूसरा संघ पेलोपोनेशियन था, इसका निर्माण स्पार्टा ने किया था। इस संघ के सदस्य स्वतन्त्र राज्य थे और इसका मुख्य उद्देश्य दक्षिण यूनान के राज्यों की आक्रमणकारियों से सुरक्षा करना था। संघ के सदस्य डोरियन जाति के थे और इसका नेतृत्व स्पार्टा कर रहा था। स्पार्टा ने डेलियन संघ के विरोध में ही पेलोपोनेशियन संघ का निर्माण किया था। इन दोनों नगर राज्यों में शासन व्यवस्था भी अलग अलग थी। एथेन्स में प्रजातन्त्रात्मक शासन व्यवस्था विद्यमान थी, जबकि स्पार्टा में राजतन्त्रात्मक शासन व्यवस्था विद्यमान थी। एथेन्स ने व्यापार के क्षेत्र में बहुत अधिक प्रगति करली थी। यह बात स्पर्टा के लोगों को बुरी लगी। स्पार्टावासी सादा जीवन और अनुशासन पर बहुत अधिक जोर देते थे जबकि एथेन्स में ज्ञान, दर्शन, साहित्य, कला आदि पर भी विशेष जोर दिया जाता था। इस प्रकार स्पष्ट है कि ये दोनों संघ एक दूसरे के विपरीत थे, और उनमें युद्ध अवश्यम्भावी था।

2. युद्ध का दूसरा कारण पेरिक्लीज की साम्राज्यवादी नीति थी। जब परिक्लीज ने एथेन्स के बाहर साम्राज्य विस्तार किया और एक विशाल साम्राज्य का निर्माण किया। एथेन्स जब नगर राज्य से शक्तिशाली साम्राज्य के रूप में परिवर्तित हो गया तो इससे स्पार्टा को भय उत्पन्न हुआ और यही आगे चलकर दोनों के बीच संघर्ष का कारण बना।

3 तीसरा कारण यह था कि डेलियन संघ के सदस्य एथेन्स की अधीनता से स्वतन्त्र होना चाहते थे इसलिए उन्होंने स्पार्टा से गुप्त सहायता प्राप्त करने का प्रयास किया।

4 चौथा कारण यह था कि एथेन्स और स्पार्टा दोनों ही महत्वाकांक्षी राज्य थे।

5 पाचवा कारण यह था कि पेरिक्लीज के समय में एथेन्स ने प्रत्येक क्षेत्र में आश्चर्य जनक प्रगति की, जिससे वह यूनानी सभ्यता और संस्कृति का केन्द्र बन गया। स्पार्टा वासी एथेन्स की इस प्रगति से ईर्ष्या करने लगे।

6 छठा कारण यह था कि जब एथेन्स ने कोरिन्थ के कोसिका नामक प्रदेश पर अधिकार कर लिया तो कोरिन्थ ने स्पार्टा से सहायता देने के लिए प्रार्थना की। स्पार्टा इस उत्तम अवसर को अपने हाथ से खाली नही जाने देना चाहता था।

7. सातवां कारण एथेन्स और स्पार्टा के बीच (459–446 ई पूर्व) अनिर्णित युद्ध था।

में जनता सुखी एवं समृद्ध जीवन व्यतीत कर रही थी। रेविल का कहना है कि 'पेरिक्लीज के शासनकाल में प्रत्येक क्षेत्र में प्रगति हुई और वह प्रगति अपने अनुपम प्रभाव छोड़ गई।" *प्रसिद्ध राजनीतिज्ञ थूका ने लिखा है कि 'पेरिक्लीज के मरते ही एथेन्स का गौरव दीप टिमटिमाने लगा और कालान्तर में बुझ गया।"* पेरिक्लीज के यूनान के इतिहास में महत्वपूर्ण स्थान है, और उसकी उपलब्धियों के *आधार पर ही उसका युग यूनान के इतिहास में स्वर्ण युग माना जाता है।* सर देसाई ने लिखा है कि 'यूनान के इतिहास का सर्वाधिक गौरव काल पेरिक्लीज का नेतृत्व का काल है—यह कहना पर्याप्त होगा कि पेरिक्लीज ने यूनान में सर्वश्रेष्ठ संस्कृति को जन्म दिया। इस समय एथेन्स में सभी क्षेत्रों में इतनी अधिक प्रगति हुई कि वह यूनान की सभ्यता और संस्कृति का केन्द्र बन गया। विल ड्यूरेन्ट का मत है कि "इतिहास में शायद ही ऐसा कोई युग हो जिसमें इतनी अधिक मात्रा में *सांस्कृतिक व आर्थिक उन्नति हुई हो।"*

पेरिक्लीज के शासनकाल में इतनी अधिक प्रगति हुई लेकिन यूनान के पतन के लिए भी वही उत्तरदायी था। उसने डेलीयन संघ के धन को एथेन्स के निर्माण कार्यों में लगाकर संघ के अन्य सदस्यों को नाराज कर दिया। इसके अतिरिक्त पेरिक्लीज ने साम्राज्यवादी नीति अपनाई जिससे स्पार्टा वासियों में भय उत्पन्न *हो गया।* इसके कारण आगे चलकर एथेन्स और स्पार्टा में संघर्ष हुआ और अन्त में यूनान पराधीन हो गया।

एथेन्स और स्पार्टा के बीच संघर्ष—

फारस से युद्ध समाप्त होते ही एथेन्स व स्पार्टा के बीच संघर्ष प्रारम्भ हो गया। स्पार्टा एक सैनिक राज्य था। इस राज्य में प्रत्येक नागरिक को सैनिक शिक्षा दी जाती थी। यहां के निवासी खेलकूद में काफी रुचि रखते थे, इसलिए प्रति वर्ष यहां ओलम्पिक खेलों की प्रतियोगिता आयोजित की जाती थी। वर्तमान की ओलम्पिक खेल प्रतियोगिता स्पार्टा की मुख्य देन है। दूसरा राज्य एथेन्स था जिसने पेरिक्लीज के अधीन प्रत्येक क्षेत्र में आश्चर्य जनक प्रगति की। पेरिक्लीज ने डेलियन संघ का प्रयोग एथेन्स की रक्षा के लिये किया। जब उसने साम्राज्यवादी नीति अपनाई तो स्पार्टा वासियों के मन में भय उत्पन्न हो गया। जिससे आगे चलकर स्पार्टा व एथेन्स के बीच युद्ध प्रारम्भ हो गया। इन दोनों के बीच में जो युद्ध हुआ उसे इतिहास में पेलोपोनेशियन युद्ध कहते हैं।

पेलोपोनेशियन युद्ध के कारण—

पेलोपोनेशियन युद्ध के प्रमुख कारण निम्नलिखित है—

1 जब यूनान का फारस से संघर्ष चल रहा था तब उस समय यूनान में दो संघों का निर्माण हुआ। पहला डेलियन संघ और दूसरा पेलोपोनेशियन संघ। डेलियन संघ का निर्माण एथेन्स ने किया था। इस संघ के सदस्य

आयोनियन जाति के थे। इस संघ का एथेन्स नेतृत्व कर रहा था, लेकिन धीरे-धीरे एथेन्स ने इस संघ के सदस्य राज्यों पर अधिकार कर वहां अपना साम्राज्य स्थापित कर दिया। दूसरा संघ पेलोपोनेशियन था, इसका निर्माण स्पार्टा ने किया था। इस संघ के सदस्य स्वतन्त्र राज्य थे और इसका मुख्य उद्देश्य दक्षिण यूनान के राज्यों की आक्रमणकारियों से सुरक्षा करना था। संघ के सदस्य डोरियन जाति के थे और इसका नेतृत्व स्पार्टा कर रहा था। स्पार्टा ने डेलियन संघ के विरोध में ही पेलोपोनेशियन संघ का निर्माण किया था। इन दोनों नगर राज्यों में शासन व्यवस्था भी अलग-अलग थी। एथेन्स में प्रजातन्त्रात्मक शासन व्यवस्था विद्यमान थी, जबकि स्पार्टा में राजतन्त्रात्मक शासन व्यवस्था विद्यमान थी। एथेन्स ने व्यापार के क्षेत्र में बहुत अधिक प्रगति करली थी। यह बात स्पार्टा के लोगों को बुरी लगी। स्पार्टावासी सादा जीवन और अनुशासन पर बहुत अधिक जोर देते थे जबकि एथेन्स में ज्ञान, दर्शन, साहित्य, कला आदि पर भी विशेष जोर दिया जाता था। इस प्रकार स्पस्ट है कि ये दोनों संघ एक दूसरे के विपरीत थे, और उनमें युद्ध अवश्यम्भावी था।

2. युद्ध का दूसरा कारण पेरिक्लीज की साम्राज्यवादी नीति थी। जब पेरिक्लीज ने एथेन्स के बाहर साम्राज्य विस्तार किया और एक विशाल साम्राज्य का निर्माण किया। एथेन्स जब नगर राज्य से शक्तिशाली साम्राज्य के रूप में परिवर्तित हो गया तो इससे स्पार्टा को भय उत्पन्न हुआ और यही आगे चलकर दोनों के बीच संघर्ष का कारण बना।
3. तीसरा कारण यह था कि डेलियन संघ के सदस्य एथेन्स की अधीनता में स्वतन्त्र होना चाहते थे इसलिए उन्होंने स्पार्टा से गुप्त सहायता प्राप्त करने का प्रयास किया।
4. चौथा कारण यह था कि एथेन्स और स्पार्टा दोनों ही महत्वाकांक्षी राज्य थे।
5 पांचवां कारण यह था कि पेरिक्लीज के समय में एथेन्स ने प्रत्येक क्षेत्र में आश्चर्य जनक प्रगति की, जिससे वह यूनानी सभ्यता और संस्कृति का केन्द्र बन गया। स्पार्टा वासी एथेन्स की इस प्रगति से ईर्ष्या करने लगे।
6. छठा कारण यह था कि जब एथेन्स ने कोरिन्थ के कोसिरा नामक प्रदेश पर अधिकार कर लिया तो कोरिन्थ ने स्पार्टा से सहायता देने के लिए प्रार्थना की। स्पार्टा इस उत्तम अवसर को अपने हाथ से खाली नहीं जाने देना चाहता था।
7. सातवां कारण एथेन्स और स्पार्टा के बीच (459-446 ई. पूर्व) अनिर्णित युद्ध था।

8 परिक्लीज के समय में जब डेलियन संघ के धन का उपयोग एथेंस के निर्माण कार्यों के लिये किया जाने लगा तो इस संघ के सदस्य राज्य एथेंस से बहुत नाराज हुए और स्पार्टा भी एथेंस की सुन्दरता से ईर्ष्या करने लगा।

9 परिक्लीज ने 433–32 ई पूर्व में यह आदेश दिया कि डेलियन संघ का कोई भी सदस्य मेगारा के राज्य से व्यापार नहीं करेगा। स्पार्टा ने इस आदेश को अपनी स्वतन्त्रता के लिये चुनौती माना और एथेन्स के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दी।

10 युद्ध का तत्कालीन कारण यह था कि जब थीबिया ने एथेंस के मित्र प्लटिया पर आक्रमण कर दिया तो स्पार्टा ने थीबिया का साथ दिया।

युद्ध की घटनायें

एथेन्स और स्पार्टा के बीच में यह सघर्ष 431 ई० पूर्व, से 404 ई पूर्व तक चलता रहा। स्पार्टा एक स्थल शक्ति थी जबकि एथेन्स एक जल शक्ति था। 431 ई पूर्व में दोनो के बीच युद्ध प्रारम्भ हो गया। परन्तु 430 ई पूर्व में एथेन्स के शासक पेरिक्लीज की मृत्यु हो जाने और वहाँ प्लेग फैल जाने से एथेंस की शक्ति को आघात पहुचा। 447 ई पूर्व में स्पार्टा की सेना ने प्लटिया पर अधिकार कर लिया। 425 ई पूर्व में एथेंस की सेना ने मेसोनिया में पाइलोस पर अधिकार कर लिया। इसके पश्चात् स्पार्टा की सेना ने प्रसिद्ध यूनानी इतिहासकार थ्यूसीडाइडीज को पराजित कर एम्फीपोलिस नगर पर अधिकार कर लिया। अभी तक किसी भी दल को युद्ध में पूर्ण सफलता प्राप्त नहीं हुई थी। अन्त में 421 ई पूर्व दोनो ने निकीयास नामक स्थान पर 50 वर्ष के लिये एक शान्ति सधि पर हस्ताक्षर किये। इस सधि के अनुसार दोनो ने यथा-स्थिति को स्वीकार कर लिया।

इस सधि के पाच वर्ष पश्चात् ही युद्ध पुन शुरू हो गया। 416 ई पूर्व में एथेन्स ने मेलोस को बलपूर्वक अपना उपनिवेश बना लिया और उसे डेलियन सघ का सदस्य भी बनाया गया। इसी समय सेगेस्टा और सीरेक्यूज के बीच में युद्ध छिड गया। सगेस्टा ने एथेंस से सहायता की प्रार्थना की इस पर एथेंस के चार सेनापति सेनासहित सेगेस्टा की सहायता के लिये भेजे गये परन्तु उनको असफलता का मुह देखना पडा। इससे एथेन्स की प्रतिष्ठा को आघात पहुचा। अब एथेन्स के अधिन उपनिवेशो में विद्रोह शुरु हो गये। फारस ने भी स्पार्टा को सहायता देना स्वीकार कर लिया। ऐसी परिस्थितियो में एथेंस में आतरिक क्रान्ति हुई और परिषद् ने शासन सचालन का कार्य अपने हाथो में लिया। थीबीया के नगर राज्य ने भी स्पार्टा को सहायता देना स्वीकार कर लिया।

इसका परिणाम यह हुआ कि स्पार्टा की सेना ने 407 ई पूर्व म एथेन्स की सेना को युद्ध में पराजित किया । 405 ई पूर्व में हेलेस्पाट के युद्ध में स्पार्टा न एथेन्स को निर्णायक रूप से पराजित कर दिया और 404 ई पूर्व म एथन्स न आत्म समर्पण कर दिया ।

इस युद्ध मे विजय प्राप्त करने के पश्चात् स्पार्टा न एथेन्स पर अधिकार कर लिया । स्पार्टा का एथेन्स पर शासन 404 ई पूर्व से 307 ई पूर्व तक रहा । इसके पश्चात् स्पार्टा के शासक ने भी साम्राज्यवादी नीति अपनाई और आस-पास के प्रदेशों पर बल पूर्व अधिकार करना शुरू किया । इसका परिणाम यह हुआ कि एथन्स ने थीबिया की सहायता से स्पार्टा को पराजित कर दिया ।

युद्ध के परिणाम

इस युद्ध के प्रमुख परिणाम निम्नलिखित है—

1 इस युद्ध म एथेन्स की पराजय होने से अन्तराष्ट्रीय स्तर पर उसकी प्रतिष्ठा को बड़ा धक्का लगा ।
2 दोनो नगर राज्यो के युद्ध के कारण यूनान कमजोर हो गया तथा तीसरी शक्ति को यूनान पर आक्रमण करने का मौका मिल गया ।
3 इस युद्ध से एथन्स की पराजय हो जाने से स्पार्टा ने उन पर अधिकार कर लिया और एथेन्स को एक अपमानजनक सधि पर हस्ताक्षर क लिये बाध्य किया । इस सधि के अनुसार एथेन्स नगर की सुरक्षा के लिय बनाई गइ दीवार को नष्ट कर दिया गया । उसके कई जहाज स्पार्टा ने छीन लिये और उसको स्पार्टा की अधीनता स्वीकार करनी पडी । स्पार्टा ने एथेन्स की शासन व्यवस्था के सचालन क लिय तीस सदस्यो की एक परिषद् की स्थापना की । यह परिषद् एथेन्स के नागरिको पर अत्याचार करती थी ।

थीब्ज का उत्कर्ष

स्पार्टा अपने प्रभुत्व काल मे भी निरन्तर युद्ध करता रहा । फारस के शासक साइरस ने गृह युद्ध से निपटने के लिये स्पार्टा स सहायता मांगी । स्पार्टा ने उसकी सहायता क लिये जेनोफेन के नेतृत्व में दस हजार सैनिक भेजे लेकिन अचानक ही साइरस की मृत्यु हो गई । इसलिये स्पार्टा की सेना एशिया माइनर में फस गई और वह फारसी तत्वो से मुक्त होकर यूनान जाने के प्रयास करती रही । अब फारस ने एशिया माइनर पर अधिकार कर लिया ।

स्पार्टा और फारस के युद्धा का लाभ एथेन्स ने उठाया । उसने थीब्ज की सहायता स 371 ई पूर्व मे स्पार्टा को युद्ध म पराजित किया फिर, एथेन्स,

स्पार्टा और थीब्ज के बीच सन्धि के लिये एक सम्मेलन बुलाया गया। इस सम्मेलन में थीब्ज के भाग नहीं लेने के कारण स्पार्टा ने फिर युद्ध शुरु कर दिया। इसी समय थीब्ज की शक्ति बढने लगी उसके सेनापति एपीमीनोडास ने मेसीडोनिया पर अधिकार कर लिया। थीब्ज की बढती हुई शक्ति के विरुद्ध। ऐथेन्स और स्पार्टा ने समझौता कर लिया और दोनों ने थीब्ज के विरुद्ध। युद्ध घोषित कर दिया। थीब्ज ने इन दोनो राज्यो की सेनाओं को युद्ध में बुरी तरह पराजित किया। इसके पश्चात् तीनो राज्यो ने आपस मे संघर्ष कर यूनान को कमजोर बना दिया। इसका लाभ मकदूनिया ने उठाया।

मकदूनिया का उत्कर्ष

यूनान के उत्तर पूर्व मे मकदूनिया का राज्य था। 359 ई पूर्व में फिलिप यहा का शासक बना। 354 ई पूर्व में डेलियन संघ का पतन हो गया और यूनान के स्पार्टा और एथेन्स के बीच गृह युद्ध शुरु हो गया। इसका लाभ उठा कर मकदूनिया के शासक फिलिप ने थैसले, थेस, कलसीडिस आदि प्रदेशो पर अधिकार कर लिया। इसके बाद 346 ई पूर्व में वह मध्य यूनान के एम्पीकाट योनिक संघ का अध्यक्ष भी बन गया। जब एथेन्स और थीब्ज की सेना ने संयुक्त रूप से फिलिप का विरोध किया तो उसने करोनिया के मैदान मे इन दोनो सेनाओं को बुरी तरह मे पराजित किया। इसके पश्चात् फिलिप ने 338 ई पूर्व में यूनान पर अधिकार कर लिया, लेकिन 336 ई पूर्व में उसकी हत्या कर दी गई।

सिकन्दर महान का उत्थान—

फिलिप की मृत्यु के पश्चात उसका पुत्र सिकन्दर गद्दी पर बैठा। उसके शासक बनते ही यूनान मे विद्रोह हुए, परन्तु उसने उनको बुरी तरह से कुचल दिया। 334 ई पूर्व तक सिकन्दर का यूनान पर पूर्ण रूप से अधिकार हो गया। वह अब 30,000 पैदल और 5000 घुड़सवारों को लेकर फारस पर विजय प्राप्त करने के लिये चल पडा। उसने 333 ई पूर्व में फारस के शासक दारा तृतीय इसूस को मैदान में बुरी तरह पराजित किया और फारस पर अधिकार कर लिया। 331 ई पूर्व में सिकन्दर ने मिश्र पर भी अधिकार कर लिया और वहा पर अपने नाम पर एक सिकन्दरिया नगर की स्थापना की। इसके पश्चात् सिकन्दर ने अफगानिस्तान और आक्सस नदी के प्रदेशो पर अपना अधिकार किया और तक्षशिला के शासक के निमन्त्रण पर भारत आ पहुंचा। यहा पर झेलम और चुनाव के बीच के प्रदेशो के शासक पुरु ने 326 ई पूर्व सिकन्दर से युद्ध किया परन्तु उसकी पराजय हुई और सिकन्दर की शानदार विजय हुई। युद्ध मे विजय प्राप्त करने के पश्चात् वह पुरु की वीरता से बहुत प्रभावित हुआ और उसने उसका राज्य वापस लौटा दिया। सिकन्दर व्यास नदी के आगे प्रदेशों पर

विजय प्राप्त करना चाहता था, लेकिन उसकी सेना में अब विद्रोह होने लगे। अतः वह सेना सहित यूनान के लिए चल पड़ा। मार्ग में बेबीलोन नामक स्थान पर 32 वर्ष की अवस्था में उसकी मृत्यु हो गई। उसकी मृत्यु के पश्चात् उसके साम्राज्य का विघटन शुरु हो गया। सिकन्दर ने अपने विजित प्रदेशों में यूनानी सभ्यता और संस्कृति का प्रसार किया। और पूर्वी सभ्यता की भी कई विशेषताओं को ग्रहण किया।

यूनान में टालमियों का शासन—

सिकन्दर के कोई पुत्र नहीं होने से उसकी मृत्यु के पश्चात् गृह युद्ध प्रारम्भ हो गया। इस समय टोलमी ने यूनान पर अधिकार कर लिया। आश्चर्य इस बात का है कि निरन्तर आक्रमणों के पश्चात् भी यूनानी सभ्यता निरन्तर विकास करती रही।

हेलेनिस्टिक वंश का शासन—

मकदूनिया के शासक फिलिप ने मेसोडोनिया पर विजय प्राप्त करने के पश्चात् सम्पूर्ण यूनान पर अधिकार कर लिया। फिलिप ने यूनान में हेलेनिस्टिक वंश की नींव डाली। इस वंश के शासक 320 ई० पूर्व से 146 ई पूर्व तक यूनान में शासन करते रहें। फिलिप ने पारस पर अधिकार कर लिया, लेकिन 336 ई पूर्व में उसके पुत्र सिकन्दर ने उसका वध कर दिया और मेसोडोनिया का शासक बना। वह विश्व विजय करना चाहता था। इसलिये शासक बनने के पश्चात् उसने एक शक्तिशाली सेना का संगठन किया और उसकी सहायता से मिश्र सीरिया, फारस और भारत के आम्भी पोरस और कठों के प्रदेशों पर विजय प्राप्त की। सिकन्दर जब भारत से यूनान को लौट रहा था, तब सूसा नगर में 323 ई० पूर्व उसकी मृत्यु हो गई। उसने 13 वर्ष तक शासन काल में संसार में विशाल साम्राज्य स्थापित किया था। सिकन्दर की मृत्यु के साथ ही यूनान का विशाल साम्राज्य पतन की ओर अग्रसर होने लगा।

हेलेनिस्टिक सभ्यता का वर्णन—

हेलेनिस्टिक सभ्यता का सिकन्दर के समय से लेकर रोमन विजयों तक निरन्तर विकास होता रहा। इस काल में यूनानी सभ्यता और संस्कृति का प्रसार पूर्वी प्रदेशों में हुआ। इसका परिणाम यह हुआ कि पूर्वी व पश्चिमी सभ्यता का शानदार समन्वय हुआ। इस समय यूनानी सभ्यता अपने विकास की चरम सीमा पर थी। प्रोफेसर टर्नर का मानना है कि "हेलेनिस्टिक युग में पूर्व और पश्चिम एक दूसरे से मिले यद्यपि किसी ने एक दूसरे के ऊपर सास्कृतिक राज्य स्थापित नहीं किया, तथापि प्रत्येक एक दूसरे के अधिक निकट आये।" प्रो० मलवर्ट ने लिखा है कि" पाश्चात्य सभ्यता के इतिहास में यह सम्पूर्ण युग प्रमुख

महत्व का है, क्योंकि पेरिक्लीयन संस्कृति ने नही वरन् हेलेनिस्टिक संस्कृति ने रोमन सभ्यता के लिये पृष्ठ भूमि प्रस्तुत की, और ईसाई धर्म के विकास के लिये भूमि तथा वातावरण प्रदान किया।"

हेलेनिस्टिक सभ्यता का वर्णन निम्न प्रकार है—

1 राजनीतिक दशा—

इस युग म यूनान का एक विशाल भू-भाग पर अधिकार रहा। सिकन्दर ने अपनी विजयो द्वारा एक विशाल साम्राज्य का निर्माण किया। उसका साम्राज्य एजियन सागर स सिन्धु नदी तक फैला हुआ था। सिकन्दर की मृत्यु के पश्चात यूनानी साम्राज्य तीन भागो में विभाजित हो गया, और राम क उत्कर्ष म इन राज्यो की भी समाप्ति हो गई।

2 आर्थिक दशा—

इस युग म यूनान की आर्थिक दशा काफी अच्छी थी। इस समय यूनान की साम्राज्य बहुत दूर तक फैला हुआ था। इसलिये व्यापार के क्षेत्र म भी बहुत अधिक विकास हुआ। इस युग का प्रसिद्ध व्यापारिक बन्दरगाह एलेक्जेंड-रिया पर भी यूनान का अधिकार था। सिकन्दर न सिक्को का प्रचलन किया और यूनान मे कई बैंक स्थापित किये। इससे व्यापार मे काफी सुविधा हो गई। अब कोई भी व्यापारी बैंक से पैसे उधार लेकर व्यापार कर सकता था। यूनान मे उद्योग धधो के साथ साथ कृषि के क्षेत्र मे भी बहुत अधिक विकास हुआ।

3 धार्मिक जीवन—

इस युग मे यूनान मे सर्वेश्वर वाद का सिद्धान्त भी प्रचलित हुआ। यहा के धर्म पर पूर्व के धर्मों का बहुत अधिक प्रभाव पडा। अब यूनान के लोग रहस्यवादी विचार धारा' पाप और मोक्ष आदि बातो म विश्वास करन लगे।

4 दर्शन—

इस युग म दर्शन के क्षेत्र मे बहुत अधिक प्रगति हुई। यूनान के लोगो ने भारत से प्रभावित हाकर आत्मा के आनद पर विचार करना शुरू किया। इस काल के प्रमुख दार्शनिक स्टोइक, इपक्यूरस तथा सिनिक्स आदि थ, जिन्होंने दर्शन के क्षेत्र म महत्वपूर्ण रचनायें रची। स्टोईक नामक दार्शनिक न बताया कि मनुष्य को बुराई पर विजय प्राप्त कर लेना चाहिये और एक दूसरे के साथ भाई चारे का व्यवहार करना चाहिये। ईपक्यूरस नामक दार्शनिक न बताया कि इन्द्रियो पर नियन्त्रण से ही मनुष्य को सच्चा सुख प्राप्त होता है। उसके अनुसार सच्चा सुख वही है जिसको प्राप्त करन से मनुष्य क हृदय मे ग्लानि उत्पन्न नही होती। उसने सुख को जीवन का आदि व अन्त माना है। सिनिक्स नामक दार्शनिक ने उस समय के शास्त्रों और अमीर लोगो का मजाक उडाया।

5 साहित्य—

इस युग म साहित्य के क्षेत्र मे नाटक एव कविता आदि म बहुत अधिक विकास ग्रा । इस काल का प्रसिद्ध नाटक कार मेमेन्दर था, जिसने सुखान्त नाटक लिखे । म युग का प्रसिद्ध कवि थियोक्रेटिस था जिसने अपनी कविता म प्रकृति के दृश्यो का सुदर चित्रण किया है। इस काल का दूसरा प्रसिद्ध पोलीबियस था, जिसने वाथ'ज र पूर्वी देशो पर रोम की विजय का सुन्दर वर्णन किया है।

6 कला—

इस समय भवन निर्माण कला के क्षेत्र म भी बहुत विकास हुआ । इस युग म विशाल महलो और पुस्तकालयो का निर्माण हुआ और मूर्तिकला के क्षेत्र म भी बहुत प्रगति हुई। इस समय का प्रसिद्ध मूर्तिकार लिसपस था, जिसने अनेक मूर्तियो का निर्माण किया । इस काल की मूर्तिकला की विशेषता यह थी कि उनमे सौन्दर्यता के साथ वदना सुख आदि भावो का भी प्रदर्शन किया जाता था।

7 विज्ञान—

इस युग म विज्ञान के क्षेत्र मे बहुत अधिक विकास हुआ। इस समय के प्रमुख गणितज्ञ यूक्लिड' एपोलोनियस हिपाकारस एव हेरन आदि थ' यूक्लिड और एपोलोनियस ने ज्यमिति शास्त्र पर नई खोज की। हिपाकारस ने ट्रिगनोमेट्री के नय सिद्धान्तो का प्रतिपादन किया । हेरन न बीज गणित के साधारण नियमो की खोज की । इस प्रकार इस समय गणित के क्षेत्र म बहुत अधिक विकास हुआ । इस समय आर्कमिडीज ने भौतक विज्ञान के क्षेत्र म नई खोज की और घनत्व क सिद्धान्त का अविष्कार किया।

इस काल म चिकित्सा शास्त्र के क्षेत्र म काफी विकास हुआ । इस समय का प्रसिद्ध चिकित्सक हरोफिलीस था, जिसन शरीर विज्ञान क क्षेत्र म कई महत्वपूर्ण खोजे की । हेरोक्लीटीज न सर्वप्रथम यह खोज की कि पृथ्वी अपनी धुरी पर घूमती है तथा अन्य ग्रह उसके चारो ओर चक्कर लगाते है एरिस्टारकस न बताया कि पृथ्वी और अन्य ग्रह सूर्य के चारो ओर चक्कर लगाते है। इस समय वनस्पति विज्ञान क क्षेत्र म भी बहुत अधिक विकास हुआ । अरस्तु क शिष्य थियोफ्रेस्टस न पौधो का इतिहास लिखा । आर्कमीडीज ने वाष्प चक्की का अविष्कार किया । टसीबियस न जल घडी और अग्नि इजन का आविष्कार किया । इस युग म भूगोल विद्या क क्षेत्र म भी बहुत अधिक विकास हुआ । डाकेरवस न सब कि प्रथम ससार का एक मानचित्र बनाया । पाइथियस ने सर्वप्रथम यह खोज की समुद्र म ज्वार भाटा चन्द्रमा के कारण आता है।

यूनान की सभ्यता का विवरण

यद्यपि यूनान म होमर कालिन सभ्यता, स्पार्टा, कोरिन्थ एथन्स आदि सभ्यताएँ विकसित हुई, लेकिन एथेन्स ने शासन, शिक्षा, साहित्य, विज्ञान और

कला व दर्शन के क्षेत्र में जितनी अधिक प्रगति की उतनी अन्य सभ्यतायें नहीं कर सकीं। यूनान की सभ्यता का वर्णन निम्न प्रकार से किया जा सकता है—

1. प्रशासन व्यवस्था—

यूनान में उस समय 150 नगर राज्य थे। प्रत्येक नगर राज्य में तीन प्रकार के नागरिक होते थे। पहला, स्वतन्त्र नागरिक, दूसरा विदेशी नागरिक और तीसरा गुलाम। स्वतन्त्र नागरिकों को ही शासन में भाग लेने का अधिकार था, एवं उन्हें राज्य की ओर से मौलिक अधिकार भी प्रदान किये जाते थे। उस समय अलग अलग राज्यों में अलग अलग शासन व्यवस्था विद्यमान थी। एथेन्स में प्रत्यक्ष प्रजातन्त्र था, जबकि स्पार्टा में राजतन्त्रात्मक शासन व्यवस्था थी। हम पहले एथेन्स की शासन व्यवस्था का वर्णन करेंगे—

एथेन्स

एथेन्स में प्रत्यक्ष प्रजातन्त्रात्मक शासन व्यवस्था विद्यमान थी, परन्तु गुलामों विदेशी नागरिकों और स्त्रियों को राजनैतिक अधिकार प्राप्त नहीं थे। एथेन्स में प्रत्येक नागरिक राजनीतिक कार्यों में भाग लेता था। वहां तीन दल थे जिनका निर्माण वर्ग के आधार पर किया गया था। श्रमिकों एवं कारीगरों के दल को "तट" कुलिन वर्ग के व्यक्तियों के दल को "मैदान" और किसानों के दल को 'पहाड' कहते थे। यहां पर प्रत्येक स्वतन्त्र नागरिक को भाषण देने और विचार प्रगट करने की पूर्ण स्वतन्त्रता थी। आर्कन पद पर पहले कुलीन वर्ग के व्यक्ति ही नियुक्त किये जा सकते थे, लेकिन पेरिक्लीज ने इसमें सुधार किया और अब जनसाधारण का कोई भी व्यक्ति इस पद पर नियुक्त किया जा सकता था। एथेन्स *में प्रत्यक्ष प्रजातन्त्र था और प्रत्येक नागरिक शासन के कार्य में भाग लेता था*

एथेन्स में जनसभा (एक्लेसिया) के सदस्यों का चुनाव वहां के नागरिकों के द्वारा किया जाता था। यहां के प्रत्येक नागरिक एसेम्बली (जन सभा) का सदस्य बन सकता था। इसकी बैठक सप्ताह में एक बार बुलाई जाती थी, जिसमें किसी भी समस्या का निर्णय बहुमत के आधार पर किया जाता था। एसेम्बली के द्वारा पास किये गये कानूनों पर कौन्सिल अपनी स्वीकृति देने के लिये बाध्य थी। एथेन्स के सभी नागरिकों को सभा में भाग लेने तथा शासन सम्बन्धी मामलों पर अपना मत देने का अधिकार था। जन सभा के अलावा दूसरी संस्था बाउल थी जिसमें 500 सदस्य होते थे। दोनों ही संस्थायें ज्यूरी और अन्य समितियों की सहायता से शासन कार्य चलाती थी। एथेन्स की सेना और विदेश नीति का निर्धारण दस जनरलों की एक संस्था "स्ट्रेटोगोई" के द्वारा किया जाता था। जनरलों का चुनाव एसेम्बली के द्वारा एक वर्ष के लिये किया जाता था। एच जी वेल्स ने लिखा है कि "वहां की समस्याओं का अन्तिम निर्णय न तो राजा करता

था और न पुरोहित उसका निर्णय मुख्य पुरुषों की परिषद् अथवा जन सभायें करती थी।''

स्पार्टा—

स्पार्टा में निरकुंश राजतन्त्रात्मक शासन व्यवस्था विद्यमान थी। स्पार्टा के संविधान का निर्माण लाइकगरस नामक व्यक्ति ने किया।- इस नगर में दो राजा शासन करते थे। दोनो ही शासक सीनेट (गेरूसिया) की सहायता से शासन चलाते थे। इसके सदस्यों की संख्या 28 थी। सीनेट के सदस्य 60 वर्ष से ऊपर आयु वाले व्यक्ति ही बन सकते थे। सीनेट की अनुमति के बिना दोनो ही शासक किसी भी शक्ति से युद्ध या संधि नहीं कर सकते थे। इसके अतिरिक्त शासकों की सहायता के लिये पांच सदस्यों की एक संस्था ''एफरो'' थी। अपोलो नामक एक अन्य संस्था और थी जिसके सदस्यों की संख्या 800 थी। इसका सदस्य तीस वर्ष की आयु से ऊपर वाला व्यक्ति ही बन सकता था।

2. सामाजिक जीवन—

(1) समाज का विभाजन—यूनान का समाज चार वर्गों में विभाजित था। पहला नागरिक दूसरा कृषक तीसरा दास और चौथा विदेशी नागरिक। पहला वर्ग नागरिकों का था और उन्हें राज्य की ओर से सभी प्रकार के राजनैतिक अधिकार और मौलिक अधिकार प्राप्त थे। राज्य की दृष्टि में सभी नागरिक बराबर थे फिर भी समाज में कुलीन वर्ग के व्यक्तियों का प्रभाव अधिक था। दूसरा वर्ग किसानों का था जिनको राजनीतिक अधिकार तो प्राप्त थे परन्तु उनका शासन पर कोई विशेष प्रभाव नहीं था। तीसरा वर्ग दासों का था, जिनको राजनैतिक और मौलिक अधिकार प्राप्त नहीं थे। यूनान में जिस व्यक्ति के पास जितने ज्यादा दास होते थे वह उतना ही प्रतिष्ठित व्यक्ति समझा जाता था। यूनानी लोग दासों से खेती का काम और घर का काम करवाते थे। यूनान में दासों पर उसके मालिक के द्वारा बहुत अधिक अत्याचार किये जाते थे। अतः वहां दासों की दशा बहुत शोचनीय थी। एथेन्स में अन्य नगर राज्यों की अपेक्षा दासों के साथ अच्छा व्यवहार किया जाता था। मेकनेल बर्नस ने लिखा है कि ''कुल मिलाकर उनके साथ बहुत अच्छा व्यवहार किया जाता था और वफादारी एवं पूर्ण सेवा पर उन्हें पुरस्कार स्वरूप स्वतन्त्र कर दिया जाता था। वे वेतन दर पर काम कर सकते थे और सम्पत्ति रख सकते थे और उनमें से कुछ महत्वपूर्ण जन अधिकारी के पद पर भी काम करते थे जैसा कि बैंकों के मैनेजर।''[1] उस समय कोई भी दास अपने मालिक को धन देकर और और मल्ल युद्ध में विजय प्राप्त कर दासता से मुक्ति प्राप्त कर सकता था। चौथा वर्ग विदेशियों का था

1 मेकनेल बर्नस—वैस्टर्न सिवलीजेशन्स, पृष्ठ 158

जिनको राजनैतिक अधिकार प्राप्त नहीं थे। इस वर्ग के लोगों की संख्या काफी कम थी।

(ii) स्त्रियों की दशा—यूनान के समाज में पितृ सत्तात्मक परिवार थे। इसलिये समाज में स्त्रियों की दशा अच्छी नहीं थी। स्त्रियों को वहां राजनैतिक और सामाजिक अधिकारों से वंचित रखा गया था। उन्हें घर की चार दीवारी व पुरुष के अधीन रह कर अपना जीवन व्यतीत करना पड़ता था। वे सार्वजनिक समारोह में भाग नहीं ले सकती थी। उस समय स्त्रियों में पर्दा प्रथा प्रचलित थी। विल ड्यूरेन्ट ने लिखा है कि "औरतों का प्रशिक्षण अत्यन्त चतुराई से होता था। उन्हें कम देखने की कम सुनने की और कम बोलने की शिक्षा दी जाती थी। पेरिक्लीज ने कहा था कि "नारी की ख्याति इसी में है कि अच्छे या बुरे के लिये उसका नाम आदमी के होंठों पर कम से कम आए।" इतिहासकार बीच ने लिखा है कि 'नारी के लिये विवाह के सिवाय कोई विकल्प नहीं था, उसे कानूनी स्वतन्त्रता कभी नहीं दी गई[1]। शादी का दिन उसके जीवन का महानतम दिवस था, अपने नये घर में वह गुलामों की देखरेख करती थी। कातने और बुनने में अपना समय लगाती और अपने वस्त्र व जेवरों का प्रयोग अपने स्वामी को मोहित करने को करती थी।"[2] माता पिता ही लड़के लड़की का विवाह निश्चित करते थे। विवाह से पहले लड़के लड़की आपस में निसंकोच मिल सकते थे। यदि किसी लड़के की किसी लड़की से सगाई हो जाती थी, तो वह रात को उसके पिता के घर से लड़की का अपहरण कर लेता था। यदि उस समय उसके परिवार के सदस्य जग जाते तो उस लड़के को उनसे युद्ध करना पड़ता था। यदि वह उस युद्ध में सफलता प्राप्त कर लेता तो अगले दिन उस लड़की का विवाह लड़के से कर दिया जाता था। किसी बालक का जन्म होने पर पहले तो उसे शराब से नहलाया जाता था। उसके बाद उसे तीन दिन के लिये अकेले को गुफा में छोड़ दिया जाता था। यदि वो बालक तीन दिन बाद जीवित मिलता तो उसे वीर पुरुष समझा जाता था।

(iii) खान पान एवं रहन सहन—यूनानी लोग शाकाहारी और मांसाहारी दोनों ही प्रकार का भोजन करते थे। यहां के लोग शराब बहुत अधिक पीते थे। उन्हें शहद खाने का भी बहुत शौक था। अमीर लोग मांस, मछली आदि खाते थे और शराब भी पीते थे। गरीब लोग जौ की रोटी, सब्जी और मछली खाते थे।

यूनानी लोग सादे कपड़े पहनते थे। उस समय पुरुष और स्त्रियां दोनों ही दो पोशाक पहनते थे। अमीर पुरुष और स्त्रियां रेशमी वस्त्र पहनते थे।

1 बीच, डब्ल्यू एन हिस्ट्री ऑफ दी वर्ल्ड, पृष्ठ 135

स्त्रिया अपने चेहरे पर जुल्फों की लटें निकालती थी और बालो का जूडा बनाती थी।

(iv) **मनोरजन के साधन**—यूनानी लोगो मे मनोरजन पर बहुत जोर दिया जाता था। वहा मल्ल-युद्ध, कुश्ती, नृत्य, आखिलग, सगीत, रथ की दौड आदि मनोरजन के मुख्य साधन थे। यूनान में धार्मिक उत्सवो पर कई प्रकार की प्रतियोगितायें आयोजित की जाती थी। स्पार्टा मे प्रति चौथे वर्ष ओलम्पिक प्रतियोगिता आयोजित की जाती थी। ओलम्पिक खेल स्पार्टा की विश्व को एक महत्त्वपूर्ण देन है। इसके अलावा नाटक भी यूनानियो के मनोरजन का बहुत बडा साधन था। एथेन्स के प्रसिद्ध थियेटर डायोनिसस मे नाटक खेले जाते थे। जहा हजारो व्यक्ति नाटको को देखने के लिये आते थे।

3 **आर्थिक व्यवस्था**—

(i) **कृषि तथा पशुपालन**—यूनानियों का मुख्य व्यवसाय कृषि तथा पशुपालन था। यहा की मुख्य उपज गेहू जौ, अजीर और जैतून आदि थी। यहा के निवासी भेड, बकरी, गाय और घोडे आदि जानवरो को पालते थे।

(ii) **उद्योग धधे**—उद्योग धधो के क्षेत्र मे यूनानी लोग अधिक उन्नति नही कर सके। यहा के लोग मिट्टी के बर्तन, अस्त्र शस्त्र और फर्नीचर आदि बनाते थे। जैतून से तेल बनाते थे। और अगुर से शराब बनाते थे। इसके अतिरिक्त यहा लकडी की नावें भी बनाई जाती थी।

(iii) **व्यापार**—

यूनान मे व्यापार के क्षेत्र मे काफी विकास हुआ। इसका कारण यह था कि एक तो उसकी जहाज रानी सुदृढ थी और दूसरा उन्होंने अपने उपनिवेश स्थापित किये थे, जिससे व्यापार के क्षेत्र म काफी उन्नति हुई। यूनान के मिश्र, मैसोपोटामिया, स्पेन, फ्रास और इटली आदि देशो के साथ व्यापारिक सम्बन्ध थे। यहा के व्यापारी मिश्र और मैसोपोटामिया से खाद्य सामग्री और रेशम का कपडा आदि वस्तुए आयात करते थे, तथा पूर्वी देशो से बढिया वस्त्र, मिर्च मसालें और सौन्दर्य प्रसाधन की सामग्री का आयात करते थे। इसके बदले मे यूनानी व्यापारी मिट्टी के बर्तन, शराब, जैतून का तेल, लकडी का फर्नीचर आदि वस्तुएे निर्यात करते थे। यूनान से अधिकाश व्यापार विदेशी नागरिक ही करते थे। उस समय प्रत्येक नगर, राज्य की राजधानी एक बडी व्यापारिक मडी थी। विदेशी व्यापार से यूनान के राज्यों की आय से काफी वृद्धि हुई। यूनान मे मुद्रा प्रणाली के आविष्कार और बैंक प्रथा के प्रचलन से भी व्यापार को काफी प्रोत्साहन मिला। अपोलो का मन्दिर जो यूनान का एक प्रसिद्ध अन्तर्राष्ट्रीय बैंक था। उस समय के व्यापारी इस मन्दिर से ब्याज पर ऋण लेकर व्यापार करते थे। यूनान मे जीविकोपार्जन की समस्या नही थी और आर्थिक दृष्टि से काफी समृद्ध और सम्पन्न था। यूनान के समृद्ध व हानि के कारण यहा सांस्कृतिक क्षेत्र मे बहुत अधिक विकास हुआ।

4 धार्मिक जीवन—

यूनान के लोग बहुदेववादी और मूर्ति पूजक भी थे। यहां के लोग प्राकृतिक शक्तियो की भी उपासना करते थे। उनका यह मानना था कि देवता अमर होते हैं और वे ओलम्पिस पर्वत पर निवास करते हैं। उनके मुख्य देवता जियस (इन्द्र आकाश का देवता, अपोला) सूर्य (हेरा) यह जियसी की पत्नी थी और विवाह की देवी थी। (एथिना,) जियस की पुत्री थी और नगर की रक्षक देवी थी। अफ्रोडाइट (प्रेम और सुन्दरता की देवी) हर्मस (व्यापार एव वाणिज्य का) पोसीडॉन (समुद्र का) डोमीटर (अन्न की देवी) मार्स (युद्ध का) एव डायेनिसस (मन्दिर का) आदि थे।

यूनान मे यदि कोई भी व्यक्ति धार्मिक परम्पराओ का उल्लघन करता था, तो उसे मृत्यु दड दिया जाता था। धार्मिक कार्य पुरोहितो द्वारा सम्पादित किय जाते थे। उस समय वसन्त के त्योहार पर शराब के देवता डायोनिसस को खुश करने के लिये नाटक प्रतियोगिता आयोजित की जाती थी। यह नाटक डायोनिसस थियेटर मे एक सप्ताह तक खेले जाते थे, जहा हजारो लोग देखने के लिये आते थे। उस समय प्रमुख देवताओ के सम्मान मे राष्ट्रीय स्तर पर धार्मिक उत्सव मनायें जाते थे। ऐसे अवसर पर राज्य सरकार की ओर से सारे नगर मे छुट्टिया घोषित कर दी जाती थी। जियस देवता को खुश करने के लिये प्रति चौथे वर्ष ओलम्पिक खेल आयोजित किय जाते थे। अपोलो देवता को खुश करने के लिये पीथियन उत्सव मनाया जाता था। इन धार्मिक उत्सवो के अवसरो पर मल्लयुद्ध, बाक्सिग सगीत नृत्य आदि की प्रतियोगिताऐ आयोजित की जाती थी। इन प्रतियोगिताओ, के समय यूनान मे आतरिक युद्ध स्थगित कर दिये जाते थे, और आपस म मतभेद को भूल कर सभी नगर राज्य इन प्रतियोगिताओ म भाग लेते थे। इन प्रतियोगिताओं मे प्रथम स्थान प्राप्त करने वालो का भारी सम्मान होता था। देवताओ को खुश करने के लिये वस्तुये भेट स्वरूप चढाई जाती थी। कई बार पशु की बलि भी दी जाती थी। इस अवसर पर सगीत और नृत्य भी आयोजित किये जाते थे।

यूनानी लोग "औरेकल" नामक स्थान पर देवताओ के द्वारा की जाने वाली भविष्यवाणी पर बहुत अधिक विश्वास करते थे। इसके अतिरिक्त यहा के लोग भूत—प्रेत, तत्र और जादू टोना आदि अधविश्वासो मे भी विश्वास करते थे। यहा के लोग परलोक मे भी विश्वास करते थे। उनका यह मानना था कि यदि व्यक्ति अच्छे कर्म करता है तो उसे स्वर्ग म भेजा जाता है और यदि बुरे कर्म करता है तो उसे नरक मे भेजा जाता है। इस प्रकार यहा के लोग स्वर्ग—नरक पाप और पुण्य आदि मे विश्वास करते थे मे यूनान में व्यक्ति की मृत्यु के पश्चात आर्यो की तरह दाह सस्कार किया जाता था। परलोक के बारे मे यूनान के लोग का विश्वास था कि मृतक को अधकारपूर्ण पाताल लोक की यात्रा के समय घोर यातनाओं का सामना करना पडता है।

5. दर्शन—यूनान मे दर्शन के क्षेत्र मे भी सर्वाधिक विकास हुआ। यहा पर दार्शनि ने प्रकृति के रहस्यो का पता लगाने की चेष्टा की। यूनान के दार्शनिको ने बता कि जल नामक पदार्थ से सृष्टि का विकास हुआ। इसके पश्चात् यूनान स्वतन्त्र चिन्तन प्रारम्भ हुआ और इस वजह से वहा कई उच्च विचारक और दार्शनि पैदा हुए। यूनान का प्रसिद्ध दार्शनिक पाइथोगोरस (480–411) ई० पू० था उसने पृथ्वी, सूर्य और चन्द्रमा के बारे मे नयी खोजें की। पेरिक्लीज के शासनका मे बौद्धिक चेतना का बहुत अधिक विकास हुआ।

सोफिस्ट विचारधारा का उत्कर्ष—

पाचवी शताब्दी ई० पूर्व यूनान मे सोफिस्ट विचारधारा का उदय हुआ सोफिस्ट का अर्थ है विद्वान। सोफिस्ट शिक्षक थे। उन्होंने अपने दार्शनिक विचा मे स्वतन्त्र चिन्तन पर अधिक जोर दिया। ये ईश्वर मे विश्वास नही करते थे। अपने ज्ञान का प्रसार तर्क के माध्यम से करते थे। सोफिस्ट धन कमाने के प्रयोज से ही ज्ञान का प्रचार करते थे। सोफिस्टो के विचारो से जनता मे भ्रम फैलने लग महात्मा सुकरात ने जनता को सोफिस्टो का असली रूप दिखा दिया। उन्होंने ब कि ये ढोंग ज्यादा करते हैं और जितना अपने को बुद्धिमान समझते हैं उसके आ भी नही हैं।

(1) सुकरात—469–399 ई० पूर्व—

पेरिक्लीज युग का सबसे प्रसिद्ध दार्शनिक सुकरात था, जिसने सत्य क जानने के लिये तर्क पर सर्वाधिक जोर दिया। सुकरात का जन्म एथेन्स मे ए साधारण परिवार में 469 ई० पूर्व० में हुआ था। युवा होने पर वह सेना मे भ हो गया। उसने तीन बार युद्धो मे भाग लिया और उनमें बहादुरी का प्रदर्शन किया, लेकिन युद्ध मे होने वाली हिंसा को देखकर वह दार्शनिक बन गया। प्ले जीन व ट् मड ने लिखा है कि "सुकरात एक सीधा व्यक्ति था और फटे पुराने कप पहनता था किन्तु उसका हृदय बहुत विशाल और मस्तिष्क बहुत मेधावी था। वह ज भी जाता था वहीं उसके प्रशसकों की भीड जुट जाती थी।"[1]

सुकरात की आदतें बड़ी विचित्र थी। वह नगे पाव बाजार मे घूमता और आम पार्टियो मे शराब बहुत पीता था। उसकी स्मरण शक्ति तेज भी और व बहुत गम्भीर व्यक्ति था। डबल्यू० एन० बीच ने लिखा है कि "वह कहता था मैं अज्ञानी हू किन्तु यूनान के आगामी सभी दार्शनिक उसी के शिष्य थे।" दार्शनिक के रूप मे सुकरात ने निम्न विचारों का प्रतिपादन किया।

1. सत्य को जानने के लिये उसने तर्क पर सर्वाधिक बल दिया। इस प्रक उसने दर्शन के क्षेत्र मे एक नई परम्परा का विकास किया।

1. प्लेट जीव व ड्रमड—विश्व का इतिहास, पृष्ठ 102
2. बीच, डबल्यू, एन—हिस्ट्री आफ दि वर्ल्ड, पृष्ठ 131

2. उसने बताया कि आत्मा अजर अमर है और वो कभी नही मरती।
3. स्वतन्त्र चिंतन के द्वारा मनुष्य अपना विकास कर सकता है।
4 सदाचार से मनुष्य को ज्ञान प्राप्त हो सकता है।
5 वह राजतन्त्रात्मक शासन व्यवस्था का समर्थक था।
6 उसने कहा कि ज्ञान चरित्र की कुंजी है। और मनुष्य को आत्म निरीक्षण करना चाहिये। उसका कहना था कि आत्म ज्ञान ही महानतम ज्ञान है। यदि कोई विचार आत्म निरीक्षण मे सही प्रतीत नही होता तो उसे छोड देना चाहिये। इसीलिये सुकरात कहा करता था "अपने आपको पहचानो।"
7. उसने सबके साथ अच्छा व्यवहार करने का उपदेश दिया।

उस समय जूरी एनीटस सुकरात का सबसे बडा शत्रु था, क्योकि उसका लडका सुकरात का शिष्य बन चुका था और वह शराब बहुत अधिक पीता था। इसलिये ज्जूरी एनीटस ने सुकरात पर युवकों को मार्ग भ्रष्ट करने का आरोप लगाया और उसे विषपान द्वारा 399 ई०पू० मत्यु दंड दिया गया। जब उसके मित्रो ने उसे एथेन्स छोडकर भागने के लिये कहा, तो उसने उत्तर दिया कि "मैने लोगों को सिखाया है कि कैसे जीवित रहना चाहिये और अब मै उन्हे सिखा रहा हू कि कैसे मरा जाय।"[1]

इस प्रकार 399 ई० पूर्व मे सुकरात ने जहर के प्याले को पीकर अपनी जीवन लीला समाप्त करदी। उसका यह विषपान एथेन्स के गौरव पर सबसे बडा कलक है। डेविस ने लिखा है कि "एथेन्स के प्रजातन्त्र ने सबसे बडा घृणित कार्य जो किया, वह सुकरात को प्राण दण्ड देना ही था। यदि इस कार्य का उद्देश्य सुकरात की शिक्षाओ को नष्ट करना था, तो अपने उद्देश्य की प्राप्ति मे यह कार्य बुरी तरह असफल रहा"। इस प्रकार स्पष्ट है कि सुकरात ने अपना प्रारम्भिक जीवन एक सैनिक के रूप मे आरम्भ किया और उसे दार्शनिक के रूप मे व्यतीत किया, तथा शहीद की तरह अपनी जीवन लीला को समाप्त किया।

(ii) प्लेटो (427—347 ई०पूर्व) प्लेटो, जिसे-अफलातून भी कहा जाता है, उसका असली नाम एरिस्टोक्लीज था। वह यूनान का प्रसिद्ध दार्शनिक और सुकरात का परम शिष्य था। सुकरात की मृत्यु के पश्चात प्लेटो ने उसके विचारो को लिपिवद्ध किया और उसका प्रचार भी किया। प्लेटो का जन्म 427 ई० पूर्व मे एथेन्स म एक अमीर परिवार मे हुआ था। वह अपने जीवन के प्रारम्भिक वर्षो मे राजनीति मे रुचि रखता था, लेकिन सुकरात को मृत्यु दंड देने से उसका प्रजातन्त्र से विश्वास उठ गया। इसके बाद 10 वर्षो तक मिश्र, इटली आदी देशो का भ्रमण करता रहा

1 एलिस और जैन—ससार का इतिहास पृष्ठ 103

और वहा से लौट कर एथेन्स मे उसने 387 ई० पूर्व में एक अकादमी नामक स्कूल की स्थापना की। इस स्कूल मे उसके शिष्य उसके विचारो को सुनने के लिये आते थे।

प्लेटो के ग्रन्थ—

प्लेटो के तीन ग्रन्थ हैं। 1. यूरोपिया 2. रिपब्लिक और 3 लाज जो बहुत प्रसिद्ध है। प्लेटो ने अपनी पुस्तकें प्रश्नोतर शैली में डायलाग के रूप में लिखी है। उसने अपनी पुस्तको मे शासन, सगीत, विज्ञान, साहित्य, न्याय और पुण्य आदि विषयो का वर्णन किया है। प्लेटो ने अपनी पुस्तक "यूरोपिया" में एक आदर्श समाज की कल्पना की है। उसने अपनी दूसरी पुस्तक "रिपब्लिक" मे शासन की बागडोर को दार्शनिक राजा के हाथ म सोपने के लिये लिखा है। अपनी तीसरी पुस्तक "लॉज" मे कानून और विधान के महत्व के बारे मे वर्णन किया है। प्लेटो समाजवादी विचारधारा का समर्थक था। उसका मानना था कि "सामाजिक बुराइयो को दूर करने के लिये व्यक्तिगत पू जी को समाप्त कर दिया जाना चाहिये। इसस एक आदर्श समाज का निमार्ण होगा।"[1] इसी प्रकार उसने एक आदर्श राज्य के निमार्ण पर भी जोर दिया। वह स्त्रियो को समान अधिकार देने का पक्षपाती था। इतिहासकार वीच ने लिखा है कि "वह पाश्चात्य ससार के दार्शनिको म सबसे ऊचा है। आने वाली शताब्दियों के विचारक उसकी अवहेलना नही कर सके। वे उसके उपदेशो के सदा ऋणि रहेंगे। वह ज्ञानरूपी झरने का वह उदगम स्थान है जिससे आदर्शवादी सदा प्रेरणा लेते रहे हैं। मनुष्य का परेशान मस्तिष्क जब भौतिक ससार में हार कर ईश्वर की वास्तविकता जानने को उत्सुक होता है तो प्लेटो उसका मार्ग दर्शन करता है।"[2]

(iii) अरस्तु—(384—322ई०पूर्व)—

अरस्तु यूनान का प्रसिद्ध दार्शनिक, उच्च कोटि का वैज्ञानिक एव तार्किक था और वह प्लेटो का परम आदर्श शिष्य था। अरिस्टोटल का जन्म 384 ई० पूर्व मे मेसोडोनिया के राजा के वैद्य के परिवार मे हुआ था। उसने 20 वर्ष तक प्लेटो से शिक्षा ग्रहण की। मेसोडोनिया के राजा फिलिप के आदेशानुसार अरस्तु ने सात वर्ष तक उसके लडके सिकन्दर महान को शिक्षा दी। इसके पश्चात् उसने एथेन्स लौट कर 226 ई० पूर्व मे एक स्कूल खोला, जिसमे विद्यार्थियो को दर्शन, राजनीति, काव्य, ज्योतिष विद्या, तर्कशास्त्र और भौतिक शास्त्र आदि विषयो की शिक्षा दी जाती थी।

अरस्तु व्यावहारिक व्यक्ति था। उसने राजनीति शास्त्रआचार शास्त्र आदि विषयों पर कई पुस्तके लिखी। उसके जीवन का मुख्य उद्देश्य लोगों के लिय सुख की खोज करना था। उसने पोलिटिक्स (राजनीति) और एथिक्स (नीतिशास्त्र) दो

1 डा० गोयल, विश्व की प्राचीन सभ्यताऐं, पृष्ठ 475
2. वीच, डब्लू, एन हिस्ट्री आफ दी वर्ल्ड, पृष्ठ 145

पुस्तकें लिखी। पोलिटिक्स में अरस्तु ने अपने युग के नगर राज्य की सरकारों की अच्छाईयों और बुराईयों का वर्णन किया है। (इथिक्स) नीति शास्त्र में उसने किसी भी विषय को चरम सीमा तक नहीं जाने पर जोर दिया है। अरस्तु ने कहा कि मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है और समाज में ही वह अपना पूर्ण विकास कर सकता है। इसके अतिरिक्त राज्य का मुख्य उद्देश्य आदर्श नागरिकों का निर्माण करना है।

अरस्तु ने विज्ञान के क्षेत्र में कई खोजें की। उसने पशुओं को चीर कर चिकित्सा विज्ञान के क्षेत्र में कई प्रयोग किये। उसके कई सिद्धान्त सत्य प्रतीत नहीं होते जैसे कि वह प्रजात्मक शासन व्यवस्था का विरोधी था। उसका यह मानना कि सूर्य पृथ्वी के चारों ओर चक्कर लगाता है, आदि सिद्दान्त सही नहीं थे, परन्तु फिर भी उसकी रचनाओं की अनदेखी नहीं की जा सकती। बीच ने लिखा है कि "अरस्तु सदा ज्ञानियों का गुरू गिना जायेगा, जैसा कि मध्य काल में कहावत प्रसिद्ध थी।"[1]

6 शिक्षा—

यूनान के एथेन्स और स्पार्टा के नगर राज्यों में अलग अलग प्रकार की शिक्षा दी जाती थी। स्पार्टा के स्कूलों में विद्यार्थियों को जिमनास्टिक, सैनिक प्रशिक्षण, दौड़, मल्ल युद्ध आदि विषयों की शिक्षा दी जाती थी। स्पार्टा में लड़कियों को भी शारीरिक प्रशिक्षण दिया जाता था ताकि वे बलिष्ठ सन्तान पैदा कर सके। वहां की शिक्षा का मुख्य उद्देश्य कुशल सैनिकों का निर्माण करना था। एथेन्स की शिक्षा प्रणाली भिन्न थी। वहां पर केवल लड़कों को ही शिक्षा दी जाती थी। लड़कियों को शिक्षा नहीं दी जाती थी। एथेन्स की लड़कियां गृह कार्य में प्रशिक्षित होती थी। वहां की शिक्षा का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों के उच्च चरित्र निर्माण एवं सर्वांगीण विकास करना था। वहां के स्कूलों में छात्रों को संगीत, गणित, ज्योतिष, व्याकरण, दर्शनशास्त्र, इतिहास और साहित्य आदि विषयों की शिक्षा दी जाती थी। यूनान में राजकीय विद्यालयों के अतिरिक्त कुछ दार्शनिक विद्यालय भी थे। सुकरात, प्लेटो और अरस्तु आदि दार्शनिकों ने कुछ स्कूल खोले। जिनमें छात्रों को दार्शनिक विचारों की शिक्षा दी जाती थी।

7 भाषा—

यूनानियों ने सेमेटिकों की लिपि को विकसित किया। होमर ने अपने महाकाव्यों को प्राचीन यूनानी भाषा में लिखा था, लेकिन अरस्तु के समय भाषा के क्षेत्र में बहुत अधिक विकास हुआ। इस समय विद्वानों ने गद्य, नाटक आदि सरल और भावात्मक भाषा में लिखे।

---

1. बीच डब्ल्यू एन—हिस्ट्री आफ दी वर्ल्ड, पृष्ठ 146

8. साहित्य—

यूनान में साहित्य के क्षेत्र में आश्चर्यजनक विकास हुआ। यूनानी साहित्य के बारे में एच० जी० वेल्स ने लिखा है कि "यह संसार का पहला महान साहित्य था।"[1] प्लेट व जौन ने लिखा है कि "प्राचीन यूनानी साहित्य बहुत आधुनिक है। यह एक ताज के झरने के समान था, जिसमें से अनेक शाखाओं वाली विशाल नदी निकली थी"[2]

प्राचीन म साहित्यकारो ने कई महत्वपूर्ण ग्रन्थो की रचना की। यूनान के प्रथम महाकवि होमर की रचनाओं का वर्णन पिछले पृष्ठों मे किया जा चुका है।

(i) गीत काव्य का विकास—इस युग मे गीत काव्य के क्षेत्र म बहुत अधिक विकास हुआ। इस काल के प्रसिद्ध कवि हीसीयड, आरचीलोक्स सेफो, एनाक्रियन और पिन्डार आदि थे। हीसीयड ने अपनी "रचना काज और काल" मे किसानो की दयनीय स्थिति का वर्णन किया। आरचीलोक्स ने अपने गीतो म सामाजिक बुराइयों पर प्रकाश डाला। सेफो यूनान प्रसिद्ध कवियत्री थी। उसने अपने गीतो मे प्रकृति के सुन्दर दृश्यो का चित्रण किया है। एनाक्रियन ने अपने गीतो में सुरा और सुन्दरी का वर्णन किया है। पेरीक्लीज के युग का प्रसिद्ध कवि पिन्डार था, जिसने कोरस के गीत लिखे। उसके गीत इस काल म बहुत लोकप्रिय हुये।

(ii) नाटक—यूनान म नाटक के क्षेत्र मे आश्चर्यजनक प्रगति हुई। यूनान मे नाटककारो ने सुखान्त और दुखान्त दोनो ही प्रकार के नाटको की रचना की। इस समय एसकाइलस, सोफोक्लीज तथा यूरोपीडिज आदि नाटककारो ने दुखान्त नाटको की रचना की। एसकाइलस ने "दि पर्शियन्स, "प्रोमोथियस बाउण्ड' और "आगामेमनन" आदि दुखान्त नाटक लिखे। सोफोक्लीज ने 'एन्टिगोन', और "इडियस" आदि दुखान्त नाटको की रचना की। यूरोपीडिज ने "मीडिया", 'ट्राय की नारियां' आदि दुखान्त नाटक लिखे। यूनान मे एरिस्टोफनिज नामक नाटककार ने सुखान्त नाटको की रचना की। उसने 'दि फारस दी बर्ड्स' तथा 'दी क्लाउडस' आदि सुखान्त नाटक लिखे। यूनानी लोग सुखान्त नाटक की अपेक्षा दुखान्त नाटक अधिक पसन्द करते थे। इसलिये यूनान के दुखान्त नाटककारो को कई बार पुरस्कार प्रदान किये गये। बर्नस ने लिखा है कि 'यूनानियो की श्रेष्ठ साहित्यिक प्राप्ति दुखान्त नाटक था।"[3]

(iii) इतिहासकार—यूनान के दो प्रसिद्ध इतिहासकार है। रोडोटस और थ्यूसीडाइडीज की रचनाओ का वर्णन हम पिछले पृष्ठों में कर चुके हैं।

1. वेल्स, एच० जी० दी आउट लाइन आफ हिस्ट्री, पृष्ठ 342
2. प्लेट जोव और इमड—विश्व का इतिहास, पृष्ठ 104
3. मैक्नेल बर्नस—वेस्टर्न सिवलीजेशन्स, पृष्ठ 153

9 विज्ञान—

यूनान ने विज्ञान के क्षेत्र में काफी उन्नति की। थेल्स नामक दार्शनिक ने बताया कि जल नामक पदार्थ से सृष्टि की उत्पत्ति हुई है। दूसरा वैज्ञानिक एनेक्जामेंडर के अनुसार मनुष्य प्रारम्भ में मछली के रूप में था और फिर धीरे धीरे विकास किया। इम्पेडोक्लीज नामक वैज्ञानिक के अनुसार वायु, अग्नि, भूमि व जल इन चार तत्वों से सृष्टि का निर्माण हुआ। एनक्सा गोरस ने बताया कि अणु से सभी वस्तुओं का निर्माण हुआ है।

(i) गणित—इस काल में गणित के क्षेत्र में भी बहुत विकास हुआ। इस समय पाइथागोरस ने रेखा गणित के कई सिद्धान्त प्रचलित किये और एक (1) के महत्व पर प्रकाश डाला। यूकलिड नाम विद्वान वर्तमान रेखागणित का जन्मदाता माना जाता है।

(ii) चिकित्सा विज्ञान–हिपोक्रेटीज यूनान में चिकित्सा विज्ञान का जन्मदाता माना जाता है। वह नब्ज को देखकर बीमारी का पता लगा लेता था। उसने बीमारियों और औषधियों पर भी प्रकाश डाला। चौथी शताब्दी ई पूर्व में डायोक्लिज नामक प्रसिद्ध चिकित्सक ने 'एनाटामी' पर प्रथम पुस्तक लिखी। अल्कमेयन नामक प्रसिद्ध चिकित्सक ने 'ओन नेचर'' नामक पुस्तक लिखी। इसने सर्वप्रथम पशुओं पर शल्य चिकित्सा आरम्भ की। यूनान के एक अन्य प्रसिद्ध चिकित्सक यूराईफोन ने फेफडा की बीमारी की खोज की। यूनान में प्रत्येक डाक्टर ईमानदारी से जन सेवा करने की शपथ लेता था और शरीर के विभिन्न भागों का अध्ययन कर ये लोग आपरेशन भी करते थे।

(iii) ज्योतिष शास्त्र—इस समय यूनान के ज्योतिषियों ने यह खोज कर ली थी कि पृथ्वी, जल, वायु और अग्नि से सृष्टि का निर्माण हुआ है। हिपाकरस नामक विद्वान ने सूर्य और तारों का मानचित्र बनाया था। इस समय के प्रसिद्ध ज्योतिषी एनेक्सागोरस ने सूर्यग्रहण, चन्द्र ग्रहण और नक्षत्रों का अध्ययन किया। इस प्रकार उस समय यूनान में चिकित्सा, भूगोल गणित और ज्योतिष के क्षेत्र में महत्वपूर्ण प्रगति हुई।

10 कला—

(i) स्थापत्य कला—यूनान में स्थापत्य कला के क्षेत्र में बहुत अधिक उन्नति हुई। यहां पर लम्बी चौडी सडकें तथा भव्य इमारतों का निर्माण किया गया और विभिन्न नगर राज्यों ने कई सुन्दर मन्दिरों का भी निर्माण करवाया। यूनान की तीन शैलियों के अनुसार यहां के मन्दिरों का निर्माण किया गया। ये शैलियां डोरिक, आयोनिक और कोरिन्थियन के नाम से प्रसिद्ध है। एथेन्स में एक्रोपोलिस की पहाडी पर पार्थेनान का मंदिर सबसे बडा मंदिर है। इस मंदिर के निर्माण में डोरिक शैली का प्रयोग किया गया है। यह पूरा मंदिर सफेद संगमरमर का बना हुआ है। इसमें एथेना देवी की सुन्दर मूर्ति स्थापित की गई

है। पार्थेनान का मंदिर उस समय की स्थापत्य कला का एक शानदार नमूना है। उस समय फीडियस नामक कलाकार ने डायोनिसस नामक देवता के मंदिर का भी निर्माण किया। इरेक्थियन के मंदिर मे अयोनिक शैली का प्रयोग किया गया है। इसके अतिरिक्त एथेन्स मे ज़ियस ओलिंपियस का मन्दिर भी उस समय काफी प्रसिद्ध था। एक्रोपोलिस की पहाड़ी पर बना हुआ डायोनिसस का थियेटर भी उस काल की स्थापत्य कला का सर्वश्रेष्ठ नमूना है।

(ii) मूर्तिकला—यूनान में इस समय मूर्तिकला के क्षेत्र में भी बहुत अधिक विकास हुआ। यहाँ के मूर्तिकार सोने, कांसे तथा पत्थर की मूर्तियां बनाते थे। इस काल के प्रसिद्ध मूर्तिकार फीडियस, माइरन और पोलीक्लेटस थे, उनके द्वारा निर्मित मूर्तियों का वर्णन हम पिछले पृष्ठों में कर चुके हैं।

(iii) चित्रकला—यूनान में चित्रकला के क्षेत्र मे भी बहुत अधिक विकास हुआ। इस समय के चित्रकार अधिकतर चित्र घड़ो, सुराहियों मिट्टी के प्यालों और बर्तनों पर बनाते थे। इस काल के प्रसिद्ध चित्रकार पोलिग्नोटस ज्यूक्सिस और परिमयस आदि थे। उनके द्वारा निर्मित चित्रों का वर्णन हम पिछले पृष्ठों मे कर चुके हैं।

(iv) संगीत कला—यूनान में संगीत कला के क्षेत्र मे भी बहुत विकास हुआ। इस समय वाद्य संगीत तथा शास्त्रीय संगीत का बहुत प्रसार हुआ। यूनान में अपोलो के वार्षिकोत्सव के अवसर पर संगीत प्रतियोगितायें भी आयोजित की जाती थी। यूनान में नाटक का विकास होने के कारण भी संगीत का बहुत अधिक विकास हुआ। हर नाटक के प्रारम्भ और अन्त में गीतो की धुन बजाई जाती थी।

यूनान की विश्व को देन—

यूनान की सभ्यता ने विश्व को कई देन दी है। यूनान ने प्राचीन सभ्यताओं से बहुत कुछ सीखा और अपनी सभ्यता का विकास कर यूनान को सभ्यता और संस्कृति का केन्द्र बना दिया। उसके कई तत्व रोमवासियों ने अपनाये। रोम की सभ्यता ने मध्यकालीन युग की पाश्चात्य सभ्यता को बहुत प्रभावित किया। इस प्रकार यूनान की सभ्यता का रोम के द्वारा पाश्चात्य देशों में प्रचार हुआ। यूनानी भाषा के कई शब्द युरोपियनो ने अपनी भाषा मे अपनाये है जैसे थियेटर, पोलिटिक्स 'मशीन' डेमोक्रेसी आदि यूनानी भाषा के शब्द है जिनको यूरोपियन भाषाओं ने ग्रहण किया है। अंग्रेजी कवि मिल्टन की रचनाओं मे भी यूनानी प्रभाव स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होता है।

यूनानियों की शासन व्यवस्था के क्षेत्र मे महत्वपूर्ण देन प्रत्यक्ष प्रजातन्त्रात्मक प्रणाली थी। उन्होंने प्रत्यक्ष प्रजातन्त्रात्मक शासन व्यवस्था की नींव रखी। उस समय किसी भी समस्या पर निर्णय मतदान के द्वारा बहुमत के आधार पर...

किया जाता था। यह भी यूनान की एक महत्वपूर्ण देन है। यूनान में प्रत्येक व्यक्ति शासन कार्यों में रुचि लेता था। प्लेटो ने अपनी पुस्तक "रिपब्लिक" में राज्य के कर्तव्यों, और विभिन्न शासन प्रणालियों के गुण और दोषों का वर्णन किया है। प्रोफेसर जिमेन का मत है कि "राजनीतिक अध्ययन के लिए यूनानियों की प्रथम देन इस बात में है कि उन्होंने शासन विधान का आविष्कार किया।"

विज्ञान के क्षेत्र में भी यूनान की देन बहुत महत्वपूर्ण है। यहां चिकित्सा शास्त्र, गणित, ज्योतिष विद्या, भूगोल आदि क्षेत्रों में अनेक महत्वपूर्ण खोजें हुईं। यूनानी विद्वानों ने मानव जाति में एकता की भावना का विकास किया, जिसके फलस्वरूप पूर्व और पश्चिमी सभ्यता का सांस्कृतिक समन्वय हुआ।

मनोरंजन के क्षेत्र में नाट्य कला यूनान की एक अन्य महत्वपूर्ण देन है। नाटकों का सर्वप्रथम विकास यूनान में ही हुआ। यूनानी लोग दुखान्त नाटक ज्यादा पसन्द करते थे। यह इस बात की पुष्टि करता है कि यहां के लोग जीवन की क्षण भंगुरता में विश्वास करते थे।

यूनानियों ने कला क्षेत्र में विशाल स्तम्भ, सुन्दर मूर्तियां और आकर्षक मन्दिर दिये। यूनान के दार्शनिक विचारों का यूरोप के दर्शन पर बहुत अधिक प्रभाव पड़ा और यूरोपियनों ने यूनानियों के दार्शनिक विचारों के कई तत्व ग्रहण किये। यूनान के प्रसिद्ध दार्शनिक सुकरात, प्लेटो और अरस्तु के विचारों को दर्शन के क्षेत्र में आज भी महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। यूनानी सभ्यता की एक विशेषता यह थी कि वे दूसरी सभ्यता के अच्छे तत्वों को सदा ग्रहण करने के लिये तैयार रहते थे। प्लेटो ने लिखा है कि "दूसरी जातियों से हम कुछ भी ले सकते हैं और अन्त में उसे बदल कर अच्छा बना सकते हैं।" मून ने लिखा है कि यूनानी अतीत के उत्तराधिकारी थे और अच्छे प्रचारक भी। उन्होंने बहुत कुछ पाया और उससे अधिक दिया।"[1] मैकनेल बर्नस ने लिखा है कि 'कोई भी सावधान इतिहासकार इस बात को मना नहीं कर सकता कि यूनानियों की उपलब्धियां विश्व के इतिहास में सबसे अधिक उल्लेखनीय है।[2]

स्पार्टा में शारीरिक योग्यता पर अधिक बल दिया जाता था इसलिये प्रत्येक बालक को बचपन में ही शारीरिक प्रशिक्षण प्रदान किया जाता था और ओलम्पिया में खेलकूद प्रतियोगिताएं आयोजित की जाती थीं। इस प्रकार यह स्पष्ट हो जाता है कि पाश्चात्य देश यूनानी सभ्यता के जितने ऋणी है उतने अन्य किसी सभ्यता

---

1 मून वर्ल्ड हिस्ट्री पृष्ठ 190

2 मैकनेल बर्नस—वेस्टर्न सिवलीजेशन्स पृष्ठ 161

के नही क्योंकि उनकी सभ्यता के निर्माण मे यूनानी सभ्यता का महत्वपूर्ण योगदान था। एलिस व जोन ने लिखा है कि ससार ग्रीको का ऋणी रहेगा।"[1]

प्रस्तावित संदर्भ पुस्तकें

1. वीच डब्ल्यू एन—हिस्ट्री आफ दि वर्ल्ड
2. डा० गोयन—विश्व की प्राचीन सभ्यताए
3. सेवाइन—ए हिस्ट्री आफ वर्ल्ड सिवलीजेशन
4. 4—वेल्म एच० जी० दि आउट लाइन आफ हिस्ट्री
5 मैक्नेल बर्नस—वेस्टर्न सिवलीगेशन्स
6 प्लेट जीन व ड्रमड—विश्व का इतिहास
7. एलिस व जोन—ससार का इतिहास



3. एलिस व जोन—संसार का इतिहास पृष्ठ 94

रोम की सभ्यता

रोमनों ने यूनानी सभ्यता और संस्कृति के कई तत्वों को ग्रहण किया और उन्होंने अपने विशाल साम्राज्य में उसका प्रसार किया। रोम ने संस्कृति का निरन्तर विकास कर प्राचीन और आधुनिक सभ्यताओं के बीच में एक पुल का निर्माण किया। इस प्रकार यूनान की सभ्यता और संस्कृति का रोम के माध्यम से पश्चिमी देशों में प्रसार हुआ। इसलिये प्रोफेसर एएं मवबथ ने "रोमन सभ्यता को महान" मध्यस्थ "कहा है।" एलिस व जोन ने लिखा है कि "ग्रीकों ने मुख्यत अपने कलात्मक और साहित्यिक कार्यों द्वारा विश्व पर अपनी छाप छोडी। दूसरी ओर, रोमनों ने निर्माण और बड़े साम्राज्य पर शासन की अपनी असाधारण योग्यता से दुनियाँ को प्रभावित किया।"[1] वेल्स ने लिखा है कि—"यह नया रोमन साम्राज्य अपने पूर्व के सभी साम्राज्यों की तरह किसी महान विजेता की देन नहीं थी न सारगोन, न थुतमोस, न साइरस, न सिकन्दर और न ही चन्द्रगुप्त इसका निर्माता नेता था। यह तो एक गणतन्त्र द्वारा निर्मित था। जिसका विकास मानवीय सम्बन्धों की क्रमिक सगठन शक्ति से आवश्यक विचारों की एकाग्रता से हुआ था।[2] सेबाइन ने लिखा है कि—"रोमन योग्यता और श्रम आवश्यक रूप से कृषि, कानून सरकार और युद्ध की ओर निर्देशित थी। रोमन सभ्यता निर्णायक रूप से पश्चिम यूरोप की सर्वश्रेष्ठ मान्यता का प्रतिनिधित्व करती है।"[3]

रोम की भौगोलिक दशा—प्रारम्भ में रोम एक छोटा सा गांव था। धीरे धीरे यह विकास करता हुआ एक नगर राज्य बना और नगर राज्य से एक देश बना। एक देश बनने के पश्चात एक विशाल साम्राज्य का निर्माता बना। रोम इटली की राजधानी है। इटली भूमध्य सागर के मध्य में एक प्रायद्वीप है जिसके तीनों ओर समुद्र और उत्तर में आल्पस पहाड़ है। इटली में दो नदियां यो नदी और टाइबरनदी, आल्पस पहाड के समीप से निकलती हैं। टाईबरनदी के दक्षिण में समुद्र से लगभग 12 मील दूरी पर रोम बसा हुआ था। प्राचीन काल में रोमवासियों का भूमध्य सागर पर पूरा नियन्त्रण था।

---

1 ऐलिस व जोन—ससार का इतिहास पृष्ठ 118

2 वेल्स, एच जी,—दी आउट लाइन आफ हिस्ट्री पृष्ठ 411

3. सेबाइन—ए हिस्ट्री आफ वर्ल्ड सिवलीजेशन पृष्ठ—161

रोम का उत्कर्ष —ऐसा अनुमान है कि 2000 ई पू के आसपास आर्य जाति की एक शाखा ने रोम पर अधिकार कर लिया था। इसके पश्चात् नवीं शताब्दी ई पू. मे मध्य एशिया की एट्रस्कन जाति की एक शाखा ने आर्यों को पराजित कर रोम पर अधिकार कर लिया। आर्य जाति की विश्व इतिहास म यह पहली पराजय थी। इसी जाति ने रोम की सभ्यता का विकास और प्रसार किया। 800 ई पू के आसपास यूनानी लोगों ने इटली की भूमि पर अपने उपनिवेश स्थापित किये। यूनान ने इटली के सीसली द्वीप, और सम्पूर्ण दक्षिणी इटली के तट पर अपना अधिकार स्थापित कर लिया। उस समय यह क्षेत्र "वृहत्तर यूनान" के नाम से प्रसिद्ध था। और रोम का कोई विशेष महत्व नहीं था। 753 ई पू मे रोमुलस ने टाइबर नदी के किनारे पर रोम नामक नगर की स्थापना की। उस समय रोम एक व्यापारिक केन्द्र था।

जन श्रुतियां —रोम की स्थापना के बारे मे वहा कई जन श्रुतियां प्रचलित हैं। उनमे से दो जन श्रुतियां नीचे दी जा रही है। पहली जनश्रुति के अनुसार 753 ई पू मे दो बालक रोमुलस और रीमस टाइबर नदी मे एक पालने मे बैठे बह रहे थे। उनको एक मादा भेडिये ने बचा लिया और अपना दूध पिलाकर बडा किया। इसके बाद एक किसान ने इन दोनो बालकों को गोद ले लिया। इन्ही बालकों ने आगे चलकर रोम की स्थापना की।

दूसरी जनश्रुति के अनुसार ये दोनो बालक प्रेम की देवी वीनस और युद्ध के देवता मार्स के पुत्र थे। इनका जन्म लेटिन कबीले के राजा के घर म पुत्र के रूप मे हुआ। इनके चाचा ने राज्य पर बलपूर्वक अधिकार कर लिया और इन दोनो को टाइबर नदी में फेंक दिया। एक किसान ने इन्हें बचाया और इनका पालन पोषण कर बडा किया। दोनों ने युवा होने पर अपने चाचा की हत्या कर राज्य पर अधिकार कर लिया। इसी समय रोमुलस ने शासक बनने के प्रलोभन मे अपने भाई रीमस की हत्या कर दी और अपने नाम पर रोम नगर की स्थापना की।

कालान्तर म यूट्रास्कन जाति ने रोम पर अधिकार कर लिया। इस जाति ने रोम का काफी विकास किया। 500 ई पू मे रोम के लेटिन आर्यों ने यूट्रास्कन जाति को पराजित कर रोम पर अधिकार कर लिया। इसके पश्चात रोम निरन्तर विकास करता रहा।

राजनीतिक इतिहास—रोम के राजनीतिक इतिहास को अध्ययन के सुविधा की दृष्टि से चार भागों मे विभाजित किया जा सकता है :—

1–राजतन्त्र काल 753 ई पू. से 509 ई पू.

2–गणतन्त्र काल 509 ई पू से 133 ई पू

3–सैनिक अधिनायकों का काल 133 ई पू से 27 ई पू.

4. साम्राज्यवादी काल 27 ई० पूर्व से 476 ई० तक

[सीजरो का साम्राज्यवाद]

1. **राजतन्त्र काल** रोमके राजतन्त्र युग (735 ई० पू० से 509 ई० पू०) का पहला शासक रोमुलस था। इस युग मे सात शासको ने शासन किया। सातवें शासक टारक्यू निस सूपर बस ने जनता पर बहुत अत्याचार किये। इसलिये रोमकी जनता ने 509 ई० पू० से उसके विरुद्ध विद्रोह किया और उसे गद्दी से हटा दिया। इसके पश्चात् रोम में गणतन्त्र की स्थापना हुई।

राजतन्त्र काल मे राज्य का अध्यक्ष राजा होता था। जो वशानुगत होता था। उसकी सहायता के लिये एक सीनेट होती थी जिसके सदस्यों की सख्या 300 थी। राजा सीनेट की सलाह को मानने के लिये बाध्य नही था। वह अपनी मृत्यु से पूर्व अपने उत्तराधिकारी की घोषणा करता था।

इस युग म समाज दो वर्गों मे विभाजित था। पहला पेट्रिशियन वर्ग और दूसरा प्लेबियन वर्ग था। पेट्रिशियन वर्ग म रोम के उच्च एव कुलीन परिवार के व्यक्ति आते थे। जिनको राजनीतिक अधिकार प्राप्त थे। राज्य के उच्च पदों पर इसी वर्ग के व्यक्ति नियुक्त किये जा सकते थे। प्लेबियन वर्ग मे स्वतन्त्र दास, भूमिहीन और गरीब व्यक्ति आते थे जिनको राजनीतिक अधिकार प्राप्त नही थे। इन्होने अधिकारो की प्राप्ति के लिये सघर्ष शुरु कर दिया। इसलिये कमेटिया, सेचूरियाटा नामक एक सभा का निर्माण किया गया जिसमे प्लेबियन और पेट्रिशियन दोनो को स्थान दिये गये।

इस काल मे रोम मे अनेक सडकों, नहरो और पुलो का निर्माण किया गया। रोम की सुरक्षा के लिये उसके चारो और एक दीवार का निर्माण किया गया। इसके अतिरिक्त यहा अनेक सुन्दर भवनो और मन्दिरो का निर्माण हुआ। इस समय के लोगो ने भाषा, चित्रकला, भवन निर्माण कला और मूर्तिकला आदि यूनानियो से सीखी।

इस युग म रोम के व्यापार का भी काफी विकास हुआ। इस समय रोम के कार्थेज, फोसेनिया और मिश्र आदि देशो से व्यापारिक सम्बन्ध थे। वहा के लोग यूनान को लोहा और ताबा निर्यात करते थे। इसके बदले मे वहा से मिट्टी के बर्तन, कपडा और हथियार आदि वस्तुऐ आयात करते थे। इस युग मे सम्पूर्ण लेटिन प्रदेश पर रोमका अधिकार हो गया था।

2 **गणतन्त्र काल** —[509 ई० पू०] 509 ई० पू मे राजतन्त्र काल के अन्तिम राजा को हटा कर रोम में गणतन्त्रात्मक शासन व्यवस्था की स्थापना की गई। इस गणतन्त्र मे शासन की सत्ता कुलीनतन्त्र के व्यक्तियो के हाथो मे थी। पेट्रिशियन वर्ग के लोग प्लेबियन वर्ग के लोगो पर अत्याचार करते थे। इसलिये

प्लेबियन वर्ग ने अधिकारों की माग के लिये विद्रोह करना शुरू कर दिया। फलस्वरूप दोनों वर्गों म आपसी संघर्ष प्रारम्भ हो गया।

सेवाइन ने लिखा है कि "अपने राजनीतिक अस्तित्व के लगभग 500 वर्ष तक रोम एक प्रकार की गणतन्त्री सरकार के अधीन था। यह सरकार प्लेबियन और पेट्रिशियन वर्ग के आधिपत्य के लिये संघर्ष का मन्द परिणाम था।[1]"

पेट्रिशियन व प्लेबियन के बीच संघर्ष—इनके बीच म संघर्ष होने के प्रमुख कारण निम्नलिखित थे —

1 पेट्रिशियन को राजनीतिक अधिकार प्राप्त थे इसी वर्ग के व्यक्ति राज्य के उच्च पदो पर नियुक्त किये जा सकते थे। जबकि प्लेबियन को राजनीतिक अधिकार प्राप्त नहीं थे और पेट्रिशियन वर्ग के व्यक्ति उन पर अत्याचार करते थे।

2 दूसरा कारण यह था कि प्लेबियन लोग साधारण वर्ग के होने से उनको राज्य म किसी भी उच्च पद पर नियुक्त नहीं किया जा सकता था। यद्यपि प्लेबियन वर्ग के लोग सेना में भर्ती होते थे। और युद्ध म भाग लेते थे, लेकिन उन्हें कोई वेतन नहीं दिया जाता था। परिणामस्वरूप पेट्रिशियन वर्ग के लोग ऋण देकर प्लेबियन वर्ग के लोगों को गुलाम बना लेते थे। प्लेबियन वर्ग के व्यक्ति ही पेट्रिशियन वर्ग का सारा काम करते थे। जैसे – व्यापारिक कार्य और सैनिक शक्ति आदि प्लेबियन वर्ग पर आधारित थी।

पेट्रिशियन वर्ग के अत्याचारों से तंग आकर प्लेबियन वर्ग के अधिकारों के लिये संघर्ष प्रारम्भ किया और उन्होंने तीन बार रोम छोड़ने की धमकी दी। इस धमकी से डरकर पेट्रिशियन वर्ग ने उनको तीन किस्तों म अपने समान अधिकार दे दिये।

संघर्ष का प्रथम चरण — 494ई० पू० प्लेबियन के वर्ग के लोगों ने पेट्रिशियन वर्ग को रोम छोड़कर चले जाने की धमकी दी। जिसके फलस्वरूप उन्हें निम्न सुविधाएं प्राप्त हुई।-

1 उनके कर्ज को माफ कर दिया।

2 कर्जदार गुलामों को दासता से मुक्त कर दिया गया।

3 एक ट्रिब्यून नामक संस्था का निर्माण किया गया। जिसम दो अधिकारियों की नियुक्ति की गई। ये अधिकारी मजिस्ट्रेट और सीनेट के निर्णय को रद्द कर सकते थे।

4 प्लेबियनों के मुकद्दमों की सुनवाई करने के लिये इदाईल नामक मजिस्ट्रेटों की नियुक्ति की गई।

---

1 सेबाइन ए हिस्ट्री आफ वर्ल्ड सिविलीजेशन पृष्ठ 164

इस प्रकार संघर्ष के प्रथम चरण में ही प्लेबियन वर्ग के लोग दासता से मुक्त हो गये। वे पेट्रिशियनों की सीनेट के किसी भी निर्णय को रद्द कर सकते थे। उनके मुकदमों की सुनवाई अलग न्यायाधीश करते थे। इतिहासकार बीच ने लिखा है कि "ज्यों ज्यों समय गुजरता गया ट्रिब्यूनों ने वीटो का खुल कर प्रयोग किया और नगर के सम्पूर्ण जीवन पर अत्यधिक प्रधिपत्य स्थापित कर लिया।"[1]

दूसरा चरण–(471 ई० पू०)–प्लेबियनों और पेट्रिशियन के बीच 471 ई० पू० में दूसरी बार संघर्ष प्रारम्भ हो गया। इसमें भी प्लेबियनों को सफलता मिली और पेट्रिशियन वर्ग ने एक कोंसिल का निर्माण किया, जिसके सिर्फ प्लेबियन वर्ग के लोग ही सदस्य बन सकते थे। यह कोंसिल सभी नागरिकों के लिये कानून बना सकती थी।

तीसरा चरण —संघर्ष के तीसरे चरण में प्लेबियनों को निम्नलिखित रियायतें प्राप्त हुईं

(i) 445 ई० पू० में प्लेबियन और पेट्रिशियन वर्ग के बीच आपसी विवाह सम्बन्धों को कानूनी रूप से मान्यता प्रदान की गई।

(ii) प्लेबियन वर्ग का एक कोषाध्यक्ष और एक कोंसिल सदस्य चुना जाने लगा।

(iii) इस प्रकार इन तीन संघर्षों में प्लेबियन वर्ग के लोगों ने पेट्रिशियन वर्ग के बराबर अधिकार प्राप्त कर लिये। फिर भी सुधारों का कोई महत्व नहीं था, क्योंकि शासन की वास्तविक शक्ति पेट्रिशियन वर्ग के हाथ में ही रही। डब्ल्यू.एन. बीच ने लिखा है कि "रोमन प्रारम्भ से अन्त तक कभी भी इस सिद्धान्त से दूर नहीं जा सके कि जनता शासक नहीं शासन करने के लिये होती है।[2]"

गॉल जाति द्वारा रोम पर आक्रमण–रोम में पेट्रिशियन वर्ग और प्लेबियन वर्ग में आपस में संघर्ष चल रहा था। उस संघर्ष का लाभ उठाकर फ्रांस की गॉल जाति ने 390 ई०पू० रोम पर अधिकार कर लिया। ऐसे समय में रोम के निवासियों ने उस जाति को धन देकर फ्रांस लौटने के लिये विवश किया। इससे यूरोप में रोम की प्रतिष्ठा को धक्का पहुंचा। रोमने अपनी खोई हुई प्रतिष्ठा को पुन प्राप्त करने के लिये एक सुदृढ सेना का गठन किया और रक्षा के लिये चारों ओर मजबूत दीवार का निर्माण करवाया गया। इसका परिणाम यह हुआ कि जब 348ई० पू० में गॉल जाति ने रोम पर फिर आक्रमण किया तो रोम वालों ने उसे बुरी तरह पराजित किया।

गणतन्त्र की साम्राज्यवादी नीति —रोम में 507 ई पू में गणतन्त्र की स्थापना के पश्चात् साम्राज्यवादी नीति अपनाई। इस नीति पर चलते हुये रोम

---

1 बीच, डबल्यू एन. हिस्ट्री ग्राफ दी वर्ल्ड पृष्ठ 176

2 बीच, डबल्यू एन हिस्ट्री ग्राफ दी वर्ल्ड पृष्ठ 183

के शासकों ने सरडीनिया, कोरासिका आदि प्रदेशों पर अधिकार कर लिया। इटली के दक्षिण में इपरिस नगर के नेता पिरहस से भी रोम का युद्ध हुआ। रोम ने कार्थेज की सहायता से पिरहस को युद्ध में बुरी तरह पराजित किया। इस विजय के पश्चात इटली के दक्षिण में यूनानी राज्य समाप्त हो गये और दक्षिण में दूर-दूर तक रोमन साम्राज्य फैल गया। इसके पश्चात कार्थेज और रोम में लगभग 100 वर्षों तक रुक रुक कर युद्ध होते रहे। यह युद्ध इतिहास में प्यूनिक युद्ध के नाम से प्रसिद्ध है।

प्यूनिक युद्ध —भूमध्यसागर में एक बहुत बड़ा द्वीप है जिसे कार्थेज कहते हैं। ईसा से 900 वर्ष पहले फोनेशिया के व्यापारियों ने यहां अपने उपनिवेश स्थापित किये थे। रोम के उत्थान के पूर्व ही कार्थेज ने भूमध्यसागरीय तटों पर व्यापारिक आधिपत्य स्थापित कर लिया था। आगे चलकर कार्थेज और रोम में युद्ध प्रारम्भ हो गया, यह युद्ध इतिहास में प्यूनिक युद्ध के नाम से प्रसिद्ध है।

युद्ध के कारण —प्यूनिक युद्ध के प्रमुख कारण निम्नलिखित थे—

1 **साम्राज्यवादी नीति** —रोम और कार्थेज दोनों साम्राज्यवादी नीति में विश्वास रखते थे। दोनों एक दूसरे के राज्य विस्तार से भयभीत थे। वे यह मानते थे कि उनमें एक न एक दिन युद्ध अवश्य होगा। रोम ने इस नीति पर चलते हुये इटली के अधिकांश प्रदेशों पर अधिकार कर लिया था। उसके गॉल (फ्रांस) और स्पेन आदि देशों के साथ व्यापारिक सम्बन्ध थे। इस समय रोमन साम्राज्य की सीमाएं कार्थेज राज्य की सीमा से मिल गई थी। इसलिये दोनों को एक दूसरे पर अधिकार करने का भय लगने लगा। इस प्रकार साम्राज्यवादी। नीति ने युद्ध को अवश्यम्भावी बना दिया। इतिहासकार वीच ने लिखा है कि "शक्ति विस्तार की भावना ने नय सम्पर्क जगाये, युवक सैनिक राज्य को अपने से पुराने सभ्य देशों से टक्कर लेनी पड़ी। दक्षिण इटली में यूनानी सिसली और यूनान तथा समृद्ध कार्थेज निवासीयों से टक्कर लेनी अनिवार्य हो गई।[1]"

2 **आपसी ईर्ष्या** —इस युद्ध का दूसरा कारण रोम और कार्थेज का आपसी ईर्ष्या व घृणा थी। कार्थेज अपने समय का प्रसिद्ध और समृद्धशाली नगर था। एलिस और जोन ने लिखा है कि 'शक्तिशाली और धनी कार्थेज और टाइबर नदी के तट पर बसे गरीब लेकिन महत्वाकांक्षी नगर के बीच ईर्ष्या थी।[1]"

उस समय कार्थेज सभ्यता का काफी विकास हो चुका था। सारे भूमध्य सागर पर उसका व्यापारिक एकाधिपत्य कायम था। उसके पास एक सुदृढ़ सामुद्रिक बेड़ा था और अच्छी प्रशिक्षित सेना भी थी। कार्थेज का साम्राज्य भी

---

1. वीच डब्ल्यू एन-हिस्ट्री आफ दी-वर्ल्ड, पृष्ठ 183

बहुत विशाल था। और उसके उपनिवेश दूर दूर तक फैले हुये थे। इस समय कार्थेज एक बहुत सम्पन्न नगर था, इसलिये रोमन वासी उसकी सम्पन्नता से जलते थे। दूसरी ओर कार्थेज के लोग रोम की गरीबी, ईंटों के छोटे छोटे मकान आदि को अपने बराबर के स्तर का नहीं मानते थे, और उनसे घृणा करते थे। इसके अतिरिक्त कार्थेज का सेनापति हेनीबाल रोमन लोगों से घृणा करता था। इसीलिये दोनों के बीच यह युद्ध लड़ा गया।

3 व्यापारिक प्रतिद्वन्ता :—इस युद्ध का तीसरा कारण दोनों ही देशों के बीच व्यापारिक प्रतिद्वन्दता थी। रोम और कार्थेज दोनों ही देश पश्चिमी भूमध्य सागर के क्षेत्रों पर अधिकार करना चाहते थे। सेवाइन ने लिखा है कि "रोम और कार्थेज के बीच एक भयंकर युद्ध अनिवार्य हो गया। ये दो प्रतिद्वन्दी सभ्यतायें थीं। जिनमें से प्रत्येक की महत्वाकांक्षाए समान थी, कि पाश्चात्य भूमध्य सागर पर अपना आधिपत्य स्थापित करें।"

रोम के उत्कर्ष से पूर्व कार्थेज के निवासीयों ने भूमध्य सागर पर अपना व्यापारिक एकाधिपत्य स्थापित कर रखा था। यहां के निवासी भूमध्यसागर के माध्यम से सिसली, जिब्राल्टर, स्पेन, फारस और अफीका आदि देशों से व्यापार करते थे। कार्थेज के लाल ध्वज वाले जहाज हाथीदांत, सोना, गर्म मसाले आदि वस्तुएँ जिब्राल्टर तक ले जाते थे और वहां से आवश्यक सामान लेकर कार्थेज लौट आते थे। उस समय सारे देश का व्यापार कार्थेज के हाथ में था। कार्थेज वासियों ने स्पेन में अपने उपनिवेश स्थापित कर लिये थे जिसे न्यू कार्थेज कहा जाता था। सारे भूमध्य सागर पर कार्थेज का अधिकार था। उनकी स्वीकृति के बिना कोई जहाज भूमध्यसागर में प्रवेश नहीं कर सकता था। इसलिये सारे भूमध्यसागर को कार्थेज की झील' कहा जाता था। उस समय कार्थेज वासी बड़े गर्व से कहते थे कि "कोई भी रोमन बिना हमारी आज्ञा लिये भूमध्य सागर में हाथ नहीं धो सकता।" उधर रोमवासी अपने व्यापार का विकास करना चाहते थे। इसके लिये यह आवश्यक था कि भूमध्यसागर में कार्थेज के व्यापार एकाधिपत्य को समाप्त कर दिया जाय और उस पर रोम का अधिकार स्थापित कर दिया जाय। ताकि यूरोप का व्यापार रोम के हाथ में आ जाय। रोम ने इस व्यापारिक अधिकार को पाने के लिये प्रयास किया। जिसका परिणाम यह हुआ कि रोम और कार्थेज में युद्ध अनिवार्य हो गया।

4 सिसली पर अधिकार के प्रश्न को लेकर मतभेद—सिसली का प्रश्न युद्ध का कारण सिद्ध हुआ। प्लेट व जीन ने लिखा है कि "रोम और कार्थेज दोनों ही सिसली के उपजाऊ द्वीप पर जो इन दोनों के बीच में पड़ता था, अधिकार

1. एलिस व जौन–ससार का इतिहास, पृष्ठ 128

करना चाहते थे ।[1]" जब सिसली के राजा परिहास ने रोम पर आक्रमण किया तो रोम ने कार्थेज की सहायता से परिहस को युद्ध में बुरी तरह पराजित किया और उसे इटली छोड़ने के लिये विवश कर दिया । इस युद्ध में विजय प्राप्त करने के पश्चात रोम ने दक्षिणी इटली के यूनानी प्रदेशों पर अधिकार कर लिया और कार्थेज ने सिसली पर अधिकार कर लिया । उस समय सिसली के राजा ने यह भविष्यवाणी की थी कि आगे चलकर रोम और कार्थेज में भी आपस में युद्ध होगा । उसकी यह भविष्यवाणी सत्य सिद्ध हुई ।

रोम यह नहीं चाहता था कि कार्थेज सिसली के कई भागों पर अधिकार कर ले, क्योंकि इससे रोम के विकास का मार्ग अवरुद्ध हो सकता था और कार्थेज किसी भी समय रोम पर आक्रमण कर सकता था । इसलिये रोम सिसली पर कार्थेज का प्रभाव समाप्त कर अपना अधिकार कर स्थापित करना चाहता था । यही कारण आगे चलकर युद्ध के लिये उत्तरदायी बना । एच० जी० वैल्स० ने लिखा है कि "इस प्रकार अत्यधिक व्यर्थ और विनाशकारी युद्ध श्रृंखला का प्रारम्भ हुआ । जिसने मानव इतिहास को कलंकित व अंधकार पूर्ण बनाया "।[2]

5. मेसेना पर अधिकार और प्यूनिक युद्ध का आरम्भ—264 ई. पू. में इटली के सैनिकों ने सिसली नगर के मेसेना प्रदेश पर अधिकार कर लिया । साइरेक्यूज के शासक ने रोम की इस कार्यवाही का विरोध किया तो रोम ने मेसेना में हस्तक्षेप किया । यहीं से कार्थेज और रोम के बीच में युद्ध शुरू हो गया । जिसे प्यूनिक युद्ध कहा जाता है । प्यूनिक युद्ध (264–146 ई. पू.)—रोम और कार्थेज में प्यूनिक युद्ध 119 वर्ष तक रुक रुक कर होते रहे । यह युद्ध तीन चरणों में लड़े गये थे । इनसे जन और धन की अपार क्षति हुई—

1. प्रथम प्यूनिक युद्ध— 264 से 241 ई. पू.
2. द्वितीय प्यूनिक युद्ध 219 से 202 ई. पू.
3. तृतीय प्यूनिक युद्ध 149 से 146 ई. पू.

1. प्रथम प्यूनिक युद्ध—(264 से 241 ई. पू.) कार्थेज एक नाविक शक्ति था जबकि रोम एक स्थल शक्ति था । इस समय रोम ने शक्तिशाली जहाजी बेड़ा तैयार किया और 260 ई. पू. में मायली के नाविक युद्ध में कार्थेज को बुरी तरह पराजित किया । रोम ने स्थल मार्ग से भी दो सेनाएँ कार्थेज पर आक्रमण करने के लिये भेजी । कार्थेज के सेनापति हेमिलकार ने इन सेनाओं से युद्ध

1. स्वेंट व जीन–विश्व का इतिहास पृष्ठ 127
2. वेल्स, एच. जी. दी आउट लाइन आफ हिस्ट्री पृष्ठ 431

किया, जिसमे रोम के 2 लाख सैनिक मारे गये परन्तु कार्थेज की शक्ति कमजोर पड गई। अन्त मे कार्थेज ने 241 ई. पू. मे रोम से सधि कर ली। इस सधि के अनुसार कार्थेज को सिसली का प्रदेश रोम को देना पडा और उसने 3200 टेलेंट युद्ध हर्जाने के रूप मे रोम को देना स्वीकार कर लिया।

इस सधि से रोम के साम्राज्य का विस्तार हुआ और अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में उसका सम्मान बढ़ा। इससे दोनो देशो के बीच में 20 वर्ष तक शान्ति बनी रही। कार्थेज अपनी पराजय का बदला लेना चाहता था जिसके फलस्वरूप दूसरा युद्ध अवश्यम्भावी हो गया।

2 द्वितीय प्यूनिक युद्ध— (219 से 202 ई पू)—प्रथम प्यूनिक युद्ध के बाद रोम ने अपने साम्राज्य विस्तार के लिये सार्डीनिया एलोरिया आदि नगरो पर अधिकार कर लिया जो कार्थेज के लिए असहनीय था। 229 ई पू. मे कार्थेज के सेनापति हेमिलकर की मृत्यु हो गई। उसके पश्चात उसका पुत्र हैनिबाल कार्थेज का सेनापति बना। उसने 219 ई पू मे रोम के मित्र राज्य सगुनटम पर अधिकार कर लिया। इस पर रोम ने कार्थेज के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दी और दूसरा प्यूनिक युद्ध आरम्भ हो गया। प्लेट व जीन ने लिखा है कि "दूसरे प्यूनिक युद्ध की कहानी हैनीबाल के जीवन चरित्र सी ही है। 1"

हैनिबाल ने 219 ई० पू० मे 20,000 सैनिको और 6000 घुडसवारो के साथ इटली पर आक्रमण कर दिया। उसने तरेसीवीन की झील के पास और केनी नामक स्थान पर रोमन सेनाओ को बुरी तरह पराजित किया। हैनिबाल 15 वर्ष तक इटली मे कत्ले आम मचाता रहा और इटली पर अधिकार जमाये रहा। इस समय उसने सभी रोमन सेनापतियों को पराजित किया था। एच जी वेल्स ने लिखा है कि "अगला 15 वर्ष का इतिहास प्रखर और विनाशकारी आक्रमणो का इतिहास है। हैनिबाल 15 वर्ष तक इटली को अपनी मुट्ठी म दाबे रहा। वह विजयी और अपराजित था। रोम के सेनापति उसके आगे न टिक सके और जहा कही भी उसके सामन आते और पराजित होते।"[2] इस समय रोम के एक सेनापति सीपीओने स्पेन म न्यूकार्थेज पर अधिकार कर लिया और हैनिबाल के रसद मार्ग को काट दिया। उसका भाई हस्द्रबाल जो उसकी सहायता के लिये आ रहा था, उसको रोमन सेना ने मार दिया और कटा हुआ सिर हैनिबाल के पास भेज दिया। अपने भाई के कटे हुए सिर को देखकर हैनिबाल ने इटली मे फिर मारकाट मचाई और सम्पूर्ण इटली पर अधिकार कर लिया।

---

1 प्लेट व जीन—विश्व का इतिहास पृष्ठ 128

4 वेल्स, एच. जी–दी आउट लाइन आफ हिस्ट्री पृष्ठ 437

इस समय तक रोमन सेनापति सीपीओ स्पेन पर अधिकार कर चुका था और अब उसने कार्थेज पर आक्रमण कर दिया। इस पर हैनिबाल कार्थेज की रक्षा के लिये इटली से रवाना हुआ और 202 ई० पू० में हैनिबाल और सीपीओ के बीच जामा नामक स्थान पर एक भयकर युद्ध हुआ। जिसमें हैनिबाल पराजित हुआ और रोम के सेनापति सीपीओ की शानदार विजय हुई। रोम के सैनिकों ने हैनिबाल का पीछा किया लेकिन उसने जहर पीकर अपनी जीवन लीला समाप्त कर दी।

इसके पश्चात कार्थेज के शासक को रोम के साथ एक अपमानजनक सधि पर हस्ताक्षर करने के लिये बाध्य होना पडा। यह सधि 201 ई० पूर्व. में हुई। इसकी प्रमुख शर्तें निम्न लिखित थी—

1. स्पेन पर रोम का अधिकार मान लिया गया।
2. युद्ध क्षतिपूर्ति के रूप में कार्थेजने 10,000 टैलेन्ट रोम को देना स्वीकार कर दिया।
3. कार्थेज की जल शक्ति को कम कर दिया गया।
4. कार्थेज ने 50 वर्ष तक रोम को कर देने का वचन दिया।
5. कार्थेज ने बिना रोम की स्वीकृति के किसी से युद्ध न करना स्वीकार कर लिया।

इस सधि के पश्चात जब कार्थेज फिर शक्तिशाली हो गया तो रोमनिवासी कहने लगे "कार्थेज को नष्ट कर डालना चाहिये।"[1]

3. तृतीय प्यूनिक युद्ध —(149 से 145 ई० पू०) कार्थेज दो बार युद्धों में पराजित होने पर भी फिर से पनप गया और समृद्ध हो गया तो रोमवासी इससे भयभीत हुए। वे ऐसे मौके की तलाश में थे जिससे कि कार्थेज को पूर्णरूप से नष्ट कर दिया जाय। ऐसा मौका उन्हें 149 ई० पू० में मिला, जबकि कार्थेज ने न्यूमीडिया के शासक पर आक्रमण कर दिया। इस पर रोम ने कार्थेज पर सधि की शर्तों का उल्लंघन करने का आरोप लगाया और उस पर आक्रमण कर दिया। इस समय कार्थेज इस योग्य नहीं था कि वह रोम से युद्ध कर सके। इस लिये उसने आत्म समर्पण कर दिया। इस पर दोनो के बीच सधि वार्ता प्रारम्भ हुई, लेकिन रोम तो कार्थेज को पूर्ण रूप से नष्ट करना चाहता था। इसलिये कार्थेज ने वार्ता को भग कर युद्ध की तैयारी करनी प्रारम्भ कर दी। इस युद्ध में वहा की स्त्रियो ने भी अच्छा सहयोग दिया एम. आर. रे ने लिखा है कि "इस समय कार्थेज वालो ने समस्त गुलामों को मुक्त कर दिया और प्रत्येक मनुष्य

1. प्लेट व जीन—विश्व का इतिहास, पृष्ठ 129
2. वेल्स, एच. जी—दी आउट लाइन आफ हिस्ट्री पृष्ठ 437

व बच्चे की सुरक्षा निमित शास्त्र निर्माण में लगा दिया। रात दिन काम चलता रहा और ऐसा कहा जाता है कि स्त्रियों ने इंजिन के लिये रस्सियाँ बटवाने के लिये अपने बाल कटवा दिये।"[1]

युद्ध पुनः शुरू हो गया। कार्थेज के लोगों ने अपने देश की सुरक्षा के लिये सब कुछ बलिदान कर दो वर्ष तक रोम से युद्ध किया, लेकिन इस युद्ध में कार्थेज की बुरी तरह से पराजय हुई। रोमन सैनिकों ने इस युद्ध के दौरान नगर को लूटा और कत्ले आम मचा दिया। कार्थेज की 5 लाख की जनसंख्या में से केवल 60 हजार लोग जीवित बचे थे उनको भी गुलाम बनाकर रोम ले जाया गया। सारे कार्थेज को रोमन सैनिकों ने अग्नि देव के भेंट चढ़ा दिया और उसका नामोनिशान मिटा दिया। एच जी वेल्स ने लिखा है कि "सारे नगर को जला दिया गया और खण्डहरों का निशान मिटाने के लिये उन पर हल चला दिया गया और बड़ी गंभीरता से शाप खुदवा दिया गया कि जो कोई इसे पुनः बसाने की चेष्टा करेगा उसका सर्वनाश होगा।[1]" कार्थेज की पराजय के कारण—इन युद्धों में कार्थेज की पराजय के प्रमुख कारण निम्नलिखित थे :—

(1) कार्थेज के सैनिक धन के लोभी थे। उनमें राष्ट्रीय भावना का पूर्णरूप से अभाव था।

(2) कार्थेज ने विजित प्रदेशों में सुदृढ़ शासन व्यवस्था की स्थापना नहीं की।

(3) कार्थेज के व्यापारियों ने सेनानायकों को सहयोग नहीं दिया।

(4) कार्थेज की सरकार युद्ध में सफलता प्राप्त करने वाले सैनिकों को इनाम और पदोन्नति आदि देकर प्रोत्साहित नहीं करती थी। इसके विपरीत युद्ध में असफलता प्राप्त करने वाले सेनानायक को मृत्यु दंड दिया जाता था।

प्यूनिक युद्धों के परिणाम :—प्यूनिक युद्धों का यूरोप के अलावा अफ्रीका पर भी महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ा। इन युद्धों के प्रमुख परिणाम निम्नलिखित थे —

(1) **अफ्रीका पर प्रभाव** —इन युद्धों का अफ्रीका पर सबसे अधिक प्रभाव पड़ा। रोम ने तीन युद्धों के द्वारा अफ्रीका के सबसे बड़े कार्थेज साम्राज्य का नामोनिशान मिटा दिया और उस पर अधिकार कर दिया। अब भूमध्यसागर पर रोम का अधिकार हो गया। इसलिये उसे *'रोमन झील' कहा जाने लगा।*

(2) **रोमन साम्राज्य का विस्तार** :—इन युद्धों से यूरोप में रोम के साम्राज्य का प्रसार हुआ। रोम ने सिसली, कोर्सिका, सार्डीनिया, स्पेन

---

1 वेल्स, एच. जी दि आउट लाइन आफ हिस्ट्री पृष्ठ 445

और उत्तरी पश्चिमी अफ्रीका पर अधिकार कर लिया। इसलिये रोम का साम्राज्य दूर तक फैल गया।[1] अब रोम एक विशाल साम्राज्य का स्वामी बन गया। इसके पश्चात् भी रोम ने साम्राज्यवादी नीति को जारी रखा। सेबाइन ने लिखा है कि "तीसरे प्यूनिक युद्ध में कार्थेज को नष्ट कर दिया और रोम पश्चिम की सबसे महान शक्ति हो गया। रोमन साम्राज्य ने विस्तार की पराकाष्ठा इसी युग में प्राप्त की और 113 ई० में वह सबसे बड़ा राज्य था।[1]"

(3) रोम पर यूनानी संस्कृति का प्रभाव :—कार्थेज के पतन के बाद जब रोम यूनान के सम्पर्क में आया तो उसने यूनानी सभ्यता की कई चीजें ग्रहण कीं। प्रथम प्यूनिक युद्ध के बाद रोमनों ने सिसली में संगमरमर के यूनानी मंदिर और मूर्तियां देखीं तो वे यूनानियों की कला से बहुत प्रभावित हुए। दूसरे प्यूनिक युद्ध के बाद रोमन लोग यूनानी मूर्तियों को रोम में ले आये। अब रोमन लोगों की यूनानी साहित्य के प्रति भी रुचि उत्पन्न हो गई और वे उसका अध्ययन करने लगे। रोमनों ने यूनान की सभ्यता और संस्कृति के कई तत्व ग्रहण किये और यूरोप के देशों में उनका प्रचार किया।

4. रोम के व्यापार में वृद्धि :—इन युद्धों में रोमन साम्राज्य का विस्तार होने से उसके व्यापार में भी वृद्धि हुई। रोम का वैभव दिन प्रतिदिन बढ़ता गया। अब रोम एक सम्पन्न और समृद्धिशाली व विशाल साम्राज्य के रूप में परिणित हो गया।

5. रोम का एकतन्त्र की ओर अग्रसर होना :—रोम के साम्राज्य का अत्यधिक विस्तार होने के कारण दूरस्थ प्रदेशों के लिये एसेम्बली में भाग लेना असम्भव था। इसलिये सीनेट में रिश्वतखोरी और भ्रष्टाचार निरन्तर बढ़ता रहा। सीनेट के सदस्यों ने बड़ी बड़ी जागीरें बना लीं। इस प्रकार जनतन्त्रीय प्रणाली समाप्त होने लगी। इस समय सीनेट और रोम में गृह युद्ध प्रारम्भ हो गया। सैनिकों ने जनता का समर्थन किया। रोमवासियों ने 82 ई० पू० में सुल्ला को रोम का शासक नियुक्त किया। अब रोम के शासक निरंकुश रूप से प्रजा पर शासन करने लगे। इसका परिणाम यह हुआ कि रोम में प्रजातन्त्रात्मक शासन एकतन्त्रीय शासन प्रणाली की ओर अग्रसर होने लगा।

---

1. सेबाइन—ए हिस्ट्री आफ वर्ल्ड सिवलीजेशन, पृष्ठ 167

6. कृषकों पर प्रभाव —इन युद्धों से कृषकों पर बहुत प्रभाव पड़ा। रोम के कृषक अब खेती का काम छोड़कर सेना में भर्ती होने लगे। यद्यपि ये कृषक सैनिक युद्ध में भाग लेते थे, लेकिन सीनेटर लूट का माल इनको नहीं देते थे। इसके अतिरिक्त जो कृषक सैनिक अपने घर वापस लौट आते थे तो उन्हें पता चलता था कि जमींदार को लगान न देने के कारण उनकी भूमि पर उसने अधिकार कर लिया है। इस प्रकार कृषक वर्ग शासकों को पूर्ण रूप से असन्तुष्ट था।

7. गुलामों की समस्या —रोम के शासक युद्ध में बन्दी बनाये गये व्यक्तियों को दास बना लेते थे। यहां का सामाजिक ढांचा दासों पर आधारित था। रोम में दासों पर बहुत अत्याचार किये जाते थे। उन्हें एक दूसरे के साथ जंजीरों में बांधकर खेतों में काम करवाया जाता था। प्रत्येक मालिक अपने गुलाम की पहचान के लिये उसको दागता था। यदि कोई दास अपने स्वामी की आज्ञा की अवहेलना करता तो उसे रोमन जनता के मनोरंजन के लिये भूखे शेर से लड़ने के लिये बाध्य किया जाता था।

दासों ने 100 ई. पू. में दासता से मुक्ति प्राप्त करने के लिये सिसली में विद्रोह कर दिया। सरकार ने इस विद्रोह का दमन किया। इसके पश्चात् दासों की दशा में सुधार के लिये प्रयास भी किये गए। प्लेट व जीन ने लिखा है कि "दासत्व प्रथा ने गणराज्य को निर्बल कर दिया।" [1]

3 सैनिक अधिनायकों का युग .-(133–27 ई० पू०) रोम के सैनिक अधिनायकों ने दासों पर अत्याचार करने वाले गणतन्त्रात्मक शासन व्यवस्था को समाप्त कर शासन की बागडोर अपने हाथ में ले ली। पांच सैनिक अधिनायकों ने 133 ई० पू० से 27 ई० पू० तक रोम पर शासन किया।

(1) ग्रेकी के सुधार—133 ई० पू० में टिबेरियस पहला ट्रिब्यून चुना गया। उसने भूमि की अधिकतम सीमा 666 एकड़ निश्चित की और जिनके पास इससे अधिक भूमि थी उसे जब्त कर भूमि हीन किसानों में बांट दिया गया। टिबेरियस के इस निर्णय का सीनेटरों ने विरोध किया, लेकिन जब वह दुबारा ट्रिब्यून चुना गया तो 133 ई० पू० में उसकी हत्या करवा दी गई।

टिबेरियस की मृत्यु के पश्चात् उसका छोटा भाई ग्रेयस गीक्स रोम का अधिनायक चुना गया। उसने भी अपने भाई की सुधारवादी नीति को

---

1. प्लेट व जीन—विश्व का इतिहास, पृष्ठ 135

जारी रखा और गरीब लोगों को बाजार भाव से आधे पैसों में अनाज दिलवाया। इस कमी की पूर्ति के लिये उसने एशियाई भागों के करों में वृद्धि की। सीनेटरों ने अगले चुनाव में ग्रेयस ग्रीकस को हरा दिया। जब जनता ने उसे दुबारा अधिनायक बनाने के लिए आन्दोलन शुरू किया तो सीनेटरों ने 121 ई० पू० में उसकी हत्या करवा दी। टिबेरियस और ग्रेयस ग्रीकस इन दोनों भाईयों के सुधारों को संयुक्त रूप से ग्रेकी सुधार की संज्ञा दी जाती है।

(2) मारियस —मारियस एक कुशल सेनापति था जो प्यूनिक युद्धों में अपनी वीरता का प्रदर्शन कर चुका था। इस समय सीनेटरों के विरोध के कारण रोम में अराजकता एवं अव्यवस्था फैल रही थी। तब मारियस रोम का दूसरा अधिनायक चुना गया। उसने सम्पूर्ण इटली के निवासियों को रोम की नागरिकता प्रदान की। मारियस ने एक ऐसी सेना का संगठन किया जो सिर्फ उसके प्रति निष्ठावान थी।

(3) सुला —सीनेट मारियस की विरोधी थी और उसे हटाना चाहती थी। ऐसे समय में 82 ई० पू० में सुला ने सीनेट व पोम्पी की सहायता से मारियस को हटा दिया और बलपूर्वक राज्य पर अधिकार स्थापित कर रोम अधिनायक बन गया। सुला ने 82 ई० पू० से लेकर 78 ई० पू० तक रोम पर शासन किया। उसने सीनेट के अधिकारों में वृद्धि की। इतिहासकार सरदेसाई ने लिखा है कि "निरंकुश सीनेट ने धीरे धीरे प्रजातन्त्रीय रूप छोड़ दिया।"

(4) पोम्पे —जब पोम्पे सुला का सेनापति था। उस समय डाकुओं ने भूमध्य सागर में आतंक मचा रखा था। पोम्पे ने चालीस दिन में इन डाकुओं का दमन कर शांति व्यवस्था कायम की।

सुला की मृत्यु के पश्चात उसका सेनापति 70 ई पू में रोम का अधिनायक बना। उसने 70 ई पू से लेकर 48 ई पू तक रोम पर शासन किया। रोम का अधिनायक बनने के बाद पोम्पे ने साम्राज्य विस्तार की नीति को अपनाया और उसने बिथनिया, सिलसिया और सीरिया आदि प्रदेशों पर अधिकार कर लिया। उसने 63 ई पू में यरूशलम की एक प्रान्त के रूप में स्थापना की। पोम्पे 62 ई पू में जब रोम लौटा, तो सीनेट ने उसके कई कार्यों पर सन्देह प्रकट किया। ऐसे समय में पोम्पे ने जूलियस सीजर से सहायता मांगी। आगे चलकर जूलियस सीजर और

1 ग्रांट व जोन—विश्व का इतिहास, पृष्ठ 139

पोम्पे मे भी मत भेद उत्पन्न हो गये। इसलिये जूलियस सीजर ने 48 ई पू मे थैसले के युद्ध मे पोम्पे को बुरी तरह से पराजित किया। पोम्पे यहां से जान बचाकर मिश्र चला गया लेकिन वहाँ मिश्र के सैनिको ने उसको मार डाला।

(5) **जूलियस सीजर**—जूलियस सीजर का जन्म 90 ई पू मे एक कुलीन परिवार मे हुआ था। यह बचपन से ही बडा महत्वाकाक्षी था। उसने (जूलियस सीजर) जनतान्त्रिक नेता की पुत्री से विवाह किया था और अपनी पुत्री का विवाह पोम्पे से कर दिया था। इस प्रकार उसने अपने राजनीतिक भविष्य को उज्जवल बना दिया। वह जनता म लोकप्रिय होने के लिये भारी कर्ज लेकर भोज दिया करता था। जूलियस सीजर सिकन्दर की जीवनी को पढते पढते अपने मित्रो के सामने रोने लग गया। जब मित्रो ने इसका कारण पूछा तो उसने उत्तर दिया "क्या यह मेरे लिये आसू बहाने की बात नहीं है? मेरी आयु मे सिकन्दर महान ने कितने ही राष्ट्रो को जीत लिया था। मैंने अब तक क्या किया है?"[1] वेल्स ने लिखा है कि "व्यक्तिगत रूप से जूलियस सीजर एक चकाचौन्ध करने वाला सितारा था जैसा मानव जाति के इतिहास मे कभी नही हुआ।"[2] सीजर के समय म 59 ई पू एक त्रिगुट बना। इसम केसस, पोम्पे और जुलियस सीजर तीनो राजनीतिक थे। ये तीनो मिलकर रोम का शासन चला रहे थे। पोम्पे प्रसिद्ध सेनानायक था। केसस पू जीपति था और जुलियस सीजर एक महत्वाकाक्षी राजनीतिक था। इन तीनो राजनीतिज्ञो ने शासन का विभाजन कर लिया। सीजर को गॉल पर अधिकार करने के लिये भेजा गया। केसस को फारस पर अधिकार करने के लिये भेजा गया, लेकिन 53 ई पू मे उसकी फारस म मृत्यु हो गई। पोम्पे को रोम का शासक बनाया गया।

सीजर की विजये—सीजर ने गॉल (फ्रास) पर अधिकार कर उसे रोमन साम्राज्य म मिला लिया। इसक पश्चात सीजर न सम्पूर्ण जर्मनी, फ्रांस और ब्रिटेन पर अधिकार कर लिया और उनको रोमन साम्राज्य मे मिला लिया। गॉल वासियो ने 50 ई पू मे स्वतन्त्रता प्राप्त करने के लिये सघर्ष प्रारम्भ कर दिया, परन्तु सीजर ने उन्ह एलेसिया नामक स्थान पर बुरी तरह से पराजित किया। 50 ई पू मे पूर्ण गॉल प्रदेश पर रोमन साम्राज्य का अधिकार हो चुका

---

1. प्लैट व जीन–विश्व का इतिहास, पृष्ठ 139
2. वेल्स, एच जी–दी आउट लाइन आफ हिस्ट्री, पृष्ठ 466

था। सीजर को गॉल प्रदेश की विजय से बहुत धन सम्पत्ति प्राप्त हुई।

सीजर ने गॉल प्रदेश में एक पुस्तक "गॉल युद्धों पर टिप्पणी" लिखी। उसमें उसने अपनी सैनिक सफलताओं का वर्णन किया था। यह पुस्तक उसने रोम भेज दी, ताकि वहां की जनता उसे पढ़ें और वह लोकप्रिय बन सके। रोमन जनता ने जब उसकी पुस्तक को पढ़ा, तो वह सीजर को एक महान सेनापति मानने लगी। सीजर की लोकप्रियता से पोम्पे और सीनेट दोनों ही नाराज थे, क्योंकि पोम्पे तो रोम का वास्तविक शासक बनना चाहता था और सीनेट किसी भी सेनापति की ज्यादा लोकप्रियता को सहन नहीं कर सकती थी।

पोम्पे ने सीनेट की सलाह से सीजर को यह आदेश भेजा कि वह अपनी सेना को भंग करके रोम लौट आवे। सीजर सीनेट के आदेश की अवहेलना कर अपनी सेना के साथ रोम लौटा और उसने कहा कि "डी डाई इज कास्ट" (पासा फेंका जा चुका है।) सीनेट ने पोम्पे के नेतृत्व में सीजर के विरुद्ध एक सेना भेजी। जिसे सीजर ने परास्त कर दिया। सीजर की सेना और पोम्पे के बीच फारसेलस के मैदान मे 48 ई० पू० में एक भयकर युद्ध हुआ। जिसमे पोम्पे पराजित हुआ और मिश्र की ओर भाग गया। वहां पर सीजर के समर्थकों ने उसकी हत्या कर दी और सीजर के सैनिकों ने मिश्र पर भी अधिकार कर लिया।

अब सीजर रोम का अधिनायक बन गया और सीनेट ने उसे "ईम्परेटर" की उपाधि प्रदान की। इस समय सीजर मिश्र की रानी क्लीओपेट्रा के प्यार मे फस गया था। इसलिये उसने एक वर्ष क्लीओपेट्रा के साथ मिश्र मे बिताया। इस समय एशिया माइनर में विद्रोह हुआ तो सीजर ने अपनी सेना के साथ जाकर विद्रोह का दमन कर दिया और सीनेट को अपनी रिपोर्ट में लिखा कि "मैं आया, मैंने देखा और मैंने जीत लिया।" इसके पश्चात् उसने स्पेन के विद्रोह को दबाने में सफलता प्राप्त की।

सीजर का तानाशाह बनना—रोम का अधिनायक बनने के बाद सीजर ने राज्य की सारी शक्तियां अपने हाथों मे केन्द्रित कर ली। सीनेट पर अपना अधिकार स्थापित कर लिया और उसने इसमे अपने समर्थकों को भरकर एक शक्तिहीन संस्था बना दी। सीजर ने ट्रिब्यून के अधिकार कम कर दिये। और अपने समर्थकों को उप कौन्सिल के पदों पर नियुक्त किया। अब सीजर सीनेट की सलाह लिये बिना किसी भी देश के साथ युद्ध और शांति समझौते कर सकता था। वह जीवन भर कौन्सल के पद पर बना रह सकता था। सीजर को "देश का पिता" की उपाधि प्रदान की गई और उसने अपने नाम के सिक्के चलाये।

सीजर के मुख्य उद्देश्य—रोम में शांति और व्यवस्था स्थापित करने के पश्चात सीजर ने कुछ सुधार करने का निश्चय किया। उसके जीवन के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित थे —

(i) रोम के विशाल साम्राज्य की सुरक्षा के लिये कदम उठाना।
(ii) साम्राज्य की आर्थिक व्यवस्था को सुधारने के लिये कार्य करना।
(iii) सेना को सन्तुष्ट रखना।
(iv) रोम की बढ़ती हुई जनसंख्या को रोकना।

सीजर के सुधार—सीजर ने निम्नलिखित सुधार किये—

(1) नगरों में म्युनिसिपल से कर वसूल करने का अधिकार छीन लिया।
(2) एशिया के रोमन प्रान्तों से कर वसूल करने का काम सरकारी अधिकारियों को सौंप दिया गया।
(3) उसने भूमिहीन लोगों को भूमि दी।
(4) सीजर ने अपनी सेना में सभी क्षेत्रों के व्यक्तियों को भर्ती करना शुरू कर दिया।
(5) रोमन कानून का पालन करने वाले व्यक्तियों को रोमन नागरिकता और मताधिकार प्रदान किया गया।
(6) उसने अपने नाम पर "जूलियन केलेण्डर" बनवाया।
(7) उसने कई स्थानों पर रोमन उपनिवेशों की स्थापना की।
(8) उसने अपने विशाल साम्राज्य में धार्मिक सहिष्णुता की नीति का पालन किया। वह शत्रुओं के प्रति भी उदार व्यवहार करता था।
(9) सीजर ने रोमन साम्राज्य के सभी प्रान्तों पर अपना सीधा नियन्त्रण स्थापित किया। प्रान्तों के अधिकारियों को कम अवधि के लिये नियुक्त किया जाता था, ताकि वे विद्रोह नहीं कर सकें।
(10) सीजर भ्रष्ट कर्मचारियों और अधिकारियों को कठोर दण्ड देता था।
(11) प्रान्तों में अनेक स्थानों पर स्कूल खोले गये।
(12) न्यायालयों में सीजर ने निष्पक्ष और ईमानदार जजों की नियुक्ति की।
(13) सीजर ने बढ़ती हुई जनसंख्या को बसाने के लिये टाइबर नदी की धारा को बदल दिया और वहां पर रोम वासियों को बसाया गया।
(14) सीजर ने रोम के व्यापार में वृद्धि करने के लिये कई कदम उठाये। उसने विदेशों से आयात किये जाने वाले माल पर आयात कर लगा दिया।

इस प्रकार स्पष्ट है कि जूलियस सीजर एक कुशल शासन प्रबन्धक था जिसने अल्प समय में कई महत्वपूर्ण सुधार किये। एलिस व जौन ने लिखा है कि

"इन सब सुधारों में प्रकट होता है कि वह सिर्फ तीक्ष्ण बुद्धी वाला राजनीतिज्ञ ही नहीं अपितु एक दूरदर्शी राष्ट्र निर्माता भी था।"[1]

सीजर की मृत्यु एवं मूल्यांकन—जूलियस सीजर की सफलताओं से उसके विरोधी सेनापति और सीनेटर ईर्ष्या रखते थे। जब सीजर ने अपने को देवता का वंशज बताया तो रोम की जनता भी उसके विरुद्ध हो गई। सीजर के क्लीओपेट्रा के प्रति अत्यधिक प्यार को भी जनता सहन नहीं कर सकती थी। पोम्पे के अनुयायी कैसियस और ब्रूटस ने सीजर पर यह दोषारोपण किया कि वह प्रजातन्त्र को समाप्त कर रोम में राजतन्त्रात्मक शासन व्यवस्था स्थापित करना चाहता है। इसके पश्चात् 15 मार्च 44 ई० के दिन ब्रूटस और कैसियस ने सीनेट भवन में जूलियस सीजर को छुरा भोंक कर मार डाला।

जूलियस सीजर ने अपने पांच वर्ष के शासन काल में रोमन साम्राज्य में शांति और सुव्यवस्था की स्थापना की। उसने कई महत्वपूर्ण सुधार किये। वह अपने शत्रुओं के प्रति उदारता पूर्ण व्यवहार करता था। इस प्रकार सीजर एक कुशल प्रशासक और शासक प्रबन्धक था। रोबिन्सन ने लिखा है कि "सीजर की मृत्यु के पश्चात् कुछ समय के लिये रोम में अशांति उत्पन्न हो गई।" मोनसन ने लिखा है कि 'उसकी संगठन शक्ति अद्भुत थी। वह एक राजा बना परन्तु राजाओं जैसा व्यवहार उसने कभी नहीं किया।"

गणतन्त्र के समय की रोमन सभ्यता

1. प्रशासन व्यवस्था—रोम में गणतन्त्रात्मक शासन व्यवस्था विद्यमान थी। राज्य की वास्तविक शक्ति जनता द्वारा चुनी हुई सीनेट के हाथों में केन्द्रित होती थी। सीनेट की अनुमति के बिना युद्ध और शांति समझौते नहीं किये जा सकते थे। शासन प्रबन्ध के लिये राजा के स्थान पर सीनेट एक वर्ष के लिये दो कौन्सल चुनती थी। जो एक दूसरे पर नियन्त्रण रखते थे। कौन्सल की सहायता के लिये क्वेस्टर्स (वित्त अधिकारी) सेन्सर्स (कर वसूल करने वाला अधिकारी) एडीज (शांति व्यवस्था बनाये रखने वाला) प्रीटोर (न्यायाधीश) आदि अधिकारियों की नियुक्तियां भी एक वर्ष के लिये की जाती थी। संकट के समय कौन्सल को हटा कर छः महीने के लिये एक अधिनायक नियुक्त किया जा सकता था।

प्रान्तों के शासन के लिये एक गवर्नर की नियुक्ति की जाती थी। जिसका कार्यकाल एक वर्ष होता था। इन गवर्नरों को वेतन नहीं मिलता था इसलिये वह जनता से मनमाना धन वसूल करते थे। कानून बनाने के लिये सीनेट और एसेम्बली दो संस्थायें थी। सीनेट के सभी सदस्य पेट्रिशियन वर्ग के व्यक्ति होते थे दूसरा सदन

---

1. एलिस व जौन—संसार का इतिहास, पृष्ठ 133

एसेम्बली थी। जिसके सदस्य प्लेबियन वर्ग के व्यक्ति होते थे। सीनेट द्वारा पास किये कानून को एसेम्बली अस्वीकार नही कर सकती थी।

2. धार्मिक जीवन—प्रोफेसर डेविस ने लिखा है कि "रोम के निवासी प्रकृति के देवताओ की अपेक्षा आत्माओ की उपासना मे अधिक विश्वास करते थे" इस प्रकार प्रारम्भ मे रोमवासी आत्माओ की उपासना करते थे। यूनान के सम्पर्क मे आने के बाद यहा के लोग जूपीटर (देवधिदेव) मार्स (युद्ध का देवता) और वीनस (प्रेम की देवी) आदि देवताओ की उपासना भी करने लगे। रोम की शासन व्यवस्था पर धार्मिक विचारो का बहुत अधिक प्रभाव था। वहाँ धार्मिक उत्सवो पर सरकार की ओर से अवकाश घोषित कर दिया जाता था। रोम में धार्मिक कार्य पुरोहितो के द्वारा सम्पन्न किये जाते थे। वहा के निवासियो ने मिश्र के सम्पर्क मे आने के बाद वहा की मुख्य देवी "आइसिस" की उपासना करना प्रारम्भ कर दिया। यहा के लोग कई प्रकार के अधविश्वासो मे विश्वास करते थे।

3. दर्शन—रोम ने दर्शन के क्षेत्र में यूनान से कई बातें विकृत रूप मे ग्रहण की। जैसे यूनानी दार्शनिक इपीक्यूरस ने बताया कि जीवन का मुख्य उद्देश्य सुख प्राप्त करना है। रोमवासियो ने उसके इस कथन का आशय इन्द्रिय सुखो से लिया और वे भोग विलास मे डूब गये। इसके अतिरिक्त यहा के लोगो ने तर्क पर बहुत अधिक बल दिया।

4. साहित्य—रोम के साहित्य मे भी मौलिकता दृष्टिगोचर नही होती। उन्होने इस क्षेत्र म यूनानियों का अनुसरण किया। यूनान के प्रसिद्ध कवि होमर की रचनायें इलियड व ओडेसी का रोमनो ने लैटिन भाषा मे अनुवाद करवाया। रोम प्रसिद्ध कवि केटलस ने यूनानी कवियो की शैली का आधार बनाकर अपनी कविताऐं लिखी। ल्यूक्रेटिपस नामक कवि की कविताओ मे मौलिकता दृष्टिगोचर होती है। उसने "डी रेरम नेचुरा" नामक ग्रन्थ लिखा, जिसमे मानव सभ्यता के विकास के बारे मे अच्छा वर्णन किया है।

रोम के प्रसिद्ध नाटककार टैरेन्स तथा प्लेटस ने यूनानी नाटको को आधार बनाकर सुखान्त नाटक लिखे। इन नाटको मे मौलिकता का अभाव स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होता है। रोम ने गद्य साहित्य के क्षेत्र मे कुछ नवीनता प्रस्तुत की। सिसरो रोम का एक प्रसिद्ध गद्य लेखक था। उसके निबन्धो मे मौलिकता स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होती है।

5. आर्थिक व्यवस्था—रोम के लोगों का मुख्य व्यवसाय कृषि तथा पशु-पालन था। यहा की मुख्य उपज गेहू, जौ, बाजरा व फलो मे अगूर, जैतून और सेब आदि थी। रोम मे उद्योग धधे और व्यापार के क्षेत्र मे अधिक विकास नही हुआ।

6. सामाजिक व्यवस्था—रोम मे सयुक्त परिवार प्रथा प्रचलित थी। परिवार के मुखिया की आज्ञा का पालन करना प्रत्येक सदस्य का कर्तव्य था। यहाँ

के समाज में स्त्रियों को उच्च स्थान प्राप्त था। वे सार्वजनिक समारोहों में भाग ले सकती थी। रोमन समाज मे दासो की दशा शोचनीय थी।

7 कला—कला के क्षेत्र मे रोम की कोई मौलिक देन नही थी। उन्होने स्थापत्य कला के क्षेत्र म यूनानियो का अनुसरण किया और चित्रकला क्षेत्र म मिश्र का अनुसरण किया। मूर्ति कला के क्षेत्र म भी उन्होने कुछ प्रगति की। रोम के कलाकारो द्वारा निर्मित मूर्तियो म सजीवता और यथार्थता स्पष्ट रूप से दिखाई देती है।

1 साम्राज्यवादी रोम—(27 ई० पू० स 476 ई० तक) रोम मे जूलियम सीजर की मृत्यु के पश्चात् शासक बनो के लिये तीन उम्मीदवार थे—

1 पहला, मार्क एन्टोनी था जो सीजर का घनिष्ट मित्र तथा ऑक्टेवियन का बहनोई था।

2 दूसरा, उम्मीदवार ऑक्टेवियन था जो सीजर का दत्तक पुत्र तथा उसकी बहिन का पौत्र था।

3 तीसरा, उम्मीदवार लेपिडस था जो सीजर का विश्वसनीय सेनापति था।

मार्क एन्टोनी अपने प्रयासो से रोम का कौन्सलर बन गया। लेपिडस सैनिक शक्ति के आधार पर कौन्सलर बन गया। ऑक्टेवियन भी लेपिडस से सैनिक सहायता लेकर रोम का कौन्सलर बन गया। इस प्रकार रोम का दूसरा "ट्राइम-विरेट" बना, जिसके हाथ मे शासन की सारी शक्ति केन्द्रित थी। इस त्रिगुट म एन्टोनी, 'ऑक्टेवियन" और लेपिडस आदि थे। ट्राइमविरेट का मुख्य उद्देश्य सीजर के हत्यारो को दण्ड देना था। इस समय सीजर के हत्यारे कैसियस और ब्रूटस अपनी सेना के साथ मेसीडोनिया मे थे। इसलिये ट्राइमविरेट ने एक सेना उन पर आक्रमण करने के लिये भेजी। रोम की सेना और कैसियस और ब्रूटस की सेना के बीच म फिलपि (मेसीडोनिया के समीप) नामक स्थान पर एक भयकर युद्ध हुआ। जिसमें रोम की सेना ने उन दोनो को बुरी तरह पराजित किया, लेकिन कैसियस और ब्रूटस ने मैदान से भागकर अपनी जीवन लीला समाप्त कर दी।

इसके पश्चात ट्राइमविरेट ने सीजर की हत्या मे भाग लेने वाले सीनेटरो को मृत्यु दड दिया। सीजर के विरोधियो का दमन करने के बाद ट्राइमविरेन्ट न रोमन साम्राज्य को तीन भागो म बांट दिया —

1 मार्क एन्टोनी को जेरूसलम, एशिया माइनर आदि पूर्वी देशा का शासन बनाया गया।

2 लेपिडस को स्पेन और पश्चिमी भाग का शासक बनाया गया। कुछ समय पश्चात् लेपिडस के त्यागपत्र देने के कारण उसका साम्राज्य रोम के अधीन हो गया।

3 ऑक्टेवियन को रोम सहित पश्चिमी देशों का शासक बनाया गया।

एन्टोनी व ऑक्टेवियन में संघर्ष के कारण —

(i) ऑक्टेवियन अत्यधिक महत्वाकांक्षी व्यक्ति था। वह सीजर के समान रोम का तानाशाह शासक बनना चाहता था। इसलिये उसने रोम में लोकप्रिय बनने के लिये प्रयास शुरू कर दिये।

(ii) मार्क एन्टोनी ऑक्टेवियन का बहनोई था, लेकिन वह मिश्र की रानी क्लीओपेट्रा के प्रेम में इतना अधिक फंस गया कि उसने उससे विवाह कर लिया। इसके पश्चात् उसने अपनी पत्नी (ऑक्टेवियन की बहन) को तलाक दे दिया।

(iii) रोम में उस समय ऐसी अफवाह फैली कि एन्टोनी और क्लीओपेट्रा रोम पर अधिकार करने की योजना बना रहे हैं।

एक्टियम का युद्ध—(31 ई. पू.)–इस प्रकार एन्टोनी और ऑक्टेवियन के बीच में सम्बन्ध तनावपूर्ण हो गये। एन्टोनी ने फारस पर अधिकार करने के लिये ऑक्टेवियन से सहायता मांगी। जब उसने सहायता देने से इन्कार किया तो एन्टोनी ने क्रुद्ध होकर 31 ई. पू. में रोम पर आक्रमण कर दिया। ऑक्टेवियन ने एक्टियन के युद्ध में एन्टोनी को बुरी तरह से पराजित किया। इसके पश्चात् एन्टोनी और क्लीओपेट्रा ने आत्महत्या कर ली। अब रोमन साम्राज्य का शासक ऑक्टेवियन बन गया जिसका भूमध्य सागर पर भी अधिपत्य था।

आगस्टस सीजर —(31 ई. पू. से 14 ई. पू.)–एक्टियम के युद्ध में विजय प्राप्त करने के पश्चात ऑक्टेवियन रोमन साम्राज्य का अकेला शासक बन गया था। उसने रोम लौटने के पश्चात् "सीजर, प्रिन्सेप इम्परेटर" आदि उपाधियां धारण की। रोम की शक्तिहीन सीनेट ने उसे "आगस्टस" की उपाधि से विभूषित किया। इसके पश्चात् ऑक्टेवियन आगस्टस सीजर के नाम से प्रसिद्ध हो गया। उसने शासन का बाहरी स्वरूप तो प्रजातन्त्रीय रहने दिया और सीनेट, ट्रिब्यून और कौन्सल आदि भी बनाये रखे, लेकिन आंतरिक रूप से राज्य की सारी शक्तियां अपने हाथों में केन्द्रित करली और रोम का सम्राट बन गया। इस प्रकार आगस्टस ने रोम में अप्रत्यक्ष राजतन्त्रात्मक शासन व्यवस्था की स्थापना कर दी। आगस्टस ने 31 ई. पू. से लेकर 14 ई. पू. तक रोम पर शासन किया।

आगस्टस का शासन काल —

(1) **शासन व्यवस्था**—आगस्टक के शासन काल में शासन व्यवस्था दोहरी शासन व्यवस्था पर आधारित थी। उसके शासन काल में रोम के सम्राट व सीनेट के बीच शक्तियों का विभाजन कर दिया गया था। ये दोनों मिलकर रोम की शासन व्यवस्था चलाते थे। रोम के आस पास के प्रदेशों की शासन व्यवस्था सीनेट के द्वारा संचालित की जाती थी, जबकि दूर दूर के देशों का शासन सम्राट संचालित करता था। सम्राट युद्ध के समय सेना का नेतृत्व भी करता था। धीरे-

धीरे सम्राट ने राज्य की शक्ति को अपने हाथों में केन्द्रित कर ली। वह अब केवल रोम से सम्बन्धित विषयों पर ही सीनेट से परामर्श करता था।

सीनेट के सदस्यों की संख्या कम कर दी गई। सीनेट के सदस्य वे ही व्यक्ति बन सकते थे, जिन्हें सम्राट चाहता था। इसका परिणाम यह हुआ कि सीनेट पर सम्राट का नियन्त्रण स्थापित हो गया। दूसरा सदन एसेम्बली में भी सम्राट ने विरोधी सदस्यों को हटा दिया और अपने समर्थकों को भर दिया। इस प्रकार ऐसेम्बली पर भी उसने नियन्त्रण स्थापित कर लिया।

सम्राट ने साम्राज्य का विभाजन प्रान्तों में कर दिया। वहां की शासन व्यवस्था के सचालन के लिये उसने प्रान्तपतियों की नियुक्तियां की, जो उसके प्रति ही उत्तरदायी होते थे। प्रान्तपति का मुख्य कार्य प्रान्त मे शांति व्यवस्था बनाये रखना, कर वसूल करना और प्रान्तीय सेना का नेतृत्व करना था। प्रान्तों से जो कर वसूल किया जाता था, वह प्रान्त के सार्वजनिक कार्यों पर ही खर्च कर दिया जाता था। रोम सम्राट मिश्र की आय अपने निजी कामों पर खर्च करता था।

विदेशी प्रान्तों के शासन सचालन के लिये सम्राट अपने विश्वसनीय प्रतिनिधियों की नियुक्ति करता था। राज्य मे सभी उच्च पदाधिकारियों की नियुक्ति सम्राट के द्वारा ही की जाती थी। इस प्रकार राज्य की सारी शक्तियां सम्राट के हाथों मे केन्द्रित थी और वह रोम का प्रथम नागरिक माना जाता था। लेटिन भाषा मे सम्राट को 'प्रिन्स' माना जाता था।

(ii) सैन्य व्यवस्था—आगस्टस रोमन साम्राज्य मे शांति और व्यवस्था बनाये रखना चाहता था। इसलिये सैनिक शक्ति का प्रयोग साम्राज्य की सुरक्षा के लिये किया। सम्राट ने शांति के प्रतीक जैनस के देवालय के द्वार भी बन्द करवा दिये।

सम्राट अपने सैनिको और सेनापतियों को भर्ती करता था। आगस्टस साम्राज्य विस्तार नहीं करना चाहता था इसलिये उसने अपने सैनिकों की संख्या आधी से कम कर दी। उसने सेना के लिये एक अलग कोष विभाग की स्थापना की। सेना के वेतन भर्ती, सेवाकाल और अनुशासन आदि के नियम बना दिये। इस प्रकार आगस्टस सेना मे लोकप्रिय हो गया। आगस्टस ने अपनी सुरक्षा के लिये सैनिकों का एक दल प्रेयटरी गार्ड की स्थापना की।

(iii) साम्राज्य की सुरक्षा के लिये कार्य—आगस्टस ने विशाल रोमन साम्राज्य की सीमा की रक्षा के लिये निम्नलिखित कार्य किये—

1 सम्राट ने पूर्व मे यहूदियों से मित्रतापूर्ण सम्बन्ध स्थापित कर लिये।
2 आगस्टस ने जर्मनों को अपनी सेना मे भर्ती कर जर्मनी के साथ भी मित्रतापूर्ण सम्बन्ध स्थापित कर लिये।

3. आगस्टस ने सारे साम्राज्य में क्रान्तिकारी तत्वों को कुचलकर शान्ति व्यवस्था स्थापित की।
4 उसने साम्राज्य की सुरक्षा के लिये एक स्थायी सेना का सगठन किया। इसके अतिरिक्त स्थान स्थान पर सैनिक चौकियां कायम कर, वहां पर सैनिक टुकड़ियां रखी।
5 सामुद्रिक आक्रमण मे रक्षा करने के लिये एक सुदृढ़ जहाजी बेड़े का सगठन किया।

(iv) सामाजिक एवं गांवों की स्थिति—1. समाज का विभाजन—आगस्टस के समय रोमन समाज तीन वर्गों मे विभाजित था। पहले वर्ग मे पेट्रिशियन वर्ग के लोग आते थे जो, सीनेट के सदस्य थे। इस वर्ग के व्यक्ति को प्रान्त पति के पद पर नियुक्त किया जा सकता था। दूसरा वर्ग सामन्तों का था, जिन्हे सेना में उच्च पद पर नियुक्त किया जाता था। तीसरा वर्ग प्लेबियन्स का था, इसम जन साधारण और गरीब लोग आते थे, जिनकी दशा बहुत शोचनीय थी। *उन्हे राजनीतिक अधिकार प्राप्त नहीं थे। पेट्रिशियन वर्ग प्लेबियन वर्ग पर बहुत* अत्याचार करता था। रोम मे उच्च वर्ग के लोग भोग विलास पूर्ण जीवन व्यतीत कर रहे थे। इस प्रकार रोमन समाज का नैतिक पतन शुरू हो गया था।

2. स्त्रियों की दशा—इस समय रोमन समाज मे स्त्रियों को उच्च स्थान प्राप्त नहीं था। आगस्टस ने ऐसे कानूनों का निर्माण किया, जिससे कि व्यक्ति अपनी ही श्रेणी मे विवाह कर सकता था और जो व्यक्ति दूसरी श्रेणी मे विवाह करता तो उसे कठोर दड दिया जाता था।

3 गांवों की स्थिति—आगस्टस ने गावो के विकास की ओर बहुत ध्यान दिया। उसने गावो मे स्कूल खोलकर शिक्षा का प्रचार किया। अब गावो के लोग भी शहरो के लोगो की भांति उन्नति कर रहे थे।

(v) धार्मिक दशा—आगस्टस ने अनेक मंदिरो का निर्माण करवाया और उनमे देवताओं की पूजा के लिये पुरोहितो को नियुक्त किया। उसी के प्रयासो से रोम मे सम्राटो की पूजा होने लगी।

प्रथम शताब्दी के अन्त तक रोम में यहूदी धर्म और फारस के मिथ्र धर्म का बहुत अधिक प्रचार हुआ। जब रोमन निवासी यहूदी धर्म को स्वीकार करने लगे, तब सरकार ने इस पर प्रतिबन्ध लगा दिया। दूसरी शताब्दि में रोमनो ने स्वप्न, अपशकुन और पशु बलि आदि अंधविश्वासों मे विश्वास करना शुरू कर दिया। उस समय धार्मिक उत्सवो मे लोग अपने शरीर को बकरे के खून से रगकर सड़क पर नृत्य करते थे।

इसी समय रोम मे ज्ञानवाद का प्रचार हुआ। ज्ञानवादियो ने ईसाई धर्म के प्रचार का विरोध किया। इनका मानना था कि ज्ञान जादू-टोना और धार्मिक

क्रियाओं से प्राप्त किया जा सकता है। ज्ञान प्राप्ति के पश्चात् ही मनुष्य मुक्ति प्राप्त कर सकता है। ईसाई धर्म और यहूदी धर्म सम्राट की पूजा के विरोधी थे, इसलिये सम्राट ने इन धर्मों का रोम में प्रचार नहीं किया जा सका।

आगस्टस का काल रोम का स्वर्णकाल—आगस्टस का शासन काल (31 ई० पू० से 14 ई० पू तक) रोम के इतिहास का स्वर्ण काल कहलाता है। उसका काल शांति और समृद्धि का काल था। उसके शासनकाल में रोम का वैभव बढ़ा। स्थापत्य कला, चित्रकला, मूर्तिकला, साहित्य और व्यापार आदि सभी क्षेत्रों में रोम ने अभूतपूर्व उन्नति की। आगस्टस एक कुशल प्रशासक था। उसने सुदृढ़ शासन व्यवस्था की स्थापना की। उसके शासन काल में जनता सुखी और समृद्ध थी। और इस समय रोम का सर्वांगीण विकास हुआ। इसलिये यदि उसके शासन काल को रोम का स्वर्ण युग माना जाय तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी।

1 **आर्थिक समृद्धि का युग**—आगस्टस का युग आर्थिक दृष्टिकोण से समृद्धि का युग था। उसने राजकीय कोष की दशा को सुधारने के लिये सर्वप्रथम कर प्रणाली में सुधार किया। कर वसूल करने के लिये उसने सरकारी अधिकारी नियुक्त किये। कृषकों से उपज का दस प्रतिशत कर के रूप में लिया जाता था। आगस्टस की कर सुधार प्रणाली का परिणाम यह हुआ कि दूर दूर के प्रान्तों से कर के रूप में अपार धन रोम में आने लगा और रोम का राजकीय कोष धन से भरपूर हो गया। इस प्रकार रोम की आर्थिक व्यवस्था में आगस्टस ने सुधार किया।

आगस्टस ने कृषि के सुधार के लिये सभी प्रयास किया। इस समय इटली ब्रिटेन, जर्मनी, यूनान आदि देशों के बड़े-बड़े दलदलों को साफ कर भूमि को कृषि योग्य बनाया गया। इतना होने पर भी अधिकांश भूमि पर पूंजीपतियों का अधिपत्य होने से कृषकों की दशा शोचनीय थी। आगस्टस ने पूंजीपतियों को समाप्त करने के लिये बैंकों का व खानों का राष्ट्रीयकरण कर दिया। रोम में पानी की सुविधा के लिये उसने एक नहर का निर्माण करवाया। इसके अतिरिक्त बेरोजगार व्यक्तियों को आगस्टस ने रोजगार दिलवाया। उसके शासनकाल में जीविकोपार्जन की कोई समस्या नहीं थी। इस प्रकार आगस्टस के समय रोम में आर्थिक समृद्धि के युग का सूत्रपात हुआ।

2 **व्यापार में वृद्धि**—आगस्टस के शासन काल में व्यापार के क्षेत्र में काफी उन्नति हुई। भूमध्य सागर पर रोम का अधिकार हो चुका था। भूमध्य सागर में समुद्री डाकुओं को समाप्त किया जा चुका था। इस प्रकार भूमध्य सागर पर रोम का अधिकार होने से उसके व्यापार में काफी वृद्धि हुई। रोम का सारा व्यापार भूमध्य सागर के माध्यम से होता था।

रोम नमक, धातु, मछली और मकान बनाने का सामान आदि वस्तुएं विदेशों को निर्यात करता था और भारत से विलासिता की सामग्री, पूर्वी देशों से

मगाने, चीन से रेशम, पश्चिमी देशों से कच्चा माल, मिस्र से पेपिरस और एशिया के देशों से शराब, तेल, हीरे व जवाहरात आदि वस्तुएँ आयात करता था। इस प्रकार आगस्टस के समय में व्यापार के क्षेत्र में काफी वृद्धि हुई।

3 साहित्य के क्षेत्र में प्रगति —आगस्टस के शासनकाल में साहित्य के क्षेत्र में बहुत अधिक उन्नति हुई। उसने अपने दरबार में कई साहित्यकारों को आश्रय दे रखा था। जिन्होंने अपने अपने क्षेत्र में महत्वपूर्ण रचनायें रची। आगस्टस के शासनकाल में गद्य साहित्य और पद्य साहित्य दोनों ही क्षेत्रों में अत्यधिक उन्नति हुई थी।

(i) पद्य साहित्य के क्षेत्र में प्रगति :—इस युग के प्रसिद्ध कवि वर्जिल और होरेस आदि थे। वर्जिल ने "एनीड" और जारजीज आदि महाकाव्य लिखे। उसने यूनानी शैली को अपना आधार बनाया। अपने महाकाव्य "एनीड" में वेदना के बारे में वर्णन किया है तथा "जारजीज" में ग्रामीण कृषकों के जीवन के बारे में किया है। दूसरा प्रसिद्ध कवि होरेस था, जिसने अपने युग के पतन के कारणों, धार्मिक उत्सव, समारोहों आदि विषयों पर कविताएं लिखी हैं। उसने अपनी कविताओं में समाज में व्याप्त बुराइयों पर बडा प्रहार किया है। इसके अतिरिक्त अन्य कई कवियों ने प्रणय सबंधी कवितायें लिखीं, लेकिन उनमें आडम्बर के भाव ज्यादा दृष्टिगोचर होते हैं। विल डुरां ने लिखा है कि "इस युग की काव्य धारा कामुकता का विद्रोह था"

(ii) गद्य के क्षेत्र में प्रगति —इस युग के प्रसिद्ध गद्य लेखक लीवि, टेसीटस, और प्लूटार्क आदि थे। लीवि ने रोम का इतिहास लिखा था, जो एक पक्षीय था। दूसरा प्रसिद्ध इतिहासकार टेसीटस (55–117) था, जिसने दो ग्रन्थ लिखे। उनमें रोमन सम्राटों की आलोचना की है तथा रोम के पतन के कारणों के बारे में भी वर्णन किया गया है। तीसरा प्रसिद्ध विद्वान प्लूटार्क था। जिसने रोम के 46 प्रसिद्ध व्यक्तियों की जीवनियां लिखी।

4 कला के क्षेत्र मे प्रगति :—आगस्टस के शासनकाल में रोम में स्थापत्य कला, मूर्तिकला एवं चित्रकला के क्षेत्र में बहुत अधिक प्रगति हुई—

(i) स्थापत्य कला —आगस्टस के समय में रोम तथा अन्य कई स्थानों पर शानदार भवनों का निर्माण किया गया। जो शैली तथा आकार व दृष्टिकोण से पूर्ववर्ती भवनों से कहीं अधिक भिन्न तथा सुन्दर है। पूर्ववर्ती भवन ईंटों के बने हुए थे, जबकि आगस्टस द्वारा निर्मित भवनों में अधिकतर संगमरमर का प्रयोग हुआ है। रोम में भवनों के अतिरिक्त विजय सूचक अनेक तोरण बनाये गये। रोम की सबसे बडी इमारत मेक्सिमस का निर्माण आगस्टस के राज्य काल में हुआ। इसमें दो लाख पच्चीस हजार व्यक्ति एक साथ बैठ सकते थे। मैक्सिमस

के अतिरिक्त उसने अपोलो के देवालय का निर्माण करवाया तथा जूलियस सीजर की यादगार मे एक नये सीनेट भवन का निर्माण करवाया। उस समय भी भवन निर्माण कला पर यूनानी शैली का बहुत अधिक प्रभाव था।

(ii) मूर्ति कला —इस समय मूर्तिकला के क्षेत्र मे भी बहुत विकास हुआ। इस काल की मूर्तिकला पर यूनानी प्रभाव स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होता है। इस समय रोम म आगस्टस की एक सुन्दर मूर्ति का निर्माण किया गया। जान बाउल ने लिखा है कि 'घुड़सवारों की मूर्तियां तथा मूर्तियां उस समय की मूर्ति कला की अनुपम कृतियां हैं और उनके अवलोकन से रोम की उस समय की सभ्यता का आभास हो सकता है।"

रोम म मूर्तिकार केवल सम्राट और शक्तिशाली व्यक्तियों की मूर्तियां बना सकता था। उन पर राज्य का नियन्त्रण बहुत अधिक था। वे स्वतन्त्रतापूर्वक कार्य नहीं कर सकते थे। इसलिये मूर्तिकला के क्षेत्र मे अत्यधिक उन्नति नहीं हो सकी।

(iii) चित्रकला —रोम मे चित्रकला के क्षेत्र मे भी बहुत अधिक प्रगति हुई। आगस्टस के समय की चित्रकला पर यूनानी प्रभाव स्पष्ट रूप मे दृष्टिगोचर होता है। उस समय चित्रकार ऐतिहासिक विषयों पर चित्र अधिक बनाते थे। पोम्पी नगर से प्राप्त चित्र उस समय की चित्रकला के सुन्दर नमूने हैं। रोमन चित्रकारों ने प्रकृति के चित्रों का निर्माण करने मे यूनानियों मे भी अधिक उन्नति कर ली थी।

इस प्रकार हम देखते है कि आगस्टस के अधीन रोम ने प्रत्येक क्षेत्र म असाधारण उन्नति की और साम्राज्य अपने गौरव की चरम सीमा पर जा पहुंचा। इसलिये उसके शासन काल को रोमन साम्राज्य का "स्वर्ण युग" कहा जाता है।

सीजर वंश के अन्य शासक—आगस्टस की मृत्यु के पश्चात् टिबरनियस रोम का शासक बना। उसने 37 ई तक रोम पर शासन किया। टिबरनियस की मृत्यु के पश्चात् सीजर वंश के तीन शासकों ने 68 ई० तक शासन किया। इस वंश का अन्तिम सम्राट नीरो था। जिसे साहित्य और कला म बहुत अधिक रुचि थी। आरम्भ म वह जनता म लोकप्रिय था। लेकिन कालान्तर में जनता उससे घृणा करने लगी। नीरो ने अपने, माता, भाई, दो पत्नियों और गुरु को मरवा दिया। रोम मे बहुत अधिक बदनामी होने के कारण इसने 68 ई० मे आत्महत्या कर ली।

चार सम्राटों का शासन—नीरो की मृत्यु के पश्चात् सैनिक अधिकारियों ने फ्लेवियन वंश के चार व्यक्तियों को रोम का सम्राट बनाया। जिन्होंने 69 ई. से 96 ई तक रोम पर शासन किया। इस वंश का अन्तिम सम्राट टाइटस था। जो यहूदियों का घोर शत्रु था। इसलिये उसने यहूदियों के तीर्थ स्थान जेरूसलम

को नष्टभ्रष्ट कर दिया। इसके शासनकाल में विसूवियस में ज्वालामुखी का विस्फोट होने से इटली का प्रसिद्ध नगर पोम्पेयी भी नष्ट हो गया।

पांच सद्व्यवहारी सम्राटों का शासन—(96–180 ई०)—फ्लेवियन वंश के शासकों के पश्चात् रोम पर पांच सद्व्यवहारी सम्राटों ने 96 ई से लेकर 180 ई तक शासन किया। उन्होंने प्रजा की भलाई के लिये बहुत से कार्य किये जनता की आर्थिक दशा सुधारने के लिये करों में कमी कर दी। इनमें से एक सम्राट ट्रेजन ने पश्चिमी फारस पर अधिकार कर लिया। इसके शासनकाल में रोम में प्लेग की महामारी फैल जाने से सुन्दर रोम वीरान हो गया। ऐसी परिस्थितियों में जर्मनों ने रोम पर आक्रमण कर दिया।

रोम का पतन की ओर अग्रसर होना—रोमन साम्राज्य लगभग 500 वर्षों तक बना रहा। 180 ई के पश्चात् रोम पतन की ओर अग्रसर हो गया। चौथी शताब्दी में रोम के गृह युद्ध में सफलता प्राप्त कर कान्सटेन्टाइन रोम का सम्राट बना जिसने 306 ई से 337 ई तक रोम पर शासन किया। उसने अपने नाम पर एक नगर कान्सटेन्टीनोपल बसाकर उसको रोम के स्थान पर अपनी नई राजधानी बनाया। कान्सटेन्टाइन ईसाई धर्म का समर्थक था। अत उसने 313 ई में ईसाईयों पर धार्मिक अत्याचार नहीं करने की घोषणा की और कुछ समय पश्चात् कान्सटेन्टाइन ने ईसाई धर्म को स्वीकार कर लिया।

कान्सटेन्टाईन की मृत्यु के पश्चात् थियोडोसियस रोम का शासक बना। उसने रोमन साम्राज्य को दो भागों में विभाजित कर दिया। एक भाग पूर्वी साम्राज्य और दूसरा भाग पश्चिमी साम्राज्य। थियोडोसियस ने पूर्वी भाग का शासक अपने पुत्र आर्केडियस को बनाया और इस भाग की राजधानी कान्सटेन्टीपॉल बनाई गई। दूसरा भाग का शासक उसने अपने दूसरे पुत्र होनारियस को बनाया और इस भाग की राजधानी रोम ही रखी गई। साम्राज्य के विभाजन से रोम की शक्ति को गहरा आघात पहुचा। अब रोम पर विदेशी आक्रमण होने लगे। पांचवी शताब्दी में ऐशिया की हूण जाति के नेता एटिला ने कान्सटेण्टीपॉल के शासक को कर देने के लिये बाध्य किया। इसके पश्चात् गॉलों, हूणों और वेन्डलों के आक्रमणों ने रोमन साम्राज्य की शक्ति को गहरा आघात पहुचाया प्रान्तों में प्रान्तपतियों ने स्वतन्त्रता प्राप्त करने के लिये विद्रोह कर दिये। वेन्डलो ने स्पेन व फ्रांस में लूटमार की। अन्त में रोमन सेना के एक जर्मन अधिकारी ओडेसर ने अन्तिम रोमन सम्राट को हटाकर साम्राज्य पर बलपूर्वक अधिकार कर अपने को रोमन साम्राज्य का शासक घोषित कर दिया। इस प्रकार रोम का पतन शुरु हुआ।

रोम के पतन के कारण—एक प्रसिद्ध इतिहासकार ने लिखा है कि इतिहास की दो बड़ी समस्यायें हैं "रोम के उत्थान और पतन के कारणों का पता लगाना"

सेवाइन ने लिखा है कि "रोम का पतन क्रमिक और आधारभूत परिवर्तन था न कि एक आकस्मिक भारी अशान्ति से भरी उथल पुथल।"[1]

रोमन साम्राज्य का पतन होने में तीन शताब्दियों से भी अधिक समय लगा। जब रोमन साम्राज्य अपनी प्रगति के चरम शिखर पर था। उस समय भी उसमें पतन के चिन्ह् विद्यमान थे। विद्वानों ने रोम के पतन के अलग-अलग कारण बताये हैं।

प्रोफेसर विल ड्यूरेन्ट ने लिखा है कि "जितने दिन रोम के पतन मे लगे उतने दिनों तक कुछ राष्ट्र जीवित भी नहीं रह सकते थे। रोम की परिवार नियन्त्रित प्रणाली और उसके परिणामस्वरूप कम होने वाली जनसंख्या को प्रथम स्थान दिया है।"[2] गिबन औरजर्मन दार्शनिक नित्से ने "ईसाई धर्म के विकास को रोम के पतन का प्रधान कारण माना है।" रोस्टोजेफ ने लिखा है कि रोम का शासन प्रबन्ध जन साधारण मे लोकप्रिय नहीं होने से उसका पतन हुआ। प्रोफेसर ट्रेवर ने लिखा है कि रोम का विशाल साम्राज्य उसके पतन का एक कारण था। रोम के पतन के कई कारण थे इसलिए एक कारण पर अधिक महत्व देना उचित नही है। रोम के पतन के मुख्य कारण निम्न लिखित थे :—

(1) शासकों में योग्यता का अभाव—500 वर्ष के लम्बे शासनकाल मे आगस्टस के अतिरिक्त अन्य किसी शासक मे इतनी योग्यता नही थी कि वो रोम के विशाल साम्राज्य पर नियन्त्रण रख सके। आगस्टस की मृत्यु के पश्चात् उसके उत्तराधिकारी अयोग्य और दुर्बल सिद्ध हुए। वे विशाल साम्राज्य की रक्षा करने म असमर्थ रहें। परिणामस्वरूप सामन्त शक्तिशाली हो गये। जब शासको ने सामन्तो की शक्ति को कुचलने का प्रयास किया तो उन्होंने विद्रोह कर दिया। इस प्रकार रोम मे शासक और सामन्तों के बीच संघर्ष शुरु हो गया। जिससे साम्राज्य की एकता को भारी धक्का लगा।

(2) शासकों की निरंकुशता—रोम के शासकों ने निरंकुशता पूर्वक शासन किया। उनके शासनकाल मे अधिकारी भ्रष्ट थे और जनता पर नाना प्रकार के अत्याचार करते थे। कर वसूल करने के लिये ठेकेदारी व्यवस्था को लागू किया गया था। जिसके अनुसार ठेकेदार जनता मे जबरदस्ती कर वसूल करते थे। ठेकेदार जनता पर बहुत अधिक अत्याचार करते थे। इसलिये रोमन साम्राज्य की जनता रोमन शासकों से असतुष्ट थी। रोस्टोजेफ ने लिखा है कि 'राज्य और कर दाताओं का सम्बन्ध डाकेजनी पर' आधारित था। जिसके फलस्वरूप प्रजा सम्राटो को केवल दासो का अधिपति और कर इकट्ठा करने वाला समझती थी "ऐसी

1 सेवाइन—ए हिस्ट्री आफ वर्ल्ड सिवलीजेशन पृष्ठ—195

2 विल ड्यूरेन्ट—रोमन साम्राज्य का इतिहास पृष्ठ—437

परिस्थितियों में जब शासकों के विरुद्ध प्रान्तों में विद्रोह हुए, तो जनता ने शासक का साथ नहीं दिया। इस प्रकार निरन्तर विद्रोहों से रोमन साम्राज्य की जड़ें खोखली हो गईं।

(3) **शोचनीय आर्थिक अवस्था**—रोम में धनवान दिन प्रतिदिन अधिक धनवान बनते जा रहे थे और गरीब दिन प्रतिदिन गरीब होते जा रहे थे। यहां विदेशों से आने वाला धन उच्च वर्ग के पास ही रह जाता था। जन साधारण की दशा शोचनीय थी। कृषकों का भूमि पर अधिकार नहीं था। वे सामन्तों से भूमि किराये पर लेकर कृषि का कार्य करते थे। उन्हें कर बहुत अधिक देना पड़ता था। इसलिये धीरे-धीरे कृषि के प्रति रुचि कम होती गई। समाज में धनी वर्ग गरीब वर्ग का शोषण करता था। इस प्रकार जन साधारण की आर्थिक व्यवस्था बहुत शोचनीय थी। इसी कारण शनैः शनैः रोम का पतन हो गया।

(4) **नैतिक स्तर गिरना**—जब रोम में साम्राज्य के भिन्न भिन्न भागों से धन आने लगा तो रोम के निवासी भोगविलास पूर्ण जीवन व्यतीत करने लगे। एच जी वेल्स ने लिखा है कि "धन ने रोमनों के पैर नीचे खिसका दिये।" रोस्टोजेफ ने लिखा है कि "जो लोग रोमन साम्राज्य में रहते थे उन्होंने धन के कारण अपना सन्तुलन खो दिया।"

इस प्रकार जब रोम के निवासी विलासितापूर्ण जीवन व्यतीत करने लगे तो उनका नैतिक पतन हो जाना स्वाभाविक बात थी। परिणामस्वरूप रोम के लोग विदेशी आक्रमणकारियों से अपनी रक्षा नहीं कर सके।

(5) **जनसख्या पर नियन्त्रण**—रोम में बढ़ती हुई जनसख्या पर नियन्त्रण करने के लिये परिवार नियोजन को अपनाया गया। परिणामस्वरूप रोम की जन सख्या घटने लगी। रोम की जनसख्या में कमी होने का दूसरा कारण यह था कि यहां के लोग सभोग का वास्तविक सुख प्राप्त करने के लिये सन्तानोत्पत्ति की उपेक्षा करते थे। इसलिये अधिकांश लोग विवाह नहीं करते थे और बाजार में जाकर भोगविलास कर अपनी काम इच्छा की तृप्ति कर लेते थे। इसके अतिरिक्त अधिकांश लोगों ने पारिवारिक सम्पन्नता को बनाये रखने के लिये कम बच्चे पैदा करना शुरू कर दिया। जिससे रोम की जनसख्या में कमी होने लगी।

परिणामस्वरूप एक दिन ऐसा आया कि रोम में मनुष्यों की कमी हो गई। विदेशी आक्रमणों का सामना करने के लिये रोम के पास सैनिक नहीं थे। इसलिये रोम के शासकों ने अपनी सेना में विदेशी सैनिकों को भर्ती किया, जो रोम के प्रति वफादार सिद्ध नहीं हुए। इन विदेशी सैनिकों की परम्परा और सभ्यता से रोम की सभ्यता काफी प्रभावित हुई। इस प्रकार परिवार नियन्त्रण व जनसख्या की कमी रोम के पतन का कारण बनी। विल ड्यूरेन्ट ने लिखा है कि "रोमन साम्राज्य के पतन का एक कारण परिवार नियन्त्रण भी था।"

(6) **रोम की साम्राज्यवादी नीति :**– रोम की साम्राज्यवादी नीति भी इसके पतन का कारण सिद्ध हुई। इस नीति से अनेक देशों से उसके सम्बन्ध कटु हो गये। मैकनेल बर्नस ने लिखा है कि "अन्य कारणों के अतिरिक्त मूलरूप से रोमन साम्राज्य के पतन का मूलभूत कारण यदि कोई था तो वह साम्राज्य-वाद था।"[1]

(7) **रोमन साम्राज्य का बहुत अधिक विस्तृत होना**—प्रोफेसर डेविस ने लिखा है कि "आगस्टस के समय से ही साम्राज्य विस्तार उसकी दुर्बलता का एक स्रोत बन गया "आगस्टस के समय रोमन साम्राज्य का बहुत अधिक विस्तार हो गया था। इसलिये उसने अपने उत्तराधिकारियों को साम्राज्यवादी नीति को छोड़ने की सलाह दी थी। धीरे-धीरे विशाल रोमन साम्राज्य पर नियन्त्रण बनाये रखना असम्भव हो गया। परिणामस्वरूप दूरस्थ प्रदेशों में विद्रोह होने लगे। जिससे साम्राज्य का पतन अवश्यम्भावी हो गया।

(8) **बेरोजगारी की समस्या**—रोम के शासक युद्ध में पराजित व्यक्तियों को गुलाम बना लेते थे। इन गुलामों से रोमन लोग खेती, कारखानों मे नौकरी और घरों में सारा काम सस्ती दरों पर करवाते थे। इसका परिणाम हुआ कि रोम के मूल निवासी बेरोजगार हो गये। उनके लिये जीविकोपार्जन की समस्या पैदा हो गई। राज्य ने इस समस्या को हल करने के लिये शाही लगर खोले। आगस्टस के समय 20,000 लोग शाही लगर मे मुफ्त खाना खाते थे। बेरोजगारो म व्यापक असतोष की भावना ने रोम की शांति और एकता को आघात पहुचाया। सेबाइन ने लिखा है कि "बेरोजगारी रोमन साम्राज्य के पतन का आधारभूत कारण था।"[2]

(9) **सेना में एकता का अभाव**—रोम के विशाल साम्राज्य की सुरक्षा के लिये एक विशाल सेना का निर्माण किया गया। इस सेना म भिन्न भिन्न देशों के व्यक्ति भर्ती किये गये। रोमन साम्राज्य की सेना मे भिन्न भिन्न जातियो, धर्मो और वर्गों के व्यक्ति थे। परिणामस्वरूप सेना म एकता नही रही। प्रोफेसर डेविस ने लिखा है कि 'सेना शक्ति का साधन होने की अपेक्षा दुर्बलता का कारण बन गई। रोम के सैनिक सत्ता की परवाह न कर उस पक्ष की ओर लड़ने को तैयार रहते थे जो कि उन्हें धन प्रदान करता था।"

(10) **ईसाई धर्म का प्रचार**—रोमन साम्राज्य के पतन के लिये सम्राट कान्सटेन्टाईन और ईसाई धर्म उत्तरदायी था। गिबन एवं नित्से ने लिखा है कि

---

1. मेकनेल बर्नस—वैस्टर्न सिवलीजेशन पृष्ठ 210
2. सेबाइन—ए हिस्ट्री आफ वर्ल्ड सिवलीजेशन पृष्ठ–177

"ईसाई धर्म के प्रचार से रोम के निवासियों का राज्य भक्तित्व साहस नष्ट हो गया।"

ईसाई धर्म के प्रचार से पहले रोमन प्रजा सम्राट को ही ईश्वर समझ कर उसकी पूजा करती थी, किन्तु ईसाई धर्म ने सम्राट की पूजा का विरोध किया। सम्राट कान्सटेन्टाईन ने एव अन्य रोमन जनता ने भी जब ईसाई धर्म को स्वीकार किया तो उन्होंने सम्राट की पूजा का विरोध किया और सम्राट की आज्ञा के स्थान पर ईसाई धर्म के आदेशों का अधिक पालन करने लगे। परिणामस्वरूप साम्राज्य की एकता को धक्का लगा।

ईसाई धर्म के प्रभाव से रोम की जनता, अहिंसा, सतोषी और भावी जीवन के लिये अधिक चितत रहने लगी। जिसके फलस्वरूप रोम की सैनिक शक्ति का पतन होने लगा। रोम में ईसाई धर्म का प्रचार ही उसके विनाश का कारण नहीं था, क्योंकि इस धर्म का प्रचार रोम में उस समय में हुआ जबकि रोमन साम्राज्य पतन की ओर अग्रसर हो रहा था।

(11) गृह युद्धों का प्रभाव—तीसरी शताब्दी में हुए गृह युद्धों से रोमन साम्राज्य की शक्ति को गहरा आघात पहुचा। 235 से 285 ई० तक के समय म रोम में 26 सम्राटों ने शक्ति के बल पर साम्राज्य पर अधिकार किया और इनम से एक शासक के सिवाय सभी की हत्या कर दी गई। इस प्रकार इस गृह युद्ध से भी साम्राज्य की स्थिरता को धक्का पहुचा और उसकी जडें खोखली हो गई।

(12) अकाल—252 ई० म रोम में भयकर दर्भिक्ष पडा। जिससे हजारों व्यक्ति मौत के शिकार होने लगे। यह दुर्भिक्ष रोमन साम्राज्य म 15 वर्ष तक फैलता रहा। परिणामस्वरूप रोम की जनसंख्या कम हो गई।

(13) विदेशियों द्वारा रोम पर लगातार आक्रमण— राम आन्तरिक रूप से खोखला हो चुका था। उस समय गॉल और हूण आदि विदेशी जातियों ने रोम पर लगातार आक्रमण किये। जिसस उसका पतन अवश्यम्भावी हो गया। विलडुस ने लिखा है कि "किसी भी महान सभ्यता को बाहर से नहीं जीता जा सकता जबकि वह आंतरिक रूप से दुर्बल न हो जाय। बर्बर आक्रमणकारी उस जगह घुसे जहाकि दुर्बलताओं ने द्वार उन्मुक्त कर दिया था और जहा शारीरिक नैतिक और आर्थिक व सामाजिक अध पतन ने रगमच को अव्यवस्था, निराशा एव विनाश के लिये छोड दिया था।"

रोमन सभ्यता का विवरण—रोम की सस्कृति ने पश्चिमी सभ्यता की आधारशिला रखी। रोम ने यूनान की सभ्यता और सस्कृति के कई तत्व ग्रहण किये और उनको विकसित कर अपने विशाल साम्राज्य म उनका प्रसार किया। उस समय की सभ्यता का वर्णन निम्न प्रकार से किया जा सकता है —

(1) शासन व्यवस्था—कोंसल एसेम्बली, सीनेट उच्च पदाधिकारियों, प्रान्तीय शासन व्यवस्था ग्रामों की शासन व्यवस्था, सैनिक संगठन, रोम में गणतन्त्र व प्लेबियन और पट्रिशियन वर्ग के बीच संघर्ष का हमने पिछले पृष्ठों में वर्णन कर दिया है।

(2) सामाजिक अवस्था—(i) समाज का विभाजन—उस समय समाज तीन वर्गों में विभाजित था। 1 पेट्रिशियन वर्ग 2. प्लेबियन वर्ग 3 दास वर्ग। पेट्रिशियन वर्ग में उच्चकुल के धनिक व्यक्ति आते थे, जिनका शासन पर बहुत अधिक प्रभाव था। उनको राजनीतिक, सामाजिक व विशेष अधिकार समाज में प्राप्त थे। दूसरा वर्ग प्लेबियन था। जिसमें कृषक, मजदूर और जनसाधारण गरीब व्यक्ति आते थे। प्रारम्भ में इस वर्ग को राजनीतिक व सामाजिक अधिकार प्राप्त नहीं थे। प्लेबियन वर्ग के लोगों ने संघर्ष कर पेट्रिशियन वर्ग से राजनीतिक और सामाजिक अधिकार प्राप्त कर लिए। तीसरा वर्ग दासों का था। दासों की दशा बहुत शोचनीय थी। रोमन समाज का सामाजिक ढांचा गुलामों पर आधारित था। उनके साथ पशुओं जैसा व्यवहार किया जाता था। उन्हें सिर्फ इतना भोजन दिया जाता था जिससे कि वे जीवित रह सकें। उस समय डेलोस द्वीप दास व्यापार का एक प्रमुख केन्द्र था। जहां दासों का क्रय विक्रय होता था।

दासों को एक दूसरे के साथ जंजीरों में बांधकर खेतों में काम करवाया जाता था। प्रत्येक मालिक अपने गुलाम की पहचान के लिये उसको दागता था। यदि कोई दास अपने स्वामी की आज्ञा की अवहेलना करता तो उसे रोमन जनता के मनोरंजन के लिये भूखे शेर से लड़ने के लिये बाध्य किया जाता था। दास की दयनीय अवस्था का वर्णन करते हुए एच॰ जी॰ वेल्स ने लिखा है कि 'यदि कोई दास अपने स्वामी का वध कर डालता तो केवल घातक नहीं वरन् उसके घर के सब दास सूली पर चढ़ा दिये जाते थे। स्वामी अपने दासों पर बलात्कार कर सकते थे उनका अंग भंग कर सकते थे।"

(ii) संयुक्त परिवार प्रथा—रोमन समाज संयुक्त परिवार प्रथा पर आधारित था। यहां का समाज पितृसत्तात्मक था। परिवार का मुखिया पिता होता था। परिवार के सभी सदस्य उसकी आज्ञा का पालन करते थे।

(iii) स्त्रियों की दशा—रोमन समाज में स्त्रियों को उच्च स्थान प्राप्त था। वे सामाजिक कार्यों में भाग लेती थीं और शिक्षा प्राप्त कर सकती थीं। एलिस व जौन ने लिखा है कि 'प्राचीन जगत में कहीं भी स्त्रियों की वह उच्च स्थिति नहीं थी जो रोमन स्त्रियों की थी।"[1] रोमन समाज में बच्चे का जन्म होते ही उसे पिता के चरणों में रख दिया जाता था। यदि पिता उस बच्चे को प्यार

1. एलिस व जौन—संसार का इतिहास, पृष्ठ 138

से गोदी में उठा लेता तो उसे जिन्दा रखा जाता या अन्यथा उसे मार दिया जाता था। साम्राज्यवादी युग में स्त्रियों की स्थिति गिर गई, अब उन्हें जननी की अपेक्षा कामिनी के रूप में ही देखा जाता था।

(iv) मनोरंजन—रोमवासियों के मनोरंजन के मुख्य साधन नृत्य और सर्कस थे। यहा के लोग दो शक्तिशाली गुलामों को आपस में लड़ाकर भी तमाशा देखते थे। इसके अतिरिक्त कोलीसीयस के अखाड़े में एक साथ कई गुलामों को भूखे शेरों के सामने छोड़ दिया जाता था, जो जिन्दा रहने के लिये शेरों से युद्ध करते थे। इस कोलीसीयस में हजारों दर्शकों के बैठने की व्यवस्था थी। आगस्टस के समय वर्ष में लगभग 66 दिन तक इस अखाड़े में रोम की जनता का मनोरंजन करवाया जाता था।

रोमन सम्राट नीरो के समय भयंकर अकाल पड़ा। जिसमें लाखों लोग भूख से मर रहे थे। लेकिन नीरो ने विदेशों से अनाज नहीं मंगवाकर उसके स्थान पर अखाड़ों के लिये विदेशों से बालू रेत मंगवाई। नीरो की पत्नी 500 गायों के दूध से रोज नहाती थी। इसलिये यह कहा जाता है कि "जब रोम जल रहा था तब नीरो रंगरेलियां मना रहा था।" एच जी वेल्स ने लिखा है कि "यह निर्माण का नहीं अपव्यय का युग था। स्थापत्य और व्यापार का एक ऐसा युग था। जिसमें अमीर अधिक अमीर हो गये और गरीब बिलकुल धनहीन तथा आदमी की आत्मा और भावनाओं का पतन हो गया।"[1]

(3) आर्थिक दशा—रोमन लोगों का मुख्य व्यवसाय कृषि तथा पशुपालन था। यहां की मुख्य पैदावार गेहूं, जौ, जैतून, अंगूर व नारंगी आदि थी। यहां के लोग गाय, बैल, घोड़े, गधे, बकरी आदि पशुओं को पालते थे। रोम में भूमि पर कुलीन वर्ग के लोगों का अधिकार था। इस वर्ग के लोग दासों से खेती का काम करवाते थे इसलिये कृषि के प्रति कृषकों की अधिक रुचि नहीं थी। यही कारण था कि रोमन कृषि के क्षेत्र में प्रगति नहीं कर सका।

रोम के साम्राज्य विस्तार के साथ साथ वहां व्यापार, वाणिज्य और उद्योग धंधे आदि का भी विकास हुआ।[2] 338 ई पू में रोम में तांबे के सिक्के प्रचलित किये गये। धीरे धीरे यहां बैंक भी स्थापित किये गये और चारों ओर सड़कों का जाल बिछा दिया गया। यातायात के साधनों का विकास होने के कारण रोम के व्यापार में वृद्धि हुई। इस प्रकार व्यापार, वाणिज्य और उद्योग धंधों के विकास के कारण रोम उस समय सम्पूर्ण विश्व का एक व्यापारिक केन्द्र बन गया।

(4) धर्म—गणतंत्र के समय और साम्राज्यवादी रोम के समय रोम की धार्मिक दशा का वर्णन हम पिछले पृष्ठों में कर चुके हैं।

---

1 वेल्स, एच जी दी आउट लाइन आफ हिस्ट्री पृष्ठ 485

(5) रोम का कानून—मानव सभ्यता को रोम की सबसे बडी देन उसका कानून है। ससार का आधुनिक कानून रोमन कानून पर आधारित है। रोमन कानून का मुख्य सिद्धान्त यह था कि "किसी भी निर्दोष व्यक्ति को अनुचित रूप से दण्ड नही दिया जाना चाहिये, भले ही कोई दोषी व्यक्ति दड पाने से बच जाय।" प्लेट व जीन ने रोमन कानून के बारे में लिखा है कि "रोमन कानून आधुनिक संसार को एक महान उपहार है। सम्भवत कानून ही एक ऐसा विषय है, जिसमे रोमनो ने सबसे बडा योगदान दिया।"[1]

रोम म कानून का विकास क्रमिक रूप से हुआ। प्रारम्भिक काल मे रोम म प्राचीन परम्पराओ को आधार मानकर न्याय किया जाता था। ये परम्परायें लिखी हुई थीं। अत कुलीन वर्ग के लोग अपनी इच्छानुसार इन परम्पराओ का अर्थ लगा देते थे। रोम ने कानून यूनान से ग्रहण किये और इसका विकास किया। जब रोमन नगर राज्य था, तब वहा कानून बहुत कठोर थे। 450 ई पू मे पहली बार रोम मे इन कानूनों को 12 कांसें की पट्टियो पर लिपिबद्ध किया गया। इनकी एक प्रति सीनेट भवन मे जडवा दी गई। इन 12 भागो में से 10 भाग रोमन नागरिको के लिये और 2 भाग पराजित देशों के लिये थे। इनमे परिवार, उत्तराधिकारी, विवाह, धर्म, तलाक, नागरिकता व्यापार उद्योग और धार्मिक रीति-रिवाजों और राष्ट्रीयता आदि विषयो पर कानून बने हुऐ थे।

रोम मे धीरे धीरे समयानुकूल कानून मे भी परिवर्तन हुआ। इस समय समझौते का कानून और सम्पत्ति से सम्बन्धित कानून का भी विकास हुआ। समझौते का कानून रोम का सबसे महत्वपूर्ण कानून था। इसके द्वारा व्यक्तियो के पारस्परिक सहयोग को कानून द्वारा निश्चित कर दिया गया। रोम के कानून की मुख्य विशेषता यह थी कि वह जनता की भलाई के लिये बनाया गया था और समान रूप मे सब पर लागू किया जाता था।

रोम म 488 ई॰ पू॰ म थियोडोसियन ने विभिन्न कानूनो को एक पुस्तक क रूप मे सग्रहित किया जिसे 'थियोडोसियन" कोड कहते हैं। सम्राट जस्टिनियन के समय मे कानून के क्षेत्र मे आश्चर्यजनक विकास हुआ। उसने 10 व्यक्तियों की एक समिति कानून मे सुधार करने के लिये बनाई, जिसका अध्यक्ष टीबोयन को नियुक्त किया गया। इस समिति ने विभिन्न कानूनो मे सुधार कर एक पुस्तक के रूप मे उनका सकलन किया, जिसे 'जस्टिनियन कोड' कहते है। इसमे रोम के प्रसिद्ध कानून विशेषज्ञों के मतों, विभिन्न सम्राटो के आदेशो को सग्रहित किया गया हैं। इस विशाल कोड मे दीवानी, फौजदारी, धार्मिक और सामाजिक आदि सभी विषयों पर कानून बने हुए हैं। सम्राट जस्टिनयन को एक महान कानूनदाता

1 प्लेट व जीन—विश्व का इतिहास, पृष्ठ 155

माना जाता है और इंगलैण्ड, फ्रांस व अमेरिका आदि देशों का आधुनिक कानून इसी रोमन कानून पर आधारित है। सेवाइन ने लिखा है कि "रोमन लोगों का सबसे विलक्षण बौद्धिक योगदान कानून का निर्माण था, जो न्याय का यन्त्र बन गया यह केवल परम्पराओं पर ही नहीं वरन् तर्क पर भी आधारित था।"[1]

(6) शिक्षा—रोमन शासकों के सहयोग के कारण वहां शिक्षा का प्रसार बहुत अधिक हुआ। इस समय छात्रों को पाठशालाओं में कानून और साहित्य आदि विषयों की शिक्षा दी जाती थी। रोम ने शिक्षा के क्षेत्र में यूनान का अनुसरण किया। साम्राज्यवादी काल में 17 वर्ष का लड़का शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात् रोम की नागरिकता भोग लेता था। लड़कियों को घर पर ही शिक्षा दी जाती थी।

(7) साहित्य—रोम में साहित्य के क्षेत्र में आश्चर्यजनक प्रगति हुई। इस समय गद्य साहित्य और पद्य साहित्य दोनों ही में बहुत अधिक विकास हुआ। रोमन साहित्य की सबसे बड़ी देन लैटिन भाषा है। यहां विद्वानों ने प्रारम्भ में यूनानी लेखकों की शैली को आधार बनाकर अपने ग्रन्थों की रचना की, लेकिन कालान्तर में उन्होंने मौलिक ग्रन्थों की भी रचना की।

(i) पद्य साहित्य के क्षेत्र में प्रगति—इस युग के प्रसिद्ध कवि ओविड, वर्जिल, कैटलस और होरेस आदि थे। "कैटलस" ने अनुराग और विराग पर कवितायें लिखीं। दूसरा प्रसिद्ध कवि होरेस था, जिसने "ओड्स" नामक ग्रन्थ लिखा। होरेस की सबसे लोकप्रिय कविता "पायरा को" है। तीसरा प्रसिद्ध कवि ओविड था, जिसने "प्रेम की कला" नामक ग्रन्थ लिखा। इस ग्रन्थ में उसने प्यार, व्यापार का सुन्दर वर्णन किया है। चौथा प्रसिद्ध कवि वर्जिल था। उसने "एनिड" और जारजीज आदि महाकाव्य लिखे और यूनानी शैली को अपना आधार बनाया। अपने महाकाव्य "एनीड" में वेदना के बारे में वर्णन किया है तथा जारजीज में ग्रामीण कृषकों के जीवन के बारे में वर्णन किया गया है।

(ii) गद्य साहित्य के क्षेत्र में प्रगति—इस युग के प्रसिद्ध गद्य लेखक लीवि, टैसीटस प्लूटार्क, प्लोटस, टैरेन्स और सिसरो आदि थे। प्लोटस और टैरेन्स दो प्रमुख नाटककार थे। प्लोटस ने यूनानी शैली को आधार बनाकर सुखान्त नाटकों की रचना की। सेवाइन ने लिखा है कि "रोम के निवासी नाटक रचना में यूनानियों से सबसे अधिक प्रभावित हुए। उनका सबसे बड़ा नाटककार प्लूटस था।"[2] दूसरा प्रसिद्ध नाटककार टैरेन्स था, जिसने दार्शनिक नाटकों की रचना की। सिसरो गद्य साहित्य के लिये बहुत प्रसिद्ध है। इसे लैटिन भाषा का निर्माता भी कहा जाता है। यह अपने समय का प्रसिद्ध वक्ता और निबन्धकार था। उसने

1 सेवाइन—ए हिस्ट्री आफ वर्ल्ड सिवलीजेशन्स, पृष्ठ 172

2 सेवाइन—ए हिस्ट्री आफ वर्ल्ड सिवलीजेशन, पृष्ठ 191

"ग्रोरेशन्स" नामक ग्रन्थ लिखा। इसके अतिरिक्त उसने "ओल्ड एज" और "फ्रेंडशिप" आदि निबन्ध भी लिखे। जूलियस सीजर ने लैटिन भाषा में "कॉमेण्ट-रीज" नामक पुस्तक लिखी, जिसमें उसने अपनी गॉल विजयों एवं गृह युद्धों का वर्णन किया है।

इस समय तीन प्रमुख इतिहासकारों ने रोम का इतिहास लिखा। पहला इतिहासकार लिवि था। जिसने "रोम का इतिहास" नामक ग्रन्थ लिखा। इस ग्रन्थ में उसने आगस्टस की आवश्यकता से अधिक प्रशंसा की है। यह ग्रन्थ एक पक्षीय था। दूसरा इतिहासकार टैसीटस था, जिसने "ग्रर्मेनिया" नामक पुस्तक लिखी। इस पुस्तक में उसने रोम के पतन के कारणों पर प्रकाश डाला है। तीसरा इतिहासकार प्लूटार्क था। जिसने "पैरलल लाइवज" नामक पुस्तक लिखी। इस पुस्तक में उसने यूनानी और रोमन राजनीतिज्ञों तथा योद्धाओं का तुलनात्मक वर्णन किया है। इसके अतिरिक्त प्लूटार्क ने रोम के 46 प्रसिद्ध व्यक्तियों की जीवनियां लिखी।

(8) दर्शन—रोम में दर्शन के क्षेत्र में भी बहुत अधिक उन्नति हुई। इस समय के प्रसिद्ध दार्शनिक, गलेन, सेनेका, एपिकटेटस, ओरेलियस आदि थे। गलेन नामक दार्शनिक ने तर्क शास्त्र पर अनेक पुस्तकें लिखी। सेनेका नामक दार्शनिक रोमन सम्राट नीरो का गुरु था। वह स्पेन का रहने वाला था। नीरो के व्यवहार के कारण इसने आत्म हत्या कर ली। एपिकटेटस नामक दार्शनिक ने दर्शन के क्षेत्र में कई महत्वपूर्ण रचनायें रची। ओरेलियस नामक दार्शनिक ने अपने ग्रन्थ "मेडिटेशंस" में स्टोइक दर्शन के बारे में वर्णन किया है।

(9) कला—

(1) स्थापत्य कला—रोम में स्थापत्य कला के क्षेत्र में भी बहुत अधिक उन्नति हुई। वहां की भवन कला यूनानी शैली से बहुत अधिक प्रभावित थी। इस समय रोम में तथा अन्य कई स्थानों पर शानदार भवनों का निर्माण किया गया। ये भवन संगमरमर के बनाये गये थे। इसके अतिरिक्त विजय सूचक अनेक तोरण भी बनाये गये। रोम में कोलोजियम (स्टेडियम) का निर्माण यूनान की डोरिकआयोनिक और कोरिन्थ शैली के आधार पर किया गया। यह तीन मंजिल का बना हुआ था। इस स्टेडियम में 50,000 व्यक्ति एक साथ बैठ सकते थे।

रोम की सबसे बड़ी इमारत मेक्सिमस का निर्माण आगस्टस के राज्य काल में हुआ। इसमें दो लाख पच्चीस हजार व्यक्ति एक साथ बैठ सकते थे। इमारत "यू" जैसी आकृति की बनी हुई थी। रोम में पेन्थीयॉन का सुन्दर मंदिर रोम की भवन निर्माण कला का एक सुन्दर नमूना है। आगस्टस ने अपोलो का देवालय तथा जूलियस सीजर की स्मृति में एक नये सीनेट भवन का निर्माण करवाया, जो रोम की कला के प्रतीक हैं। पोम्पे नगर 79 ई. में भूकम्प के कारण

नष्ट हो गया था। उस समय यह स्थापत्य कला का एक प्रसिद्ध केन्द्र था। खुदाई में प्राप्त इसकी दीवारें, जल व्यवस्था, मनिया, गृह कुऐं, बाजार, मन्दिर, थियेटर और स्टेडियम आदि उस समय की भवन निर्माण कला के सुन्दर नमूने हैं। इसके अतिरिक्त हेड्रियन द्वारा निर्मित "वीनस" का मन्दिर, कान्सटेन्टाइन द्वारा निर्मित "बाजिलका" का गिरजाघर और रिमिनी का पुल, सम्राट केरकेला द्वारा निर्मित स्नान घर इत्यादि उस समय की वास्तुकला के सुन्दर नमूने हैं।

(ii) मूर्ति कला—रोम में मूर्ति कला के क्षेत्र में भी बहुत विकास हुआ। इस काल की मूर्ति कला पर यूनानी प्रभाव स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होता है। यहां के मूर्तिकार कांसे, ताम्बे, मिट्टी और पत्थर की मूर्तियां बनाते थे। सम्राट आगस्टस और मार्कस ओरेलियस की मूर्तियां उस समय की मूर्तिकला के सुन्दर नमूने हैं।

(iii) चित्रकला—रोम ने चित्रकला के क्षेत्र में भी काफी उन्नति की। यहां की चित्रकला पर यूनानी प्रभाव स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होता है। उस समय चित्रकार ऐतिहासिक विषयों (युद्धों के दृश्य) पर अधिक चित्र बनाते थे। पोम्पी नगर से प्राप्त चित्र उस समय की चित्रकला के सुन्दर नमूने हैं। रोमन चित्रकारों ने प्रकृति के चित्रों का निर्माण करने में यूनानियों से भी अधिक उन्नति कर ली थी। इसके अतिरिक्त इस समय के पचकार पलंग के दोनों तरफ कामुक चित्र बनाते थे। कोलोसियस की मेहराब पर अंकित जुलूस का चित्र उस समय की चित्रकला का सुन्दर नमूना है। बर्नस ने लिखा है कि 'रोमन चरित्र का सही चित्रण स्थापत्य और मूर्तिकला में मिलता है। दोनों ही उपयुक्त रूप से रोम की शक्ति और शान का प्रदर्शन करती थी, बनिस्पत मस्तिष्क की स्वतन्त्रता और जीवन की धारणाओं के।'[1]

(iv) संगीत कला—रोम में संगीत कला के क्षेत्र में भी काफी विकास हुआ। इस क्षेत्र में रोमवासियों ने यूनानियों का अनुसरण किया। इस समय बांसुरी और लायर नामक वाद्ययन्त्र प्रचलित थे। नाटकों और खेल तमाशों के समय संगीत का आयोजन किया जाता था।

(10) विज्ञान—(i) रोम विज्ञान के क्षेत्र में अधिक उन्नति नहीं कर सका। यहां के विज्ञान पर यूनानी प्रभाव स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होता है। प्लिनी उस समय का प्रसिद्ध वैज्ञानिक था जिसने लैटिन भाषा में "प्राकृतिक इतिहास" नामक ग्रन्थ लिखा। इस ग्रन्थ में उसने सृष्टि का निर्माण, भूगोल, मानव विज्ञान, जन्तु विज्ञान वनस्पति विज्ञान, चिकित्सा विज्ञान और धातु विज्ञान आदि के बारे में वर्णन किया। प्लिनी का यह मानना था कि प्रकृति की समस्त वस्तुयें मनुष्य की सेवा करती हैं। उसने कहा था कि "यदि कोई मनुष्य बहुत समय तक

---

1. मैकनेल बर्नस—वेस्टर्न सिवलीजेशन, पृष्ठ 201

निराहार रहे, तो उसका श्वांस इतना विषैला हो जाता है कि उसस सांप भी मर सकता है।"[1]

(ii) भूगोल—रोम मे भूगोल के क्षेत्र में काफी प्रगति हुई। स्ट्रैबो ने अपनी पुस्तक "भूगोल" मे प्राचीन विश्व की भौगोलिक स्थिति के बारे में वर्णन किया है। सेनेक (3–65 ई) ने प्राकृतिक भूगोल पर पुस्तक लिखी। टोलेमीने विश्व का एक मानचित्र बनाया, जिसम अक्षांस और देशान्तर के आधार पर कई स्थानो की स्थिति को निश्चित किया गया। टोलेमी ने यह बताया कि पृथ्वी के चारो ओर सात गृह चक्कर लगाते हैं।

(iii) ज्योतिष—ज्योतिष क्षेत्र मे रोम ने काफी प्रगति की। रोम मे सर्वप्रथम जूलियस सीजर ने अपने नाम पर "जूलियन केलेण्डर" चलाया। इसके अनुसार एक वर्ष मे 365 दिन माने गए। रोमन लोग सात दिनो का एक सप्ताह मानते थे। उस समय राशि चक्र के आधार पर बीमारी की भविष्य वाणिया भी की जाती थीं और उन्हे दूर करने के उपाय भी बताये जाते थे।

(iv) चिकित्सा विज्ञान—रोम निवासियो ने चिकित्सा विज्ञान के क्षेत्र मे सफाई पर बहुत अधिक बल दिया। प्रत्येक नगर मे चिकित्सालय खोले गये। जिसमे सरकार द्वारा नियुक्त चिकित्सक बीमारियों का इलाज करते थे, फिर भी रोमनवासी रोगो क लिये जादू-टोने के इलाज मे अधिक विश्वास करते थे। उस समय का सबसे प्रसिद्ध चिकित्सक गैलेन (129–199) ई था, उसने चिकित्सा विज्ञान पर लगभग 150 पुस्तकें लिखी। उसने अपनी पुस्तकों मे धमनियों, मास-पेशियों और हृदय के बारे मे वर्णन किया है। कैलन ने रीढ की हड्डी के बारे मे अनेक बातें लिखी। सेल्सुस ने चिकित्सा विज्ञान पर एक पुस्तक लिखी, जिसमे उसने शरीर की चीरफाड के बारे मे वर्णन किया है। सोरेनस ने स्त्री रोगों के बारे मे अपनी पुस्तक मे विस्तृत रूप से वर्णन किया है।

रोमन सभ्यता पर यूनान का प्रभाव—रोमन सभ्यता के कई क्षेत्रो मे यूनानी प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। रोम वालों ने यूनानी सभ्यता के कई तत्व ग्रहण कर उसे जीवित रखा और उसका अपने विशाल साम्राज्य मे प्रसार किया। गणतन्त्र शासन व्यवस्था, नागरिको के मौलिक अधिकार, न्याय, स्वतन्त्रता, समानता और कानूनो का सकलन आदि बातें रोमनवासियो ने यूनान मे ही सीखी। रोम ने औपनिवेशिक साम्राज्य की स्थापना और प्रसार आदि भी यूनान से सीखा। रोमवासियो ने यूनानी देवताओ के नाम बदलकर उनकी उपासना करना शुरू कर दिया और यूनानी धार्मिक साहित्य को भी अपना लिया था। रोमन साहित्यकारो ने यूनानी साहित्य को आधार बनाकर लैटिन भाषा मे अनेक बहुमूल्य ग्रन्थो की रचना की। विज्ञान के क्षेत्र मे रोमनो ने यूनानियो का अनुसरण किया। उनकी कोई नवीन देन नही है। सक्षेप्त मे यह कहा जा सकता है कि रोम ने यूनानी सभ्यता और सस्कृति को अपनाया उसे जीवित रखा और उसका अपने विशाल साम्राज्य मे प्रसार किया। इसके लिये रोमन सभ्यता यूनान की सदा ऋणी रहेगी।

1. प्लेट व जौन—विश्व का इतिहास, पृष्ठ 155

रोमन सभ्यता की देन—प्रोफेसर ल्यूकस ने लिखा है कि रोमन सभ्यता ने मानव सभ्यता को दो देन दी हैं। प्रथम—रोम ने यूनानी सभ्यता और संस्कृति को अपनाया और उसे जीवित रखा व इस सभ्यता को विकसित कर उसका अपने विशाल साम्राज्य में प्रसार किया। प्रो. ल्यूकस के अनुसार दूसरी मौलिक देन लैटिन भाषा है, जिसके परिणाम स्वरूप यूरोप में पुनर्जागरण संभव हो सका। वर्तमान प्रजातन्त्रात्मक शासन व्यवस्था रोम की गणतन्त्रीय शासन व्यवस्था पर आधारित है। प्रो० ल्यूकस ने लिखा है कि "जहां रोम ने संसार के अधिकांश भाग को लूटा, वहां उसने सभ्यता भी प्रदान की। साम्राज्य के एक छोर से दूसरे छोर तक रोमन शासन काल में विशाल नगरों का निर्माण किया गया।" प्रो० विलड्रा ने लिखा है "यदि यूनान ने एक सुविकसित संस्कृति को जन्म दिया तो रोम ने उसकी रक्षा की और उसे दूर दूर तक फैलाया। यूनानियों के आदर्शवाद को उन्होंने व्यावहारिक रूप प्रदान किया।

रोम की सबसे बड़ी देन उसकी लैटिन भाषा है। यह भाषा शीघ्र ही अन्तर्राष्ट्रीय भाषा बन गई। फ्रांसीसी, इटालवी, स्पेनी और रूमानिया आदि भाषाओं पर लैटिन का प्रभाव स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होता है। सिसरो की पत्र लेखन कला से यूरोप के गद्य लेखक काफी प्रभावित हुए। आधुनिक पंचांग जूलियस सीजर के जूलियन पंचांग पर आधारित है। रोम में सार्वजनिक चिकित्सालयों की स्थापना करना रोमवासियों की मुख्य देन है। ईसाई धर्म का पोषक और प्रचारक होने का श्रेय भी रोम को प्राप्त है। संसार का वर्तमान कानून रोमन कानूनों पर ही आधारित है। इस प्रकार स्पष्ट है कि रोम ने मानव सभ्यता को कई महत्वपूर्ण देन दी हैं। इसलिये रोमन साम्राज्य के नष्ट हो जाने पर भी उसकी प्राचीन सभ्यता परम्पराओं के रूप में अभी तक जीवित है। सैन्डमर्न ने सही लिखा है कि "रोम के आधिपत्य की स्थापना के साथ सारा प्राचीन इतिहास उसमें विलीन हो गया और रोम के स्रोत से आधुनिक इतिहास का सूत्रपात होता है" बर्नस ने लिखा है कि "यह बहुत ही आकर्षक सत्य है कि आधुनिक संसार रोम का विस्तृत कर्जदार है।"[1]

प्रस्तावित संदर्भ पुस्तकें

1. बीच, डब्ल्यू एन—हिस्ट्री आफ दि वर्ल्ड
2 एलिस व जीन—संसार का इतिहास
3. प्लेट व जीन—विश्व का इतिहास
4 वेल्स, एच जी—दी आउट लाइन आफ हिस्ट्री
5 मैकर्नल बर्नस—वेस्टर्न सिवलीजेशन्स
6. सेवाइन—ए हिस्ट्री आफ वर्ल्ड सिवलीजेशन

---

1. मैकर्नल बर्नस–वैस्टर्न सिवलीजेशन, पृष्ठ 211

अध्याय 8

ईसाई धर्म का उत्कर्ष और प्रभाव

प्रोफेसर ल्यूकस ने लिखा है कि "यूरोप में ईसाई धर्म के रोमन साम्राज्य का राजधर्म घोषित होना, पश्चिमी सभ्यता के इतिहास की प्रमुख घटना है।"

ईसाई धर्म के उत्कर्ष से पूर्व धार्मिक दशा—

फिलस्तीन पर क्रमशः बेबीलोन, फारस, यूनान और रोम का अधिकार रहा था। ईसाई धर्म के उत्कर्ष से पूर्व फिलस्तीन में यहूदी धर्म का बहुत अधिक प्रभाव था। यहां के यहूदी अपने को ईश्वर का पुत्र मानते थे। यहूदी बहुदेववाद में विश्वास करते थे और देवताओं को खुश करने के लिये पशु बलि भी देते थे।

29 ई० पूर्व में सम्राट आगस्टस ने अपने विशाल साम्राज्य में सम्राट की पूजा का सिद्धान्त प्रचलित कर दिया। इसका परिणाम यह हुआ कि रोम में रोमन सम्राटों के अनेक मन्दिरों का निर्माण किया गया। जनता इन मन्दिरों में जाकर सम्राट की मूर्ति की पूजा करती थी। यहूदियों ने रोमन सम्राट की पूजा करने से इन्कार कर दिया। यहूदी लोग एकेश्वरवाद में विश्वास रखते थे और अपने देवता "जेहोवा" की पूजा करते थे। यहूदियों की धार्मिक कट्टरता को देखकर रोमन सम्राट ने यहूदी शासकों से समझौता कर लिया। जिसके अनुसार यहूदियों को रोमन सम्राट की पूजा करने के लिये बाध्य नहीं किया जाता था।

यहूदियों का धर्म बहुत प्राचीन था। लगभग 1300 ई० पूर्व में यहूदियों का एक पैगम्बर हुआ था, जिसका नाम मोसेस था। इसने यहूदियों को मिश्र से फिलस्तीन में बसाया था। यहां पर यहूदी धर्म का बहुत अधिक प्रचार हुआ। यहूदी लोग एकेश्वरवाद में विश्वास रखते थे और अपने देवता "जेहोवा" की पूजा करते थे। मोसेस ने कहा था कि समय आने पर "जेहोवा" अपना पैगाम्बर भेजेगा, जो सारे संसार को धार्मिक उपदेश देगा।

धीरे धीरे यहूदी धर्म में अनेक बुराईयां प्रवेश कर गई। यहूदी लोग अपने सिद्धान्तों को भूलकर जन साधारण पर अत्याचार करने लगे। इस प्रकार फिलस्तीन शासकों ने, यहूदियों ने और पुरोहितों ने किसान मजदूर, चरवाहे और छोटे व्यापारियों का शोषण करना शुरू कर दिया। परिणामस्वरूप जन साधारण की दशा बहुत दयनीय हो गई। फिलस्तीन के जनसाधारण का यह मानना था कि

रोमन मे राजतन्त्र और यहूदियो के शोषण से मुक्ति दिलाने के लिये शीघ्र ही एक मसीहा जन्म लेगा। इतिहासकार सेवाइन ने लिखा है कि" विद्वाता को जग लग गया था, और धर्म जो सबके दिल और दिमाग को प्रभावित करता था, धीरे धीरे अपना अधिपत्य खो रहा था। इस उपजाऊ भूमि पर ईसाई धर्म के बीज बोये गये।" [1] बीच ने लिखा है कि "उस युग की राजनैतिक अशान्ति धार्मिक आडम्बरों एव आरम्भिक हीनता ने ईसाई धर्म के जन्म मे महत्वपूर्ण भूमिका अभिनित की और इन्ही बुराईयो को दूर करने के लिये यीशु ने अपने चुम्बनीय चरित्र से ईस्वी की पहली तीन शताब्दियो म न केवल इजरायल व यूनान वरन् समस्त पाश्चात्य जगत को प्रभावित किया" [2]

ऐसी परिस्थितियो मे फिलस्तीन के एक प्रान्त जूडिया मे जीसस का जन्म हुआ। एलिस व जोन ने लिखा है कि" इस छोटे से प्रान्त मे मे एक यहूदी बालक पैदा हुआ जिसका तमाम ससार पर बहुत गहरा प्रभाव पडा।"[3]

जीसस ने जन साधारण को अपने गले लगाया और जनता को शोषण से मुक्ति दिलाने का आश्वासन दिया। एच०जी० वेल्स ने लिखा है कि "टाइबेरियस सीजर के समय मे ऐसे यहूदियो में से एक महान शिक्षक उठा, जिसने ईश्वर की वास्तविक्ता को यहूदियो की रूढवादिता स निकाला। यह नेजरात का जीसस था"[4]

ईसा मसीह का जीवन—जीसस जो आगे चलकर ईसा मसीह के नाम से प्रसिद्ध हुआ। ईसा के जन्म की तिथि के विषय मे इतिहासकार एकमत नही है, परन्तु सभी इतिहासकार इस बात पर एक मत हैं कि ईसा का जन्म 25 दिसम्बर 4 ई०को फिलस्तीन के एक छोटे से गाव बेथलेहम म एक घुडसाल मे हुआ था। इस समय फिलस्तीन रोम के अधीन था। ईसा के पिता का नाम युसुफ और माता का नाम मरियम था। एफ० जी पियर्स ने लिखा है कि" उनके पिता गरीब थे हालाकि उनका पिता यहूदियो के राजा डेविड का वशज था।" ईसा के पिता बढई का व्यवसाय करत थे। ईसाईयों का मानना है कि जब ईसा पैदा हुआ तो पूर्व के तीन विद्वानो ने उसे आर्शीवाद वाद दिया। ईसा का बाल्यकाल गेलीली के नअरेथ नगर म बीता। प्लैट और जीन ने लिखा है कि " गरीब ईसा एक घुडसाल म पैदा हुआ था। गेलीली प्रान्त के नअरेथ गाव मे बढई का काम करने लगा।"[5]

1—सबाइन— ए हिस्ट्री आफ वर्ल्ड सिबालीजेशन, पृष्ठ 184
2—बीच डब्ल्यू एन— हिस्ट्री आफ दी वर्ल्ड, पृष्ठ 218
3—प्लैट और जीन ड्रम ड— विश्व का इतिहास, पृष्ठ 47
4—वेल्स एच०जी० दी आउट लाइन आफ हिस्ट्री, पृष्ठ523
5—प्लैट और जीन ड्रमड—विश्व का इतिहास, पृष्ठ 147

ईसा बचपन मे यहूदी धर्म की शिक्षा ग्रहण कर बढ़ई का काम करने लगा, परन्तु उसका झुकाव आध्यात्मिक विषयो की ओर बढता गया। उस समय यहूदी शासक हेरोड और रोमन शासक दोनो ही फिलीन की जनता पर अत्याचार कर रहे थे। सन्त जॉन ने इस अत्याचार के विरुद्ध आवाज उठाई। सन्त जॉन सच्चाई और आध्यात्मिक उपदेश देते थे। जिसस जान के उपदेशो से बहुत प्रभावित हुआ और उसने जान को अपना गुरू मान लिया। रोमन शासक यहूदी के विरुद्ध थे। इसलिये उन्होंने जॉन पर राजद्रोह का अपराध लगा कर उसे मृत्यु दण्ड दिया, जिससे जीसस को बडा धक्का पहुचा। इसके पश्चात् जीसस ने जनसाधारण पर किये जाने वाले अत्याचारो के विरुद्ध आवाज उठाई और सन्त जॉन के विचारो का प्रसार करने का निश्चय किया।

धर्म का प्रचार एवं मृत्यु—ईसा ने 30 वर्ष की आयु मे अपने विचारो का प्रसार करना प्रारम्भ किया। वे तीन वर्ष तक जुडिया तथा उसके आस पास के क्षेत्र मे भ्रमण कर अपने विचारो का प्रसार करते रहे। उन्होंने यहूदी धर्म मे व्याप्त बुराईयो को दूर करने का प्रयास किया। ईसा की वाणी म जादू था। वे जहा भी भाषण देते थे, वहा हजारो श्रोतागण उनके भाषणो से मुग्ध होकर उसके अनुयायी बन जाते थे। एक और जो व्यक्ति ईसा के सम्पर्क मे आ जाता था, वही उसका अनुयायी बन जाता था। एच जी वेल्स ने लिखा है कि "ईसा एक नितान्त गरीब शिक्षक था, जो जूडिया के रतीले तपते मैदानो मे भटकता रहता था, । आकस्मिक उपहार स्वरूप प्राप्त भोजन पर जीता था, फिर भी अपने स्वेत चोले म सदा शान्त साफ सुथरा, चमकता हुआ अपने विचारो मे खोया ऐसा लगता था मानो हवा मे तैरता हो।" [1]

ईसा के अनुयाईयो की सख्या निरन्तर बढती गई। ऐसा भी माना जाता है कि ईसा को अलौकिक शक्तियां प्राप्त थी। जिसके कारण यदि वह किसी अन्धे, कोढी, लूले तथा अन्य बीमारियो से पीडित व्यक्ति को आशीर्वाद दे देता था, तो उसका रोग ठीक हो जाता था। ईसा ने जब यहूदी धर्म की बुराईयो पर प्रकाश डाला और उसे दूर करने का प्रयास किया तो यहूदी धर्माधिकारी उसे अपना शत्रु समझने लगे। क्योकि ईससे यहूदी धर्माधिकारियो का समाज मे महत्व घटने लगा। ईसा कुलीन तंत्र का भी विरोधी थे। इसलिये यह वर्ग भी उसके विरुद्ध हो गया, लेकिन वे जनसाधारण मे बहुत लोकप्रिय थे। उस समय रोम पर टिबेरियस नामक सम्राट शासन कर रहा था और रोम का प्रान्तीय सूबेदार पाइलेट था। यहूदी समाज के कुलीन वर्ग और पुरोहित वर्ग ने जीसस के विचारो का विरोध किया

1—वेल्स, एच. जी.-दी आउट लाइन आफ हिस्ट्री पृष्ठ 524

और उसके विरुद्ध रोमन सम्राट के कान भरे। ईसा उनके विरोध की परवाह नहीं करते हुऐ अपने विचारों का प्रसार करता रहा।

29 ई म यहूदी लोग अपने प्रसिद्ध धार्मिक केन्द्र येरूसलम मे अपना धार्मिक उत्सव" फीस्ट आफ पासओर" मना रहे थे। ईसा ने इस उत्सव मे भाग लिया। उनके आने से पहले हजारो लोग उनके दर्शन करने के लिये यहा एकत्रित हो गये थे। वे चाहते थे कि ईसा उनका राजनीतिक नेतृत्व करे और रोमन शासकों के अत्याचार से मुक्ति दिलायें। इसलिये येरूसलम मे ईसा का भव्य स्वागत किया गया।

ईसा ने यरूसलम म आते ही उन सब पशुओं को मुक्त करने का आदेश दिया, जो "जेहोवा' देवता को खुश करने के लिय बलि के लिए लाये गये थे। इसके पश्चात् धार्मिक आडम्बरो की आलोचना की और जनता को नैतिक और शान्ति के उपदेश दिये। जब ईसा न राजनीतिक नेतृत्व नही किया और नैतिक उपदेश दिया तो यहूदी पुरोहित वर्ग उन पर भय कर क्रुद्ध हो गया। इसके बाद कुलीन यहूदी वर्ग ने ईसा पर आरोप लगाया कि वह स्वतन्त्र राज्य स्थापित करने के लिये शासक वर्ग के विरुद्ध जनता को भडका रहा है और रोमन सम्राट की पूजा का विरोध करता है।

यहूदी समाज के कुलीन वर्ग और पुरोहित वर्ग ने इस प्रकार के आरोप लगा कर ईसा के विरुद्ध रोमन गवर्नर पाइलेट से कई बार शिकायतें की और प्रदर्शन भी किये। ऐसे कठिन समय म ईसा का एक शिष्य जूडास भी 30 चादी के सिक्कों के लालच में आकर उनके विरोधियों से जा मिला। उसने रोमन गवर्नर पाइलेट से कहा कि ईसा ने अपने आपको ईश्वर कहकर एक बहुत बडा धार्मिक अपराध किया है।

जिसस अपने विरोध को देखकर अपने 12 शिष्यो के साथ शुक्रवार के दिन ओलिव की पहाडी पर चला गया। ईसा ने अपने शिष्यों के साथ भोजन करते समय कहा कि "जूडास ने मेरे साथ धोखा किया है और मुझे पकड़वाने की पूरी व्यवस्था कर दी है। उनके ये शब्द सुनकर शिष्य स्तब्ध रह गये। उसके पश्चात् ईसा ने जूडास के पैर अपने हाथ से धोय। तभी रोमन सैनिको ने गैथसेमन के उद्यान मे ईसा को गिरफ्तार कर लिया।

इसके पश्चात रोमन अदालत मे ईसा पर मुकदमा चलाया गया और वहा यहूदियो के सबस बडे पुजारी केफस ने ईसा पर यह आरोप लगाया कि उसने अपने आपको ईश्वर कहकर "जेहोवा" देवता का अपमान किया है। इस पर रोमन गवर्नर पाइलेट ने ईसा को फासी की सजा दी।

29 ई० मे बसन्त ऋतु के दिन गोलगाथा नामक स्थान पर दो डाकुओं के साथ ईसा को सूली पर चढा दिया गया। दो कील ईसा की दोनो हथेलियो मे और तीसरी कील उनके हृदय पर ठोकी गई। उस समय खून की धारा बहने लगी।

ऐसे समय ईसा ने ईश्वर से निवेदन किया कि हे ईश्वर। इन्हें क्षमा करना, क्योंकि यह नहीं जानते कि यह क्या कर रहे हैं।"

इस प्रकार ईसा 33 वर्ष की आयु में इस संसार से विदा हो गया। रोमन सम्राट ने ईसा को सूली चढ़ा कर अपने माथे पर कलंक का टीका लगा लिया।

रोमन सम्राट का यह मानना था कि ईसा की मृत्यु के पश्चात् लोग उसके उपदेशों को भूल जायेंगे। लेकिन यह बात गलत सिद्ध हुई। जिस प्रकार सुकरात को जहर देकर यूनान ने उसे अमर बना दिया, उसी प्रकार ईसा को फांसी देकर रोमन साम्राज्य ने उसके सिद्धान्तों को अमर बना दिया।

इस समय सारे फिलस्तीन में यह समाचार फैल गया कि कुछ लोगों ने ईसा को जीवित देखा है। जनश्रुतियों के अनुसार ईसा ने अपने शिष्यों को 40 दिन तक दर्शन दिये और अपने सिद्धान्तों का प्रचार करने के लिये उन्हें कहा। इससे जनता में यह विश्वास हो गया कि ईसा वास्तव में ईश्वर की सन्तान था। उसके अनुयाईयों की संख्या बढ़ने लगी और उसके सिद्धान्त जनता में बहुत अधिक लोकप्रिय होने लगे। शुक्रवार को सूली पर चढ़ाने के बाद ईसा तीसरे दिन रविवार को कब्र से फिर प्रगट हुये थे। इसलिये ईसाई धर्म में उस रविवार को "ईस्टर सण्डे" के रूप में मनाया जाता है। स्वेनसन ने लिखा है कि "ईसा के ज्ञात उपदेश जो ग्रन्थों में प्राप्त हैं बताते हैं कि वह एक निर्दयी संसार के लिये मातृभाव का संदेश लाया था।"[1]

ईसा के उपदेश—ईसा के जीवन और उपदेशों का—"न्यू टेस्टामेंट नामक पुस्तक में वर्णन किया गया है। ईसाईयों की यह धार्मिक पुस्तक "बाइबिल" के नाम से प्रसिद्ध है। ईसा की मृत्यु के पश्चात् उनके चार शिष्यों मैथ्यू, मार्क, ल्यूक और जान ने उनके भाषणों को संग्रहित कर चार "गोस्पल्स" लिखे। इसमें ईसा के उपदेशों का वर्णन किया गया है और इसी आधार पर ईसाई धर्म के निम्नलिखित सिद्धान्त निर्धारित किये गये—

1. ईश्वर एक है, वह सर्वव्यापी है। उसकी आराधना करने से सत्य का ज्ञान प्राप्त होता है।
2. ईश्वर ने ही सृष्टि का निर्माण किया है। सभी मनुष्य ईश्वर की सन्तान है, इसलिये ईश्वर के लिये सभी मनुष्य एक समान है। हमें सभी मनुष्यों के प्रति एक जैसा व्यवहार करना चाहिये।
3 ईश्वर सभी मनुष्यों से प्रेम करता है। इसलिये प्रत्येक मनुष्य को एक दूसरे से प्रेमपूर्ण संबंध रखना चाहिये।
4. प्रत्येक मनुष्य को चाहिये कि वह सेवा, प्रेम और अहिंसा के द्वारा दूसरे मनुष्य के विश्वास को जीते और दूसरों को कष्ट नहीं पहुंचाये।

1— स्वेनसन— ए हिस्ट्री आफ वर्ल्ड सिवलीजेशन, पृष्ठ 185

5 प्रत्येक मनुष्य को सदा सच बोलना चाहिये। उच्च चरित्र वाले व्यक्ति ही ईश्वर के राज्य मे स्थान पाते हैं।

6 मनुष्य को चाहिये वह अधिक धन सम्पत्ति सग्रहित नहीं करें, क्योंकि धनवान व्यक्ति के लिये स्वर्ग के द्वार बद है।

7- यदि कोई व्यक्ति तुमसे घृणा करे तो तुम उससे प्रेम करो। यदि कोई व्यक्ति तुम्हारे साथ शत्रुता का व्यवहार करे तो तुम उसके साथ मैत्री पूर्ण व्यवहार करो।

8. मनुष्य को चाहिये कि वो अपने जीवन म सहनशीलता और आत्म त्याग को अपनाये।

9. मनुष्य को चाहिये कि वह ईश्वर को प्राप्त करने का प्रयास करे।

ईसा के उपदशो का उनके शिष्यों न विश्व क कोने कोने मे प्रसार किया। उसके उपदश ईसाई धर्म के सिद्धान्त बन गये और इन सिद्धान्तो म विश्वास रखने वाले व्यक्ति ईसाई कहलाये। ईसा कर्म सिद्धान्त मे विश्वास करते थे। उन्होने लोगो स कहा कि मृत्यु के बाद प्रत्येक व्यक्ति को ईश्वर के सामने अच्छे और बुरे कार्यों का लेखा जोखा देना पडता है। इसलिये ईसा ने कहा कि "तुम दूसरो के साथ वैसा ही व्यवहार करो, जैसा दूसरो से अपने लिये आशा करते हो" एव यदि तुम्हारे दायें गाल पर कोई चाटा मारे तो तुम बाया गाल भी आगे कर दो।"

ईसाई धर्म का दर्शन–सन्त पॉल ने ईसा के विचारो का प्रचार किया था। सन्त पाल का मानना था कि ईसा ईश्वर की सन्तान था। जिसको ईश्वर ने ससार मे मनुष्य कि तरह कष्ट पाने के लिये भेजा था। ईसा के महत्वपूर्ण विचारो को ईसाई धर्म का दर्शन कहा जाता है। जो निम्नलिखित है .—

1 ईश्वर, पिता और सभी मनुष्य भाई भाई है। यदि इस सिद्धान्त को सभी व्यक्ति स्वीकार कर लें, तो समाज मे झगडे समाप्त हो जायेंगे और शांति व्यवस्था बनी रहेगी।

2. ईश्वर एक है उसके तीन रूप है। 1–परमेश्वर, 2–परमेश्वर का पुत्र, 3–पवित्र आत्मा

3 कर्म सिद्धान्त के ऊपर ही स्वर्ग एव नरक की व्यवस्था की गई है। ईसा का कहना था कि धनवानो को स्वर्ग मे स्थान प्राप्त नही होगा।

4 जिस दिन सृष्टि पर प्रलय होगा, उसी दिन न्याय होगा।

5 आत्मा अजर अमर है, जिसकी कभी मृत्यु नही होती है।

6 यदि कोई भी मनुष्य अपने अच्छे बुरे कर्मों का प्रायश्चित कर लेता है, तो ईश्वर उसे क्षमा प्रदान करता है।

7 जो व्यक्ति स्वेच्छा से आत्म त्याग करता है, वही श्रेष्ठ है ।
8 बाहरी धर्म काण्डो, लोभ, घमण्ड को छोडना और शत्रु को माफ कर देना आदि ईसा के दर्शन की मुख्य बातें है ।

मैथ्यू ने अपनी गोस्पल्स मे पाचवें से सातवे अध्याय तक ईसा के दार्शनिक विचारो का वर्णन किया है ।

ईसाई धर्म का प्रसार—ईसाई धर्म की गाथाओं के अनुसार शुक्रवार को सूली पर चढने के पश्चात ईसा तीसरे दिन रविवार को पुन जीवित प्रगट हुआ और 40 दिन तक उनने अपने शिष्यो को दर्शन दिये, तथा उनके उपदेशो का प्रचार करने को कहा । यह "रविवार" ईसाई धर्म में "ईस्टर सन्डे" के रूप म मनाया जाता है । इसके पश्चात् ईसा का मसीहा के रूप में स्वीकार किया गया । इस प्रकार की प्रेरणा पाकर ईसा क शिष्यो न एक स्थान से दूसरे स्थान का भ्रमण कर उनक उपदेशो का प्रचार किया । यहूदी धर्माधिकारी इस बात को मानने के लिये तैयार नही थे कि मनुष्य ईश्वर बन सकता है । अत ईसाईयों पर रोमन साम्राज्य के द्वारा निरन्तर अत्याचार किया जाता रहा । स्टीफन नामक ईसाई व्यक्ति को यहूदी धर्माधिकारियों ने पत्थरो से मार डाला । फिर भी ईसा के शिष्य उनक उपदेशो का निरन्तर प्रचार करते रह । परिणामस्वरूप अनेक लोगो ने ईसाई धर्म को ग्रहण कर लिया । ईसाई धर्म के मुख्य प्रचारक ईसा के शिष्य सन्त पॉल और सन्त पीटर थे ।

1 सन्त पाल—ईसा के पश्चात् उसके शिष्य सन्त पाल ने अनेक बाधाओ को सहने हुए भी ईसाई धर्म के सिद्धान्तो का प्रचार किया । कुछ विद्वान उसे ईसाई धर्म का दूसरा सस्थापक भी कहते हैं । सेवाइन ने लिखा हैं कि "पाल एक महान् सगठन कर्त्ता थे । अपने प्रचार कार्य से उन्होने इतनी विस्तृत ख्याति प्राप्त कर ली कि उन्हें ईसाई धर्म का द्वितीय सस्थापक कहा जाता है ।"[1]

पाल का वास्तविक नाम साल था । दक्षिणी पूर्वी एशिया माइनर के टारसस नगर में यहूदी परिवार में साल का जन्म हुआ था । वह रोमन नागरिक था और यूनानी तथा फारसी । भाषा का बहुत बडा विद्वान था । आरम्भ मे साल ईसाई धर्म का भयकर विरोधी जब वह रोमन साम्राज्य मे राजकीय पद पर नियुक्त हुआ तो उसने येरुसलेम और जूडा मे अनेक ईसाईयो को राज्य विरोधी मानते हुए कठोर दड दिये थे । ईसाईयो की गाथाओ के अनुसार जब साल "दमश्क" की ओर जा रहा था, तब ईसा ने उसे दर्शन दिये । जिससे उसका हृदय परिवर्तन हो गया और 31 ई० म उसने ईसाई धर्म को ग्रहण कर लिया । उसके पश्चात् उसने अपना यहूदी नाम "सार" बदलकर 'पाल" कर दिया । "मैकनल बर्नस ने लिखा है कि" उसका (पाल) विश्वास था कि ईसा या मसीहा ससार के आरम्भ से ही इस ससार

1. सेवाइन—ए हिस्ट्री आफ वर्ल्ड सिवलीजेशन, पृष्ठ 267

में रह रहा था और मनुष्यों को पापमुक्त करने के लिये ही उसने मृत्यु का आलिगन किया था।"[1]

42 ई० में ईसा के अनुयायियों को सीरिया के प्रमुख नगर एन्टिओक में "ईसाई" के नाम से संबोधित किया गया और यहीं से पाल तथा उसके साथी ईसाई धर्म के सिद्धान्तों का प्रचार करने के लिये रवाना हुए। इसलिये एन्टिओक नगर ईसाईयों का एक प्रसिद्ध धार्मिक तीर्थ स्थान है। पाल ने स्थान स्थान पर भ्रमण कर ईसाई धर्म के सिद्धान्तों का प्रचार किया और स्थान स्थान पर गिरजाघरों की स्थापना की। उसने गिरजाघर को ईसा का प्रतीक बनाया। पाल के प्रयासों से पेलेस्टाइन के कई नगरों में और रोम में गिरजाघरों का निर्माण हुआ।

जब पाल ईसाई धर्म के सिद्धान्तों का प्रचार कर रहा था, तब उसके विरोधियों ने कई बार उसके साथ अभद्र व्यवहार किया, लेकिन वह 20 वर्ष तक इन सबको सहते हुए ईसाई धर्म के सिद्धान्तों का प्रचार करता रहा। इस प्रकार उसने रोम में एक धार्मिक साम्राज्य की स्थापना की और उसके विचारों से प्रभावित होकर अनेक लोगों ने ईसाई धर्म को ग्रहण कर लिया।

इस समय रोम पर सम्राट नीरो शासन कर रहा था। उसने जन साधारण पर बहुत अधिक अत्याचार किया। इसका लाभ उठाकर पाल ने रोम के गरीब लोगों, श्रमिकों और दासों को ईसाई बना दिया।

रोम में जब नीरो के विरुद्ध असन्तोष बढ़ने लगा, तब रोम के पदाधिकारियों ने पाल पर ईसाईयों को राज्य के विरुद्ध भड़काने का आरोप लगाकर उसे बन्दी बना लिया और 62 ई० में उसे फांसी पर लटका दिया। पाल धर्म के नाम पर शहीद हो गया। उसने ईसाई धर्म को अमर बना दिया।

पाल ने ईसाई धर्म के सिद्धान्तों को संग्रहित किया और ईसाई धर्म के प्रचार के लिये अनेक स्थानों पर गिरजाघरों का निर्माण करवाया। प्लेट व जीन ने लिखा है कि "धर्म दूत पाल प्रथम ईसाई प्रचारक था।"[2]

2. सन्त पीटर—ईसाई धर्म का दूसरा प्रचारक ईसा का दूसरा शिष्य पीटर था। उसने जेरूसलम में एक गिरजाघर का निर्माण करवाया। ईसाई धर्म में संस्कार पीटर के द्वारा शुरु किये गए। वह संस्कारों में नामकरण संस्कार को सबसे अधिक महत्व देता था। पीटर ने भी स्थान स्थान पर भ्रमण कर ईसाई धर्म के सिद्धान्तों का प्रचार किया। उसने रोम में भी एक चर्च का निर्माण करवाया। रोम के सम्राट नीरो ने 67 ई० में पीटर को मृत्यु दंड दिया। इस प्रकार पीटर

1 मैकनेल बर्नस–वेस्टर्न सिवलीजेशन्स, पृष्ठ 221

2. प्लेट व जीन ड्रमंड–विश्व का इतिहास, पृष्ठ 148

भी धर्म के नाम पर शहीद हो गया। रोम के पास वेटिकन पहाड़ी पर पीटर की कब्र बनी हुई है। प्लेट जीन और डूमड ने लिखा है कि" शहीदों का खून ईसाई धर्म में बीज कहलाया।"[1]

ईसाई धर्म के प्रचार में कठिनाईयाँ—ईसाई धर्म के प्रचारकों को इस धर्म के सिद्धान्तों का प्रचार करने के लिये अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। प्रारम्भ में यहूदी समाज में कुलीन वर्ग और पुरोहित वर्ग ने इस धर्म का विरोध किया। इसके पश्चात रोमन सम्राट ने ईसाइयों पर अमानुषिक अत्याचार किये। इस दमन चक्र के प्रमुख कारण निम्नलिखित थे—

1 उस समय की जनता ने इसाइ धर्म को समझने की चेष्टा नहीं की। उन्हें इस धर्म के वास्तविक उद्देश्यों के बारे में जानकारी नहीं थी।

2. प्रारम्भ में गरीब यहूदी लोगों ने ही इस धर्म को स्वीकार किया था अत, यहूदी समाज के कुलीन वर्ग के लोगों तथा पुरोहित वर्ग ने इस धर्म का विरोध किया।

3. जनता इसे यहूदी धर्म का सुधरा हुआ रूप मानती थी और रोमन लोग यहूदीयों से घृणा करते थे।

4 ईसाई धर्म ने मूर्ती पूजा का विरोध किया। इस धर्म के प्रचारकों ने सम्राट की पूजा का भी विरोध किया।

5 ईसाई धर्म के प्रचारक अपने सिद्धान्तों का प्रचार प्रेम, बन्धुत्व और अहिंसा आदि तरीकों से कर रहे थे। वे शक्ति तथा हिंसा के द्वारा धर्म के सिद्धान्तों का प्रचार करने के पक्ष में नहीं थे।

6 ईसाई धर्म ने इस समय के लोकप्रिय मनोरंजन "ग्लेडिटियर युद्ध" का विरोध किया।

ईसाई धर्म को राज्य धर्म घोषित करना—विशाल रोमन साम्राज्य में विभिन्न धर्मों के मानने वाले व्यक्ति निवास करते थे। ईसाई धर्म भी उनमें से एक था। रोमन शासकों ने ईसाईयों पर बहुत अधिक अत्याचार किये। इसके प्रमुख कारण निम्नलिखित थे।

1 पहला कारण यह था कि ईसाई लोगों ने रोमन सम्राट की पूजा का विरोध किया। वे ईश्वर के अतिरिक्त अन्य किसी की भी पूजा करने के लिये तैयार नहीं थे।

2 ईसाई लोग अहिंसा के सिद्धान्त में विश्वास रखते थे। इसलिये उन्होंने रोमन सेना में भर्ती होने से इन्कार कर दिया।

---

1 प्लेट व जीन डूमड विश्व का इतिहास, पृष्ठ 149

3. 70 ई० मे यहूदियो ने रोमन साम्राज्य के विरुद्ध विद्रोह किया था। यद्यपि इस विद्रोह मे ईसाईयों का हाथ नहीं था, लेकिन रोमन शासक ने ईसाईयो का इसमे हाथ माना।

4. ईसाई धर्म के प्रचारको ने रोम की धार्मिक बुराइयो को दूर करने का प्रयास किया, लेकिन उनके विरोधियो ने उनके विरुद्ध तरह तरह की अफवाहे फैलाकर उनको बदनाम कर दिया।

सम्राट नीरो के शासन काल मे ईसाइयो पर अमानुषिक अत्याचार किये गये। उसने अनेको ईसाइयो को जीन्दे दीवार में चुनवा दिया। सम्राट डिमिसीयन ने अनेको "*ईसाईयो को भूखे शेरो के सामने डलवा दिया, जिन्हे शेर खा गये।* जो बचे उन्हें जिन्दा जला दिया गया या उनके सिर काट दिये गये या सूली पर चढा दिया गया।[1] इसके पश्चात् सम्राट डायोक्लेशियन ने भी ईसाइयो पर इसी तरह अत्याचार किये। उसने भी कई ईसाईयो को मरवा दिया। इनके धार्मिक ग्रन्थ जला दिये गये और गिरजाघरो को नष्ट करवा दिया। इस प्रकार के अमानवीय अत्याचार को सहते हुए भी ईसाई धर्म प्रचारक धर्म का प्रचार करते रहे। ज्यो ज्यो ईसाई धर्म पर अत्याचार बढा, त्यों त्यो यह धर्म ज्यादा लोकप्रिय होता गया।

पहली शताब्दी के अन्त तक रोमन साम्राज्य के सभी मुख्य नगरो मे गिरजाघरो का निर्माण हो चुका था। दूसरी शताब्दी के अन्त तक रोमन साम्राज्य की पाच प्रतिशत जनता ईसाई धर्म की अनुयायी बन चुकी थी। तीसरी शताब्दी के अन्त तक 20 प्रतिशत जनता ईसाई धर्म की अनुयायी बन चुकी थी। 311 ई० में सर्वप्रथम रोमन सम्राट गैलिरियस ने ईसाईयो को धार्मिक स्वतत्रता प्रदान की। कान्सटेन्टाइन ने ईसाईयो के सहयोग से गृह युद्ध में सफलता प्राप्त की और उसने सम्राट बनने के पश्चात् ईसाई धर्म को ग्रहण कर लिया। उसने 313 ई० मे ईसाईयो को धर्म प्रचार करने की पूर्ण स्वतत्रता दे दी। इसके पश्चात् सम्राट थियोडोसियस ने ईसाई धर्म को राज्य धर्म घोषित कर दिया। सम्राट का सहयोग पाकर ईसाई धर्म बडी तीव्र गति से साम्राज्य के सभी भागो म फैल गया।

ईसाई धर्म के सस्कार—ईसा ने मनुष्य के जीवन के लिये कुछ नियम बनाये जिन्हे सस्कार कहते हैं। ईसाई धर्म के सस्कारो को बाइबल मे सेक्रा मेंट कहा जाता है। *इनमे गिरजाघरो को ईसा का प्रतीक बताया गया है और दैनिक जीवन में सस्कार* के पालन पर जोर दिया गया।

---

1 दिवाकर, बी, एम– विश्व का इतिहास, पृष्ठ 182

1 नामकरण सस्कार—इस सस्कार को बेपटाइजेशन भी कहते हैं। जब बच्चा तीन वर्ष का हो जाता है, तब पादरी उस पर पवित्र जल छिड़क कर उसका नाम रखता है। इसे नामकरण सस्कार कहते हैं।

2. प्रमाणीकरण सस्कार—इस सस्कार को कन्फरमेशन भी कहते हैं। जब बच्चा 12 वर्ष का हो जाता है तब उसके नाम की सार्वजनिक रूप से घोषणा की जाती है। इसे प्रमाणीकरण सस्कार कहते है।

3 ईसा का अन्तिम भोजन—ईसा ने मृत्यु से पूर्व अपने 12 शिष्यो के साथ शुक्रवार को अन्तिम भोजन किया था। इस दिन को ईसाई लोग पवित्र धार्मिक त्यौहार मानते हैं तथा सभी लोग एक साथ बैठकर शराब पीते हैं और खाना खाते हैं, ताकि वे भी ईसा की तरह कठिनाईयों को सहन के लिये बल प्राप्त कर सके। यह सस्कार हर वर्ष मनाया जाता है

4 प्रायश्चित सस्कार—इस सस्कार के अनुसार यदि कोई भी अपराधी अपने अपराधो के लिये पादरी के समक्ष ईश्वर से अपने अपराधो की क्षमा माग ले, बुरे कार्यों का प्रायश्चित कर ले तो ईश्वर उस व्यक्ति के अपराध को क्षमा कर देता है।

5. अन्तिम स्नान सस्कार—प्रत्येक व्यक्ति को मृत्यु के पश्चात् स्नान करवाया जाता है, इसे अन्तिम स्नान सस्कार कहते हैं।

6 दीक्षा सम्बन्धी सस्कार—यदि कोई भी व्यक्ति ईसाई धर्म की सेवा करने के लिये पादरी बनना चाहता है तो उसे दीक्षा दी जाती है इस सस्कार को दीक्षा सस्कार कहते हैं।

7 विवाह सम्बन्धी सस्कार—इस सस्कार द्वारा पुरुष और स्त्री को वैवाहिक बधन मे बधने के पश्चात् ग्रहस्थ जीवन मे प्रवेश करने की मान्यता प्रदान की जाती है।

ये सस्कार 12 वी शताब्दी तक पूर्ण रूप से विकसित हो चुके थे। इतिहासकार सेबाइन ने लिखा है कि "दूसरे धर्मों की तरह ईसाई धर्म भी मूलत व्यक्ति को उचित तपस्या और एकाग्रता सिखलाता है, जो अमरता दिलाने की शक्ति प्रदान करता है"।[1]

चर्च का सगठन—रोमन साम्राज्य मे ईसाई धर्म का प्रचार गिरजाघरों ने किया। ये गिरजाघर ईसा की आराधना और उसके उपदेशो के प्रचार के केन्द्र हैं। ये चर्च ईसाईयो की धर्म सगठन की ईकाई हैं। सन्त पीटर ने येरूसलम मे सबसे पहले चर्च की स्थापना की थी। रोम मे पहला चर्च सम्राट क्लाउडियस (41–54) के शासन काल मे स्थापित हुआ था। इन गिरजाघरो के सगठन को "कैथोलिक चर्च" कहा जाता था।

---

1 सेबाइन ए हिस्ट्री आफ वर्ल्ड सिवलीजेशन पृष्ठ 266–267

कैथोलिक लेटिन भाषा का शब्द है जिसका अर्थ होता है सबका, सबके लिये, ईसाईयो के गिरजाघरो के द्वार सभी जातियो और धर्मों के मानने वालो के लिये खुले हुए थे आगे चलकर इन गिरजाघरो के सदस्यो को कैथोलिक" कहा जाने लगा। सेबाइन ने लिखा है "चर्च की स्थापना तथा कथित" "चर्च फादरस" द्वारा की गई । कुछ विख्यात पोप द्वाराबनाये गये और कई पादारियो और दार्शनिको द्वारा बनाये गये थे।"[1]

गिरजाघर एक प्रशासनिक सगठन है। ईसाई धर्म का प्रचार करने के लिये स्थान स्थान पर गिरजाघर स्थापित किये गये। दूसरी शताब्दी के अन्त तक रोमन साम्राज्य के सभी भागो मे गिरजाघरो की स्थापना की जा चुकी थी। प्रत्येक गाव के गिरजाघर म पादरी होते थे, जिनका काम पूजा और प्रार्थना करना था। पादरी के ऊपर डिकोन और उप डिकोन नाम के अधिकारी होते थे, जो चर्च को दान म दी जाने वाली सम्पत्ति का हिसाब रखते थे और विशप की सहायता करते थे। प्रत्येक चर्च मे ओवरसियर और पादरी तथा डिकोन के ऊपर एक अधिकारी विशप होता था। जिसका कार्य चर्च का प्रबन्ध करना था और उनको निर्देश देना था। एक प्रान्त मे कई विशप होते थे और उन विशपो के ऊपर एक आर्क विशप होता था, जो पूरे प्रान्त के गिरजाघरो का अध्यक्ष कहलाता था। पादरियो को फादर कहा जाता था और कैथोलिक धर्म का सर्वोच्च अधिकारी पोप कहलाता था।

ईसा के उत्तराधिकारी पीटर ने रोम मे एक चर्च की स्थापना की और वहा ईसाई धर्म का प्रचार किया। रोम के सम्राट ने पाल और पीटर को रोम मे सूली पर चढा दिया। परिणामस्वरूप रोम ईसाईयो का एक धार्मिक तीर्थ स्थान बन गया। रोम ईसाई धर्म का एक केन्द्र बन गया। रोमन चर्च का पादरी "पोप" कहलाया, जो सारे रोमन कैथोलिक चर्च का धार्मिक नेता होता था। पीटर रोम का प्रथम पोप था। कालान्तर मे रोम कैथोलिक चर्च की राजधानी बना।

455 ई० मे रोमन सम्राट वैलेटीनियन ने पोप को ईसाई धर्म का सर्वोच्च नेता मान लिया। रोमन साम्राज्य के पतन के बाद पोप की शक्ति मे वृद्धि हुई। अब रोम के पोप ने रोम की रक्षा का उत्तरदायित्व अपने कधो पर ले लिया। मैकनैल बर्नस ने लिखा है कि "पश्चिम रोमन साम्राज्य का पतन हो जाने के बाद समाज में अराजकता फैलने लगी। उस समय शान्ति, व्यवस्था, सभ्यता और सामाजिक मूल्यो की रक्षा का उत्तरदायित्व चर्च ने अपने कन्धो पर ले लिया।"[2]

रोमन साम्राज्य के पतन के बाद पोप की शक्ति मे वृद्धि हुई। उसे ईश्वर का प्रतिनिधि माना जाने लगा। अब पोप ने प्रशासकीय कार्य करने प्रारम्भ कर

1– सेबाइन ए हिस्ट्री आफ वर्ल्ड सिवलीजेशन पृष्ठ 8267
2. मैकनल बर्नस, वेस्टर्न सीवलीजेशन्स,पृष्ठ 224.

दिये। पोप बिशप, आर्क बिशप की नियुक्ति करता था। वह सर्वोच्च कानून बनाने वाला और न्यायाधीश था। उसे सजा देने का अधिकार था, उसका निर्णय अन्तिम समझा जाता था। यदि कोई व्यक्ति पोप के आदेश की अवहेलना करता तो पोप उसे समाज, देश और चर्च से निकाल सकता था। ऐसे व्यक्ति को समाज मे घृणित दृष्टि से देखा जाता था। पोप ने शिक्षा का कार्य भी अपने हाथ मे ले लिया। चर्च के न्यायालय मे विवाह, तलाक, बलात्कार, पाप और वसीयत आदि मामलों का फैसला पोप करता था। पोप ने शासक की भांति अपनी मुद्रा चलाई और कर लगाया। तेरहवीं शताब्दी म यूरोप की 20 प्रतिशत भूमि चर्च के अधिकार में थी। रोम तथा उसके आसपास की भूमि पर पोप के आदेश लागू होते थे।

मध्ययुगीन चर्च न अनाथों, वृद्धों और निर्धनों की रक्षा की और आक्रमणकारियों को न्याय तथा दया का पाठ पढाया और युद्ध की विभीषिका को कम करने का प्रयास किया। इस प्रकार मध्य युग म जबकि यूरोप की राजनीतिक एकता छिन्न भिन्न हो चुकी थी। तब पोप ने उसको धार्मिक एकता प्रदान की।

ईसाई धर्म का विभाजन—ईसा के पश्चात् उनके शिष्यों म आपस मे मत भेद उत्पन्न हो गये। कालान्तर में विश्व के अन्य धर्मों की तरह ईसाई धर्म भी चार शाखाओं मे विभाजित हो गया—

1 एरियन मत—इस मत के मानने वाले व्यक्ति ईसा को ईश्वर का पुत्र मानते हैं।

2 मोनोफिज शाखा—इस मत को मानने वाले व्यक्ति ईसा को ईश्वर का रूप मानते हैं और गिरजाघरों मे ईसा की मूर्ति स्थापित कर उसकी पूजा करते हैं।

3 नेस्टोरियन शाखा—इस मत को मानने वाले व्यक्ति ईसा को मनुष्य के रूप में स्वीकार करते है।

4, ग्नासिस शाखा—लैटिन भाषा मे ग्नासिस शब्द का अर्थ 'ज्ञान' होता है। यूनानी, यहूदी और रोमन विचारों का ईसाई धर्म पर प्रभाव पड़ा। इससे आगे चलकर एक नवीन मत की उत्पत्ति हुई। जिसे ज्ञानियों का मत कहा जाता है। इस मत के द्वारा दर्शन और तर्क के आधार पर ब्रह्मचर्य, त्याग और आत्मा आदि बातों पर प्रकाश डाला गया है। इस विचार धारा ने तीसरी शताब्दी म चर्च मे प्रवेश किया।

ईसाई धर्म के प्रसार के कारण—ईसाई धर्म का तेजी से प्रसार हुआ और कुछ ही समय मे यह ससार के कोने कोने म फैल गया। इस धर्म के प्रचार के प्रमुख कारण निम्नलिखित थे—

1 ईसा के सरल उपदेशों और असाधारण व्यक्तित्व—ईसा के सरल उपदेश और असाधारण व्यक्तित्व ईसाई धर्म के प्रचार का मुख्य कारण था। ईसा ने जनसाधारण को सरल भाषा मे उपदेश दिये। उसकी वाणी में जादू था, जो एक बार उसके सम्पर्क में आ जाता था वही उसका भक्त बन जाता था। ईसा का मुख्य उद्देश्य मानव मात्र का कल्याण करना था। उन्होंने अपने धर्म मे आडम्बरो को कोई स्थान नही दिया। पडित नेहरू ने लिखा है कि ईसा एक पैमाईशी विद्रोही था। उसने प्रचलित परिस्थितियो को बदलने का प्रयास किया। उसके हृदय म गरीब और दुखी जनो के लिये प्यार था।

ईसा की सरल शिक्षायें लोगो के जल्दी समझ मे आ जाती थी। इसलिये उस समय लोग इस धर्म के अनुयायी बन गये। मैकनैल बर्नस ने लिखा है कि "इसलिए ईसाई धर्म की अपील अधिक विश्व व्यापी थी, बनिस्पत अन्य किसी प्राचीन धर्म मे।"

2 शिक्षा का प्रचार—रोमन साम्राज्य में शिक्षा का विकास हो रहा था इसके परिणाम स्वरूप लोग शिक्षित हो रहे थे और वे अध विश्वासों में विश्वास नही रखते थे। ईसा के सिद्धान्तो के लोकप्रिय होने का मुख्य कारण यह था कि उसने उस समय की प्रचलित लैटिन भाषा मे अपने उपदेश दिये, जो जन साधारण क समझ म आ गये।

3 ईसा तथा उनके पादरियो का त्याग एव बलिदान—ईसा तथा उनके पादरियो के त्याग एव बलिदान के कारण ईसाई धर्म का बहुत अधिक प्रचार हुआ। रोमन सम्राटो ने तीन शताब्दी तक ईसाइ धर्म के प्रचारको और अनुयाइयो पर अमानवीय अत्याचार किये उन्होने ईसाईयो को सूली पर चढा दिया, उनके सिर कटवा दिये उनको भूखे शेरो के सामने फिकवा दिया और कई को जिन्दा जला दिया गया। ईसा और उनके शिष्य, पाल तथा पीटर को फासी पर लटका दिया गया। इस प्रकार हजारो ईसाइयो को यातनायें देकर मार डाला गया। रोमन सम्राटो के इन अत्याचारो को सहते हुऐ भी ईसाइ धर्म प्रचारक अपने धर्म के लिए शहीद हो गये रोमन सम्राटो के इसाइयो के प्रति अत्याचारपूर्ण व्यवहार के कारण जन साधारण की सहानुभूति ईसाई धर्म के प्रति हो गई। धीरे धीरे इन दमन कार्यों को जनता घृणा की दृष्टि से देखने लगी। सेवाइन ने लिखा है कि रोमन साम्राज्य और ईसाई धर्म के सघर्ष मे ईसाई धर्म विजयी हुआ।" ईमानदारी से यह कहा जा सकता है कि रोम ने साम्राज्य खो दिया और पोप को पा लिया।

4. राजकीय सरक्षण—राजकीय सहयोग भी ईसाई धर्म के प्रचार का एक महत्वपूर्ण कारण था। रोमन सम्राट आरम्भ मे तो इस धर्म को कुचलने म व्यस्त

1 मैकनैल बर्नस, वैस्टर्न सिवलीजेशन्स, पृष्ठ 222

2 सेवाइन—ए हिस्ट्री आफ वर्ल्ड सिवलीजेशन, पृष्ठ 266

रहे, परन्तु सम्राट गेलेरियस के समय से ईसाई धर्म को राजकीय सहयोग भ मिलने लगा। सम्राट कान्स टेन्टाइन ने ईसाई धर्म को राज्य धर्म घोषित कर दिया उसके समय में सम्पूर्ण यूरोप मे ईसाई धर्म का प्रचार हुआ। सम्राट थियोडोसी यस ने ईसाई धर्म के प्रचार के लिए राजकीय कोष खोल दिया। इस प्रकार रोमन सम्राटों के सहयोग के कारण ईसाई धर्म का बहुत अधिक प्रचार हुआ और रोम ईसाई धर्म का प्रमुख केन्द्र बन गया।

5 यूरोप में सगठित धर्म का न होना—यूरोप मे कोई दूसरा धर्म संगठित नहीं होने से भी ईसाइ धर्म का बहुत अधिक प्रचार हुआ। ईसाइ धर्म के प्रचारक बिना किसी विरोध के अपने धर्म का प्रचार करते रहे और जनता भी आसानी से इस धर्म की अनुयायी बन गई। अन्त में जब रोमन सम्राटो न ईसाई धर्म को राजकीय सरक्षण प्रदान किया तो उस समय इस धर्म के प्रचारको ने यूरोप के अन्य सभी धर्मों का नामोनिशान मिटा दिया।

6 जन साधारण द्वारा इस धर्म को स्वीकार करना—ईसा के समय यहूदी और रोमन जाति के लोग धन सम्पन्न और अल्प सख्यक थे। इनका शासन पर अधिकार था और ये गरीब जनता का बहुत शोषण करते थे। ईसा ने कहा कि अमीरों को स्वर्ग प्राप्त नहीं हो सकता है और ईश्वर की दृष्टि में सब समान है, कोई छोटा या बडा नही है, हर मनुष्य ईश्वर का पुत्र है। उसका मानना था कि मनुष्य मात्र की सेवा करने से ही ईश्वर प्राप्त हो सकता है। इस प्रकार अमीरों के अत्याचारो से तग होकर जन साधारण ने ईसाई धर्म को अपना लिया और लाखो लोग ईसा के अनुयायी बन गये।

ईसाईयों का धार्मिक ग्रन्थ—जिस प्रकार हिन्दुओ का पवित्र धार्मिक ग्रन्थ रामायण और महाभारत है, उसी प्रकार ईसाइयो का धार्मिक ग्रन्थ "बाइबिल" है। ईसा ने किसी ग्रन्थ की रचना नहीं की। उनके शिष्यो ने इनके भाषणों, विचारो और उपदेशों को सग्रहित किया। ईसा के शिष्य मार्क पाल, ल्यूक और सतजान ने चार गोस्पल्स की रचना की। ये गोस्पल्स "न्यू टेस्टामेंट" के नाम से प्रसिद्ध है। इसमे ईसा के जीवन चरित्र और सिद्धान्तों को सग्रहित किया गया है। यही ईसाईयो का पवित्र धार्मिक ग्रन्थ बाइबिल है।

ईसाईयों के प्रमुख धार्मिक त्योहार—

1. क्रिसमस—क्रिसमस ईसाईयों का प्रमुख धार्मिक त्योहार है। 24 दिसम्बर को ईसा का जन्म हुआ था। इसलिए इस दिन ईसा के पालने पर ईसाई लोग फूल की मालायें अर्पित करते हैं। इस दिन रात्रि को मोमबत्ती से रोशनी की जाती है और ईसा के जन्म की खुशी मे दावतें होती है। दूसरे दिन 25 दिसम्बर को क्रिसमिस डे मनाया जाता है। उस दिन ईसाई लोग आपस म एक दूसरे को

बधाई देते हैं एवं गिरजाघरो मे विशेष प्रार्थनायें करते हैं इन दिनो मे पादरी ईसा के जीवन एवं शिक्षाओ के बारे में ईसाईयो को उपदेश देते हैं।

2 ईस्टर—ईसाईयो का दूसरा मुख्य त्योहार ईस्टर है। यह त्योहार ईसा मसीह को सूली पर लटकाने तथा उनके पुन प्रगट होने की स्मृति में मनाया जाता है। इस त्योहार के 40 दिन पहले से ही ईसाई लोग व्रत रखते हैं, जिसे लेन्ट कहते हैं। ईसा मसीह को शुक्रवार को सूली पर चढाया गया था, उस दिन को गुड फ्राइडे के रूप मे मनाया जाता है ईसाईयों का ऐसा विश्वास है कि अपनी मृत्यु के तीसरे दिन रविवार को ईसा पुन प्रगट हुए और अपने शिष्यो को दर्शन दिये। यह रविवार "ईस्टर सन्डे" के रूप म मनाया जाता हैं।

ईसा मसीह का जन्म स्थान बेथलेहम और जरुसलम जहाँ पर उन्हे सूली पर चढाया गया था, दोनो ही ईसाईयो के पवित्र धार्मिक तीर्थ स्थान माने जाते हैं। कैथोलिको का रोम जहां पोप निवास करता है, धार्मिक स्थान माना जाता है।

ईसाई धर्म का प्रभाव—विश्व के अन्य प्रवर्तको की भांति ईसा मसीह भी ईसाई धर्म का प्रवर्तक था। ईसाई धर्म आज भी विश्व का महान धर्म बना हुआ है और ससार के अधिकांश लोग इस धर्म के अनुयायी हैं। इस धर्म के प्रमुख प्रभाव निम्नलिखित हैं —

1 सामाजिक जीवन में परिवर्तन—ईसाई धर्म का पहला प्रभाव यह हुआ कि सामाजिक जीवन मे महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए। ईसा ने लोगो को सादगी, सदाचार और सभी मनुष्यो के प्रति भाई जैसा व्यवहार करने का उपदेश दिया जिससे लोगो मे मानव प्रेम, बन्धुत्व की भावना एवं सेवा करने की भावनाऐ विकसित हुई। ईसाई धर्म के सिद्धान्तो के अनुसार कुटुम्ब का सगठन किया गया। जन्म, विवाह और मृत्यु आदि ईसाई रीति रिवाजो के अनुसार सम्पन्न किये जाने लगे। इस प्रकार पादरी और चर्च सामाजिक जीवन के केन्द्र बिन्दु बन गये।

2– स्त्रियों और गुलामों की दशा मे सुधार—ईसाई धर्म ने स्त्रियो और गुलामो की दशा मे महत्वपूर्ण सुधार किए। इस धर्म से पहले उनकी दशा मे बहुत शोचनीय थी और विवाह का कोई महत्व नही था। ईसा के बाद विवाह को एक पवित्र बंधन माना गया और व्यभिचार तथा हत्याकाड को घृणित दृष्टि से देखा जाने लगा। फलस्वरूप स्त्रियो को समाज मे प्रतिष्ठित स्थान प्राप्त हुआ इससे उनकी दशा मे बहुत सुधार हुआ।

ईसा ने कहा था कि इस धरती पर न कोई छोटा है और न कोई बडा सभी मनुष्य ईश्वर की सन्तान हैं। इस प्रकार उसने सामाजिक असमानता को समाप्त करने का प्रयास किया। इसका परिणाम यह हुआ कि चर्च ने कई गुलामो को स्वतन्त्रता दिलवाई।

सामाजिक व धार्मिक कुरीतियों का अन्त—ईसा ने सामाजिक व धार्मिक बुराइयों को समाप्त करने का प्रयास किया। वह धार्मिक अन्ध विश्वासों और आडम्बरों का विरोधी था। उस समय समाज में शेरों से गुलामों का युद्ध, वेदनापूर्ण हत्या, हिंसात्मक प्रदर्शन रक्तचाप वाले मेनकूद आदि कुरीतियाँ प्रचलित थीं। ईसा ने इन सामाजिक बुराइयों का विरोध किया। परिणामस्वरूप ये बुराइयाँ समाज से धीरे धीरे समाप्त हो गई। ईसा के उपदेशों से प्रभावित होकर अनाथो के लिये अनाथालय खोले गये तथा उनकी चिकित्सा के लिये अनेक स्थानो पर चिकित्सालय भी खोले गये।

4– कला के क्षेत्र मे प्रभाव—ईसाई धर्म का कला के क्षेत्र में महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ा। इस समय स्थापत्य कला के क्षेत्र मे बहुत विकास हुआ। इसका कारण यह था कि इस समय रोमन साम्राज्य में अनेक स्थानों पर सुन्दर एवं भव्य गिरजाघरों का निर्माण करवाया गया। सम्राट जस्टिन द्वारा कान्सटेन्टीनोपल मे बनाया गया सन्त सोफीया का गिरजाघर उस समय की स्थापत्य कला का एक सुन्दर नमूना है। इस गिरजाघर में रोमन कला और यहूदी कला का सुन्दर मिश्रण हुआ है।

ईसाई धर्म के फलस्वरूप चित्रकला के क्षेत्र में भी बहुत अधिक विकास हुआ। उस समय मूर्तियों का निर्माण किया। गिरजाघरों में ईसा के जीवन से संबंधित चित्र बनाये जाने लगे।" लास्ट सपर" चित्र उस समय की चित्रकला का एक सुन्दर नमूना है।

5– साहित्य के क्षेत्र मे प्रभाव—ईसाई धर्म के कारण लेटिन साहित्य के क्षेत्र मे बहुत अधिक विकास हुआ। इस समय के प्रसिद्ध विद्वान सन्त जेरोमी, सन्त इसुबियस, सन्त एम्ब्रोज और आगस्टाइन आदि थे। सन्त जेरोमी ने सर्व प्रथम बाइबिल का लेटिन भाषा में अनुवाद किया। इसुबियस ने यूनानी भाषा में गिरजाघर का इतिहास और रोमन सम्राट कान्सटेन्टाइन की जीवनी पर ग्रन्थ लिखे। सन्त एम्ब्रोज ने यूनानी और लेटिन भाषा में गीतों की रचना की, जो आज तक गिरजाघरों में गाये जाते हैं। आगस्टाइन ने दी सिटी आफ गोड नामक पुस्तक लिखी।

6– धर्म का राजनीति में हस्तक्षेप—ईसाई धर्म ने राजनीति में हस्तक्षेप करना प्रारम्भ कर दिया। जिससे रोमन साम्राज्य में दोहरा शासन प्रबन्ध स्थापित हुआ। रोमन साम्राज्य में प्रान्तपति की नियुक्ति रोमन सम्राट करता था और प्रान्त के लिये विशप की नियुक्ति पोप के द्वारा की जाती थी। यद्यपि दोनों अपने अपने अधिकारों में स्वतन्त्र थे, लेकिन कभी कभी विशप राजकीय कार्यों मे हस्तक्षेप करता रहता था। इससे शासन पर धीरे धीरे धर्म का प्रभाव बढ़ता गया। यह प्रभाव 16 वीं शताब्दी तक चलता रहा। रोम का पोप रोमन सम्राट से भी ऊपर माना जाने लगा। रोमन सम्राट पोप की स्वीकृति से ही विवाह कर

सकता था। प्रत्येक धार्मिक और राजकीय त्यौहार पर रोमन सम्राट पोप को अतुल धन राशि भेंट स्वरूप देता था। इस प्रकार स्पष्ट है कि ईसाई धर्म राज्य पर हावी हो गया।

ईसाई धर्म की समीक्षा—ईसाई धर्म ससार का एक बडा धर्म है जिसके अनुयायी ससार के प्रत्येक भाग मे पाये जाते हैं। यह धर्म पूर्ण रूप से मौलिक नही था। इसने स्वर्ग नरक, सत्य-असत्य आदि बातें जरयुस्त्र के धर्म से ग्रहण की। ईसा ने विश्व बन्धुत्व की भावना स्टोईक दर्शन से ग्रहण की इस धर्म पर मिश्र वासियो, यूनानियो व यहूदियो आदि के धार्मिक विचारो का बहुत अधिक प्रभाव पडा।

डा० राधाकृष्णन ने लिखा है कि "ईसाई धर्म का हृदय तो पूर्वीय है। इसका मस्तिष्क आरम किया है और इसका शरीर पादरी सम्बन्धी सगठन यूनानी व रोमन है।"[1] शर्मा ने लिखा है कि "नवीन नैतिकता प्रेम, साधु वृत्ति व विश्व बन्धुत्व का जितना प्रतिपादन नजरथ के ईसा ने किया था। इतना इखनतन बुद्ध व कन्फ्यूशियस मे भी विद्यमान था।"[2]

निष्कर्ष—यद्यपि ईसाई धर्म ने विश्व के अन्य धर्मों के सिद्धान्तों को अपनाया है, फिर भी यह धर्म अपना स्वतन्त्र स्वरूप बनाये रखने मे सफल रहा है। इस धर्म के फलस्वरूप यूरोप मे शान्ति और व्यवस्था बनी रही और वह अपना सर्वांगीण विकास कर सका।

प्रस्तावित सदर्भ पुस्तकें

1. सेवाइन—ए हिस्ट्री आफ वर्ल्ड सिवलीजेशन
2. वीच डब्ल्यू. एन —हिस्ट्री आफ दि वर्ल्ड
3 प्लेट जीन व ड्रमड—विश्व का इतिहास
4. वेल्स-एच० जी०—दी आउट लाइन आफ हिस्ट्री
5. मैकनेल बर्नस—वैस्टर्न सिवलीजेशन्स
6. दिवाकर, बी एम.—विश्व का इतिहास
7. शर्मा—अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति

---

1. डा० राधाकृष्णन—दी आइडिया लिस्ट व्यूह आफ लाइन
2. शर्मा—अमन्तर्राष्ट्रीय राजनीति

अध्याय 9

इस्लाम धर्म का उत्कर्ष और प्रभाव

इस्लाम धर्म का उदय मध्यकालीन विश्व इतिहास की एक महत्वपूर्ण घटना है। पश्चिमी एशिया के दक्षिण में अरब का रेतीला प्रदेश है। इस मरुस्थल में विश्व के अनेक प्रमुख धर्म यहूदी, ईसाई, इस्लाम आदि का जन्म हुआ है। सेवाइन ने लिखा है कि "पश्चिमी एशिया का यह मरुस्थल विश्व के अनेक प्रमुख धर्मों को जन्म भूमि होने का गौरव रखता है"[1]

छठी शताब्दी में इस्लाम धर्म का उदय भी अरब के मरुस्थल में हुआ। यह धर्म संसार का एक बड़ा धर्म बना हुआ है। इस धर्म के अनुयायी संसार के सभी देशों में पाये जाते हैं। एलिस और जौन ने लिखा है। कि "जिस समय पूर्वी साम्राज्य पूर्वी भूमध्य सागरीय क्षेत्र में आक्रमणों से अपनी रक्षा करने में लगा हुआ था, उसी विशाल अरब प्रायद्वीप के मक्का नगर में एक नये धर्म का प्रादुर्भाव हो रहा था। यह नया धर्म इस्लाम मत था, पैगम्बर, मुहम्मद के अरब अनुयाईयों के बीच इसका उद्भव हुआ।"[2]

इस्लाम धर्म के प्रवर्तक मुहम्मद साहब थे। इस धर्म में आडम्बर और भेद भाव के लिये कोई स्थान नहीं था। इस्लाम धर्म के सरल उपदेशों के कारण यह बहुत अधिक लोकप्रिय हुआ। मुहम्मद साहब के उपदेश खुदा के आदेश माने जाते हैं। बर्नस ने लिखा है कि "हजरत मुहम्मद साहब एक भावुक व्यक्ति थे, जिन्हें कभी भी एकाग्रता के दौर पड़ते थे। जिनमें वे स्वर्ग से आने वाले विभिन्न आदेशों को सुनते थे।"[3] इस प्रकार मुहम्मद साहब के उपदेश ईश्वर के माने जाते हैं। इसी वजह से उन्हें "खुदा का भविष्य वक्ता"[4] कहा जाता है। इतिहास

1– सेवाइन—ए हिस्ट्री आफ वर्ल्ड सिवलीजेशन पृष्ठ 287

2– एलिस और जौन—संसार का इतिहास पृष्ठ 172

3– मैकनेल बर्नस—वैस्टर्न सिवलीजेशन, पृष्ठ 259

4– वेल्स, एच० जी०—दी आउट लाइन आफ हिस्ट्री, पृष्ठ 594

कार विल डयूरेन्ट ने लिखा है कि "अरब का रेगिस्तान धर्मों की जननी थी। यहा वह पैगम्बर पैदा हुए जिसके हाथ म तलवार थी ... ... .सामाजिक समानता व विश्व बन्धुत्व के सिद्धान्तों ने मुहम्मद साहब व इस्लाम को विश्व विख्यात व लोकप्रिय बना दिया।"

मध्यकालीन युग मे अराजकता और निराशा व्याप्त थी। इसलिये इस युग को अंधकार युग भी कहा जाता है। ऐसे समय अरब के मरुस्थल म इस्लाम धर्म का उदय हुआ। मुहम्मद साहब ने समाज मे सामाजिक समानता स्थापित करने का प्रयास किया। उनका कहना था कि समाज में कोई छोटा बडा नही हैं, सभी समान हैं। मनुष्य को चाहिये कि वह दास के साथ भाई जैसा व्यवहार करे और अपनी पत्नी के साथ भी अच्छा व्यवहार करे। इतिहासकार बीच ने लिखा है कि "मानव सभ्यता को इस्लाम की देन यह है कि उसने विभिन्न सभ्यताओं के विचार और विज्ञान का विकास कर विश्व को उपहार रूप मे प्रदान किया"।[1]

अरब की भौगोलिक दशा—पश्चिमी एशिया के दक्षिण मे अरब का प्रायद्वीप है। इसका अधिकाश भाग मरुस्थल है। इस राज्य के पश्चिम मे लाल सागर दक्षिण मे अरब सागर और पूर्व मे फारस की खाडी है। इस प्रायद्वीप की भौगोलिक स्थित काफी अच्छी है। अरब के लोग सेमेटिक जाति के थे। मरुस्थल होने के कारण यहा की भूमि उपजाऊ नही थी तथा जल की कमी के कारण ये स्थायी जीवन व्यतीत न कर इधर उधर घूमते रहते थे। वेल्स ने लिखा है कि "जहा कहीं उपजाऊ भू भाग थे, जहा कहीं एक झरना या कुआँ था थोडे से कृषक बस गये, चार दीवारी के नगर म अपनी भेडों, बैलो और घोडो के साथ रेगिस्तान म रहते थे।"[2]

इस्लाम के उत्कर्ष से पूर्व अरबों की दशा—

1. राजनीतिक दशा—इस समय अरब के अधिकाश लोग कबीले के रूप मे चरागाह तथा आजीविका की खोज मे इधर उधर घमते रहते थे। प्रत्येक नगर व कबीले का अलग अलग नेता होता था जिसे शेख कहते थे। कबीले के सरदार का चयन योग्यता के आधार पर किया जाता था। यही नेता कबीले और नगर का शासक होता था। कबीले के सभी सदस्य उसकी आज्ञा का पालन करते थे। अरब के कुछ लोग समुद्र तटीय प्रदेशो के छोटे छोटे नगरो मे निवास करते थे। प्रत्येक नगर के अलग अलग कानून और अलग अलग रीति रिवाज थे।

1– बीच॰ डब्ल्यु० एन॰–हिस्ट्री आफ दी वर्ल्ड, पृष्ठ 276

2– वेल्स एच.जी–दी आउट लाइन आफ हिस्ट्री, पृष्ठ 595

अरब में इस प्रकार के कई कबीले थे। इन कबीलों में एकता और राष्ट्रीय भावना का पूर्णरूप से अभाव था। उनमें प्रादेशिक भावना प्रबल थी। इन कबीलो में आपस में संघर्ष चलता रहता था।

2. सामाजिक दशा—अरब के लोग कबीले के रूप में भोजन की तलाश में अपने परिवार के साथ इधर उधर घूमते रहते थे। कबीले के प्रत्येक सदस्य को सामाजिक मामलों में भी अपने सरदार की आज्ञा का पालन करना पड़ता था। कालान्तर में अरब के कबीलों ने सीरिया, मिश्र, सुमेरिया आदि देशों पर अधिकार कर लिया और वहां नई सभ्यताओं का विकास किया। इस समय का समाज असंगठित था और लोग स्थानीय भाषा बोलते थे।

उस समय के समाज में शराब पीना, जुआ खेलना, व्यभिचार करना और बहु विवाह जैसी बुराईयां प्रचलित थी और समाज में स्त्रियों को आदर की दृष्टि से नहीं देखा जाता था। अरब में पुरुषों की कमी होने के कारण वहां पर बहुविवाह की प्रथा प्रचलित थी। स्त्रियों को उपभोग की सामग्री समझा जाता था। ऐसे समय में अरब में इस्लाम धर्म का उदय हुआ।

3. व्यापार — अरब के लोग जल और थल दोनों ही मार्गों से व्यापार करते थे। अरबी वासी मिश्र सीरिया, फैलेस्टाईन भारत, फारस और मैसोपोटामिया आदि देशों में व्यापार करते थे। अरब ने व्यापार के क्षेत्र में काफी प्रगति की। इस कारण उस समय मक्का मदीना आदि नगर व्यापार के प्रसिद्ध केन्द्र बन गये।

4 धार्मिक जीवन :— अरब के बहुदेववाद में विश्वास रखते थे। प्रत्येक नगर कबीले का अलग अलग देवता होता था। वहां पर 340 देवताओं की पूजा की जाती थी। वहां के लोग बहुत अंधविश्वासी थे, और वे पत्थरों वृक्षों कुओं और झरनों की पूजा करते थे। वहां पर देवताओं की मूर्तियां पूजी जाती थी इसके अतिरिक्त भय के कारण वहां के लोग प्रकृति भूत प्रेतों की पूजा भी करते थे। अरब निवासियों का जादू टोना में विश्वास था। वे देवताओं को प्रसन्न करने के लिये नर बलि भी देते थे। अरब के लोग मृतक की कब्र के पास ऊँट बांध देते थे। उनका मानना था कि मृतक उस पर बैठ कर परलोक में जल्दी पहुंच जायेगा और उसे पैदल नहीं चलना पड़ेगा।

मक्का में काबा का एक बहुत प्राचीन मन्दिर है। इसके कोने में एक काले रंग का पत्थर लगा हुआ है। जिसके बारे में लोगों का विश्वास है कि मनुष्य मानव की भलाई के लिये खुदा ने इसे स्वर्ग से नीचे गिराया था। इसलिये वहां के लोगों की धारणा थी कि काबा के काले पत्थर की पूजा करने से भूत प्रेत दूर भाग जाते हैं और वर्ष भर के पाप भी नष्ट हो जाते हैं। इसलिये समस्त अरब के लोग इस काबा के काले पत्थर की पूजा करने के लिये आते थे। उसे

चूमते थे और भेट स्वरूप वस्तुऐ चढाते थे। धीरे धीरे मक्का अरब का प्रसिद्ध धार्मिक तीर्थ स्थान बन गया। आगे चल कर इस्लाम ने भी काबा को अपना सबसे बडा धार्मिक तीर्थ स्थान स्वीकार कर लिया।

5. *काव्य मे रुची* —*अरब के निवासी अनपढ होते हुए भी काव्य के क्षेत्र* में बहुत रुची रखते थे। प्रत्येक कबीले मे शाम को वीर सरदारो की गाथायें गाई जाती थी। समय समय पर भिन्न भिन्न कबीलो मे काव्य प्रतियोगिताऐं भी आयोजित की जाती थी।

मुहम्मद साहब का जीवन (570—632ई०)—

(1) प्रारम्भिक जीवन— सेवाइन ने लिखा है कि" इस्लाम के संस्थापक मुहम्मद मक्का मे 571 ई० मे जन्मे थे। उनकी कोई असाधारण प्रतिमा नहीं थी। उनके कुछ आलोचक विश्वास करते हैं कि उन्हे मिर्गी के दोरे पडते थे। उसके अनुयाईयो ने यह विख्यात कर दिया कि इन दोरो के बीच वे खुदा से मिलते थे।"[1]

मुहम्मद साहब ने असभ्य अरबो को अन्धविश्वासो से मुक्त कर एकता के सूत्र मे बाधा था। इस्लाम के पैगम्बर हजरत मुहम्मद साहब की जन्म तिथी के बारे मे इतिहासकार एकमत नही हैं। सेवाइन तथा बीच ने मुहम्मद साहब का जन्म ५७१ ई० मे माना हैं जबकि अन्य विद्वानो के अनुसार उनका जन्म ५७० ई. मे मक्का मे हुआ था।

मुहम्मद साहब के पिता का नाम अबदुल्ला तथा माता का नाम अमिना था। इनके पिता कुरेशी जाति के थे। उनके जन्म से कुछ महीने पहले ही उनके पिता की मृत्यु हो चुकी थी, और जब ये 6 वर्ष के हुए, तब इनकी माता भी चल बसी। इसलिये मुहम्मद साहब का पालन पोषण इनके चाचा अबुतालिब ने किया था। मुहम्मद गरीब परिवार मे जन्मे थे, इसलिये प्राथमिक शिक्षा भी प्राप्त नही कर सके और उनका बचपन गरीबी मे गुजरा। ऐसा माना जाता है कि वे बचपन मे पशु चराया करते थे। एच जी वेलस ने लिखा है कि" उनका जन्म दयनीय गरीबी म हुआ था और रेगिस्तान को देखते हुए भी वे अशिक्षित थे।"[2]

मुहम्मद साहब 13 वर्ष की आयु मे अपने चाचा के आदेश पर मक्का के अन्य व्यापारियों के साथ व्यवसाय के कार्य से सीरिया गये और उन्होंने इस कार्य को सफलता पूर्वक निभाया।

(ii) *खदीजा से विवाह*—*मुहम्मद साहब ने 20 वर्ष की आयु मे खदीजा* नामक अमीर विधवा स्त्री के यहा नौकरी करली, यहा पर वे उसके व्यापारिक कार्यों की देख रेख करते थे। वे कई बार व्यापारिक कार्यों के लिये सीरिया और पेलेस्टाइन-आदि देशो में गये। इन व्यापारिक यात्राओ मे मुहम्मद साहब यहूदी

1. सेवाइन —ए हिस्ट्री आफ सिवलीजेशन पृष्ठ 287
2. वेलस एच जी- दी आउट लाइन आफ हिस्ट्री पृष्ठ 597

और ईसाई धर्म के सम्पर्क में आये। मुहम्मद साहब बहुत मेहनती और ईमानदार थे। उनकी मालकिन खदीजा उन पर मोहित हो गयी और उसने उनसे विवाह कर लिया। उस समय हजरत की आयु 25 वर्ष की थी, जबकि खदीजा कि आयु 40 वर्ष की थी। इतिहासकार वेल्स इस बात को नहीं मानते हैं कि खदीजा की आयु 40 वर्ष थी। दोनो की अवस्था मे इतना अन्तर नहीं था" [2]

मुहम्मद साहब का खदीजा से विवाह उनके भविष्य के लिये बहुत लाभदायक सिद्ध हुआ, पहला तो खदीजा एक आज्ञाकारणी पत्नी थी। दूसरा धनी होने के कारण मुहम्मद साहब की आजीविका की चिन्ता नहीं रही। तीसरा वे इस धन से गरीबो की सहायता कर सकते थे। इस विवाह के पश्चात् मुहम्मद साहब का सभी अमीर लोगों से सम्पर्क हुआ और वे धर्माधिकारियो के सम्पर्क में आये। तब उन्हें पता चला कि किस प्रकार धर्माधिकारी पाखन्डी बन कर जनता का शोषण कर रहे थे। मुहम्मद को इनसे घृणा होने लगी। उन्होंने सत्य की खोज करने का निश्चय किया। 619ई मे खदीजा की मृत्यु हो गई। उसके पश्चात्उन्होने एक कुआरी कन्या तथा दो विधवा स्त्रियो से विवाह किये।

(iii) ज्ञान की प्राप्ति —610 ई० अरब परम्पराओ के अनुसार मुहम्मद साहब बचपन से ही मक्का के समीप एक पहाडी पर जाकर कई घंटो तक आत्म चिन्तन करते थे। खदीजा से विवाह के पश्चात् भी वे निरन्तर चिन्तन करने के लिये जाते रहे। ऐसा माना जाता है कि 40 वर्ष की आयु मे जब एक दिन हीरा पर्वत की गुफा में आत्म चिन्तन कर रहे थे। तब उन्हें दिव्य अनुभव हुआ कि वे खुदा की ओर से भेजे गये पैगम्बर हैं इस अनुभव के पश्चात् मुहम्मद साहब के जीवन मे एक क्रान्तिकारी परिवर्तन आया और उन्होने अधकार को मिटाकर सत्य का प्रचार करने का दृढ निश्चय कर लिया।

(iv) मक्का के निवासियों द्वारा मुहम्मद साहब का विरोध—दिव्य ज्ञान प्राप्त करने के पश्चात् हजरत मुहम्मद साहब ने कुरेशी जाति के लोगों से कहा कि वह ईश्वर का पैगम्बर है और ईश्वर ने उसे मूर्ती पूजा का खन्डन, एकेश्वर वाद का प्रचार और अरब देश के धर्म में व्याप्त अधकार को मिटाने के लिये भेजा है। एच जी वेल्स ने लिखा है कि" मुहम्मद साहब इसका दावा करते थे कि ईसा और अब्राहम की उन्हीं की तरह अल्लाह के पैगम्बर थे, जो उनसे पहले आये थे वे उनके ऊपर और काम पूरा करते थे" [1]

मुहम्मद साहब ने बहुदेव वाद के स्थान पर एकेश्वरवाद के सिद्धान्त को प्रचलित किया। उनके अनुसार ईश्वर एक है और वो अल्लाह है, जो सर्व-

1 वेल्स एच. जी-दी आउट लाइन आफ हिस्ट्री पृष्ठ 597

2 वेल्स, एच जी-दी आउट लाइन आफ हिस्ट्री पृष्ठ 598

शक्ति मान है। जिसने सृष्टि का निर्माण किया है और उसकी उपासना करने से मनुष्य को स्वर्ग प्राप्त हो सकता है। इस प्रकार मुहम्मद साहब ने 610 ई मे प्रथम इस्लामी सिद्धान्तो की व्याख्या की और सबसे पहले उनकी पत्नी खदीजा, उनके दत्तक अली, उनके मित्र अबुबक और सैयद जेद आदि उनके अनुयायी बन गये। मुहम्मद साहब के विचार धीरे धीरे लोकप्रिय होने लगे। उन्होंने धार्मिक आडम्बर और मूर्ति पूजा का विरोध किया और सादे जीवन व्यतीत करने पर अधिक जोर दिया। मुहम्मद साहब ने इस्लाम मे प्रवेश करने के लिये कुछ नियम बताये थे। प्रत्येक व्यक्ति को चाहिये कि वह अपने को पानी से शुद्ध करके मक्का की तरफ देखते हुए अल्लाह की उपासना करे। इस धर्म का पालन करने वालो को रमजान के महीने मे रोजे रखने पडते थे। इन दिनो मे व्यक्ति रात्रि को ही भोजन कर सकता था। रोजे रखने वाले व्यक्ति को गरीबो को दान भी देना पडता था।

मुहम्मद साहब अपने को अल्लाह का पैगम्बर कहते थे। अल्लाह का अर्थ "ईश्वर और पैगम्बर का अर्थ "दूत" यानि वे अपने को ईश्वर का दूत कहते थे। मुहम्मद साहब ने मनुष्यो और ईश्वर के बीच धर्मदूत का काम किया था, इसलिये उन्हे "रसूल" भी कहा जाता था।

जिस समय मुहम्मद साहब अपने विचारो का प्रसार कर रहे थे उस समय अरब देश के लोग विलासिता पूर्ण जीवन व्यतीत कर रहे थे। वे मूर्ति पूजा मे विश्वास करते थे। समाज मे बहुदेववाद प्रकृति पूजा, दास प्रथा आदि बुराईयां विद्यमान थीं। इसलिये मुहम्मद साहब के विचारो से दास और निम्न वर्ग बहुत प्रभावित हुआ और ऊँचे वर्ग पर कोई प्रभाव नही पडा। उँचे वर्ग के लोग मुहम्मद साहब को एक व्यापारी मानते थे। जैसे-जैसे मुहम्मद साहब के विचार लोक प्रिय होते गये और उनके शिष्यों की सख्या मे वृद्धि होने लगी, वैसे मक्का के उच्च वर्ग के लोग और शासक वर्ग उनका विरोधी होता गया। उन्हे आशका होने लगी कि कहीं मुहम्मद मक्का की धार्मिक परम्पराओं को नष्ट नही कर दे। कालान्तर मे मक्का के शासक वर्ग ने मुहम्मद के विचारों का विरोध किया। इस पर उन्होने अपने शिष्यो को एबीसीनिया भेज दिया और स्वय 13 वर्ष तक मक्का मे रहकर कुरेशी जाति के अत्याचारो को सहते हुए अपने विचारों का प्रचार करते रहे

(v) मक्का छोड मदीना भाग जाना (622 ई०) मदीना के कुछ लोग इस्लाम के अनुयायी बन चुके थे। इसलिये उन्होने मुहम्मद साहब को मदीना जाने का निमन्त्रण दिया। इस पर मुहम्मद साहब ने अपने शिष्यो को इस्लाम का प्रचार करने के लिये मदीना भेज दिया और स्वय 13 वर्ष तक मक्का मे विरोधियो के अत्याचारों को सहते हुए भी अपने विचारो का प्रचार करते रहे।

मुहम्मद साहब के विरोधियों ने उन्हे कई तरह से परेशान किया। जब उन्हें सफलता नहीं मिली, तब उन्होंने एक रात को मुहम्मद साहब की हत्या करने

का निश्चय किया। मक्का में मुहम्मद साहब अपने आपको असुरक्षित पाकर 622 ई० में अपने शिष्यों के निमन्त्रण पर मक्का छोड़कर मदीना[1] चले गये। वहां पर मुहम्मद साहब का शानदार स्वागत किया गया। मुहम्मद साहब के मक्का स मदीना जाने की घटना को "हिजरत" कहा जाता है। इसी समय स मुसलमानों का हिजरी सम्वत् प्रारम्भ होता है। सवाइन ने लिखा है कि 'उसका मदीना पलायन, जिसे 'हिज्' कहा जाता है। इस्लाम के विकास म परिवर्तन का केंद्र था क्योंकि इसी समय से उसका प्रचार शुरू हुआ"।[1]

मुहम्मद साहब ने मदीना म नमाज पढने के लिये एक मस्जिद का निर्माण करवाया। यहां पर मुहम्मद साहब ने इस्लाम संघ की स्थापना की और वे उसके अध्यक्ष बन गये। उन्होंने मदीना क राज्य की बागडोर अपने हाथ म ले ली। धीरे-धीरे इनके अनुयायियों की सख्या बढ़ने लगी। ये अनुयायी "अन्सार" कहलाये मुहम्मद ने भिन्न भिन्न कबीलों को एक एक सूत्र म बाध दिया और बाहरी आक्र मणों से मदीना की रक्षा की। इसके अतिरिक्त मुहम्मद साहब न भिन्न भिन्न कबीलों म इस्लाम के सिद्धान्तों का प्रचार किया। मुहम्मद साहब न मदीना म अपनी सरकार बनाने के पश्चात् उसकी सुरक्षा के लिये एक सेना का सगठन किया। उन्होंन मदीना मे अनेक यहूदियों को आसानी से मुसलमान बना दिया। मेक्नेल बर्नस ने लिखा कि "मुहम्मद साहब ने यसरब का नाम बदलकर "मदीना" किया जिसका अर्थ है "पैगम्बर का नगर"। उसने अपने अनुयाईयों की एक सेना बनाई और मदीना मे जब यहूदियों ने उसके विचारों को नहीं माना तो मुहम्मद ने हथियार उठाय और लगभग छ सौ यहूदियों को कत्ल कर दिया।[2]

(vi) विरोधियों का मदीना पर हमला---मुहम्मद साहब के विरोधियो ने उनका तथा इस्लाम का अन्त करने के लिय तीन बार मदीना पर हमला किया। परन्तु उन्हें एक बार भी सफलता नहीं मिली। इसक पश्चात् उन्होंन अरब क यहूदियों को मुहम्मद साहब के विरुद्ध भड़काया और उनक साथ मिलकर मुहम्मद पर हमला कर दिया, परन्तु मुहम्मद साहब ने बड़ी बहादुरी से अपन विरोधियों का सामना किया। इसका परिणाम यह हुआ कि उनके विरोधी युद्ध का मैदान छोड़कर भाग गये और मुसलमानों की युद्ध में विजय हुई।

(vii) मक्का पर विजय तथा इस्लाम का प्रचार शत्रुओं को पराजित करने के पश्चात् मुहम्मद साहब ने ६२९ ई० में मक्का पर आक्रमण किया और उस पर अधिकार कर लिया। यहां पर उन्होंने काबा के अतिरिक्त सभी मूर्तियों को तोड़ दिया और अपने विरोधियों को मौत के घाट उतार दिया। ऐसा माना जाता है कि मुहम्मद साहब और मक्का के शासकों के बीच में एक समझौता हुआ। जिसके अनुसार

---

1. मक्का से मदीना 280 मील दूरी पर स्थित है।
1 सेवाइन—ए हिस्ट्री आफ वर्ल्ड सिविलीजेशन पृष्ठ २८८
2 मेक्नेल बर्नस—वेस्टर्न सिविलीजेसं पृष्ठ २५८

मुहम्मद साहब ने काबा के मन्दिर मे यह स्वीकार किया कि मक्का के देवी देवता महान् है जिन्हें पूजा जाना चाहिये।[1] "यद्यपि मुहम्मद साहब मूर्ति पूजा के घोर विरोधी थे, लेकिन तत्कालीन परिस्थितियों म काबा के महत्व को स्वीकार करने के अलावा अन्य कोई विकल्प नहीं था। इसके पश्चात् काबा के निवासियो न मुहम्मद को अपना नेता और पैगम्बर स्वीकार कर लिया।

मुहम्मद साहब के प्रयासों से मक्का म इस्लाम धर्म का प्रचार हुआ और थोड़े ही समय म यह धर्म सारे अरब मे फैल गया। अब मक्का इस्लाम धर्म का तीर्थ स्थान एव प्रमुख धार्मिक केन्द्र बन गया। मुहम्मद ने अन्य देशो मे भी इस्लाम धर्म का प्रचार करने का प्रयास किया। ईरान, मिश्र, रोम तथा एबीसीनिया को उन्होंने पत्र लिखकर इस्लाम धर्म स्वीकार करने की प्रेरणा दी। एबीसीनिया के शासन को छोड़कर किसी देश के शासक ने इस्लाम धर्म को स्वीकार नहीं किया।

(viii) मुहम्मद साहब की मृत्यु (632 ई०) म हुई। उनकी विधवा पत्नी आयशा के अनुसार जब मुहम्मद साहब की मृत्यु हुई तब उनके घर मे न तो रुपया पैसा था और न ही ऊँट और बकरी थी। इससे स्पष्ट होता है कि मुहम्मद गृहस्थी होते हुए भी एक सच्चे त्यागी की तरह जीवन व्यतीत कर रहे थे। मुहम्मद साहब की गणना विश्व के महान पुरुषो मे की जाती है। यद्यपि वे इस्लाम धर्म के प्रचारक और संस्थापक थे, तथापि वे गृहस्थी जीवन व्यतीत करते थे। उन्होंने खदीजा की मृत्यु के पश्चात् आयशा और अपनी चचेरी बहिन जानिब से विवाह किया। इसके अतिरिक्त मुहम्मद साहब ने यहूदी लड़की साफिया से विवाह किया। मुहम्मद साहब के हरम मे मेरी नाम की रखैल थी, जो मिश्र की रहने वाली थी। इससे उन्हे इब्राहिम नामक एक पुत्र भी प्राप्त हुआ था। मुहम्मद सहाब इस पुत्र को बहुत प्यार करते थे, क्योंकि खदीजा से उत्पन्न सभी पुत्र मर चुके थे। वेलम ने लिखा है कि "साफिया के प्रति उभरा स्नेह, जहा आधुनिक विचारक को आश्चर्य में और निराशा म डाल देता है, वहां उनका मिश्र की रखैल मेरी के पुत्र बालक अब्राहिम के प्रति प्यार, और अपने बच्चो की मृत्यु पर भावपूर्ण व्यथा उन्हें पुन उन लोगो मे स्थान दिलाती है, जो प्यार और क्षति को समझते हैं।[2]"

मुहम्मद साहब ने दस विवाह किए। उस समय अरब की जनसख्या मे बड़ी तेजी स कमी हो रही थी इसलिये उन्होंने कुरान में इस्लाम धर्म के अनुयाइयो को चार विवाह करने की आज्ञा दी। मुहम्मद साहब अपनी आय का अधिकाश भाग दान कर देते थे। वे अपने साथियो के साथ अच्छा व्यवहार करते थे। उन्होन अपने जीवन मे इस्लाम के सिद्धान्तो का प्रसार किया और अरब को राष्ट्रीय एकता क सूत्र म बाधने म सफल हुए।

---

1 वेल्स एच०जी०–दी आउट लाइन आफ हिस्ट्री पृष्ठ 599

2 वेल्स, एच० जी०–दी आउट लाईन आफ हिस्ट्री पृष्ठ 606

इस्लाम की शिक्षाएँ —इस्लाम धर्म के प्रवर्तक हजरत मुहम्मद साहब की गणना ससार के महान पुरुषो मे की जाती है। धर्म प्रवर्तक होते हुए भी उन्होने गृहस्थी के रूप मे अपना जीवन व्यतीत किया। इसके अतिरिक्त वे एक राजनेता भी थे। उन्होंने एक ऐसे साम्राज्य की नीव डाली, जिसका प्रसार आगे चलकर एशिया, यूरोप तथा अफ्रीका आदि देशो मे हुआ। उनके कार्यो के फलस्वरूप एक नई सभ्यता और सस्कृति का भी जन्म हुआ। इस्लाम की शिक्षाएं सरल होने के कारण जनसाधारण ने तो शीघ्र ही इन्हे स्वीकार कर लिया। मुहम्मद साहब की शिक्षाओं का सकलन उनके शिष्यो के द्वारा "हदीस" नामक ग्रन्थ में किया गया एव इस्लाम के सिद्धान्तो का सकलन भी उनके शिष्यो के द्वारा "कुरान" नामक ग्रन्थ म किया गया। कुरान शरीफ म इस्लाम धर्म के वे सिद्धान्त है, जो मुहम्मद साहब को अल्लाह से प्राप्त हुए थे। कुरान मे 144 सुरा है। कुरान शरीफ और हदीस दोनो ही पुस्तके मुसममानो के पवित्र धार्मिक ग्रन्थ है। इस्लाम की प्रमुख शिक्षायें निम्नलिखित हैं–

एकेश्वरवाद मे विश्वास—मुहम्मद साहब ने बहुदेववाद का खडन कर एकेश्वरवाद मे विश्वास करने पर जोर दिया। उन्होने अपने अनुयाइयो से कहा कि अल्लाह एक है जो सर्व शक्तिमान और सर्व व्यापी है और मै उसका पैगम्बर हूँ। इस प्रकार मुहम्मद साहब ने एकेश्वरवाद का सिद्धान्त प्रचलित किया।

2 **मूर्ति— पूजा के कट्टर विरोधी**—मुहम्मद साहब मूर्ति पूजा के कट्टर विरोधी थे। वे कहा करते थे कि अल्लाह निराकार एव सर्वव्यापी हैं। इसलिए उन्होंने उस समय अरब मे प्रचलित मूर्तिपूजा का विरोध किया। मध्यकालीन युग म इस्लाम धर्म के अनुयाइयो ने मूर्ति पूजा को नष्ट करने के लिए भारत वर्ष पर आक्रमण किये। उनका यह मानना था कि वे मदिरो और मूर्तियों को नष्ट कर इस्लाम की सेवा कर रहे हैं।

3. **विश्व बन्धुत्व और सामाजिक समानता**—मुहम्मद साहब ने विश्व-बन्धुत्व और सामाजिक समानता की शिक्षा दी। उनका मानना था कि इस्लाम का हर अनुयायी एक समान है और भाई भाई हैं। उनके बीच ऊच नीच का कोई अन्तर नहीं है। इस प्रकार मुहम्मद साहब ने समाज में समानता स्थापित करने का प्रयास किया। इसके अतिरिक्त मुहम्मद साहब का यह भी मानना था कि ससार के सभी मनुष्य एव समान हैं। वे सब खुदा के पुत्र हैं, इसलिए उनको एक दूसरे के साथ भाईचारे का व्यवहार करना चाहिए। मुहम्मद साहब ने कहा था कि "ए लोगो मेरी बात सुनो, और उसे समझो, समझलो कि प्रत्येक मुसलमान एक दूसरे का आपस में भाई भाई है, तुम सब आपस मे समान हो।

4. **मुसलमानों के पांच कर्त्तव्य**:— मुहम्मद साहब ने प्रत्येक मुसलमान को पाच कर्तव्यों का पालन करने का आदेश दिया, ये कर्तव्य निम्नलिखित हैं—

(i) कलमा पढ़ना— मुहम्मद साहब ने कहा कि प्रत्येक मुसलमान को कलमा पढ़ना चाहिये। उनके अनुसार "ईश्वर एक है और मुहम्मद उसके पैगम्बर है" यही इस्लाम धर्म का मूल मंत्र है। कलमा के शब्द है "ला इल्लाह इल लिल्लाह" इसका अर्थ होता है कि सिर्फ अल्ला ही पूजने योग्य है।

(ii) नमाज पढ़ना— मुहम्मद साहब ने कहा कि प्रत्येक मुसलमान को दिन मे पाच बार नमाज पढना चाहिये और शुक्रवार को दोपहर म सामूहिक रूप से एक साथ सभी मुसलमानो को नमाज पढ़ना चाहिए।

(iii) रोजा रखना—मुहम्मद साहब ने प्रत्येक मुसलमान को रमजान के महीने मे रोजा (दिन भर उपवास) रखने का आदेश दिया। इस माह में मुसलमान भोजन रात्रि को ही कर सकते हैं।

(iv) जकात—मुहम्मद साहब ने प्रत्यक मुसलमान को अपनी आय का $2\frac{1}{2}$ प्रतिशत गरीबों को दान म देने का आदेश दिया।

(v) हज्ज— मुहम्मद साहब ने प्रत्येक मुसलमान को जीवन म एक बार हज्ज करने के लिए मक्का जाने का आदेश दिया।

5 परलोक के बारे में विचार—मुहम्मद साहब कर्म सिद्धान्त मे विश्वास करते थे। उनका मानना था कि मृत्यु के पश्चात् हर इन्सान खुदा के समक्ष उपस्थित होता है और जो कर्म के अनुसार न्याय करता है जो व्यक्ति अपने जीवन मे इस्लाम के सिद्धान्तो का पालन करता है, उसे स्वर्ग प्राप्त होना है और जो अवहेलना करता है, उसे नरक मिलता है। सेवाइन ने स्वर्ग के बारे म लिखा है कि "जवानी अमर रहेगी और उनकी सोहबत में हूरें होगी जिनकी काली बडी बडी आखे होगी ये हूरे सीप मे मोतियो की तरह सुन्दर होगी। ये लोग बिना कांटों के फूलों से लदे पेड पौधो मे रहगे और पास ही शीतल झरना बहता होगा"[1]।

6 नैतिक जीवन मे आस्था—मुहम्मद साहब ने प्रत्येक मनुष्य को अपना नैतिक जीवन उच्च बनाये रखने की सलाह दी। उन्होने कहा कि प्रत्येक मनुष्य को अपने माता पिता के प्रति श्रद्धा और दु खी व्यक्तियो के प्रति सहानुभूति रखनी चाहिए। उन्होने मुसलमानो को झूठ नही बोलना, चोरी नही करना, छल कपट नहीं करना तथा ईमानदारी से आजीविका कमाने का आदेश दिया। मुहम्मद साहब ने सुरापान को इस्लाम के विरुद्ध बताया और गुलामों के साथ अच्छा व्यवहार करने को कहा। उन्होने यह नियम बना दिया कि एक मुसलमान चार से अधिक विवाह नहीं कर सकता।

7 मुहम्मद साहब ने कहा कि आत्मा अजर अमर है।

8 मुहम्मद साहब ने कहा कि अच्छे और बुरे दो प्रकार के फरिश्ते होते है। अल्लाह अच्छे फरिश्तो को जन्म देता है, जबकि शैतान बुरों को।

---

1 सेवाइन –ए हिस्ट्री आफ वर्ल्ड सिवलिजेशन पृष्ठ–288

मुहम्मद साहब ने इस्लाम धर्म के अनुयाइयों को अन्य धर्मों के प्रति सहिष्णुता और उदारता का व्यवहार करने का आदेश दिया। सैद्धान्तिक रूप से इस्लाम के अनुयाइयों ने इसका पालन नहीं किया और तलवार के बल पर ही इस्लाम का प्रचार करने का निश्चय किया। इसका कारण यह था कि स्वयं मुहम्मद साहब ने अपने जीवन काल में सीरिया और फिलिस्तीन को विजय कर इस्लाम का प्रचार करने की योजना बनाई थी।

धर्म की प्रमुख विशेषताएँ—मुहम्मद साहब द्वारा प्रतिपादित धर्म की मुख्य विशेषता यह है कि इसमें दार्शनिक विषयों की अपेक्षा व्यावहारिकता पर अधिक जोर दिया गया है। इस धर्म में बहुदेववाद आडम्बरों पुरोहितों और कर्मकाण्डों के लिए कोई स्थान नहीं है। यह धर्म बहुत सादा है तथा इसकी उपासना की विधि बहुत सरल है। इस धर्म में कोई भी बात ऐसी नहीं है जो मनुष्य की बुद्धि से परे है। यह धर्म रहस्यवादी व जटिलताओं से मुक्त है। इसमें मूर्ति पूजा का विरोध किया गया है। इस धर्म में सामाजिक समानता दया, उदारता और विश्व बन्धुत्व पर बहुत अधिक जोर दिया गया है। इसलिए जन साधारण ने इस धर्म को अपना लिया। समकालीन धर्मों में अन्ध विश्वास और आडम्बर होने से इस्लाम धर्म के उत्कर्ष में महत्वपूर्ण सहायता मिली। वेल्स ने लिखा है कि 'बिना किसी सदिग्ध प्रतीकवाद के बिना किसी वेदी पर बलि दिये या पुजारियों के मंत्र उच्चारणों के, मुहम्मद ने उन सिद्धान्तों को मनुष्य जाति के हृदय में उतार दिया।'[1] मुहम्मद साहब के सिद्धान्तों के बारे में बर्नस ने लिखा है कि "क्रांति का आधार एक था जिसे पुराने अरब लोग अल्लाह के नाम से पुकारते थे। अल्लाह की इच्छा थी कि आदमी अपने पड़ोसी पर दया करे, कर्जदार के प्रति उदार रहे, लोभ न करे, ईमानदार और क्षमाशील हो, बाल हत्या न करे मछली न खाये, शराब न पीए। और परम्परागत शत्रुता में रक्त न बहाये। गरीबों को दान दे, दिन में पांच बार नमाज अदा करे, रमजान के पवित्र महीने में रोजे रखे और जीवन में एकबार, सम्भव हो तो मक्का की हज करें। इस्लाम औपचारिक और पवित्रता से कोसों दूर था।'[2] डेविस ने इस्लाम धर्म के बारे में लिखा है कि "मुहम्मद साहब का धर्म मध्य कालीन ईसाई चर्च के धर्म से अधिक सरल, सादा व साधारण था'

इस्लाम पर अन्य धर्मों का प्रभाव—मुहम्मद साहब ने जब इस्लाम का प्रचार करना शुरू किया, तब तक ईसाई धर्म और यहूदी धर्म भी काफी प्रबल बन चुके थे। अतः इन दोनों धर्मों का इस्लाम पर प्रभाव पड़ना स्वाभाविक ही था। मुहम्मद साहब ने इन धर्मों के अच्छे तत्वों का इस्लाम में समावेश किया वे मूर्ति पूजा के विरोधी थे, लेकिन अरब की प्राचीन परम्पराओं के महत्व को स्वीकार करते हुए काबा की उपासना का

---

1 वेल्स, एच० जी—दी आउट लाइन आफ हिस्ट्री पृष्ठ 608

1 मैकनेर बर्नस-वेस्टर्न सिवलीजेशन, पृष्ठ 259

समर्थन किया ।

मुहम्मद साहब ने प्रत्येक मुसलमान को चार विवाह करने की छूट इसलिये दी, क्योकि उस समय अरब मे स्त्रियो की सख्या पुरुषो से भी अधिक थी। इसके अतिरिक्त उन्होने अरब के समाज तथा धर्म म व्याप्त बुराइयो को भी दूर करने का प्रयास किया । इसलिये उनको एक बहुत बडा समाज सुधारक भी कहा जाता है ।

इस्लाम धर्म के सिद्धान्तो मे मौलिकता दृष्टिगोचर नही होती । मुहम्मद साहब ने कोई नई बात नही कही । उन्होने एकेश्वरवाद का सिद्धान्त यहूदी धर्म से ग्रहण किया । इस सत्यता को मानने से इन्कार नही किया जा सकता कि मुहम्मद साहब ने अरब देश मे एक कबीलेदार धर्म के स्थान पर विश्व व्यापी धर्म की स्थापना की जिसके फलस्वरूप सम्पूर्ण अरब देश राष्ट्रीय एकता के सूत्र म बध गया ।

मुहम्मद साहब ने क्षमा, दान और दया आदि विचार ईसाई धर्म से ग्रहण किए । गुलामी व्यवस्था और औरतों की स्वतन्त्रता आदि के बारे मे इस्लाम और ईसाई धर्म मे काफी भिन्नताएँ है । इस्लाम स्त्रियों को स्वतन्त्रता और समानता का अधिकार दिये जाने का विरोधी है । इस धर्म के अनुसार स्त्रियो को पर्दे के भीतर रहना चाहिये और बुर्का पहनकर ही बाहर निकलना चाहिये । यह धर्म एक पुरुष को चार विवाह करने की इजाजत देता है । इस्लाम गुलाम प्रथा को प्रोत्साहन देता है । इतना ही नही मध्यकालीन युग मे इस्लाम के अनुयाइयो के द्वारा तलवार के बल पर इस्लाम स्वीकार कराया जाता था । इन कमियो के उपरान्त भी इस्लाम ने उच्च नैतिक स्तर मानवता, विश्व बन्धुत्व सरल और शुद्ध आचरण के लिये विश्व व्यापी प्रसिद्धि प्राप्त की ।

मुसलमानों का धार्मिक ग्रन्थ—कुरान मुसलमानो का पवित्र धार्मिक ग्रन्थ है इसकी रचना उनके शिष्यों ने की, इसमें मुहम्मद साहब के उपदेशो को सग्रहित किया गया है । यह ग्रन्थ इस्लाम के सिद्धान्तों पर प्रकाश डालता है । मुहम्मद साहब ने कुरान का महत्व बताते हुए कहा कि "कुरान तुम्हारा पथ प्रदर्शन का काम करे, वही करो जो यह आदेश देती है, जो यह मना करती है उससे अलग रहो" ।

इस ग्रन्थ मे मुसलमानो के जीवन को उन्नत एव शुद्ध बनाने तथा उनके कर्त्तव्यो का वर्णन किया गया है । इसके अतिरिक्त कुरान म विवाह सबधी और उत्तराधिकार सम्बन्धी नियमो पर भी प्रकाश डाला गया है । इस ग्रन्थ मे शराब पीने और जुआ खेलने को इस्लाम के सिद्धान्तो के विपरीत बताया गया है । गरीब व्यक्तियो को दान देना एक अच्छे मुसलमान का कर्त्तव्य बताया गया है । रान मे 144 अध्याय है जिन्हे 'सुरा' कहते है ।

ईसाई धर्म की इस्लाम धर्म से तुलना

समानताएं

ईसाई धर्म

1 ईसामसीह ने स्वयं को ईश्वर का पुत्र घोषित किया ।

2 मूर्तिपूजा और व्यक्ति पूजा का कट्टु विरोधी था ।

3 कर्मकाडो का विरोधी था ।

4 नैतिक स्तर को उच्च रखने की शिक्षा दी । शान्ति, माता, पिता के प्रति श्रद्धा और कर्तव्य पालन करने का उपदेश दिया ।

5 सामाजिक समानता को एक मूल सिद्धान्त के रूप मे स्वीकार किया ।

6 धार्मिक सहिष्णुता के सिद्धान्त को स्वीकार करता है ।

7. दीनदुखियों के प्रति विशेष प्रेम की भावना इस धर्म में विद्यमान थी ।

8. ईसा मसीह के अनुसार स्वर्ग में मनुष्य को सब प्रकार के सुख प्राप्त होते हैं ।

9. एकेश्वरवाद के सिद्धान्त मे विश्वास करते थे ।

इस्लाम धर्म

1. मुहम्मद साहब ने स्वयं को ईश्वर का पैगम्बर बताया ।

2 मूर्ति पूजा का खडन किया ।

3 कर्मकाडो का विरोध करते हुए उपासना की सरल विधि बताई ।

4 नैतिक स्तर को उच्च करने का आदेश दिया । माता, पिता के प्रति श्रद्धा रखने, ईमानदारी, दीन दुखियो के प्रति दया का भाव रखने का उपदेश दिया ।

5. सामाजिक समानता पर अधिक बल दिया ।

6. धार्मिक सहिष्णुता को आदर्श रूप में स्वीकार करता है ।

7. मुहम्मद साहब ने गरीबो दान देना प्रत्येक मुसलमान आवश्यक कर्तव्य माना ।

8 इस धर्म के अनुसार सच्चे मान को स्वर्ग मे खूबसूरत और मादकहीन शराब होती है ।

9. एकेश्वरवाद के सिद्धा विश्वास करते थे ।

असमानताएं

1. ईसामसीह ने प्रारम्भ मे उपासना की ऐसी कोई विधि नहीं बताई, जिसका पालन करना प्रत्येक ईसाई के लिए आवश्यक हो ।

1. मुहम्मद साहब ने प्रत्ये मान के लिए पाच क पालन आवश्यक माना

2 ईसा के अनुसार धनवान व्यक्ति को स्वर्ग प्राप्त नहीं हो सकता। यदि वे अपना सचित धन त्याग दे तो उन्हे स्वर्ग प्राप्त हो सकता है।	2 मुहम्मद साहब ने बताया कि प्रत्येक मुसलमान को अपनी आय का $2\frac{1}{2}$ प्रतिशत गरीबों को दान मे देना चाहिये।
3 अहिंसा के सिद्धान्त को स्वीकार किया।	3 अहिंसा पर इस धर्म मे कोई मत प्रकट नही किया गया है, लेकिन आवश्यकता पडने पर यह धर्म शक्ति का प्रयोग करने की इजाजत देता है।
4 विश्व बन्धुत्व के सर्व व्यापी क्षेत्र को स्वीकार करता है।	4 इसम कवल मुसलमान जाति के बन्धुत्व व सामाजिक समानता पर जोर दिया गया है।
5 ईसाई धर्म के अनुसार अन्य धर्मों के प्रति सहिष्णुता तथा उदारता का व्यवहार करना चाहिए।	5 मुहम्मद साहब के अनुसार अन्य धर्मावलम्बियो से एक विशेष कर वसूल करना चाहिए।
6 इस धर्म का प्रचार करने के लिए धर्म के सस्थापक एव पादरियो ने अपने जीवन का बलिदान कर दिया।	6 शक्ति के बल पर इस्लाम धर्म का प्रचार किया गया।
7 प्रारम्भ मे इस धर्म म पादरी नहीं थे, लेकिन कुछ समय पश्चात् सस्कारो को सम्पन्न कराने के लिये पादरियो की उपस्थिति आवश्यक हो गई।	7 धार्मिक त्योहारो म मोलवियो की आवश्यकता नही थी।

नोट —मुसलमानो मे विश्व बन्धुत्व एव पारस्परिक भाई चारे की भावना अधिक दिखाई देती है।

इस्लाम धर्म का प्रसार—इस्लाम धर्म का प्रसार बडी तेजी से हुआ मुहम्मद साहब के जीवन काल मे ही यह धर्म अरब म फैल चुका था। सेवाइन ने लिखा है कि' मक्का से हिर के साथ ही 622 ई मे इस्लाम का प्रचार शुरू हो गया था।'[1] मुहम्मद साहब ने अरब पर अधिकार करने के पश्चात् इस्लाम धर्म का प्रचार करने के लिये मिश्र के शासक हराक्लीयस के पास दूत भेजा, जिसको अपमानित होकर लौटना पडा। इसी प्रकार उन्होने यरुसलम पर विजय प्राप्त करने के लिये

1. सेवाइन ए हिस्ट्री आफ वर्ल्ड सिवलीजेशन पृष्ठ 288

एक सैनिक टुकड़ी भेजी, जिसे भी असफलता हाथ लगी। वीव ने कहा है कि" अपने पीछे छोटी शक्ति की महान सफलता को देखने को मुहम्मद साहब तो जीवित न रहे किन्तु उन्होंने योजना तैयार करदी थी और उनके उत्तराधिकारियों ने इन योजनाओं को कार्यान्वित कर दिखाया।"[1]

मुहम्मदसाहब के उत्तराधिकारी खलीफा कहलाये। जिन्होंने इस्लाम का तेजी से प्रचार किया। मुहम्मद साहब के शिष्य में से चार खलीफा अबु-बक्र, उमर, ओथमन और अली अपनी लोकप्रियता के आधार पर चुन गये।

1 अबु बकर (632-34ई) अबु बक्र मुहम्मद साहब का ससुर था मुहम्मद साहब की मृत्यु के पश्चात् उनके दत्तक पुत्र अली के स्थान पर अबु बक्र को प्रथम खलीफा बना गया। इसका कारण यह था कि अबु बक्र में संगठन की अद्भुत क्षमता थी। अबु बक्र ने शीघ्र ही सीरिया पर अधिकार कर लिया। इसके पश्चात् संसार में इस्लाम धर्म का प्रचार तेजी के साथ होने लगा। 634 ई. में अबु बकर की मृत्यु हो गई। वेल्स ने लिखा है कि" इसमें लेशमात्र भी संदेह नहीं हो सकता कि यदि मुहम्मद कल्पना और मस्तिष्क था तो अबु बक्र उसकी आत्मा और प्राण था। दोनों आजीवन साथ थे और मुहम्मद जो कहते थे, किन्तु अबु बक्र उसमें विश्वास रखता और कर दिखाता।"[2]

2. द्वितीय खलीफा उमर (634-644) :—ई में अबु बक्र की मृत्यु के पश्चात् हजरत मुहम्मद साहब का बहनोई उमर द्वितीय खलीफा बना, जिसने इस्लाम का बहुत अधिक प्रचार किया। प्रो मुहम्मद हबीब ने लिखा है कि उमर ने अपने दस वर्ष के समय में इस्लाम की महान सेवा की। उन्होंने सीरिया, मिश्र, फारस और मेसोपोटामिया आदि देशों पर अधिकार कर वहां इस्लाम का प्रचार किया। उमर ने तलवार के बल पर दूसरे देशों में इस्लाम का प्रसार किया। 644ई. में एक ईरानी गुलाम ने उसे कत्ल कर दिया।

3. तृतीय खलीफा ओथमन (644-656 ई') उमर की मृत्यु के पश्चात् 644 ई में ओथमन तीसरा खलीफा बना। उसने अपने नाविक बेड़े की सहायता से 649ई० में साइप्रस और 653 ई में रोहडस टापुओं पर विजय प्राप्त की और वहां इस्लाम धर्म का प्रसार किया। मुहम्मद सहाब का दत्तक पुत्र अली अभी तक खलीफा न बनने के कारण ओथमन से अप्रसन्न था। इसलिए उसने 656 ई. में मदीना के लोगों की सहायता से ओथमन का वध करवा दिया। इसके साथ ही इस्लाम राज्य में गृह युद्ध शुरू हो गया।

---

1. वीव, डब्ल्यु. एन. हिस्ट्री आफ दी वर्ल्ड, पृष्ठ 2?2.
2. वेल्स एच. जी. दी आउट लाइन आफ हिस्ट्री पृष्ठ 208.

4 अली :—(656–661ई) ओथमन के वध के पश्चात् अली 656 ई० में चौथा खलीफा बना। उसने इस पद पर पांच वर्ष तक कार्य किया। 661 ई० में ओथमन के वंशजो ने अली का वध कर दिया। ओथमन के वंशज उमैयाव श के नाम से प्रसिद्ध हुए।

उम्मयद वंश—(661–750 ई०) अली की मृत्यु के पश्चात् 661ई० में माओविया उम्मयद वंश का पहला खलीफा बना। यह उम्मयद वंश का संस्थापक था। उस ने गृह युद्ध को समाप्त करने के लिए मदीना के स्थान पर दमश्क को अपनी राजधानी बनाया। फिर भी, गृह युद्ध चलता रहा और अली के पुत्र हसन और हुसेन ने युद्ध जारी रखा अन्त मे उम्मयद वंश के खलीफा ने 680 ई० में ईराक के कर्बला के मैदान मे अली के पुत्र हसन और हुसेन को निर्दयतापूर्वक कत्ल कर दिया हसन हुसेन का बलिदान आज भी इस्लाम में मुहर्रम का त्यौहार के रूप में प्रतिवर्ष बड़े उत्साह के साथ मनाया जाता है और इसी दिन ताजिए निकाले जाते हैं।

हजरत मुहम्मद के दत्तक पुत्र अली ने सैद्धान्तिक रूप से प्रारम्भिक खलीफाओं का विरोध किया था। मुसलमानो का एक समुदाय जो अली और उसके वंशजो को मुहम्मद साहब का असली उत्तराधिकारी मानता था वह समुदाय शिया सम्प्रदाय कहलाया। जो समुदाय मोआविया और उम्मयद वंश के खलीफाओं का अनुयायी था, वह समुदाय सुन्नी सम्प्रदाय कहलाया। सुन्नी सम्प्रदाय को मानने वाले मुसलमान शियाओं की अपेक्षा अधिक कट्टर होते हैं।

अली के पुत्रो के वध के पश्चात् इस्लाम की बागडोर उमेया वंश के खलीफाओं के हाथो में आ गई इस वंश के खलीफाओं के हाथ मे 661 ई मे 745 ई तक इस्लामी सत्ता रही। इन खलीफाओं ने अफ्रिका सार्डीनिया लाईजन्टिया, कार्थेज, समरकन्द, स्पेन और फारस आदि देशों पर अधिकार कर लिया और वहां इस्लाम धर्म का प्रचार किया। 712 ई में मुहम्मद बिन कासिम ने सिन्ध पर अधिकार कर लिया और वहा इस्लाम का प्रचार किया। वेल्स ने लिखा है ' इस्लाम को पूर्व मे चीन ,जापान और भारत मे कम विरोध का सामना करना पड़ा "[1] 750 ई० तक दमश्क के खलीफाओं ने अफगानिस्तान, मध्य एशिया और कैस्पियन सागर तक के प्रदेशो पर अधिकार कर लिया और वहां इस्लाम धर्म का प्रचार किया।

अब्बासी वंश—750 ई मे अब्दुल्ला ने उम्मयद वंश के अन्तिम खलीफा की हत्या कर स्वयं को खलीफा घोषित कर दिया। अब्दुल्ला के वंशज पांच सौ वर्षों तक अब्बासी वंश के नाम से इस्लाम की सत्ता चलाते रहे। अब्बासी वंश के खलीफाओं ने दमश्क के स्थान पर बगदाद को अपनी राजधानी बनाया जो ग्यारहवीं शताब्दी तक इस्लाम की गतिविधियों का एक प्रमुख केन्द्र बना रहा।

अब्बासी वंश का सबसे प्रसिद्ध खलीफा हारुन रशीद था, जिसने 786 ई से

1 वेल्स- एच०जी०-दी आउट लाइन आफ हिस्ट्री, पृष्ठ 622–23

लेकर 809 ई. तक शासन किया। वह योग्य और विद्वान था। उसकी साहित्य और कला के प्रति बहुत अधिक रुचि थी। इसलिये उसने अपने दरबार में कवियों साहित्यकारों, संगीतज्ञों व नर्तकों को आश्रय दे रखा था। उस काल की कहानियां अरेबियन,नाइट्स, के रूप में प्रसिद्ध हैं। हारून रशीद के शासन काल में बगदाद ने व्यापार के क्षेत्र में आश्चर्यजनक प्रगति की। उसके शासन काल में इस्लामी सभ्यता व अरब संस्कृति अपने चरमोत्कर्ष बिन्दु पर पहुंच गई और बगदाद सभ्यता और संस्कृति का एक महत्वपूर्ण केन्द्र बन गया।

खलीफा मोमिन ने 813 से लेकर 833 ई. तक बगदाद पर शासन किया। उस काल में क्रीट और सिसली में इस्लाम का प्रचार हुआ। मोमिन के बाद इस्लाम साम्राज्य का पतन आरम्भ हो गया।

दसवीं शताब्दी तक साम्राज्य बहुत बड़ा हो जाने से तीन खलीफाओं ने साम्राज्य को आपस में विभाजित कर लिया। बगदाद में अब्बासी खलीफा, मिश्र में फातिमी खलीफा और स्पेन के कार्डोवा में उम्मयद वंश का खलीफा शासन कर रहा था। धीरे धीरे खलीफाओं की शक्ति कम होती गई और अब खलीफा नाम मात्र के शासक रह गये। वे अब सिर्फ मुसलमानों के धार्मिक नेता रह गये थे। ग्यारहवीं शताब्दी में मंगोलों के आक्रमणों से खलीफाओं की शक्ति को भयंकर आघात पहुंचा। 1285 ई में मंगोल नेता हलाकू ने अन्तिम खलीफा का वध कर दिया।[1] इस प्रकार से खलीफा के पद की समाप्ति हुई। मुहम्मद गौरी ने तराईन के दूसरे युद्ध में पृथ्वी राज चौहान को हरा कर भारत में मुस्लिम साम्राज्य की स्थापना की यहीं से 1761 ई. तक मुसलमान शासक भारत पर शासन करते रहे। धीरे-धीरे सिंगापुर, मलेशिया, इन्डोनेशिया, थाईलैंड और दक्षिणी-पूर्वी एशिया के देशों में इस्लाम का प्रचार हुआ। आज संसार में ईसाई धर्म के बाद इस्लाम धर्म के अनुयाइयों की संख्या सबसे अधिक है।

इस्लाम धर्म के प्रसार के कारण —जिस तेजी से इस्लाम का प्रसार हुआ, उसके मुकाबले संसार के अन्य धर्मों का प्रसार नहीं हुआ था। इस्लाम धर्म का जन्म अरब के छोटे से नगर में हुआ था, लेकिन यह धर्म कुछ ही वर्षों में संसार की सबसे बड़ी शक्ति में परिणित हो गया। वेल्स ने लिखा है कि "अरेबिया एकाएक शक्तिशाली तेजस्वी लोगों में परिणित हो गया।" इस धर्म के प्रसार के प्रमुख कारण निम्नलिखित थे—

1. सामाजिक एवं धार्मिक कुरीतियों का विरोध :—इस्लाम का जन्म अरब में हुआ था। उस समय अरब के समाज में अनेक कुरीतियां विद्यमान थीं।

---

1. वेल्स, एच० जी०— दी आउट लाइन आफ हिस्ट्री, पृष्ठ 610.

यहां पर अनेक धर्म प्रचलित थे। अरब के लोग बहुदेववाद में विश्वास करते थे और मूर्ति पूजा करते थे। इस्लाम ने इन सामाजिक एवं धार्मिक कुरीतियों का विरोध किया। इसका परिणाम यह हुआ कि अरब वासियों ने इस धर्म को अपना लिया एवं अन्य देशों में भी यह धर्म लोकप्रिय हो गया।

2–तलवार के बल पर इस्लाम का प्रसार :–इस्लाम धर्म का प्रसार तलवार के बल पर किया गया। स्वयं मुहम्मद साहब ने मक्का पर युद्ध के द्वारा विजय प्राप्त की थी। उन्होंने काबा के अतिरिक्त अन्य सभी मूर्तियों को ध्वस कर दिया। मुहम्मद साहब ने लोगों को बलपूर्वक मुसलमान बनाया। जिन लोगों ने इस्लाम धर्म को स्वीकार करने से इन्कार किया, उन्हें या तो मार दिया गया या गुलाम बना दिया गया। मुहम्मद साहब के अनुयाइयों ने भी इस्लाम के प्रचार के लिये इसी तरीके को अपनाया और युद्ध में पराजित लोगों के सामने इस्लाम को स्वीकार करने के अलावा अन्य कोई विकल्प नहीं रखा। श्री राम धारी सिंह "दिनकर" ने लिखा है "कि जहां-जहां इस्लाम के उपासक गये उन्होंने विरोधी सम्प्रदाय के सामने तीन रास्ते रखे या तो कुरान हाथ में ले लो और इस्लाम को कबूल करो या करदो और अधीनता स्वीकार करो अथवा दोनों में से कोई बात पसन्द नहीं हो तो तुम्हारे गले पर गिरने के लिये हमारी तलवार प्रस्तुत है। ये बड़े ही कारगर उपाय रहे होगें, किन्तु यह समझ में नहीं आता कि सिर्फ इन्हीं उपायों से इस्लाम इतना जल्दी कैसे फैल गया।" [1]

3—धन की लालसा – अरब एक गरीब देश था। यहां के मुसलमान धर्म प्रचार के लिये दूसरे देशों पर विजय प्राप्त करते थे, जिससे उन्हें धन प्राप्त होता था। इस धन से उनकी सम्पन्नता में वृद्धी हुई। धन प्राप्ति और धर्म के प्रचार के लिये दूसरे देशों पर लगातार आक्रमण करते रहे। इससे इस्लाम धर्म का प्रचार हुआ और साथ में उन्हें धन भी प्राप्त हुआ। बर्नस ने लिखा है "कि यह सच है कि इस्लाम के प्रचार के अधिक महत्वपूर्ण कारण धार्मिक न होकर आर्थिक और राजनीतिक थे।" [2]

4– मुसलमानों में धार्मिक जोश –मुसलमानों में अपने धर्म के प्रचार के लिए धार्मिक जोश व उत्साह था। मुसलमान सैनिक दूसरे देशों पर आक्रमण करते थे, तो उस युद्ध को 'जिहाद' की संज्ञा देते थे। उनका यह कहना था कि यदि वे युद्ध में मृत्यु को प्राप्त होंगे तो उनके पाप क्षमा कर दिये जायेंगे। और उन्हें स्वर्ग की प्राप्ति होगी यदि उन्हें युद्ध में विजय प्राप्त होगी तो धन प्राप्ति के साथ इस्लाम का भी प्रचार होगा, मुसलमान सैनिक युद्धों के समय मन्दिरों और मूर्तियों को नष्ट कर देते थे। उनका

1. दिनकर, रामधारीसिंह –संस्कृति के चार अध्याय
2. मैक्नेल बर्नस – वैस्टर्न सिवलीजेशन– पृष्ठ 561

यह मानना था कि ऐसा करके वे इस्लाम का मस्तक ऊँचा कर रहे हैं। स्वयं मुहम्मद साहब ने युद्ध के समय 'जिहाद' का नारा बुलन्द किया था। उन्होंने कहा था। कि 'राणाप्रताप का क्या डर। नरक और भी अधिक उत्पत है इसके बाद स्वर्ग मिलेगा।'[1]

5— इस्लाम धर्म की सरल शिक्षायें :— इस्लाम धर्म की सरल शिक्षाओं के कारण अरबों ने इस धर्म को स्वीकार कर लिया तथा अन्य देशों में भी इस धर्म का तेजी से प्रचार हुआ। इस्लाम बहुदेववाद के स्थान पर एकेश्वरवाद के सिद्धान्त में विश्वास करता है यह मूर्ति पूजा का विरोधी है। इस धर्म की उपासना की विधि बहुत सरल है। यह आडम्बरहीन और एक सादा धर्म है। इस धर्म मे कर्मकाण्डो और पुजारियों के लिये कोई स्थान नहीं है। यह धर्म सरल शिक्षाओं के कारण ही जनसाधारण म बहुत लोकप्रिय हुआ।

6— सामाजिक तथा धार्मिक समानता— इस्लाम सामाजिक समानता तथा विश्व बन्धुत्व सिद्धान्त में विश्वास रखता है। इस धर्म के प्रत्येक अनुयायी को एक समान धार्मिक और सामाजिक अधिकार प्राप्त है। इसके अनुसार समाज मे कोई छोटा बड़ा नहीं होता। यही कारण था कि इस धर्म का प्रसार उन देशों में तेजी के साथ हुआ, जहा पर सामाजिक असमानता विद्यमान थी।

7— विश्व के अन्य धर्मों में शिथिलता— इस्लाम के प्रचार के समय विश्व के अन्य धर्मों म कुछ शिथिलता आ गई थी। रोम तथा पारस पतन की ओर अग्रसर हो रहे थे। पादरियों के कारण ईसाई धर्म की लोकप्रियता कम होती जा रही थी। इस समय हिन्दू धर्म भी पतन की ओर अग्रसर हो रहा था। ऐसी परिस्थितियों मे इस्लाम का तेजी के साथ प्रचार हुआ। मान वेन्द्रराय ने लिखा है कि "अरब आक्रमणकारी वीर जहा भी गये, जनता ने उन्हें अपना रक्षक और त्राता मानकर उनका स्वागत किया, क्योंकि जनता कहीं तो रोमन शासकों के भ्रष्टाचार के नीचे पिस रही थी, कहीं ईरानी तानाशाह के जुल्मों से त्रस्त थी और कहीं ईसाइयत का अन्ध विश्वास उसे जकड़े हुए था।

8 — मुहम्मद एवं खलीफाओं का असाधारण व्यक्तित्व :— मुहम्मद साहब एवं प्रारम्भिक खलीफाओं के असाधारण व्यक्तित्व के कारण इस्लाम धर्म का बहुत अधिक प्रचार हुआ। मुहम्मद साहब उच्च कोटी के व्यक्ति थे, जो सादा और शुद्ध जीवन व्यतीत करते थे। उनकी मृत्यु के पश्चात् अबुबक, उमर और अली जैसे योग्य खलीफाओं ने कुछ ही वर्षों में इस्लाम को संसार का लोक प्रिय धर्म बना दिया। उम्मैयद वंश और अब्बासी वंश के योग्य खलीफाओं के समय इस धर्म की लोकप्रियता में और वृद्धि हुई।

9 — इस्लाम धर्म के आचरण— खलीफाओं के युग में धर्म और राजनीति का समन्वय हो चुका था। उस समय खलीफा धर्म और राजनीति दोनों ही क्षेत्रों में

1—एनिम और जौन — संसार का इतिहास -पृष्ठ—173

सर्वोच्च अधिकारी थे। अरब के गरीब लोगों ने जीविका निर्वाह के लिए दूसरे देशों पर विजय प्राप्त करना आरम्भ किया। दूसरे देशों के लोगों ने इस्लाम इसलिए स्वीकार किया, क्योंकि उसमें कई आकर्षण थे। जैसे जो लोग इस्लाम स्वीकार कर लेते थे, उन्हें कर नहीं देना पड़ता था, ऐसे लोगों को इस्लामी राज्य में उच्च नौकरी दी जाती थी। यदि इस्लाम स्वीकार करने वाला व्यक्ति दास होता था तो उसे धर्म परिवर्तन के पश्चात् स्वतन्त्र कर दिया जाता था। ये ऐसे कुछ आकर्षण थे, जिन्होंने इस्लाम के प्रचार में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

खलीफाओं के पतन के कारण – आठवीं शताब्दी के पश्चात् खलीफा की शक्ति का पतन होना आरम्भ हुआ। इसके प्रमुख कारण निम्नलिखित थे—

(i) खलीफाओं के आधीन प्रान्तीय शासकों ने अपने आपको स्वतन्त्र घोषित कर दिया और उन्होंने ऐसे कार्य किये, जिससे खलीफा की शक्ति तथा सम्मान को आघात पहुंचा। इसका परिणाम यह हुआ कि एक शताब्दी के भीतर ही खलीफाओं की शक्ति कम हो गई।

(ii) खलीफाओं के पतन का दूसरा कारण यह था कि जब खलीफा शक्तिशाली और समृद्धिशाली हो गए तो, उन्होंने सादा और पवित्र जीवन को छोड़ कर विलासी जीवन व्यतीत करना प्रारम्भ कर दिया। इसका परिणाम यह हुआ कि उनका प्रभाव मुसलमानों पर दिन प्रतिदिन कम होता गया।

(iii) उम्मैयद वंश और अब्बासी वंश के खलीफाओं की आपसी शत्रुता भी उनके पतन कारण सिद्ध हुई। उम्मैयद वंश खलीफा सुन्नी मत के अनुयायी थे जब कि अब्बासी वंश के खलीफा शिया मत के मानने वाले थे। उनके धार्मिक मतभेदों के प्रश्न को लेकर दोनों पक्षों के बीच निरन्तर संघर्ष चलता रहा, जिससे मुसलमान शिया और सुन्नी दो सम्प्रदायों में विभाजित हो गये। इस आपसी फूट के कारण खलीफाओं की शक्ति का पतन हो गया।

इस्लाम का विभाजन—ईसाई धर्म की भांति इस्लाम धर्म भी उदय के कुछ समय पश्चात् कई सम्प्रदायों में विभाजित हो गया। सेवाइन ने लिखा है कि "कुल मिलाकर 27 विभिन्न सम्प्रदाय या शाखाएं थीं जिनमें से अनेक बहुत कम महत्व रखती हैं"[1] इस्लाम धर्म के सबसे अधिक महत्वपूर्ण सम्प्रदाय शिया, सुन्नी और सूफी हैं।

(i) **सुन्नी सम्प्रदाय**—सुन्नी लोग प्राचीन अरब परम्पराओं के अनुसार पैगम्बर का उत्तराधिकारी चुनने के पक्ष में थे। इस सम्प्रदाय के लोग कुरान के बाहर इस्लाम द्वारा स्वीकार की गई परम्पराओं को मान्यता देने के पक्ष में थे। अर्थात् जो "सुना" उसे स्वीकार कर लो, इसलिए ये सुन्नी कहलाये।

1–सेवाइन–ए हिस्ट्री आफ वर्ल्ड सिवलीजेशन, पृष्ठ 289.

(ii) शिया सम्प्रदाय—इसके विपरीत शिया लोग खलीफा के चुनाव के पक्ष में नहीं थे। इस सम्प्रदाय के अनुसार विवाह द्वारा या रक्त से हजरत मुहम्मद साहब का रिश्तेदार ही खलीफा बन सकता था। इसके अतिरिक्त शिया कुरान के सिवाय और किसी अन्य बात को मान्यता देने के पक्ष म नहीं थे।

(iii) सूफी सम्प्रदाय—इस्लाम का तीसरा सम्प्रदाय सूफी है। इस सम्प्रदाय के लोग रहस्यवादी और सन्यासी जीवन व्यतीत करते हैं। इनका यह मानना है कि सत्य वही है जो अल्लाह का वचन है, सूफीयो के अनुसार व्यक्ति अपने शरीर को अनेक यातनाएँ देकर रहस्यमय तरीकों से आत्मा को अल्लाह से मिलवा सकता है

इस्लाम की सभ्यता एवं संस्कृति का वर्णन—

1—प्रशासन व्यवस्था (i) खलीफाओं का युग-मुहम्मद साहब की मृत्यु के पश्चात् उनके उत्तराधिकारी खलीफा कहलाए। खलीफाओं का काम इस्लाम का प्रसार करना था। पैगम्बर साहब के पश्चात् अबु-बक्र, उमर, ओथमन और अली चार खलीफा हुए। शिया सम्प्रदाय के मुसलमान प्रथम तीन खलीफाओं को नहीं मानते, वे मुहम्मद साहब के दत्तक पुत्र और चौथे खलीफा हजरत अली को प्रथम खलीफा मानते ह।

प्रारम्भ में इस्लामी शासन व्यवस्था गणतन्त्री थी। इसके अनुसार किसी भी व्यक्ति को खलीफा के पद पर चुना जा सकता था। खलीफा के अधिकार असीमित थे। राज्य की वास्तविक शक्ति उसके हाथों में केन्द्रित थी और वह मुसलमानों का सर्वोच्च धर्म गुरु भी था। इस प्रकार खलीफा शासन और धर्म के क्षेत्र में सर्वोच्चाधिकृति था। वही साम्राज्य का प्रधान और मुख्य न्यायाधीश था, किन्तु वह कुरान के अनुसार शासन करता था। जैसे-जैसे इस्लामी साम्राज्य का विस्तार होता गया, वैसे-वैसे प्रजातन्त्रात्मक पद्धति समाप्त होती गई और शासन व्यवस्था तथा धर्म पर खलीफा का प्रभुत्व स्थापित होता गया। अब खलीफा राजतन्त्रात्मक पद्धति के अनुसार शासन करने लगा। जब मावीया ने चौथे खलीफा अली को मारकर उम्मयदवंश की स्थापना की तबसे खलीफा कुलागत होने लगे।

(ii) नौकरशाही का विकास—अब्बासी खलीफाओं के समय म नौकरशाही का विकास हुआ। इसका कारण यह था कि उनकी केन्द्रीय, प्रान्तीय और स्थानीय शासन व्यवस्था नौकरशाही पर आधारित थी। खलीफा ने प्रान्त में "हाजिब" नामक अधिकारी की नियुक्ति की जो खलीफा के सभी कार्यों की देखभाल करता था। इसी अधिकारी के माध्यम से व्यक्ति खलीफा से मिलते थे।

खलीफा का दूसरा महत्वपूर्ण अधिकारी "वजीर" था। जिसे खलीफा ने अपने असैनिक व नागरिक अधिकार दे रखे थे। वजीर राज्य की नीति को निर्धारित करता था और कर्मचारियों की नियुक्ति करता था। शासन व्यवस्था के संचालन के लिए राज्य में अलग अलग विभाग थे। जिनमें सबसे प्रमुख वित्त विभाग

था। इस विभाग का कार्य मुसलमानों से जकात तथा गैर मुसलमानों से जजिया कर वसूल करना था। इसके अतिरिक्त यह विभाग पराजित राज्यों से खिराज भी वसूल करता था।

(iii) न्याय व्यवस्था—खलीफा साम्राज्य का सबसे बड़ा न्यायाधीश था। प्रत्येक जिले में काजी मुकदमों को सुनते थे और इस्लामी कानून के अनुसार उन पर अपना फैसला देते थे। काजी के फैसले के विरुद्ध खलीफा के पास अपील की जा सकती थी, लेकिन खलीफा का निर्णय अन्तिम समझा जाता था।

(iv) प्रान्तीय प्रशासन व्यवस्था—खलीफा ने अपने विशाल साम्राज्य को 10 प्रान्तों में विभाजित कर दिया और प्रत्येक प्रान्त की शासन व्यवस्था चलाने के लिए उनमें सूबेदारों की नियुक्ति की। प्रान्त के इन सूबेदारों को खलीफा ने असीमित अधिकार प्रदान किये और वह इनके कार्यों में हस्तक्षेप नहीं करता था। इसका परिणाम यह हुआ कि प्रान्तीय सूबेदारों ने स्वतन्त्र शासकों के समान शासन करना शुरू कर दिया।

(v) सैन्य सगठन एवं गुप्तचर व्यवस्था—अरबों की सैनिक शक्ति के कारण ही इस्लामी साम्राज्य का प्रसार हुआ था। प्रारम्भ में तो खलीफा स्वयं अपनी सेनाओं का नेतृत्व करते थे, परन्तु बाद में उसने अपने अधीन सेनापति रखना शुरू कर दिया था। खलीफा की सेना का सगठन सामन्ती व्यवस्था पर आधारित था। उसकी सैनिक शक्ति का मुख्य आधार घुड़सवार तथा पैदल सेना थी। खलीफा ने अपने साम्राज्य के सभी भागों में गुप्तचरों का जाल बिछा रखा था, जो सरकारी अधिकारियों की तथा सामान्य जनजीवन की सूचनाएँ प्रतिदिन उसके पास भेजते थे।

(vi) जनहित के कार्य—प्रारम्भिक खलीफाओं ने जनहित कार्यों की ओर विशेष ध्यान दिया। उन्होंने सड़कें, पुल, नहरें, बाँध और बगीचों आदि का निर्माण करवाया। उस समय डाक व्यवस्था भी अच्छी थी, जिसके माध्यम से खलीफा प्रान्तीय सूबेदारों को आदेश भेजते थे।

2 आर्थिक जीवन—खलीफाओं के शासन काल में आर्थिक क्षेत्र में बहुत अधिक उन्नति हुई—

(i) कृषि तथा पैदावार—अरब वासियों का मुख्य व्यवसाय कृषि था। अरब का अधिकांश भाग रेगिस्तान था और सिंचाई सुविधाओं का यहां पर पूर्णरूप से अभाव था। सरकार ने यहां पर अनेक नहरों का निर्माण करवाया और उनके द्वारा सिंचाई का प्रबन्ध किया गया। खलीफाओं ने आरमीनिया से फारस की खाड़ी तक तथा मिश्र और स्पेन में अनेक नहरों का निर्माण करवाया और पुरानी नहरों की मरम्मत करवाई। इसके अतिरिक्त दलदल प्रदेश को सुखाकर उसे कृषि योग्य बनाया गया। परिणामस्वरूप कृषि के क्षेत्र में बहुत अधिक विकास हुआ। यहां की मुख्य पैदावार अनाज में गेहूं, जौ, मक्का, चावल, दाल, कपास और फलों में नीबू,

मजूर, अनार, नारंगी व अंगूर आदि थी। अरबों ने स्पेन को खजूर बोना और यूरोपियनों को कपास की खेती करना सिखाया।

(ii) उद्योग धन्धे—खलीफाओं के शासन काल में अरब साम्राज्य ने औद्योगिक क्षेत्र में काफी प्रगति की। उन्होंने चीन से कागज बनाना सीखा और चिकने तथा सुन्दर कागज बनाकर यूरोपीय देशों को बेचते थे। उस समय बगदाद में कागज बनाने का एक बहुत बड़ा कारखाना था। कुछ समय पश्चात 900 ई० में मोरक्को में, 1100 ई० में स्पेन में और 1150 ई० में सिसली में कागज बनाने के उद्योग का विकास हुआ। अरब निवासी बहुत सुन्दर और चमकते हुए दर्पण बनाते थे। उन्होंने चीन से रेशम खरीद कर सुन्दर रेशम के परदे, चद्दर और मेजपोश आदि बनाये। यहां के निवासी सूती वस्त्र बहुत अच्छे बनाते थे। जिसे यूरोप व एशिया के लोग अधिक मात्रा में खरीदते थे।

अरब के लोग सुन्दर गलीचे और उच्च कोटि के अस्त्र-शस्त्र भी बड़े पैमाने पर बनाते थे। वे मिट्टी के सुन्दर बर्तन भी बनाते थे। इसके अतिरिक्त इत्र व शराब भी बनाते थे। चमड़े के उद्योग में अरबवासी निपुण थे। कोरडोवा और मारक्को की चमड़े की बनी हुई वस्तुएँ सारे संसार में प्रसिद्ध थीं। बगदाद, काहिरा, दमिश्क तथा स्पेन का कोरडोवा आदि नगर उस समय के प्रमुख व्यापारिक तथा औद्योगिक केन्द्र थे।

(iii) व्यापार — इस समय अरब साम्राज्य ने व्यापारिक क्षेत्र में बहुत अधिक उन्नति की। यहां के निवासी अच्छे व्यापारी थे। अरब अपनी भौगोलिक स्थिति के कारण यूरोप व एशिया के बीच व्यापार का मुख्य केन्द्र बना रहा। प्रत्येक मुसलमान अपने जीवन में एक बार हज के लिए मक्का जाता था। इस यात्रा का उपयोग वह व्यापार के हेतु भी करता था। इसलिये उस समय व्यापार को प्रोत्साहन मिल रहा था।

अरबवासी जल व थल दोनों मार्गों से व्यापार करते थे। अरब के भारत, चीन, फारस, मिश्र, तथा यूरोपीय देशों के साथ व्यापारिक सम्बन्ध थे। अरबवासी चीनी, सूती तथा ऊनी वस्त्र काच का सामान, कागज, अस्त्र शस्त्र तथा गलीचे और खजूर आदि वस्तुओं का निर्यात करते थे और इसके बदले में चाय, रेशम, हाथीदांत, सोना, लौंग, आदि वस्तुओं का आयात करते थे।

3 —सामाजिक जीवन—(i) समाज की दशा—अरब के समाज में पितृसत्तात्मक व्यवस्था थी। इसके अनुसार समाज व परिवार में पुरुष ही प्रधान होता था खलीफाओं, काजी (न्यायाधीश) मुल्ला व उलेमाओं (धार्मिक अधिकारी) को समाज में बहुत आदर की दृष्टि से देखा जाता था। यहां के सामाजिक ढांचे का आधार सामन्ती व्यवस्था थी। इस्लामी कानून के अनुसार एक पुरुष चार वि- -- कर सकता था।

इस्लाम ने प्रारम्भ में सादगी और संयम पूर्ण जीवन व्यतीत कर दिया, किन्तु खलीफाओं ने विशाल साम्राज्य और अधिक धन की प्राप्ति

विलासिता पूर्वक जीवन व्यतीत करना प्रारम्भ कर दिया। इस समय उच्च वर्ग के लोग शराब पीने लगे और अपने महल मे रखैलोकेरूप में हजारों सुन्दर स्त्रियाँ रखने अपने घरेलु कार्यों को कर अमीर लोग ने के लिए गुलाम भी रखने लगे। किसानों की दशा दयनीय थी। बडे-बडे शहरो मे बेरोजगारी व भीखमंगो की संख्या म वृद्धि होती जा रही थी। खैरात व्यवस्था ने कई लोगो को आलसी बना दिया था। उस समय अधिकाश जनता गरीब थी और उसकी दशा बहुत सोचनीय थी। सामान्य नागरिक सादा जीवन व्यतीत करते थे। उनका मुख्य भोजन खजूर जो की रोटी और शहद आदि था।

(ii) गैर मुसलमानो की दशा—इस समय गैर मुसलमान लोगो की दशा बहुत दयनीय थी। उन्हे सरकारी नौकरी से वंचित रखा जाता था एवं मुसलमानो के राज्य मे रहने के लिये "जजिया" नामक कर चुकाना पडता था। उन पर अनेक प्रकार के अत्याचार किये जाते थे।

(iii) गुलामों की दशा—अरब के व्यापारी दूर दूर के देशों से गैर मुसलमान व्यक्तियों को गुलाम बनाकर लाते थे और उन्हे बसरा, और बगदाद के बाजारो म बेच देते थे। गुलामो को किसी प्रकार के अधिकार नही थे।

(iv) स्त्रियों की दशा—इस्लामी समाज मे स्त्रियों की दशा बहुत शोचनीय थी। वे पूर्णरूप से पुरुषो पर निर्भर रहती थी। ईरानी सम्पर्क के पश्चात् अरब मे पर्दा-प्रथा का प्रचलन हुआ। अरब म स्त्रियो को पर्दे मे रहना पडता था। जब वे घर से बाहर जाती थीं, तो उन्हे बुर्का पहनकर जाना पड़ता था। इस प्रकार अरब साम्राज्य में मुस्लिम स्त्रिया की दशा बहुत शोचनीय थी और वे कष्टपूर्ण जीवन व्यतीत करती थी। इसके अतिरिक्त बहु पत्नी प्रथा तथा रखेलो की रखने की प्रथा ने स्त्रियो का जीवन और कष्टमय बना दिया।

(v) अंध विश्वास—अरबियन समाज के लोग बहुत अन्धविश्वासी थे। वे जादू और टोने मे विश्वास करते थे। इसी समय हिजडो का प्रचलन हुआ।

(vi) मनोरंजन—यहा के लोगो के मनोरंजन के मुख्य साधन शतरंज, शिकार, घुडदौड और पोलो आदि थे। इस समय वैश्याएँ और नर्तकियो भी लोगो का मनोरंजन करती थी। बगदाद मे नर्तकियो और कवियो का जमघट लगा रहता था।

4. शिक्षा तथा अनुवाद—इस समय शिक्षा के क्षेत्र मे काफी विकास हुआ। खलीफा विजित प्रदेशो मे मस्जिदों का निर्माण करवाते थे। मस्जिद के साथ ही एक मदरसा (स्कूल) भी होता था, जहा बच्चो को शिक्षा दी जाती थी। खलीफाओ ने प्रत्येक नगर तथा कस्बे मे अनेक मदरसो का निर्माण करवाया। इन मदरसों मे विद्यार्थियो को व्याकरण, गणीत और इतिहास आदि विषयो की शिक्षा दी जाती थी शिक्षा का माध्यम अरबी भाषा थी। काहिरा, दमिश्क, बगदाद व कोरडोवा उस समय के प्रसिद्ध शिक्षा केन्द्र थे। जहा हजारो विद्यार्थी विद्याध्ययन के लिए आते थे।

खलीफा मामून ने 830 ई० मे बगदाद में एक विश्वविद्यालय की स्थापना की। काहिरा के विश्वविद्यालय में 10,000 छात्र पढ़ते थे। कोरडोवा म 27 ऐसे स्कूल थे, जहां पर गरीब विद्यार्थीयों को मुफ्त पढ़ाया जाता था।

विश्वविद्यालय के पुस्तकालय मे हजारो हस्तलिखित पुस्तकें संग्रहित थीं। कोरडोवा के पुस्तकालय मे करीब एक लाख और काहिरा म करीब सात लाख हस्त-लिखित पुस्तकें थी। वे दो ो उस समय के प्रसिद्ध पुस्तकालय थे। अरब के विद्वानो ने यूनानी व संस्कृत के अनेक ग्रन्थो का अरबी भाषा मे अनुवाद किया। उस समय खलीफाओं के दरबार में कई प्रसिद्ध विद्वानों ने आश्रय ले रखा था।

5 साहित्य—उस समय साहित्य के क्षेत्र म आश्चर्यजनक उन्नति हुई। इस्लामी साहित्य की रचनाएँ अरबी तथा फारसी दोनो ही भाषाओं मे उपलब्ध होती हैं।

(i) काव्य—इस समय काव्य के क्षेत्र मे बहुत अधिक विकास हुआ। इस काल के प्रसिद्ध कवि हुसन, इब्न हानि, अहमद इब्न हुसैन, अल मर्रारी, इबनबर्ड और अबूनिवास, फिरदौसी, उमर खैयाम और शेख सादी आदि थे। जिन्होंने अपने अपने क्षेत्र में प्रशासनीय रचनायें रची। हुसन इब्न हानि ने सुरा और सुन्दरी पर अपनी कविताएें लिखी, जिनको उस काल म बहुत ख्याति प्राप्त हुई। अहमद इब्न हुसैन अरब के दूसरे प्रसिद्ध कवि थे। अल मर्रारी नामक कवि की जीवन और मृत्यु क विषय पर लिखी गई कविताएँ बहुत प्रसिद्ध हुईं। इबनबर्ड और अबूनिवास ने करुण रस पर कविताए लिखी। फारसी के प्रसिद्ध कवि फिरदौसी न "शहनामा' नामक ग्रन्थ लिखा, जो होमर के महाकाव्य से भी बड़ा है। 11 वीं शताब्दी म उम्मर खैयम ने सुन्दर रुबाईयां लिखी। शेख सादी ने "गुलिस्तां बोस्तां" नामक विश्व प्रसिद्ध ग्रन्थ लिखा। उसकी कविता म दार्शनिकता पर अधिक जोर दिया गया है।

(ii) गद्य—गद्य के क्षेत्र मे उपन्यास और नाटक की अपेक्षा कहानियां बहुत अधिक लिखी गई थी, जो विश्व साहित्य मे अपना महत्वपूर्ण स्थान रखती हैं। अलिफ लैला की कहानियां गद्य साहित्य की उत्कृष्ट रचनाएँ मानी जाती है। इस प्रकार "अलीबाबा और चालीस चोर" सिन्दबाद, और "अलाउद्दीन और उसका चिराग' आदि प्रसिद्ध कहानियां भी इसी समय लिखी गई हैं। जिनका ससार की सभी भाषाओं मे अनुवाद किया जा चुका है।

(iii) इतिहास के क्षेत्र में विकास—अरबो ने इतिहास के क्षेत्र म भी काफी प्रगति की। अरब के विद्वान आत्मचरित लिखने की कला मे बहुत दक्ष थे। मुहम्मद बिन ईशाक ने मुहम्मद साहब की जीवनी नामक पुस्तक लिखी, जो उस काल म बहुत लोकप्रिय हुई। अबू जफर ने 10 वीं शताब्दी मे तारीख-उल-रसूल बमल मुल्क नामक पुस्तक लिखी, जिसम उसने बादशाहों का वर्णन किया है।

बगदाद निवासी मसूदी अपने समय का एक प्रसिद्ध इतिहासकार था। अल-

बेरुनी ने 11 वी शताब्दी के प्रारम्भ में भारत यात्रा नामक पुस्तक लिखी, जिसमे उसने भारतीयों की राजनीतिक, सामाजिक, और आर्थिक दशा का वर्णन किया है। इब्न खाल्दून पहला व्यक्ति था जिसने 'अमल' नामक पुस्तक की दार्शनिक दृष्टि से व्याख्या की तथा उसे लिपिबद्ध करने का प्रयास किया।

6 दर्शन—अरब लोगों की दार्शनिक क्षेत्र में कोई मौलिक देन नहीं है। उनके दार्शनिक विचारों पर यूनान तथा भारत का प्रभाव अधिक पाया जाता है। यहा के प्रसिद्ध दार्शनिक अलकीन्दी, अलफरेबी, अविसेन और एवरोज आदि थे। अलीकान्दी ने प्लेटो और अरस्तु के दर्शन पर अपने विचार प्रस्तुत किये। अलफरेबी भी अपने समय का एक प्रसिद्ध दार्शनिक और संगीतज्ञ था। अविसेन ईरान का निवासी था, वह एक कुशल चिकित्सक भी था। कोरडोवा के निवासी एवरोज ने अरस्तु की विचारधारा का प्रचार किया तथा टालेमी के ग्रन्थों की रचना की।

8 विज्ञान—अरबवासियों ने विज्ञान के क्षेत्र मे बहुत अधिक प्रगति की। नवी शताब्दी से 11 वी शताब्दी तक अरबों ने वैज्ञानिक क्षेत्र मे इतनी अधिक उन्नति की, कि इस काल को अरब का "स्वर्ण युग" कहा जाता है। अरबों ने यूनान और भारत से वैज्ञानिक ज्ञान सीखा और उसे विकसित कर यूरोपियन देशों को सिखाया। इतना ही नहीं उन्होंने विज्ञान के क्षेत्र मे कई नयी नयी खोजें की। इसलिए अरबों को आधुनिक विज्ञान का जन्मदाता माना जाता है।

(i) **गणित के क्षेत्र में प्रगति**—अरबों ने गणित के क्षेत्र म काफी प्रगति की। उन्होंने भारत से 1 से 9 तक के अक' दशमलव प्रणाली और शून्य का ज्ञान सीखा और इसे विकसित कर यूरोपियन देशों को सिखाया। अरबवासी अक को हींदसा के नाम से पुकारते थे। जीरो, साइफर, अलजबरा आदि शब्द मूलत अरबी भाषा के है। अरबों ने ज्यामिति में युक्लिड का अध्ययन किया और ट्रिगनोमेट्री का आविष्कार किया।

(ii) **खगोल शास्त्र के क्षेत्र में प्रगति**—एड्रिसी इस समय का महान भूगोलविज्ञ था। अलबेरूनी खगोल विद्या का बहुत बडा विद्वान था। उसने भारत के संस्कृत ग्रन्थों का अरबी भाषा म अनुवाद किया और पृथ्वी की परिधि और व्यास को नापने का प्रयत्न किया। कुतुबनुमा और दुरबीन के प्रारम्भिक सिद्धान्तों को खोजने का प्रयास किया गया। उन्होंने कई नये तारो की खोज की, परन्तु अरब वासियो को अभी तक पता नही था कि पृथ्वी गोल है। अलमामुन ने एक भौगोलिक सर्वज्ञान कोष बनाया।

(iii) **ज्योतिष के क्षेत्र में प्रगति** — अरब वासियो ने भारत तथा यूनान से ज्योतिष सबंधी ज्ञान प्राप्त किया। अलबेरुनी 10वी शताब्दी का ज्योतिष और नक्षत्रों का सबसे बडा विद्वान था। ग्रह तथा नक्षत्रों का अध्ययन करने के लिये बगदाद, दमिश्क, कोरडोवा आदि नगरो मे वेधशालाएँ स्थापित की गई। उम्मर

खैयाम, अबूमशार, इब्नयुम आदि उस समय के प्रसिद्ध ज्योतिष थे ।

(iv) भौतिक विज्ञान के क्षेत्र में प्रगति– अरबों ने भौतिक विज्ञान के क्षेत्र में बहुत प्रगति की । उन्होंने पेंडुलम के सिद्धान्त का आविष्कार किया और प्रकाश विज्ञान पर भी खोज की। अलबेरुनी ने कई पत्थरों और धातुओं के वजन की खोज की।

(v) रसायन शास्त्र के क्षेत्र में प्रगति– अरबों ने रसायन शास्त्र के क्षेत्र में बहुमूल्य देन दी । वे इसको " कीमिया गिरी" के नाम से पुकारते थे । यूरोप की केमिस्ट्री शायद अरबों की कीमिया शब्द का विकसित रूप है । उन्होंने रसायन शास्त्र के क्षेत्र में बहुत अधिक खोज की । धातु मिश्रण व रंग मिश्रण सिद्धान्त का आविष्कार अरब वैज्ञानिकों ने किया । पोटाश, शोरा और तेजाब आदि की खोज भी अरबों ने ही की ।

(vi) चिकित्सा के क्षेत्र मे उन्नति–अरबों ने चिकित्सा में क्षेत्र म आश्चर्य-जनक प्रगति की । यहाँ पर चलित औषधालय थे, जो एक स्थान से दूसरे स्थान पर भ्रमण करते हुए हजारों रोगियों का उपचार करते थे । इस समय के प्रसिद्ध नेत्र चिकित्सक हुने के इब्न ईशाक ने " आख पर दस लेख" नामक पुस्तक लिखी । जिसमे उसने आखो की चिकित्सा पर प्रकाश डाला था । रेजेज ने " मेडिकल कोमन" पर ग्रन्थ लिखा । इसी तरह अलहराजी ने स्मालपाक्स और मिजल्स आदि रोगों पर पुस्तक लिखी । यह शल्य चिकित्सा का भी विशेषज्ञ था । अविसिन नामक प्रसिद्ध चिकित्सक ने "चिकित्सा के सिद्धान्त" नामक पुस्तक लिखी । यूरोपीय देशों के लोगो और एशियाई देशो के लोगो ने कई शताब्दियो तक इस पुस्तक का उपयोग किया । अविसेन की यह विशेषता थी कि वह रोगियो से फीस लेने का विरोधी था ।

9. कला—(i) स्थापत्य कला–अरबवासियो ने स्थापत्यकला के क्षेत्र म बहुत अधिक प्रगति की । यहां के निवासी विशाल एव भव्य भवनो का निर्माण करते थ । बगदाद, दमिश्क और कोरडोवा आदि नगरो मे बने हुए भवन उस समय की भवन निर्माण कला के सुन्दर नमूने हैं । स्थापत्यकला में यहाँ मस्जिदों का निर्माण करते प्रारम्भ में मस्जिदे सादी बनाई जाती थी, लेकिन कुछ समय पश्चात, उनके थे । आन्तरिक भागो को अलंकृत किया जाने लगा और महराव व फर्श पर सुन्दर व चमकीले पत्थर का तथा खिड़कियो पर सुन्दर शीशों का प्रयोग होने लगा ।

खलीफा उमर ने अपने शासन काल मे जेरूसलम की मस्जिद पर एक बहुत बड़े गुम्बज का निमार्ण करवाया । धीरे धीरे प्रत्येक मस्जिद म विशाल गुम्बज और प्रत्येक भाग को अलकृत करने की प्रथा प्रारम्भ हो गई । भवन निर्माण कला मे यहा के लोगो न सारसैनिक शैली का अधिक प्रयोग किया । उन्होन ऊँची और नुकीली महरावो का प्रचलन किया और विशालता पर अधिक जोर दिया । फारस, मिस्र, मैसोपोटामिया फैलेस्टाइन व सीरिया आदि देशों म उस समय के वास्तुकला के सुन्दर नमूने आज भी दृष्टिगोचर होते हैं ।

(ii) चित्रकला – कुरान म पशुओ, मानवो और प्राणियो का चित्र बनाना अधार्मिक माना गया है । इसलिए प्रारम्भिक काल म अरब मे चित्रकला

विकास नही हो सका। जब अरबवासी दूसरे देशो के सम्पर्क मे आये तो उनकी चित्रकला को दूसरे देशो ने प्रभावित किया। अब अरबवासियों ने चित्रो का निर्माण करना शुरू कर दिया। मस्जिदो पर कुरान की आयतें खोदी जाने लगी, पक्षियों के चित्र बनाये जाने लगे। भवनो की दीवारों बर्तनो और वस्त्रों पर चित्रो का निर्माण किया जाने लगा। मस्जिदो और मकबरो पर भी सुन्दर चित्रों का निर्माण किया जाने लगा। चीनी, मिट्टी के बर्तन, प्यालो और सुराइयो पर सुन्दर नक्काशी और चित्रकारी होती थी। कुछ समय पश्चात् लकडी, हाथीदात और पत्थरों पर अरबो द्वारा सुन्दर चित्रों का निर्माण किया जाने लगा। उस समय शासक और अमीर लोग अपने महलो मे रंगो का प्रयोग करने लग गये थे।

(iii) मूर्तिकला– इस्लाम मूर्ति पूजा का विरोधी है। इसलिए मूर्तिकला के क्षेत्र म विकास नही हो सका। दूसरे देशो के सम्पर्क में आने पर अरबों ने चीनी मिट्टी से भिन्न भिन्न प्रकार की सुन्दर मूर्तियों का निर्माणकरना प्रारम्भ कर दिया था। हस्तकला के क्षेत्र मे अरबवासी काफी दक्ष थे। उनके द्वारा बनाई गई वस्तुएं यूरोपियन बाजारो मे बहुत बिकती थी।

(iv) संगीत कला – अरबो ने संगीत कला के क्षेत्र म काफी प्रगति की। अल फरेबी उस समय का प्रसिद्ध संगीतकार था जिसने संगीत पर अनेक पुस्तकें लिखी। अरबो की संगीत कला का यूरोप पर बहुत अधिक प्रभाव पडा। मेसुरल संगीत विश्व को अरबो ने ही दिया। यूरोप को कई वाद्ययन्त्र ल्यूट, गिटार, रेम्बोराइन और ल्यूनेक आदि अरबो ने ही दिये।

अरब को विश्व को देन — यूरोपियन देशो मे इस्लामी सभ्यता का प्रचार स्पेन के द्वारा किया गया, क्योकि मुसलमानों ने स्पेन पर कई शताब्दियो तक शासन किया था। डॉ विलडुरा, ने लिखा है कि इस्लामी सभ्यता ने यूरोप को बहुमूल्य देन दी है। उन्होने ऐसी वस्तुओं की एक लम्बी सूची भी दी है। विलडूरा के अनुसार अरबो ने भोजपान की विधि, औद्योगिक व्यापारिक वस्तुए और नागरिक जीवन के नियम दिये। अरबो ने विश्व को निम्न देन दी है:—

(i) अरबो ने ल्यूट, गिटार आदि वाद्ययन्त्र यूरोप को दिये।

(ii) अरबों ने यूरोप को पेपर बनाना सिखाया।

(iii) अरबों ने यूरोपियन देशो को खोज करने की प्रेरणा दी।

(iv) अरबो ने यूरोप को नारंगी और गन्ना पैदा करना सिखाया।

(v) अरबो ने यूरोपवासियों को कुतुबनुमा व बारूद का प्रयोग करना सिखाया।

(vi) अरबो ने शासन व्यवस्था, कविता और कला के क्षेत्र म मौलिक देन दी।

(vii) अरबो ने यूरोप, अफ्रीका और एशिया के स्थल व जल मार्गों के विकास मे महत्वपूर्ण योगदान दिया।

प्रोफेसर वीव ने लिखा है कि "मुस्लिम सभ्यता का विभिन्न तत्वों मे
निर्माण हुआ। उसने भारत, बाईजेन्टिया, फारस, मिश्र और यूनान आदि
देशों की सभ्यताओं से कई तत्व ग्रहण किये और उनका विकास कर विश्व को
उपहार के रूप मे प्रदान किये। प्रो० त्रिपाठी व मालवीय ने लिखा है कि ' मानव
सभ्यता को इस्लाम की सबसे बडी देन इस बात म है कि इसके द्वारा भारत और
यूनान दो, महान राष्ट्रो की वैज्ञानिक खोजो की रक्षा हो सकी और मुसलमानो
ने अपने परिश्रम द्वारा कुछ मौलिक देनो से वैज्ञानिक ज्ञान की सीमा को कुछ
अधिक विस्तृत करके उसे सभ्य ससार को सौंप दिया" एच०जी० वल्स ने लिखा
है कि "यदि यूनान वैज्ञानिक पद्धति का जनक था तो अरब उसका प्रतिपालक
था।"[1]

सेवाइन ने लिखा है कि "मुहम्मद एक धार्मिक पैगम्बर भी था और समाज
सुधारक भी और कुरान एक धार्मिक ग्रन्थ और कानून की पुस्तक दोना हैं'।[2]

अरबो ने प्राचीन यूनानी ग्रन्थो का अनुवाद कर ज्ञान की रक्षा की। उस
समय मे जबकि पश्चिमी यूरोप मे ईसाई लोग बर्बरता के विरुद्ध सघर्ष कर रहे थे।
इसी ज्ञान भडार को लेकर जब विद्वान कस्तुतुनिया से भागकर इटली आए तो
इससे पुनर्जागरण का कार्य सम्भव हो सका। अरबो न यूरोपियनो को शोध की
प्रेरणा दी। इस सत्यता को मानने से इन्कार नही किया जा सकता कि अरबो ने
विश्व को अनेक बहुमूल्य देन दी हैं।

---

1 वल्स, एच०जी०—दी आउट लाइन आफ हिस्ट्री
2 सेवाइन—ए हिस्ट्री आफ वर्ल्ड सिवलीजेशन, पुष्ठ 290

प्रस्तावित सन्दर्भ पुस्तकें

1. सेवाइन —ए हिस्ट्री आफ वर्ल्ड सिवलीजेशन
2 हनिम और जौन—ससार का इतिहास
3 मैकनैल बर्नस— वैस्टर्न सिवलीजेशन
4 वल्स एच०जी०—दी आउट लाइन आफ हिस्ट्री
5. वीव,डब्ल्यू एन — हिस्ट्री आफ दी वर्ल्ड

कुछ महत्वपूर्ण प्रश्न

अध्याय 1--प्रागैतिहासिक काल का मानव--

1. "प्रागैतिहासिक युग की सभ्यता वह आधार शिला थी जिस पर बाद की सभ्यताओं का भवन निर्मित किया गया" क्या आप इस कथन से सहमत है ?
2. "नवीन पाषाण काल मानव प्रगति मे एक क्रान्तिकारी काल था" इस कथन की विवेचना कीजिए।
3. "उत्तर पाषाण काल पूर्व पाषाण काल की तुलना में सर्वतोन्मुखी विकास का युग था" इस कथन पर अपने विचार व्यक्त कीजिए।
4. पूर्व पाषाण-युग और नव पाषाण-युग की तुलना कीजिए।
5. पूर्व पाषाण काल के मानव जीवन के बारे में आप क्या जानते है ?
6. टिप्पणी लिखिये:—
(i) कृषि की खोज (ii) धातु युग

अध्याय 2—मिश्र की प्राचीन सभ्यता—

1 "मिश्र ने अनेक खोज तथा आविष्कार किए जो मनुष्य के लिए बडे लाभदायक सिद्ध हुए है" इस कथन की पुष्टि कीजिए (राज० 1967)
2. प्राचीन मिश्र की सभ्यता की विशेषताओं का वर्णन कीजिए।
3. "सभी प्राचीन सभ्यताओं मे धर्म की प्रधानता रही है" इस कथन के आधार पर प्राचीन मिश्र के धर्म का वर्णन कीजिए तथा बताइए कि मिश्र वासियो के समाज, साहित्यकला, और विज्ञान पर धर्म का कहा तक प्रभाव पड़ा (राज० 1966)
4. मिश्र के प्राचीन धर्म और कला का वर्णन कीजिए।
5. मिश्र की सभ्यता की विश्व को क्या देन है ?
6. मिश्र की सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक व आर्थिक दशा का वर्णन कीजिए।
7. टिप्पणियां लिखिए—
(i) पिरामिड (ii) भवन निर्माण कला (iii) लेखनकला।

अध्याय 3—मैसोपोटामिया की सभ्यता

1. सुमेरियन सभ्यता की सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक, साहित्य व कला का वर्णन कीजिए।

2 "हम्मूराबी" विश्व का प्रथम कानून दाता था। इस कथन की विवेचना कीजिए।
3 हम्मूराबी की उपलब्धियों का वर्णन कीजिए।
4 हम्मूराबी की विधान संहिता का वर्णन कीजिए।
5 बेबीलोन की देन का संक्षेप में वर्णन कीजिए।
6 बेबीलोनिया की सभ्यता की सामाजिक व्यवस्था, धार्मिक, आर्थिक व राजनीतिक व्यवस्था का वर्णन कीजिए।
7 टिप्पणियाँ लिखिए—
(i) असुरबेनीपाल (ii) रोसेटा पत्थर

अध्याय— 4 फारस की सभ्यता

1 प्राचीन फारस के सामाजिक और धार्मिक जीवन का वर्णन कीजिए। (राज० 1967)
2 फारस और यूनानी युद्धों के कारणों का वर्णन कीजिए।
3 पारसी-यूनानी युद्धों में पारसियों की हार के कारणों और परिणामों पर प्रकाश डालिए।
4 जरथुस्त्र कौन थे ? उनके उपदेशों का वर्णन कीजिए।
5 टिप्पणियाँ लिखिए—
(i) मैराथान का युद्ध (ii) थर्मोपोली (iii) अहुर मज्दा (iv) जिन्द-अवेस्ता (v) पारस के पतन के कारण

अध्याय— 5 चीन की प्राचीन सभ्यता

1 कन्फ्यूशियस के जीवन और शिक्षाओं का वर्णन कीजिए।
2 चीन की सभ्यता की सामाजिक राजनैतिक, व धार्मिक व्यवस्था का वर्णन कीजिए।
3 चीन की कला, साहित्य, विज्ञान एवं दर्शन का संक्षेप में वर्णन कीजिए।
4 चीन की मानव जीवन को क्या देन है ?
5 टिप्पणियाँ लिखिए—
(i) चीन की दीवार (ii) लाओत्से (iii) शीहाग टी

अध्याय 6—यूनान की प्राचीन सभ्यता

1 'पेरीक्लीज का शासन काल यूनान के इतिहास में स्वर्ण काल था' इस कथन को सिद्ध कीजिए।
2 यूनान की सभ्यता की सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक व आर्थिक व्यवस्था का वर्णन कीजिए।
3 यूनान की विश्व को क्या देन थी।
4 यूनान की साहित्य, कला और विज्ञान के क्षेत्र में देन का वर्णन कीजिये।

5 यूनानी—फारसी युद्धों के कारणों और परिणामों पर प्रकाश डालिए तथा फारस की असफलता के कारणों का वर्णन कीजिए

6 टिप्पणियां लिखिये —

(i) होमरकालीन युग (ii) सुकरात (iii) प्लेटो (iiii) अरस्तु (iv) ट्राय-का घेरा (v) ओलम्पिक खेल (vi) पाईथागोरस

अध्याय 7-रोम की सभ्यता

1 रोमवासियों की सामाजिक, आर्थिक तथा धार्मिक दशा का वर्णन कीजिए। इस क्षेत्र में उनकी क्या देन है?

2 प्यूनिक युद्ध के कारणों और परिणामों पर प्रकाश डालिए।

3 आगस्टस का शासनकाल रोमन संस्कृति का स्वर्ण युग क्यों कहा जाता है? इस कथन की विवेचना कीजिये।

4 रोमन साम्राज्य के पतन के कारणों पर प्रकाश डालिए।

5 रोम की कला, विज्ञान तथा साहित्य का वर्णन कीजिए।

6 टिप्पणियां लिखिए —

(i) जूलियस सीजर (ii) रोमन कानून (iii) रोमन की देन

अध्याय 8–ईसाई धर्म का उत्कर्ष और प्रभाव

1 ईसा मसीह के जीवन एवं उनकी शिक्षाओं का वर्णन कीजिए।

2 'यह स्पष्ट है कि ईसा जन्म से विद्रोही थे जो तत्कालीन परिस्थितियों को सहन नहीं कर सकते थे और उन्हें बदलना चाहते थे" इस कथन को स्पष्ट कीजिए।

3 ईसाई धर्म के प्रसार के कारणों का उल्लेख कीजिए तथा इस धर्म के मुख्य प्रभावों का वर्णन कीजिए।

4 निम्न पर टिप्पणियां लिखिए —

(i) सन्त पाल (ii) सन्त पीटर (iii) क्रिसमिस

अध्याय 9–इस्लाम धर्म का उत्कर्ष और प्रभाव

1. मुहम्मद साहब के जीवन एवं शिक्षाओं का वर्णन कीजिए।

2 अरब ने विश्व सभ्यता को क्या देन दी?

3 इस्लाम के प्रचार के कारणों का उल्लेख कीजिए।

4 इस्लाम की सभ्यता एवं संस्कृति का वर्णन कीजिए।

5 निम्न पर टिप्पणियां लिखिये —

(i) कुरान शरीफ

(ii) शिया तथा सुन्नी मत

(iii) अबु-बक

(iv) खलीफाओं का युग

सन्दर्भ ग्रन्थ-सूची

(अ) हिन्दी

1. एनिस और जोन — संसार का इतिहास
2. गोयल — विश्व की प्राचीन सभ्यताएं
3. दिवाकर, वी एम. — विश्व इतिहास
4. दिनकर, रामधारी सिंह — संस्कृति के चार अध्याय
5. नेहरु, जवाहर लाल — विश्व इतिहास की झलक
6. त्रिपाठी, आर. पी. — विश्व इतिहास
7. प्लेट जोन और ड्रमड — विश्व का इतिहास
8. विलडयूरेन्ट — सभ्यता की कहानी
9. शूमा — अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति

(ब) अंग्रेजी

1. गिब्बन, ई — डिक्लाइन ऐण्ड फाल आफ दी रोमन
2. थोर्नडाइक एल — हिस्ट्री आफ सिवलीजेशन
3. डेविस, एच०ए० — एन आउट लाइन हिस्ट्री आफ दी वर्ल्ड
4. ब्रेस्टेड, जे. एच. — (i) दि ओरिजिन आफ सिवलीजेशन (ii) ए हिस्ट्री आफ ईजिप्ट
5. बीच, डब्ल्यू एन. — हिस्ट्री आफ दि-वर्ल्ड
6. हेज एण्ड मून — वर्ल्ड हिस्ट्री
7. मैकनेलबर्न्स — वेस्टर्न सिवलीजेशन
8. रोस्टोजेफ, ए. — सोशल ऐंड इकोनॉमिक हिस्ट्री आफ दि रोमन इम्पायर
9. वेल्स, एच.जी — दि आउट लाइन आफ हिस्ट्री
10. विल ड्यूरेन्ट — आवर ओरियंटल हैरिटेज
11. सेबाइन — ए हिस्ट्री आफ वर्ल्ड सिवलीजेशन
12. स्वेन जे० ई० एम० — हिस्ट्री आफ वर्ल्ड सिवलीजेशन
13. शैविल, एफ — हिस्ट्री आफ यूरोप

लेखक परिचय

जन्म 4 जुलाई, 1949 डूंगला जिला चित्तौड़गढ़, राजस्थान।
शिक्षा– बी० ए० प्रथम श्रेणी मे उत्तीर्ण 1974, उदयपुर विश्वविद्यालय, उदयपुर एम० ए (इतिहास) स्वर्णपदक विजेता मे उत्तीर्ण 1972 उदयपुर विश्वविद्यालय उदयपुर विद्यावाचस्पति 1978
"अलवर राज्य का इतिहास"
(1775–1857ई)
सम्प्रति —पिछले छ वर्षो से अध्ययन एव अध्यापन कार्य मे रत हैं। वर्तमान मे राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय सिरोही (राज०) मे व्याख्याता इतिहास के पद पर कार्य कर रहे हैं। अब लेखक "भारतीय सभ्यता एवं सस्कृति का इतिहास" नामक पुस्तक लिख रहा है जो प्रकाशनाधीन है।